स्वेट मार्डेन कृत

भागो नहीं भाग्य को बदलो

रूपांतरकार
वेद प्रकाश सोनी
चित्रांकन
शंकर नायक

प्रकाशक
जनजागरण साहित्य
दिल्ली-110053

प्रकाशक : **जनजागरण साहित्य**
एल-46, गली नं॰ 5, शिवाजी मार्ग
करतार नगर, दिल्ली-110053

मूल्य : 175.00 रुपये

संस्करण : सन् 2004

आवरण : शंकर नायक

शब्द-संयोजन : एस॰ के॰ कम्प्यूटर्स
दिल्ली-110032

मुद्रक : एस॰ एन॰ प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

अनुक्रम

विचारों की शक्ति का प्रभाव

आप जैसा सोचते-विचारते हैं, आपके मुख पर वैसी ही आभा, वैसी ही कान्ति आ विराजती है। आप अपना स्वरूप बदलने का कितना ही यत्न क्यों न करें, आपके मन की बात आपका चेहरा स्वयं कह देगा। दूसरे लोग आपकी बातों के छलावे में नहीं आ सकते, वे आपका वास्तविक स्वरूप जानते-पहचानते हैं।

आपने अनुभव किया होगा कि किसी व्यक्ति को देखने से तो आपको प्रसन्नता होती है और किसी को देखकर वितृष्णा। कार्लाइल का कहना है कि अपने भाई के चेहरे को देखिए। यदि आपको उसमें दया और प्रेम की भावना दिखती है तो आप पर उसका कैसा प्रभाव पड़ता है और यदि उससे घृणा और क्रोध की लपटें निकलतीं दीखें तो कैसा प्रभाव पड़ेगा। इस प्रकार आप बताने में समर्थ होंगे कि एक से दूसरे के मन में गुण या दोषों का संचार कैसे होता है।

आपके विचार आपके जीवन पर महान प्रभाव छोड़ते हैं, परन्तु यह प्रभाव वहीं तक समाप्त नहीं हो जाते। हमारे विचार हमारे दिमाग में कैद नहीं रहते, वरन् वे अन्य प्रभावों से और दृढ़ होकर इधर-उधर फैलते रहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि वे प्रसन्नता, असन्तोष या खिन्नता फैलाते हैं।

इमर्सन का कहना है—प्रतिभाशाली व्यक्ति जिन शुद्ध विचारों को संसार में फैलाते हैं, उनसे संसार में परिवर्तन आता है, परन्तु इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि पुस्तकों, सभाओं या बातचीत तथा गोष्ठियों आदि में प्रकट किए गए सद्विचार ही परिवर्तन लाने वाले होते हैं, वरन् हमारे अत्यन्त गुप्त विचार भी फैलते हैं तथा उनका भी समाज पर प्रभाव पड़ता है।

विचारों के अनुरूप ही प्रत्येक व्यक्ति के इर्द-गिर्द उसका अपना विशिष्ट वातावरण बना रहता है। उस वातावरण में उसकी इच्छाओं, कामनाओं तथा महत्वाकांक्षाओं की गन्ध कायम रहती है और उसकी सभी चेष्टाओं से उसके विचार झलकते हैं। इसलिए जो भी व्यक्ति उसके संपर्क में आएगा, वह उसके उद्देश्य में अवश्य ही भागीदार हो जाएगा।

आपकी वाणी का ही नहीं, आपके विचारों का भी आपके आकार-प्रकार पर प्रभाव पड़ता है। आपको अपने सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं, लोग स्वयं आपका मूल्यांकन कर लेते हैं। आप यह कहकर अपनी प्रशंसा अपने मुख से न करें कि आप जो कुछ कहते हैं, लोग आपको उसी के समान समझते हैं। वरन् सत्य तो यह है कि आपका परिचय तो आपकी हरकतों, आपकी शक्ल-सूरत और इशारों आदि से अधिक मिलता है। आप कुछ भी बोलें, परन्तु लोगों के मन पर आपके प्रति वैसी ही छाप पड़ेगी, जैसे विचार आपके मन में होंगे। आप अपनी वाणी द्वारा भी उस प्रभाव को बदल नहीं सकते।

लोग आपके विारों से आपके गुणों या अवगुणों का पता लगा लेते हैं। विचारों से उन्हें पता चलता है कि आप शक्तिशाली हैं या दुर्बल, आप उदार हैं या संकीर्ण विचारों वाले तथा आपमें मलिनता है या निर्मलता। आपकी मुखाकृति से आपके आदर्शों के गुणावगुण पर पूरा पता चल जाता है। वास्तव में किसी व्यक्ति का चेहरा देखकर दूसरों के मन पर जो छाप पड़ती है, उसे वाणी द्वारा बदलना प्रायः काफी कठिन होता है।

इमर्सन एक स्थान पर कहते हैं–आपको इतने जोर से बोलने की क्या आवश्यकता है? आप जो कुछ बोल रहे हैं, मैं उसे सुन नहीं सकता, क्योंकि मैं तो आपके आकार-प्रकार से उत्पन्न होने वाले वातावरण में भागीदार बन चुका हूं अर्थात मैं उसी के द्वारा आपको समझ रहा हूं।

दूसरों का मुख देखकर आप पर भी कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ता होगा। बस, आप उसी से अनुमान लगा सकते हैं कि आपकी किस प्रकार की मुखाकृति से दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता होगा, वे क्या सोचते होंगे।

आप चाहे व्यक्त न करें, परन्तु आप अपने मित्रों के बारे में जानते हैं कि वे आपके सम्बन्ध में क्या विचार रखते हैं। आपके प्रति वे दयालु हैं या कठोर। आप चाहे कैसी भी भूल कर बैठें, उनके मन में आपके प्रति जो क्षमा भावना है, वह कम न होगी। आपकी अन्तःचेतना में उनके अन्तःकरण की झलक दिखाई देती रहती है।

कोई मनुष्य अपनी बातों द्वारा आपके प्रति कितनी ही प्रसन्नता, मेलजोल की भावना या उदारता दिखाए, परन्तु यदि उसके मन में आपके प्रति विरोध, जलन या नीचतापूर्ण विचार है तो आपका मन उसके अन्दर की वास्तविकता का पता लगा ही लेगा कि सच्चाई क्या है, भले ही वह सद्भावना का कितना ही दिखावा करे। उसके मन में जो विचार हैं, वे उसके मुखौटे यानी उसकी बनावटी शक्ल-सूरत को व्यर्थ बना देंगे। वह आपको धोखा दे रहा है या बेवकूफ बनाने का यत्न कर रहा है, आपको इस वास्तविकता का पता लग ही जाएगा।

'क' यदि अपने मन में 'ख' के प्रत बुरे विचार रखकर, उसे अपनी बातों या चेष्टाओं द्वारा प्रभावित करने का यत्न करे तो यह 'क' की भूल होगी। 'क' भले ही यह सोचता रहे कि वह अपनी हरकतों में सफल हो रहा है, परन्तु 'ख' पर उसके ढोंग का कोई प्रभाव न होगा।

आप कहीं भी हों, घर-बाहर, दफ्तर या कारखाने में, आपके विचारों का प्रभाव दूसरों पर अवश्य पड़ता है, पर सबसे अच्छा प्रभाव सहायता, उदारता और परोपकार के विचारों का पड़ता है। आप किसी के उज्ज्वल जीवन की आलोचना करके, उसके उत्साह को मन्द करके, उसकी महत्वाकांक्षाओं को नष्ट करके एक दिन में क्या, एक बार में ही उसे इतनी हानि पहुंचा देते हैं, जितना लाभ आप उसे एक पूरे वर्ष में भी नहीं पहुंचा सकते थे।

जलन, डाह व बदले की भावना मनुष्य को दीन-हीन अवस्था में ला देती है।

वस्तुतः आप जिन व्यक्तियों को दीन-हीन अवस्था में देखते हैं, उनमें से अधिकांश किसी के व्यंग्य बाणों, किसी भयंकर आलोचना, जलन, डाह, क्रोध और बदले की भावना के शिकार हैं। यह एक ऐसा रूप है कि यदि आप सच्चाई से, दिल से विचार करें तो आपका हृदय कांप उठेगा। बहुत से लोग दूसरों की इन घृणित भावनाओं से अपने को मुक्त नहीं कर पाते, इसीलिए वे प्रत्येक कार्य में असफल होते दीख पड़ते हैं।

एक निराश, गमहूस और उदास मनुष्य जिधर भी जाता है, उधर ही निराशा और उदासी की भावना फैलाता है। उसके आसपास का वातावरण भी उसके विचारों के कारण विषाक्त हो जाता है। वह वातावरण बोझिल, घुटन भरा, उदास तथा निराशा से पूर्ण हो जाता है। इस तरह के वातावरण में सफलता या आह्लाद का जन्म नहीं हो सकता। आशा की बेल ऐसे वातावरण में कैसे पनप सकेगी? खुशियां ऐसे वातावरण से दूर ही भागती

हैं। कोई बच्चा तो क्या, बड़ा भी ऐसे माहौल में खुशी की सांस नहीं ले सकता। ऐसे वातावरण में हंसी नष्ट हो जाती है और हंसते-खिलते मुखमण्डलों पर भी उदासी की घनघोर घटाएं छा जाती हैं। जब आप इस तरह के वातावरण में रहने को विवश हो जाते हैं तो आप सोचने लगते हैं कि यह मनहूस वातावरण फैलाने वाला व्यक्ति वहां से तुरन्त चला जाय, और उसके जाते ही आपको राहत महसूस होने लगती है। जबकि कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं कि वे जैसे ही आपके सामने आते हैं तो आपके मन में घृणित विचार उठने लगते हैं। आपको कुछ ऐसा अनुभव होने लगता है कि आप दीन-हीन और नीच हैं तथा साथ ही घृणा के योग्य भी। उनके आते ही आपके मन में नीच विचारों का ज्वार-भाटा-सा फूट पड़ता है और आपको आश्चर्य होने लगता है कि आप तो ऐसे नहीं थे, एकाएक यह सब कैसे होने लगा! यह सब विचारों की शक्ति का ही प्रभाव होता है।
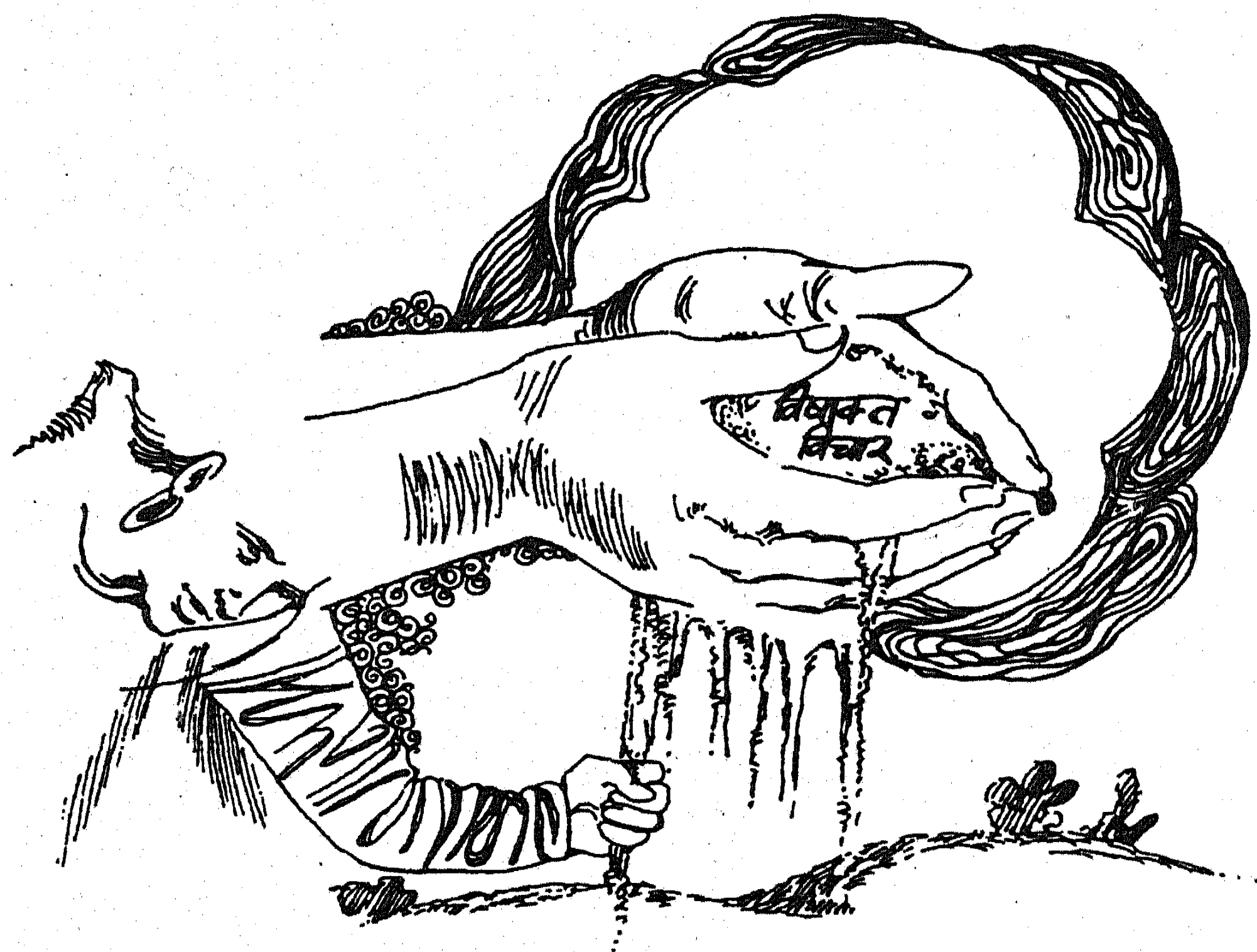
अपने विषाक्त विचारों को त्यागें ताकि
उनसे दूसरों को घुटन अनुभव न हो।

कुछ व्यक्ति जिधर भी जाते हैं एक विषाक्त वातावरण, एक विषाक्त वायु-सी छोड़ते हैं, जिससे वहां उपस्थित सभी व्यक्ति तथा सभी पदार्थ विषाक्त हो जाते हैं। उनकी गैरमौजूदगी में आप भले ही कितने ही उदार, विशालहृदय और ईमानदार थे, परन्तु उनके आते ही बिल्कुल संकुचित हो जाते हैं। उनकी मौजूदगी में आपको घुटन-सी अनुभव होती है। जब तक वे आपकी आंखों से ओझल नहीं हो जाते, आप राहत की सांस नहीं ले

सकते, उनके चले जाने के कुछ देर बाद ही आप अपनी असली हालत में आ जाते हैं। जबकि उनके रहते आपको ऐसा अनुभव होता है कि आपने आपको दबा लिया है और उनके चले जाने तक आप उस प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाते। आप सोचते हैं कि यह खतरा कब दूर होगा। आप अपने आपको उनसे सहमत करने का कितना भी यत्न करें, परन्तु आपकी अन्तरात्मा उनसे सहमत नहीं हो पाती। आपको उनसे सौजन्यपूर्ण सम्बन्ध बनाने में बहुत कठिनाई होती है। सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध आप उन लोगों से स्थापित कर ही नहीं पाते और जब तक वे चले नहीं जाते, आपको एक प्रकार की बेचैनी-सी अनुभव होती रहती है, लेकिन उनके जाते ही आपको अनुभव होता है कि मानो भारी बोझ सिर से उतर गया हो।

ठीक इसके उलटे कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जिनके आने या मिलने से आपको एक अद्भुत शक्ति-सी मिलती अनुभव होती है। उन्हें आते देखकर आपको प्रसन्नता अनुभव होने लगती है, मानो भयंकर ताप के बाद शीतल समीर का झोंका-सा आ गया हो। उनके आते ही आप अपने आपको तरो-ताजा अनुभव करते हैं। आपको उनके विचारों से उच्च कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। वे आपके सोचे हुए विचारों, सोई हुई शक्तियों को जाग्रत कर देते हैं। आपको ऐसा अनुभव होने लगता है कि आपकी बुद्धि प्रखर हो उठी है, आपकी वाणी का प्रवाह खुल गया है, आपके अन्तःकरण में कविता और संगीत का-सा माधुर्य घुल गया है।

जिस प्रकार दूसरों के व्यक्तित्व और विचारों का प्रभाव आप पर पड़ता है, उसी प्रकार आपके विचारों और व्यक्तित्व से दूसरे भी प्रभावित होते हैं। आप जैसा विश्वास करते हैं, जैसा अनुभव करते हैं, जैसी आपकी मनोवृत्ति या आपके विश्वास हैं, उन्हीं के द्वारा दूसरे लोग आपसे प्रभावित होते हैं।

जिस बात का आप सबसे अधिक चिन्तन-मनन करते हैं, जो कुछ बनने का आप यत्न करते हैं, आपकी बातों से वही कुछ प्रकट भी होता है। आप के रंग-ढंग, आपकी प्रत्येक हरकत से उसी का स्पष्टीकरण होता रहता है, वही बात जाहिर होती रहती है।

विचारों का प्रभाव छूत के रोगों के समान होता है—वे रोग जिन्हें हम संक्रामक कहते हैं। इसीलिए विचारों को भी संक्रामक कहा गया है। जो व्यक्ति आपके सम्पर्क में आते हैं, उन पर आपके विचारों का संक्रमण होता है। यदि आपका मन शान्त, सन्तुलित, स्वस्थ, सशक्त और प्रसन्न है तो आप जहां भी जाएंगे वहां प्रसन्नता फैलेगी, शान्ति का संचार होगा। इसके उलट यदि आप में निराशा है, उत्साहहीनता है, आपके हौसले पस्त हैं तो आप जहां भी जाएंगे, वहां निराशा ही फैलेगी तथा उत्साहहीनता का ही संचार होगा।

जिस मन ने आपका विश्वास कम किया है या जिसके कारण आपको ऐसा दीखता है कि असफलता आने वाली है, वह मन दूसरों में आशा और विश्वास का संचार कैसे करेगा? यदि आपके विचार नीचतापूर्ण हैं, घृणित हैं, उनमें ईर्ष्या भरी है, द्वेष है तो उनका

प्रभाव आपके परिवार तथा आपके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों पर अवश्य पड़ेगा। आप उनमें आशा, प्रेम, सहायता, उपकार और सफलता की भावनाएं कैसे भर सकेंगे?

यदि कोई व्यक्ति स्वार्थी है तो उसकी स्वार्थ-भावनाएं फैले बिना नहीं रह सकतीं। दूसरे व्यक्ति उसके कमीनेपन का मूल्यांकन, उसकी नीच भावनाओं और विचारों से ही करेंगे।

यदि कोई व्यक्ति कंजूस है तो उसके विचारों का प्रभाव छूत के रोग के समान दूसरों पर अवश्य पड़ेगा, परन्तु उसे भी उसके परिणाम भुगतने होंगे, उसे भी अपने विचारों का मूल्य अवश्य चुकाना होगा।

जो व्यक्ति नीच है, दूसरों का अहित करने वाला है या कड़वी बोली बोलता है, उसके द्वारा उदारता, प्रेम एवं सहनशीलता का संचार हो ही नहीं सकता। जो व्यक्ति सौन्दर्य को नष्ट करने, उसे कुलचने के विचार रखता हो, वह संसार की सुन्दरता बढ़ाने में क्या योगदान देगा? जो व्यक्ति कोमल विचारों का ही निर्माण नहीं कर सकता, वह ललित कलाओं का निर्माण कैसे कर पाएगा?

यदि आपके विचार नीरस हैं, उनमें कोई आकर्षण नहीं तो आप दूसरों का मनोरंजन कैसे कर सकेंगे? किसी को अपनी ओर आकर्षित कैसे कर सकेंगे?

यदि आपका मन आशा से परिपूर्ण है, उसमें महत्वाकांक्षा है, धन प्राप्त करने की इच्छा है, ऐश्वर्यशाली होने की ललक है, साथ ही दूसरों की सहायता करने, दूसरों का उपकार करने की इच्छा है तो आपके विचारों का प्रतिबिम्ब अवश्य फल देगा और लोग आपका मूल्यांकन आपके इन्हीं विचारों से करेंगे।

अब चूंकि आपने यह जान लिया है कि आपके मन में जो विचार होते हैं उन्हीं की प्रतिध्वनि दूसरे व्यक्ति तक पहुंचती है, तब यह आवश्यक हो जाता है कि आप अपने विचारों को पवित्र बनाएं और उन्हें अपने अधीन रखें। इसके लिए यह आवश्यक है कि आप अपने विचारों को उच्च बनाएं और दरिद्रता तथा मलिनतापूर्ण विचारों से बचें।

आपने यह अनुभव किया होगा कि आप अपने नौकरों या कर्मचारियों पर बेईमानी का जितना सन्देह करते हैं, वे उतने ही बेईमान बन जाते हैं। और जो नौकर ईमानदार होगा, यदि आपने उस पर भी सन्देह किया तो वह नौकरी छोड़कर चला जाएगा। वस्तुतः उन पर सन्देह करके आप ही उन्हें बेईमान बनने की प्रेरणा देते हैं।

जव तक किसी में बेईमानी का पुष्ट प्रमाण न मिल जाय, तब तक उस पर सन्देह करते रहना एक प्रकार की निर्दयता नहीं तो और क्या है? वस्तुतः यह आपके अपने मानसिक असन्तुलन का ही प्रमाण है। आपको अपनी मानसिक स्थिति को सन्तुलित बनाना होगा और यह तभी होगा, जबकि दूसरे व्यक्ति के ईमानदार रहते हुए आप उस पर बेईमानी का सन्देह न करें। वस्तुतः दूसरों के प्रति सन्देह के विचार पालना ही अपने जीवन को व्यथापूर्ण बनाना है।

बहुत से लोगों की आदत होती है कि वे प्रत्येक बात में भय का प्रचार करते हैं। उन्हें

हर बात में भय प्रतीत होता है। इसका फल यह होता है कि वे जहां भी जाते हैं, असफलता और निराशा के विचार ही अपने साथ फैलाते रहते हैं। इस प्रकार वे अपनी प्रसन्नता को तो नष्ट करते ही हैं, दूसरों की सफलता और आत्मविश्वास को भी भारी ठेस पहुंचाते हैं।

वस्तुतः बात यह है कि जब आप दूसरों के प्रति विरोधी और अशुद्ध विचार रखते हैं तो आपके मन में भी कुछ गड़बड़ होती है। अतः दूसरों के प्रति वैर-विरोध, ईर्ष्या और क्रोध के विचार आने पर मन को समझाने का यत्न कीजिए। उसे उन अशुद्ध विचारों की ओर जाने से रोकिए। उसे कहिए कि तू इतना गन्दा काम क्यों करता है?

यदि आप कोई अच्छा काम नहीं कर सकते तो कम-से-कम गन्दे विचारों की दूषित बेल तो न बोइए। प्रयत्न कीजिए कि आपके मन में दूसरों के प्रति दया, उदारता, सहायता, सेवा और स्नेहपूर्ण विचारों का ही उद्गम और पोषण हो। किसी के मन को दुर्बल मत बनाइए। किसी के मन को निष्क्रिय न बनाइए; किसी को दीन-हीन मत बनाइए, न उनके प्रति ऐसे विचार अपने मन में आने दीजिए। ऐसा होने पर आप जहां भी जाएंगे, उधर ही प्रसन्नता का प्रसार होगा, लोगों के दुख मिटेंगे, निराशा दूर होगी, उनमें उत्साह, उल्लास और कर्मठता का संचार होगा।

आप प्रभु से प्रार्थना करें *'असतो मा सद्गमय'*, अर्थात हे प्रभु! हमें असत्य से सत्य मार्ग की ओर अग्रसर होना है, हमें उधर ही ले चल। आपको चाहिए कि आप ऐसे व्यक्ति बनें जो सफलता के प्रतिबिम्ब हैं, जो दूसरों के सहायक हैं, जो दूसरों को ऊंचा उठाने का यत्न करते हैं, जो दूसरों की सहायता करते हैं, जो दूसरों को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। वस्तुतः वही सच्चे सहायक हैं, वही दूसरों के बोझ को हल्का भी कर सकते हैं।

प्रयत्न कीजिए कि आपसे आशा की किरणें फूटें, उदारता की सुगन्ध फैले, अनुत्साही जनों में उत्साह का संचार हो। आप सदा ही स्नेह व प्रेम की मन्द समीर फैलाएं, जिससे लोगों के जीवन में बहार आ जाय।

अवसर को पहचानना सीखें

जिस व्यक्ति में अवसर को पहचानकर उसे पकड़ लेने की योग्यता होती है, वही जीवन में सफल हो सकता है। हाथ आए अवसर को खोने वाला सदैव हाथ मलता रह जाता है। परन्तु अवसर भी उसी को प्राप्त होता है जो योग्यतापूर्वक उपयुक्त परिश्रम एवं त्याग करते हुए उचित मौके की तलाश में रहता है।

समय, अवसर या मौका समानार्थक ही हैं। कहते हैं समय या अवसर के माथे पर बाल हैं और मुखड़ा उन बालों से ढका हुआ है तथा उसके सिर के पीछे का भाग गंजा है। मुंह ढका होने से उसे कोई पहचान नहीं सकता। कहा गया है कि अवसर का सिर पीछे से गंजा होता है। इसका भाव यह है कि अवसर मिलते ही उसे सामने से पकड़ लो। यदि वह आगे निकल गया और आप चूक गए तो आपके हाथ कुछ भी नहीं आएगा, क्योंकि उसके सिर का पिछला भाग गंजा है, अर्थात गया वक्त फिर हाथ नहीं आता।

यह एक सन्देश है, आपके लिए एक नई प्रेरणा है।

अवसर के सम्बन्ध में एक यूनानी कथा बड़ी प्रचलित है। किसी समय यूनान संसार के अत्यन्त सभ्य और समृद्धतम देशों में था। वहां की कला बहुत ही कमनीय और महान थी। कहते हैं कि सिकन्दर के समकालीन मूर्तिकार लिसिपस ने अवसर की मूर्ति बनाई थी। वह मूर्ति तो आज एक स्वप्न है, परन्तु उसका चित्र केलिस्ट्रूमरा नामक व्यक्ति ने देखा था, जिसने उसका वर्णन यों किया है—

समय, अवसर अथवा मौका एक सुन्दर युवक है जिसका शरीर यौवन के वसन्त से सदा दैदीप्यमान है। उसके मुख की आभा दर्शनीय है। उसके केश हवा में लहराते हैं। उसका उज्ज्वल मस्तक गरिमापूर्ण है। उसके गाल जवानी की अरुणाई लिए हुए हैं। उसके पैरों में पंख लगे हुए हैं, जिससे पता चलता है कि वह बहुत तेजी से चलता या उड़ता है। वह उड़ने की मुद्रा में एक स्थान पर खड़ा है। उसके सुन्दर केश माथे पर लहराते हैं, परन्तु सिर के पिछले भाग पर छोटे-छोटे रोएं-से हैं। जैसा हमने ऊपर कहा, उसके गुजर जाने पर उसे पकड़ पाना सर्वथा असम्भव है।

उस मूर्ति में एक उस्तरा भी दिखाया गया है। कवि उस मूर्ति से पूछता है—
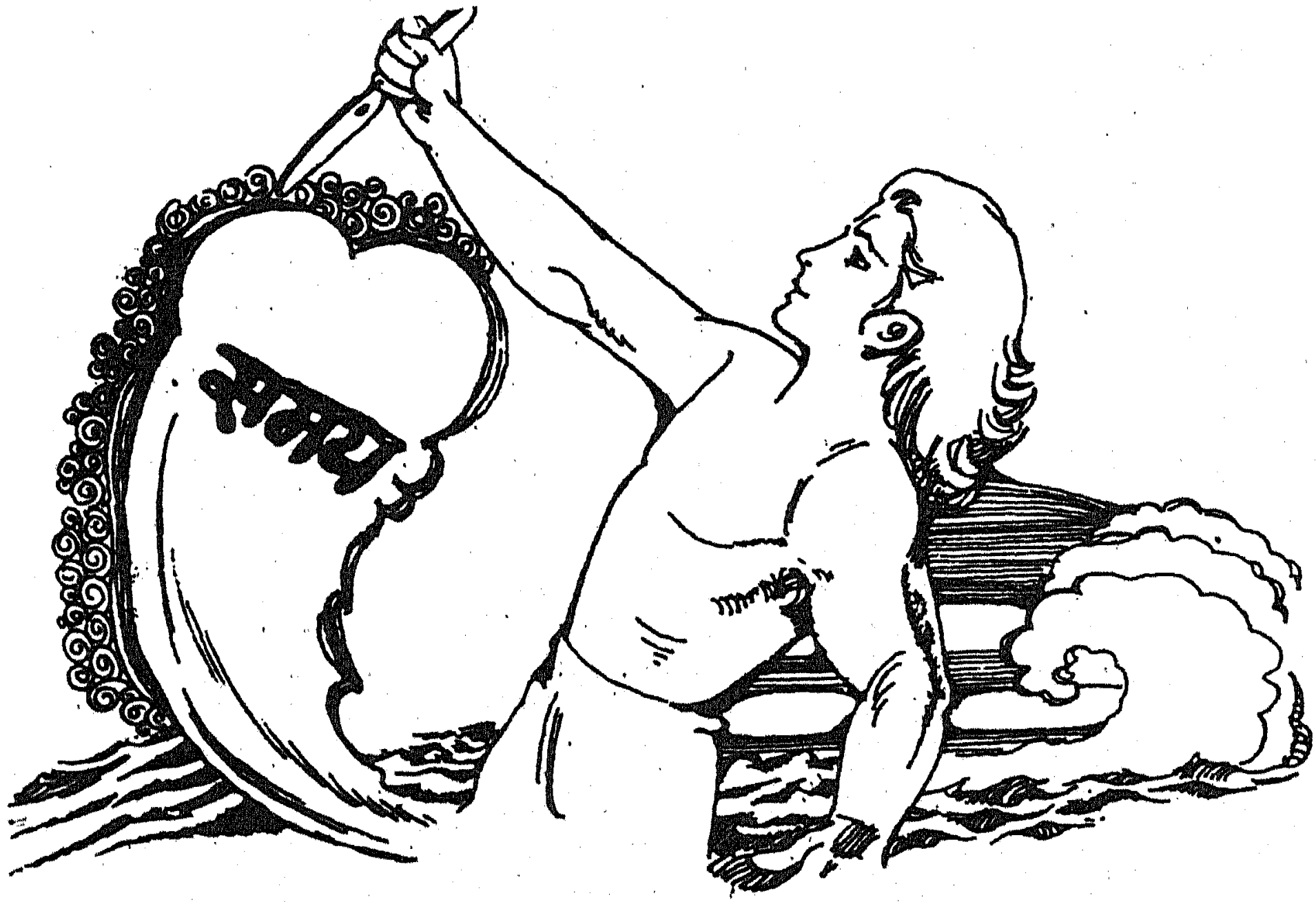
समय की गति तेज है, यदि आप चूक गए और वह आगे निकल गया तो आपके हाथ कुछ नहीं आएगा।

- तू क्या है?

  अवसर, समय। मैं सबको अपने वश में कर लेता हूं।
- और तुम पैरों के बल क्यों खड़े हो?

  चूंकि मैं गतिवान हूं। सर्वदा गति में रहता हूं।
- और तुम्हारे पैरों में दोहरे पंख कैसे लगे हैं?

  मैं हवा की तरह उड़ता हूं।
- और यह उस्तरा तुमने क्यों पकड़ रखा है?

  ताकि दुनिया को यह पता चल जाय कि मैं किसी धार या पैनी वस्तु से भी अधिक पैना हूं।
- ये बाल तुम्हारे मुख पर क्यों फैल रहे हैं?

  जो चाहे मुझे पकड़ ले।
- और यह तुम्हारा सिर पीछे से गंजा क्यों है?

  मैं जब एक बार गुजर जाता हूं तो फिर कोई भी शक्ति मुझे पकड़ नहीं सकती।
- और तुम्हारा यह कलात्मक रूप क्या है?

  ये चेतावनी है कि जो चूकता है, वह पछताता है। अतः हे अनजान व्यक्ति! मुझे पहचान।

मैथ्यू ने कहा है कि किसी सीमा तक व्यक्ति परिस्थितियों का दास है, उनका बच्चा

है, उनके दश में है। किसी भी व्यक्ति की सफलता बहुत महत्व की चीज है, परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण एक और बात है और वह है परिस्थितियां। इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। परिस्थितियों से लाभ उठाना व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर करता है। इसे और भी स्पष्ट जानने के लिए एक घटना यहां दी जा रही है।

यह घटना जार्ज तृतीय के समय की है। बात यों हुई कि एक डॉक्टर किसी काम से राजमहल में गया। राजा उस समय अचेतावस्था में पड़ा था। मन्त्री के कहने पर डॉक्टर ने राजा को देखा और उसका थोड़ा-सा खून निकाल दिया। इससे राजा की मूर्च्छा टूट गई, परन्तु राजा बड़ा क्रोधी और क्रूर स्वभाव का था। उसने जब खून देखा तो डॉक्टर पर बिगड़ने को ही था कि डॉक्टर ने बड़ी चतुराई से उसे बातों में लगा लिया और उसे हंसाना शुरू कर दिया। इससे राजा का क्रोध ही शान्त नहीं हुआ, बल्कि वह उससे बहुत प्रसन्न भी हुआ और उसे शाही डॉक्टर बना लिया। बस, डॉक्टर की किस्मत खुल गई।

डॉक्टर तो दुनिया में बहुत हैं, पर उस डॉक्टर को अवसर मिला और उसने उसका लाभ उठाया। इससे उस डॉक्टर में दूसरों से अन्तर आ गया। आपको भी ऐसे अवसर मिलते हैं, पर आपके भीतर अवसर से लाभ उठाने की योग्यता भी होनी चाहिए। डॉक्टर की शिक्षा-दीक्षा ही उस समय काम आई। यदि वह चिकित्सा-विज्ञान न जानता या उसमें पारंगत न होता तो उसे धक्के मारकर बाहर निकाल दिया गया होता और यह सुअवसर बेकार सिद्ध होता।

नार्वे के एक वायलिन-वादक की कथा भी बहुत प्रसिद्ध है, परन्तु यह शायद कोई नहीं जानता कि उसने कितने वर्ष की लम्बी साधना की होगी। उसे अपनी साधना में यह भी न पता रहता कि दिन है या रात और उसने खाना भी खाया है या नहीं। वर्षों वह अज्ञात रहा, परन्तु अवसर उसे यों मिला—

एक बार एक बड़ी मशहूर गायिका मालब्रेन उसकी खिड़की के नीचे से गुजर रही थी और वह युवक उस समय वायलिन का अभ्यास कर रहा था। गायिका को लगा कि वायलिन के तारों से निकला ऐसा हृदयस्पर्शी संगीत तो उसने आज तक नहीं सुना। गायिका ने आस-पड़ोस से उस वायलिन-वादक का नाम पूछ लिया। एक दिन मालब्रेन के संगीत का कार्यक्रम था। हॉल खचाखच भरा हुआ था, परन्तु आयोजकों से गायिका का किसी बात पर झगड़ा हो गया और गायिका ने गाने से इनकार कर दिया। जनता उतावली थी। आयोजक ओलबुल नामक वायलिन-वादक को वहां पकड़ लाए और उसे वहां वायलिन बजाना पड़ा। ओलबुल ने एक घण्टे तक वायलिन बजाया और ऐसा समां बांधा कि एक घण्टे बाद वह संसार के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञों की श्रेणी में आ गया। अवसर उसके द्वार पर आया और उसने भरपूर गरमजोशी से उसका स्वागत किया।

एण्टोनियो का नाम भी अनेक व्यक्तियों ने सुना होगा। वह बहुत ही निर्धन लड़का

था। वह एक आदमी के घर बर्तन मांजने का काम करता था और जब कभी समय मिलता तो वह पत्थर काटने वालों के पास चला जाता और उनके पास मजदूरी करता। पत्थर काटने के बहुत थोड़े पैसे मिलते, पर उसमें एक विशेषता यह थी कि वह जो भी काम करता, बड़े ध्यान से करता। वह पत्थर काटने का काम भी पूरी तन्मयता, रुचि और लगन से करता।

एक दिन उसके मालिक ने अपने नगर के कलाकारों, व्यापारियों और अन्य मित्रों को अपने घर पर खाने का निमन्त्रण दिया। बड़े खानसामा ने खाने की टेबल पर बीच में रखने के लिए एक सुन्दर चीज बनाई, शायद बड़ा केक था। अचानक रखते समय उसका एक हिस्सा टूट गया। उधर मेहमानों के आने का समय हो रहा था और इधर मेजबान परेशान था। उस वक्त उस बर्तन मांजने वाले लड़के ने मालिक को भरोसा दिलाया कि वह सब ठीक कर देगा। उसने मक्खन का एक बड़ा-सा टुकड़ा लेकर उससे शेर का मुंह बना दिया। शेर का मुंह इतना सुन्दर था कि मालिक बहुत प्रसन्न हुआ। इतने में मेहमान आ गए और जब वे खाने की मेज पर बैठे तो शेर का मुंह देखकर आश्चर्यचकित रह गए। इतना सुन्दर और ऐसा कलापूर्ण!

उनमें से एक ने पूछा कि यह किस कलाकार ने बनाया है, तब बताया गया कि इसे तो बर्तन मांजने वाले लड़के ने बनाया है। उसके बाद उसके मालिक ने उसे कला की उच्च शिक्षा दी और वह विश्व के सुप्रसिद्ध कलाकारों में गिना जाने लगा। उसका पूरा नाम एण्टोनियो कानोवा था। उसने अपने देश इटली का नाम रोशन किया और विश्व-प्रसिद्ध वीनस की मूर्ति का निर्माण किया। इस मूर्तिकार का नाम सदा-सदा के लिए अमर है और कला के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा।

यदि वह बर्तन मांजने वाला लड़का इस आने वाले अवसर के लिए तैयार न होता तो जिन्दगी भर बर्तन ही मांजता रहता और उसे कोई भी न जान पाता।

संसार में ऐसे अनेक व्यक्तियों के उदाहरण हैं, जिन्होंने अवसर को पहचाना और मौका चूकने न दिया। इनमें ही हावर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सार्जेण्ट का नाम भी आता है। उन्होंने अपने जीवन का वर्णन स्वयं लिखा है।

वह जब विद्यार्थी थे तो उनकी इच्छा कुछ आविष्कार करने की थी। अतः जब वह हार्वर्ड विश्वविद्यालय में व्यायामशाला के डायरेक्टर बने तो वहां भी उनके मन में कुछ करने की आशा प्रज्वलित थी। वहां व्यायामशाला में बड़े-बड़े बेढंगे औजार और व्यायाम करने की चीजें थीं। प्रोफेसर सार्जेण्ट ने उन्हें ठीक करने का बीड़ा उठाया; कुछ में सुधार किया और कुछ नए यन्त्रों-उपकरणों का आविष्कार किया। व्यायामशाला के डायरेक्टर के पद पर उन्हें अभी एक ही वर्ष हुआ था कि व्यायाम-उपकरणों की एक प्रदर्शनी हुई। उसमें प्रो. सार्जेण्ट द्वारा तैयार किए गए उपकरणों को बहुत प्रशंसा मिली। उसे देखने वालों में अन्य कई विश्वविद्यालयों के अधिकारी भी थे। वे प्रो. सार्जेण्ट के आविष्कारों

से इतना अधिक प्रभावित हुए कि उन्हें येल विश्वविद्यालय में 60 डॉलर साप्ताहिक वेतन पर रख लिया गया। यह बात सन् 1871 की है। कहां पांच डॉलर प्रति सप्ताह लेने वाला और कहां साठ डॉलर प्रति सप्ताह, परन्तु आप अनुमान लगा सकते हैं कि प्रो. सार्जेण्ट ने किस समय से और किस लगन से अवसर को खोजा और उसके लिए तैयारी की। यदि वे अपने विद्यार्थी जीवन से ही इसकी तैयारी न करते तो उन्हें कभी भी यह अवसर प्राप्त न होता। आज के युवक तो कभी भी इतने कम वेतन पर तैयार न होंगे। प्रो. सार्जेण्ट का कहना है कि वेतन से कुछ अन्तर नहीं पड़ता। काम को पैसों से नहीं तोलना चाहिए। देखना यह चाहिए कि अवसर क्या है और कैसा है। आज का युवक पहले ही सोचने लगता है कि मेरा मूल्य इससे अधिक है और वह कम वेतन पर काम करने को तैयार नहीं होता। प्रो. सार्जेण्ट का कहना है कि मेरे पांच डॉलर के वेतन ने ही साठ डॉलर का मार्ग खोला।

जीवन में आने वाले अवसरों की ताक में रहने वाला व्यक्ति अवश्य ही एक-न-एक दिन उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है। विशेषतः युवकों को तो चाहिए कि वे मौका खोजें और उसे प्राप्त करने की जी-जान से कोशिश करें। मौके की तलाश में रहने वाले एक युवक की कथा पढ़कर आपको ज्ञात होगा कि ऐसे लोग कैसे काम करते हैं और किस प्रकार उन्नति के सोपान पर चढ़ते हैं।

जॉन ग्राण्ट नामक एक युवक लोहे की रेतियों की दुकान पर काम करता था। जब वह दुकान पर काम कर रहा था तो उसके मालिकों ने कहा कि तुम दुकान का काम अच्छी तरह समझ लो। जब तुम कुछ जान जाओगे तो तुम्हें किसी उचित काम पर लगा दिया जाएगा, अभी तो तुम जो काम कर रहे हो वह बहुत साधारण है, योग्य होने पर तुम्हारा उचित मूल्य दिया जाएगा।

उस कम्पनी का व्यापार विदेशों में भी था। फ्रांस और जर्मनी से भी माल आता था। उनके बिल आदि भी वहीं की भाषाओं में होते थे। कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर फ्रेंच और जर्मन भाषाएं जानता था। अतः वही इन बिलों की जांच-पड़ताल करता था। ग्राण्ट ने देखा तो वह इस काम की ओर आकृष्ट हुआ। उसने इस रहस्य का पता लगा लिया कि इस काम के लिए फ्रेंच और जर्मन भाषाओं की जानकारी आवश्यक है। उसने इन भाषाओं का अभ्यास किया और कुछ समय बाद वह इस काम में पूरी तरह सिद्धहस्त हो गया।

एक दिन मैनेजिंग डायरेक्टर किसी अन्य कार्य में व्यस्त था और उधर विदेशी माल के बिलों का ढेर लगा था। मालिक परेशान था कि क्या किया जाय, क्योंकि दोनों ही काम अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। ग्राण्ट ने मालिक की परेशानी देखी और वह उनसे जाकर बोला—महोदय! यदि आप कहें तो इन बिलों की जांच-पड़ताल मैं कर दूं? मालिक स्तब्ध! उसने बिलों का ढेर ग्राण्ट की ओर सरका दिया। ग्राण्ट ने बिलों की जांच-पड़ताल इतने अच्छे ढंग से की कि आगे उसे यही काम दिया जाने लगा।

एक महीने तक ग्राण्ट यह काम करता रहा। एक दिन उसे डायरेक्टरों की मीटिंग

में बुलाया गया। उनमें से एक सदस्य बोला—"कम्पनी के चालीस साल के इतिहास में तुम मुझे एकमात्र ऐसे युवक मिले हो, जिसने अवसर को पहचाना और इस कार्य में सुधार भी किया। हमारी इच्छा है कि तुम यह कार्य संभालो और विदेशी माल वाला विभाग तुम्हारे सुपुर्द किया जाता है। यह कार्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। कम्पनी की साख और बड़ा मुनाफा इसी विभाग से होता है। अब तक के लड़कों में तुम ही इस योग्य निकले हो, जिसने इस महत्वपूर्ण कार्य को समझा है।" फौरन ही ग्राण्ट की तनख्वाह दस डॉलर प्रतिमाह कर दी गई, पांच साल में वह अठारह सौ डॉलर वेतन पाने लगा।

उस कम्पनी का नियम था कि जो भी सदस्य तीस वर्ष तक एक कम्पनी में नौकरी कर लेता था, उसे ही डायरेक्टर होने का सौभाग्य प्राप्त होता था। ग्राण्ट ने यह काम संभाला और वह भी इस उच्च पद पर जा पहुंचा।

यह सब कहने का अर्थ यह है कि अवसर उसी को प्राप्त होता है जो आरम्भ में कुछ त्याग करता है और योग्यतापूर्वक कार्य करते हुए मौका देखता रहता है।

अनेक उद्योगपतियों का कहना है कि ठीक काम करने वाला युवक सदा ही अपने स्वामी का कृपापात्र बन जाता है। उद्योगपति यह नहीं चाहते कि वे अपने काम करने वालों पर सदा शक की आंख गड़ाए रहें। यदि हर काम करने वाले के काम की सदा जांच ही करनी पड़े तो इसका क्या लाभ हुआ? इससे तो अच्छा है कि हर काम वह स्वयं करे।

अवसर उसी को प्राप्त होता है जो योग्यतापूर्वक कार्य करते हुए मौका देखता रहता है।

कुछ काम ऐसे भी होते हैं जिनमें बहुत कम पैसे मिलते हैं। साथ ही मेहनत भी काफी करनी पड़ती है। जॉर्ज बारह वर्ष का था और उसे केवल पचास सेण्ट प्रति सप्ताह वेतन मिलता था। मालिक उसे खाना-कपड़ा भी देता था। इस प्रकार जॉर्ज पूरे पचास सेण्ट बचा लेता था। साल भर में उसे पच्चीस डॉलर बच जाते। इसके साथ ही वह इतना काम करता कि जितना अधिक-से-अधिक वह कर सकता था। जॉर्ज का कहना था—मैं केवल उतना ही काम नहीं करता था जितना मुझे सौंपा जाता था; मैं तो उतना काम करता था जितना मैं कर सकता था और पूरी तरह से अपने को जी-जान से उसमें खपा देता था। मेरा विचार यह रहता था कि जितना उपयोगी मेरा मालिक मुझे समझे, मैं अपने आपको उससे अधिक उपयोगी सिद्ध करूंगा। मुझे किसी भी काम को करने में संकोच न था। मैं झाड़ू भी लगाता, सफाई भी करता, बर्तन भी मांजता और वे सभी काम करता जिन्हें आज के युवक करने से कतराते हैं और अपनी शान के विरुद्ध समझते हैं। मैं दिन में चपरासी का काम करता और रात को किताबों की दुकान पर काम करता। मैं सदा यह सीखने का यत्न करता था कि पुस्तकों के कार्य में किन-किन कामों और रहस्यों के सीखने की आवश्यकता है। मैं यह समझता था कि भले ही मैं जो काम करता हूं, वह बहुत छोटा है, परन्तु मेरी आशा-आकांक्षा सदा ऊंची ही रहती थी।

मैं एक नाट्यशाला के पास ही रहता था और नाटकों में काम करने वालों से मेरा परिचय भी था। चाहता तो मुफ्त में नाटक देख सकता था, परन्तु मैंने ऐसा नहीं किया। मैं मुफ्त के प्रलोभन में नहीं पड़ा और न मैंने अपना समय ही बरबाद किया। आज के युवक इस प्रलोभन में पड़ जाते हैं और अपना समय नष्ट करते हैं और अपने सम्मान को कम कर देते हैं। मैं जो भी काम करता था, पूरी रुचि या दिलचस्पी से करता। इससे मुझे आनन्द मिलता था।

कुछ समय बाद मैं एक अखबार के दफ्तर में काम करने लगा। मेरी इच्छा हुई कि एक दिन मैं अवश्य ही इस पत्र का मालिक बनूंगा और वस्तुतः वह दिन आया जब मैंने उस पत्र को खरीद लिया और पूरा पेमेण्ट करके उसका प्रबन्ध संभाल लिया।

जॉर्ज ने नौकरी में लगते ही पहले दिन यह निश्चय किया था कि मैं एक दिन प्रकाशन-व्यवसाय में लगूंगा और अपनी वृत्तियों को इधर-उधर हटाने वाले कामों की ओर ध्यान न दूंगा।

जॉर्ज युवक था, दृढ़निश्चयी था, अतः वह जहां भी रहा, अपने कार्य और मालिक के प्रति सच्चा रहा। उसने सदा अवसर और मौका ढूंढ़ा और तब तक पैसा बचाता रहा जब तक अपने ध्येय में सफल नहीं हो गया। बाद में उसने विशाल धनराशि अर्जित की तथा उसका बुद्धिमत्तापूर्वक उपयोग किया और अपने जीवन को उपयोगी बनाया। इन सब बातों का उसके उस प्रारम्भिक जीवन से गहरा सम्बन्ध था, जब वह अपने आपको अवसर प्राप्ति के लिए तैयार कर रहा था।

न्यूयार्क में प्रतिदिन लाखों यात्रियों को वहां के परिवहन साधनों का उपयोग करना होता है। परिवहन व्यवस्था के अध्यक्ष हर्बर्ट नाम के एक व्यक्ति थे। सारी व्यवस्था का उत्तरदायित्व उनके ही कन्धों पर था। कुछ अरसे बाद उनके साथियों ने उन्हें एक लाख डॉलर का वेलेंटाइन पुरस्कार दिया। नगरवासियों को जब इस बात का पहली बार पता चला तो वह निश्चित रूप से आश्चर्यचकित रह गए कि इतनी व्यस्त सड़कों पर न तो अधिक भीड़-भाड़ होती है और न ही भयंकर दुर्घटनाएं। जान-माल की हिफाजत के लिए अवश्य ही कोई बहुत चतुर व्यक्ति देखभाल करता है। उच्च अधिकारी और विशेषज्ञ लोग तो पहले से जानते थे, पर जनता को यह उसी दिन पता चला कि इस व्यवस्था की देखभाल करने वाला व्यक्ति बहुत ही चौकन्ना और शान्त है, परन्तु बहुत ही शक्तिशाली भी है। उसमें एक महान सेनापति की योग्यताएं हैं। वह परिवहन से यात्रा करने वालों का स्वामी ही नहीं, वरन् उनका सखा और सच्चा मित्र भी है।

याद रहे कि तीस साल पहले यही तेरह वर्षीय हर्बर्ट बर्फ की गाड़ियां लादने वाले मजदूरों में भर्ती हुआ था। भरी जवानी में उसने किराए पर गाड़ी खींचने का काम भी किया। आरम्भ में वह सड़कों के निर्माण के लिए रोड़ी लादने का कार्य भी करता था, परन्तु उसने आरम्भ में ही यह निश्चय कर लिया था कि मैं इस परिवहन व्यवस्था का प्रधान अवश्य ही बनूंगा। कुछ दिन बाद उसे एक डॉलर प्रतिदिन के हिसाब से रास्ते के काम आने वाले स्लीपरों की देखभाल का कार्य सौंपा गया। तब उसने अनुभव किया कि वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है।

कुछ समय बाद उसे स्विचमैन का काम मिला। उस स्टेशन पर अन्य कर्मचारी भी थे। स्विचमैन का काम हर समय का नहीं होता। उसने अपने अन्य सहयोगियों से कहा कि यदि किसी को उसकी सहायता (काम में) की आवश्यकता हो तो वह उसे बुला ले। उसका यह कार्य अपने निश्चय के अनुसार ही था, क्योंकि उसकी इच्छा थी कि परिवहन से सम्बन्धित सभी काम वह स्वयं सीख सके। उसने बताया कि कई बार मैं इस छोटे-से स्टेशन पर रात के 12-12 बजे तक कार्य करता रहता था। मैं गाड़ियों, रसीदों, खर्चे, इंजनों की खरीद, ड्यूटी (शुल्क) तथा सब प्रकार के माल-भाड़े और यात्रियों की गिनती का हिसाब रखता था। इस प्रकार मुझे परिवहन से सम्बन्धित सभी छोटी-मोटी बातों का सारा ज्ञान हो गया। इस तरह की जानकारी बहुत कम अधिकारियों को होती है। मैंने परिवहन सम्बन्धी सभी शाखाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया।

स्विचमैन के रूप में जब कार्य समाप्त हो गया तो उन्होंने मुझे कार्यमुक्त कर दिया। यह बात मुझे बुरी लगी और मैं एक अधिकारी के पास गया और उसने मुझे एक दूसरे स्थान पर गाड़ियों में झाड़ू लगाने का काम दिया। मैंने वह काम भी स्वीकार कर लिया और इस प्रकार थोड़े-बहुत बचे हुए विभाग का काम भी सीख लिया। कुछ ही दिन बाद मुझे बहुत प्रातःकाल आने वाली मालगाड़ी के ब्रेकवान का काम सौंपा गया। उस समय

मैंने अनुभव किया कि मेरी भी कुछ कीमत है। इस सारे काम को जान लेने पर भी मुझे 40 डॉलर प्रतिमाह वेतन मिलता था। 18 डॉलर मेरे भोजन में खर्च होता और 20 डॉलर मैं अपनी मां-बहन के खर्च के लिए भेज देता।

कुछ दिनों में सभी परिवहन साथियों को मेरी महत्वाकांक्षा का पता चला कि मैं इस परिवहन व्यवस्था का मैनेजिंग डायरेक्टर बनना चाहता हूं। सब लोग उसी दिन से मुझे प्रेसीडेण्ट हर्बर्ट के नाम से पुकारने लगे।

लोगों का कहना था कि तुम परिवहन व्यवस्था के कर्मचारियों की तरह कण्डक्टर बन सकते हो, इससे ऊंचे पद पर शायद ही कभी पहुंच सको। एक दिन मैं कण्डक्टर भी बन गया और योग्यता के कारण मैं सीनियर ब्रेकमैन बना दिया गया। एक दिन एक दुर्घटना हो गई, जिसके लिए इंजीनियर और मुझे दोनों को ही नौकरी से हटा दिया गया। मैंने अपनी भूल स्वीकार कर ली तो मुझे नीचे के पद पर रख लिया गया। शीघ्र ही परिवहन व्यवस्था के मालिक बदल गए। नए प्रबन्धकों को शीघ्र ही ज्ञान हो गया कि हर्बर्ट असाधारण योग्यता वाला व्यक्ति है।

कम्पनी फिर किसी दूसरे मालिक के पास चली गई। इस बार परिवहन व्यवस्था के लिए जो मैनेजर रखा गया था, वह इस काम से सर्वथा अनभिज्ञ था। अतः प्रबन्धक को हर्बर्ट पर ही निर्भर करना पड़ा। कुछ ही दिनों में नए मालिकों को यह अनुभव हो गया कि हर्बर्ट ही इस कम्पनी में सबसे अधिक उपयोगी व्यक्ति है।

मिस्टर हर्बर्ट कहते हैं कि जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य सही है, जिसमें कार्य करने की क्षमता और ईमानदारी है, उसे परिस्थितियां दबाकर नहीं रख सकतीं। रुकावटें थोड़ी देर के लिए आती अवश्य हैं, परन्तु वे क्षणिक होती हैं, उसे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। ऐसे व्यक्तियों को कोई रोकना भी नहीं चाहता। असलियत तो यह है कि ऐसे आदमी की खोज रहती है। कम्पनियां ऐसे उपयोगी आदमी को ढूंढ़ निकालती हैं। आज की दुनिया में अच्छे व्यक्तियों की बहुत बड़ी भूख है, लालसा है, हर कोई उन्हें चाहता है। हर कोई ऐसे शक्तिशाली व्यक्ति को चाहता है जो सारी जिम्मेदारियां संभाल ले, परन्तु ऐसे आदमी बहुत थोड़े होते हैं, उन्हें हासिल करने वालों में जबरदस्त होड़ लगी रहती है।

निर्धनता से छुटकारा कैसे पाएं

गरीबी का सम्बंध पूर्वजन्म के कर्मों से नहीं, वरन् मनुष्य के अपने दुर्गुणों से है। इसका निराकरण भी उसके अपने ही हाथ में है। अतः निराशा को त्यागकर उद्यम, परिश्रम और साहस के शस्त्रों से इसका डटकर मुकाबला करें और निर्धनता के सागर से उबरकर जीवन को समृद्ध और सुखी बनाएं।

मानव-जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप वस्तुतः निर्धनता या दरिद्रता है। मानव सभ्यता के नाम पर यह एक काला धब्बा है। निर्धन व्यक्ति कहीं का नहीं होता—घर का, न घाट का। आपको ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जाएंगे जो प्रतिभावान तो हैं, परन्तु निर्धनता में ऐसे जकड़े हैं कि उनकी क्षमताओं का विकास ही नहीं हो पाता। वस्तुतः निर्धनता व्यक्ति के विकास का मार्ग तो अवरुद्ध करती ही है, साथ ही उसमें अपराधी वृत्तियां भी पैदा कर देती है। दरिद्रता एक ऐसा भयंकर महारोग है जो तन-मन दोनों को भस्म कर देता है। निर्धन व्यक्ति दयनीय और हास्यास्पद हो जाता है। सच्चाई तो यह है कि निर्धनता मानव-जीवन की असह्य कठिनाइयों की मूर्त गाथा है।

प्रभु ने इस संसार की रचना सुख और आनन्द के लिए की है, परन्तु यह दुर्भाग्य है कि यहां असंख्य व्यक्ति ऐसे भी हैं जो कीड़े-मकोड़ों की तरह जीवन बिताते हैं। निश्चय ही इन लोगों ने कोई अपराध किया होगा। क्या वज़ह है कि ये लोग सुख-सुविधाओं का उपभोग नहीं कर पाते? इसका उत्तर खोज लेना कठिन नहीं, परन्तु उत्तर की खोज से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि निर्धनता दैवी देन नहीं, क्योंकि इतनी सुन्दर सृष्टि का निर्माण करने वाली शक्ति निर्धनता जैसी गन्दी और कुरूप वस्तु को क्यों जन्म देने लगी?

यह सोचने की बात है कि यदि यही बात है तो यह गरीबी का घुन भगवान की इस सर्वश्रेष्ठ रचना को कैसे लगा? इसका उत्तर अन्ततः यही है कि यह सब कमजोरी मनुष्य की अपनी है। गरीबी का सम्बन्ध पूर्वजन्म से नहीं, वरन् मनुष्य के अपने दुर्गुणों से है। प्रभु ने गरीबी नहीं थोपी, इसका प्रादुर्भाव मनुष्य की अपनी हीनता से हुआ है। इसका अर्थ स्पष्ट है, इसका निराकरण भी मनुष्य के अपने हाथ में है तो इन कमज़ोरियों को दूर करना भी उसके अपने हाथ में ही है। वह अपनी शक्ति से उसे समाप्त भी कर सकता है।

अपने मन से निर्धनता की भावना को त्यागें। ये एक ऐसा भयंकर महारोग है जो तन-मन दोनों को भस्म कर देता है।

संसार में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो निर्धनता को वरदान ही मानते हैं, अभिशाप नहीं। उन्हें निर्धनता में ही सुख मिलता है। वे कहते हैं कि मनुष्य निन्यानवें के फेर से बचकर चिन्तामुक्त जीवन जी सकता है। वे लोग फुटपाथ पर ही जीवन बिता देते हैं और ऐसी स्थिति में ही अपने को स्वतन्त्र मानते हैं, लेकिन इस बात पर विचार किया जाय तो यह एक भ्रम है, स्वयं को धोखा देना है। सोचने की बात है कि अभाव, गरीबी और हीनता से सुख और शान्ति कैसे प्राप्त हो सकती है? सर्दी में बिना कपड़ों के ठिठुरता हुआ आदमी सुखी नहीं हो सकता। बिना आसरे के बरसात में भीगते हुए आदमी को कौन सुखी कहेगा? गर्मियों की चिलचिलाती धूप और जलती लू में किसे सुख मिलेगा? भूखे पेट किसे नींद आ सकती है? यह अभाव सुख नहीं है। कठिनाई का जीवन कोई विरला साधु-संन्यासी ही पसन्द करेगा, क्योंकि उसके जीवन का ध्येय ही दूसरा होता है। वे सुख-सुविधाओं का त्याग कर सकते हैं, परन्तु कपड़ा उन्हें भी चाहिए, रोटी उन्हें भी चाहिए और छोटी-सी झोंपड़ी उन्हें भी चाहिए। उनका लक्ष्य संग्रह नहीं, त्याग होता है, पर हममें से कितने लोग त्यागी हैं? कितने व्यक्ति अपनी काम-वासनाओं को शान्त करने के लिए कड़ाके की ठण्ड में अर्धरात्रि में गंगा के शीतल जल में घण्टों खड़े हो सकते हैं? उन्हें कष्ट सहन करने में ही शान्ति मिलती है, परन्तु सांसारिक प्राणी ऐसा नहीं कर सकता। मानव का लक्ष्य समृद्ध जीवन है, अभाव नहीं।

मनुष्य इस संसार में सुख-सुविधाओं का उपभोग करने आया है। इन सुख-सुविधाओं के लिए यत्न न करने वाले व्यक्ति को ही निरुद्यमी कहा जाता है, निकम्मा और आलसी कहा जाता है। आवश्यकता और इच्छा होने पर भी उनकी पूर्ति के लिए प्रयत्न न करने का नाम ही गरीबी या निर्धनता है।

निर्धनता अनेक कष्टों तथा विपत्तियों की जननी है। मनुष्य इस संसार में अनेक वस्तुएं देखता है, उनसे प्रभावित होता है और उन्हें प्राप्त करने की इच्छाएं भी उसके मन में उठती हैं। इन इच्छाओं का पूरा न हो पाना ही निर्धनता है। जब आप अपनी किसी इच्छा की पूर्ति नहीं कर पाते तो आपको गरीबी का अनुभव होता है। मनुष्य के लिए इससे बढ़कर और कष्ट क्या होगा कि वह जो चीज प्राप्त करना चाहता है, वह उसे न मिल पाए? निर्धन व्यक्ति का भाग्य ही ऐसा होता है। वह आलीशान मकान देखता है, साज-सामान से भरी हुई दुकानें या सुखी अमीरों को देखता है तो उसके दिल पर सांप लोटता है। अपनी इच्छाओं की पूर्ति को व्यावहारिक रूप न देने के कारण वह सदैव ही घुटन का शिकार रहता है, चिन्ताओं से घिरा रहता है। उसका जीवन श्मशान घाट की भांति नीरस और बे-मजा होता है।

निर्धनता सांसारिक अभावों को तो जन्म देती ही है, साथ ही मानसिक सुख और शान्ति को भी नष्ट कर देती है। निर्धन व्यक्ति की न तो इज्जत होती है और न उसे कोई सुख नसीब होता है। वह अपने आपको ऐसे विशाल दलदल में फंसा अनुभव करता है, जहां से निकलना सर्वथा असम्भव होता है। सम्पत्ति उसके लिए स्वप्नमात्र होती है। वह न अपनी पत्नी को प्रसन्नता दे सकता है और न अपने बच्चों को ही। दोस्तों-मित्रों के साथ मौज-मजा तो उसके लिए सर्वथा अनहोनी बातें होती हैं। वह अपने आस-पास के लोगों के बच्चों को अच्छे कपड़े पहनकर आते-जाते देखता है, वह उन्हें बड़ा होते और सभ्य-सुसंस्कृत होते देखता है तो वह अपने बच्चों की दयनीय व गन्दी हालत देखकर अपने ही माथे पर हाथ मारकर रोता है। वह चिड़चिड़ा और झगड़ालू हो जाता है। गन्दी आदतें उसमें घर कर जाती हैं।

निर्धन व्यक्ति सामाजिक रूप से दिवालिया होता है, क्योंकि न उसके मित्र होते हैं और न सगे-सम्बन्धी। घर में किसी चीज के न होने से पत्नी के उलाहने, दुकानदारों के तकाजे तथा भविष्य की चिन्ता भी उसे कमजोर बना देते हैं। वह लापरवाह हो जाता है, किसी की बात पर ध्यान नहीं दे पाता। मित्रों का परामर्श उसके लिए बेअसर होता है। वह सारी दुनिया को ही दुश्मन समझने लगता है। ऐसी स्थिति में कोई भी व्यक्ति उसके पास फटकने की हिम्मत नहीं करता। यहां तक कि उसके दोस्त भी उससे कन्नी काट जाते हैं।

निर्धन व्यक्ति में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान नाम की कोई भी चीज नहीं होती। कठिनाइयों से उसकी हिम्मत टूट जाती है। उसे लगता है कि वह कुछ भी नहीं कर

सकता, उसे अपनी शक्ति में विश्वास ही नहीं रह जाता। इसलिए वह निर्धनता के चंगुल से बाहर नहीं निकल सकता। उसके चेहरे से ही मनहूसियत टपकने लगती है। वह हर समय अपने आपको खतरे में महसूस करता है। वह अनुभव करने लगता है कि वह लोगों के इशारों पर नाचने वाली कठपुतली है।

आत्मसम्मान न होने के कारण वह लोगों की खुशामद भी करने लगता है और वह भी बहुत सस्ती। उसमें एक स्वतन्त्र व्यक्ति का-सा आत्मविश्वास तो होता ही नहीं। इसलिए छोटी-छोटी जरूरत के लिए वह दूसरों के आगे हाथ फैला देता है। वस्तुतः वह विनम्र नहीं होता, परन्तु दयनीयता के कारण उसके विचारों में स्वतन्त्रता नहीं रहती और बेबस सबकी हां में हां मिलाता है। अपनी हीनता के कारण उसे लोगों के तानों का खतरा भी बना रहता है।

निर्धन-दयनीय व्यक्ति को अपने भविष्य के सम्बन्ध में न कुछ ज्ञात होता है और न आस्था, अधूरी आकांक्षाएं उसके मन में कुण्ठा पैदा कर देती हैं। उसमें न कोई कल्पना होती है और न ही कोई अभिलाषा, वरन् उसे इन चीजों से घृणा ही हो जाती है। कमजोर आदमी ऐसी स्थिति में इतना निराश हो जाता है कि उसे अपनी कठिनाइयों का कहीं अन्त नहीं दीखता। वह तूफान में बहते हुए तिनके के समान इधर-से-उधर ठोकरें खाता रहता है। इस तरह के बहुत से व्यक्ति अपराधी वृत्ति के भी हो जाते हैं और चोरी-डकैती के साथ हिंसा पर भी उतर आते हैं। ऐसा आदमी निर्धनता के गड्ढे में से निकल ही नहीं सकता।

यदि परिस्थितियों का विश्लेषण किया जाय तो निर्धनता का मूल कारण व्यक्ति की निष्क्रियता ही होती है। निर्धन परिवार में पैदा होने से यह आवश्यक नहीं कि आप निर्धन ही बने रहें। आपको यह भी तो सोचना चाहिए कि पैदा होते समय आप पढ़े-लिखे भी तो नहीं थे और न आपमें चलने-फिरने की शक्ति थी। निर्धन परिवार में पैदा होने से आपके पास साधनों की कमी हो सकती है, परन्तु आप पंगु तो नहीं बने रह सकते। महत्वाकांक्षी व्यक्ति अपनी पारिवारिक निर्धनता से ही प्रेरणा लेते हैं और आगे बढ़ते हैं।

निर्धनता फिजूलखर्ची से भी पैदा होती है। अपने धन का अपव्यय ही फिजूलखर्ची है। फिजूलखर्च आदमी बाद में लोगों से उधार मांगने लगता है। उसे यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि कोई देवता आकाश से उतरकर उसके कष्ट दूर करने नहीं आएगा। वह अपने को अकेला समझने लगता है, परन्तु निर्धनता से संघर्ष करने वाले व्यक्ति के अनेक सहायक हो जाते हैं। जो संघर्ष करता है, मेहनत करता है, उससे सभी लोग सहानुभूति रखने लगते हैं और उसकी आवश्यक रूप से सहायता भी करते हैं।

निर्धन लोगों को अपने आपसे पूछना चाहिए, उन्हें आत्मचिन्तन करना चाहिए कि वे निर्धन क्यों हैं। वे यह समझ और मान बैठते हैं कि वे दुष्ट ग्रहों के कारण निर्धन हैं। वे अपनी गरीबी के वास्तविक कारणों की ओर न देखकर बहाने ढूंढ़ने लगते हैं और

यह सिद्ध करना चाहते हैं कि वे अपनी गरीबी के लिए स्वयं जिम्मेदार नहीं। वे यह मान बैठते हैं कि गरीबी उन पर थोप दी गई है। इस प्रकार के विचारों के कारण वे गरीबी से कभी छुटकारा नहीं पा सकते।

इन लोगों ने यह कभी नहीं सोचा कि जब हमारे विचार ही समृद्ध नहीं तो समृद्धि आएगी कैसे? जो व्यक्ति सदा ही यह सोचता रहता है कि वह तो निर्धन है तो वह धनी कैसे बनेगा? दिन-रात अपने आपको कोसने वाला व्यक्ति धनी कैसे हो सकेगा? निर्धनता का रोना रोने से गरीबी समाप्त नहीं होती, बल्कि समय नष्ट होता है, जो स्वयं में बहुत उत्तम धन है। समय ऐसी चीज है, जो एक बार नष्ट हो गई तो पुनः प्राप्त नहीं हो सकती।

आपकी निर्धनता में आपके मन का भी बड़ा योगदान है। यदि आप अपने विचार ही भिखारियों जैसे रखेंगे तो भिखारी ही बन जाएंगे। जो सदा असफलता के सम्बन्ध में ही सोचता है, वह सदा असफल ही रहता है। निर्धनता से दुखी और परेशान रहने वाला व्यक्ति संकटों की कल्पना कर लेता है। उसका मानसिक और शारीरिक सन्तुलन भी नष्ट हो जाता है। इससे भौतिक सुख तो मिलते ही नहीं, वह शारीरिक सुखों से भी वंचित हो जाता है। इस प्रकार सफलता के द्वार उसके लिए बन्द हो जाते हैं।

अभाव से आदमी में हीन वृत्तियों का प्रादुर्भाव होता है। आत्मविश्वास न होने से हीन भावना और भी दृढ़ होती जाती है। जिन्हें अपनी कार्यक्षमता में ही विश्वास नहीं, उनमें कार्यक्षमता कहां से आएगी? वे कोई भी कार्य नहीं कर पाते, बिल्कुल असमर्थ हो जाते हैं। वे और अधिक धन तो क्या कमाएंगे, पास की पूंजी भी गंवा देते हैं। जिसे अपने मन की शक्ति पर भरोसा नहीं, वह सफल हो भी कैसे सकता है?

आदमी का मन अनेक प्रकार की शक्तियों का केन्द्र है। इसकी अपार शक्ति की थाह पाना कठिन है। मन की दृढ़ता से मनुष्य में व्यक्तित्व का विकास होता है और श्रेष्ठ व्यक्तित्व ही तो जीवन है। इसलिए मन की शक्तियों में आस्था रखना उन्नति का प्रथम सोपान है। मन से ही आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। आत्मविश्वास से ही मनुष्य अपनी शक्तियों को एक दिशा में लगाता है और उन्नति के लिए यत्न करता है। इसी आत्मविश्वास से मनुष्य में दृढ़ता आती है तथा वह अपने आपको असमर्थ और अशक्त समझने के बजाय सामर्थ्यवान अनुभव करने लगता है।

यह आत्मविश्वास हमारे जीवन में वही स्थान रखता है जो आपके शरीर में मेरुदण्ड का है। जीवन में संकट तो आते ही हैं, परन्तु इन संकटों से निपटने के लिए संघर्ष के साथ धैर्य की बहुत आवश्यकता होती है। यह सब आत्मविश्वास से ही संभव होता है और इसके द्वारा ही निर्धनता से पिंड छुड़ाया जा सकता है। निर्धनता की स्थिति में सम्पन्नता का संकल्प बहुत ही महत्वपूर्ण और आवश्यक है। दृढ़ आत्मविश्वास वाला व्यक्ति यदि संकटों से घिरा भी है तो भी वह अपने दृढ़ संकल्प द्वारा अपनी स्थिति को सुधार लेता है। वह यही कहेगा: ये कठिनाइयां मेरी राह नहीं रोक सकतीं; मैं इन पर

विजय प्राप्त करके ही रहूंगा। लोग देखते हैं कि एक दिन वह व्यक्ति उन्नति के शिखर पर बैठा होता है। निर्धनता का अचूक इलाज पुरुषार्थ या उद्यम ही है। जो भविष्य के प्रति आस्था रखता है, विश्वास रखता है, वह अवश्य ही उन्नति कर जाता है। उत्साही और पुरुषार्थी व्यक्तियों के लिए जीवन एक दास, एक भृत्य के समान है। भाग्य उद्यमी व्यक्ति का ही साथ देता है—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।

अर्थात लक्ष्मी उद्योगी व्यक्ति को ही प्राप्त होती है, कमजोर व कायर ही भाग्य का भरोसा देखते हैं। ईश्वर भी उन्हीं का सहायक है जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं।

विद्यार्थी जीवन में अनेक छात्रों को संकट आते हैं। धन की कमी हो जाती है, परन्तु कुछ विद्यार्थी उत्साह के साथ उस संकट को पार कर जाते हैं और बहुत से मंझधार में ही रह जाते हैं। जो छात्र उन दिनों अपने माता-पिता के भार न बनकर स्वावलम्बन का सहारा लेते हैं, वे आगे चलकर अवश्य उन्नति करते हैं। जो दूसरों का मुंह ताकने के बजाय अपनी जीवन नैया की पतवार अपने हाथ में लेते हैं, उनकी सफलता को कौन रोक सकता है? सही दिशा में चलने वाला विजयाभिलाषी अवश्य विजयी होता है।

निर्धनता से छुटकारा पाने के लिए अपने मन की शक्तियों पर भरोसा करना बहुत आवश्यक है। अपने कार्य में पूरी दिलचस्पी, यानी तन्मयता अत्यन्त ही आवश्यक है। कार्य कोई भी हो, उसके प्रति पूर्ण आस्था और तन्मयता जरूरी है। व्यापार में भी और किसी के साथ मिलकर कार्य करने में भी। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि कंजूसी से धन जुड़ता है। यह बात गलत है, कंजूसी से धन नहीं जुड़ता। धनी होने का रहस्य है मितव्ययिता। धन का उपयोग व्यक्ति को सुख देता है, उसको दबाकर बैठने से धनवान कहलाना मूर्खता है। तहखानों में दबे हुए खजानों पर बैठे सांप धनी नहीं कहलाते।

एक कहावत है कि स्वयं मरकर ही स्वर्ग देखा जा सकता है। धन के सम्बन्ध में भी यही बात है। कोई शिल्प, दस्तकारी या व्यापार अपने हाथ से अवश्य करना होता है। ऐसा किए बिना आदमी धनी नहीं बन सकता। कोई भी वस्तु हो, यदि आप उसे प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको आगे बढ़ना ही होगा।

आप यदि समृद्ध बनना चाहते हैं तो अपने मन से शंका और सन्देह को बाहर निकाल दीजिए। सन्देह दूर होने पर ही आत्मविश्वास उभरता है। उस समय आपको अनुभव होगा कि आप किसी भी संकट का सामना कर सकते हैं। आपमें विपरीत हालात का सामना करने की शक्ति आ जाएगी। ऐसी शक्ति आने पर आपमें अदम्य साहस आ जाएगा और आपकी नस-नस में स्फूर्ति का संचार हो उठेगा तथा आपकी सफलता का मार्ग खुल जाएगा।

एक बहुत बड़े व्यापारी के सम्बन्ध में कहा जाता है कि आरम्भ में वह बहुत ही निर्धन

था और निर्धनता से ऊबकर उसने एक दिन आत्महत्या करने की सोची। आत्महत्या करने से पहले उसके मन में एक विचार कौंधा कि मरना तो एक दिन है ही, फिर से एक बार धनवान बनने का प्रयत्न ही क्यों न किया जाय। उसके बाद उसने फेरी लगानी आरम्भ कर दी और धीरे-धीरे कारोबार आरम्भ किया। आज वह देश का ही नहीं, विश्व का एक प्रसिद्ध व्यापारी है।

यही नहीं, संसार के अनेक सुप्रसिद्ध व्यापारी, कारखानेदार, उद्योगपति आरम्भ में निर्धन ही थे, परन्तु ये उन लोगों से भिन्न थे, जो परिस्थितियों का शिकार होकर जीवन भर तरक्की नहीं कर पाते। केवल निर्धनता के कारण दुख उठाना महामूर्खता है। धन-समृद्धि और ऐश्वर्य उद्यम से ही प्राप्त होते हैं। धन की कमी से दुखी होना बुद्धिमानी नहीं है। इस दुख को उद्यम से दूर किया जा सकता हैं।

आपको यह ज्ञात होना चाहिए कि संकुचित और दीन-हीन विचारों वाला व्यक्ति कभी भी ऊंचा नहीं उठ सकता। इस बात को आप दूसरे शब्दों में यूं कहें कि यह बात वैसी ही सच है, जिस प्रकार उन्नत विचारों वाला व्यक्ति कभी भी असफल नहीं हो सकता। संकीर्ण विचारों वाला व्यक्ति कभी धनी नहीं हो सकता। धनी वही हो सकता है जो हृदय से उदार और प्रसन्न रहने वाला हो। आशान्वित और प्रसन्नचित्त व्यक्ति ही खूब खुलकर सच्ची और खरी बात कह सकता है। ईमानदारी और व्यवहार-चातुर्य से वह लोगों को तो अपनी ओर खींच ही लेता है, पैसा भी स्वयं उसकी ओर खिंचा चला आता है।

कुछ लोग कहते हैं कि रुपया रुपये को खींचता है, परन्तु यह बात सच नहीं। यदि यह बात सच होती तो निर्धन व्यक्ति कभी भी धनी न होते और धनी व्यक्ति कभी निर्धन न होते। यह बात होती तो आज जिन समृद्ध व्यक्तियों का संस्मरण संसार करता है, उनके नाम हमारे-आपके सुनने में भी न आते।

ये लोग अत्यन्त उद्यमी थे। जब रात के सन्नाटे में सारा संसार सो रहा होता है, तब धुन के धनी ये व्यक्ति अपने काम में लगे हुए होते हैं और दिन-रात एक चाल से चलने वाले ये व्यक्ति संसार के लोगों को पीछे छोड़ जाते हैं। कछुए और खरगोश की बात इन पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। जिस प्रकार कुछआ धैर्य और निष्ठा से मन्दगतिपूर्वक चलता हुआ भी तेज भागने वाले खरगोश से आगे निकल गया, उसी प्रकार ये व्यक्ति भी निरन्तर चलते रहते हैं और पहुंच जाते हैं एक दिन अपनी मंजिल पर, समृद्धि या धन-दौलत के द्वार पर। समृद्ध लोगों ने न तो जाली (नकली) करेन्सी नोट छापे और न डाके डाले। ये लोग अपने उद्यम, मधुर स्वभाव और चरित्र की उदात्त भावनाओं के कारण ही धनवान बने। रॉकफेलर, बजाज, टाटा, सिंघानिया, मोदी, बिड़ला आदि सभी उद्योगपति इसके उदाहरण हैं। प्रायः ये सभी लोग निर्धन थे और केवल अपने आप कम समय में ही इतने विशाल उद्योगों के स्वामी बने। परिश्रम, दृढ़ लगन और सूझबूझ से आदमी उन्नति-पथ पर अग्रसर हो सकता है।
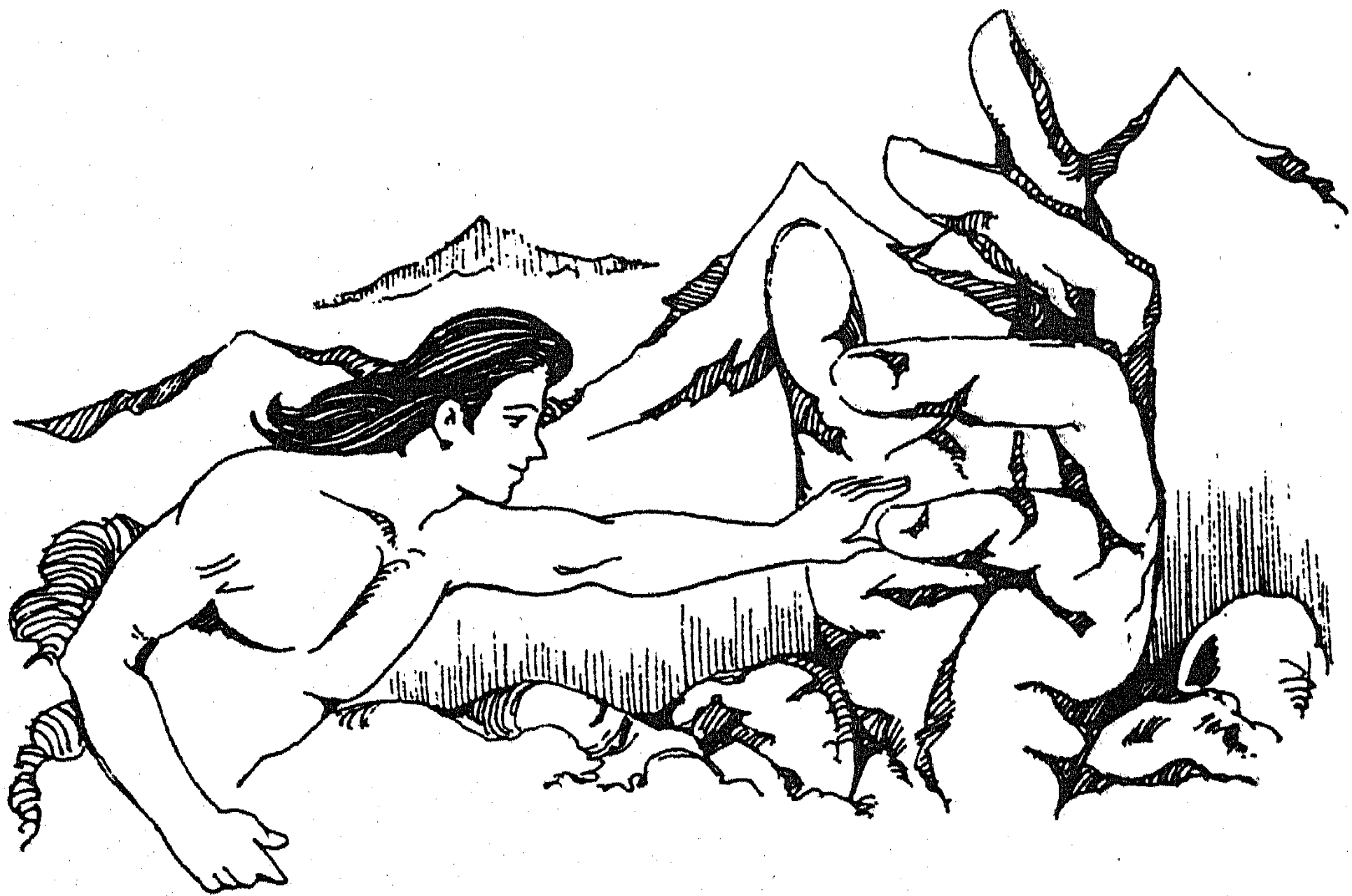
अपने इरादे मजबूत रखें, आपके मार्ग की सभी कठिनाइयां दूर होती चली जाएंगी।

इस संसार में भयंकर रोग भी हैं और भारी अभाव भी। दुख-दर्द इतना अधिक है कि जिसका अन्त नहीं; परन्तु यह सब होते हुए भी मानव जाति सभ्यता के सोपान पर बढ़ती चली जा रही है। इसकी तह में उन लोगों का संघर्ष है जो निष्काम कर्म करते हुए दिन-रात परिस्थितियों को बेहतर बनाने के यत्न कर रहे हैं। अपने ही दुख-दर्द का रोना रोने वाले कभी सफल नहीं हो सकेंगे। वे लोग भी हैं जो स्वयं को पीछे रख मानव जाति की सेवा में लगे हैं और एक आप हैं कि अपना उद्धार भी नहीं कर सकते। आप यदि यह सोचेंगे कि आपकी किस्मत में सफलता या उन्नति लिखी ही नहीं, तो आप उन्नति कैसे कर सकेंगे? यदि आप और आप जैसे अन्य लोग अपने भाग्य को बदलने का प्रण कर लें तो आपका ही नहीं, इस दुनिया का भी नक्शा बदल जाए। एक बार यह दृढ़ निश्चय कर लीजिए कि आपको आगे बढ़ना है तो सफलता के द्वार अपने आप ही खुलते चले जाएंगे। हो सकता है, आपकी गलतियों से आरम्भ में कुछ कठिनाइयां आएं, परन्तु यदि आपके इरादे मजबूत हैं तो आपके मार्ग से कठिनाइयां हटती ही चली जाएंगी।

इस संसार में ऐसे अनेक व्यक्ति और परिवार हैं जो शून्य से चले और इतनी अपार सम्पत्ति के स्वामी बने जहां गिनती के अंकों की भी कमी पड़ जाती है। यह ऐसे ही एक परिवार की कहानी है। किसी समय वह परिवार नगर के समृद्धतम परिवारों में से था, परन्तु समय बदलते देर नहीं लगती। विश्व-युद्ध में इनके कल-कारखाने, घर-बार नष्ट हो गए। परिवार का मुखिया भी मारा गया। सारा परिवार संकटों में घिर गया। अपनी साख के कारण जैसे-तैसे उसका गुजारा चल रहा था, परन्तु परेशानी इतनी थी कि भरपेट

खाना भी नहीं मिल पा रहा था। एक दिन परिवार के एक सदस्य ने किसी पत्रिका में एक लेख पढ़ा कि निर्धनता एक मानसिक बीमारी है, रोग है और इस रोग का इलाज उद्यम है। जिस प्रकार शारीरिक रोग औषधियों से दूर हो जाते हैं; उसी प्रकार निर्धनता रूपी मानसिक रोग भी दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास से दूर हो जाता है। बस, फिर क्या था, देखते-ही-देखते उस परिवार में ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन आया कि वे पहले से भी अधिक सम्पत्ति के स्वामी बन गए।

सोचने की बात यह है कि ऐसे लेख तो न जाने कब से प्रकाशित होते रहे हैं, परन्तु कितने लोगों ने प्रेरणा ली? उस परिवार के लिए उस लेख ने वही काम किया जो एक भटके हुए जलयान के लिए प्रकाशस्तम्भ (लाइट हाउस) करता है।

आप यदि धनी बनना चाहते हैं, ऐश्वर्य और सुख भोगना चाहते हैं तो निराशापूर्ण भावों को निकाल बाहर कीजिए। आत्मविश्वास को जगाइए और साहस के साथ कमर कस लीजिए। आंधियों और तूफानों में जलते रहने वाले दीपक के समान निराशाओं और असफलताओं के बावजूद मन में आशा और उत्साह का दीप जलाए रखें। यह बहुत ही जरूरी है, पर यह भी बहुत आवश्यक है कि जो बुरे दिन बीत गए हैं, उनकी ओर से भी आंख मूंद लें, उन्हें भूल जाएं और अपने उज्ज्वल भविष्य को देखें। उन्नत और उज्ज्वल विचार ही व्यक्ति को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं।

आत्मविश्वास और आशापूर्ण जीवन के लिए यह आवश्यक है कि आपकी देह सशक्त हो, आप स्वस्थ हों। जीवन में संघर्ष इतने कठोर और भयंकर हैं कि कमजोर आदमी तो पिस जाता है। निर्धनता के कष्टों, मनहूसियत, बेचैनी आदि बातों का कारण दुर्बलता ही है। भीषण कठिनाइयों के विरुद्ध लड़ने के लिए आपको अपनी शक्ति और सहनशीलता का संचय करना होगा। यह शक्ति उद्यम से आती है। मन में आशाओं का संचार तभी हो सकता है जब आपकी नस-नाड़ियों में बहने वाले रक्त में आशाओं की गरमी आए। संसार में जितने भी सफल और महान व्यक्ति हुए हैं, वे आशावादी थे और केवल आशावादी ही नहीं, दृढ़ आशावादी थे। यदि वे आशावाद का संबल लेकर न चलते तो हो सकता था कि वे संघर्षों से जूझते हुर मर-खप गए होते या पागलखानों में आबाद होते; पर वे आशावादी थे, उद्यमी थे, दृढ़ आत्मविश्वासी थे और इसीलिए वे संसार में सफल हुए। सच तो यह है कि आशावादी व्यक्ति ही हंसते-हंसते जीता है और एक दिन उन्नति के शिखर पर होता है।

भागो नहीं भाग्य को बदलो

मनुष्य स्वयं ही अपना भाग्यविधाता है, अपनी असफलताओं का दोष भाग्य के सिर मढ़ देने के बजाय यदि मनुष्य दृढ़ इच्छाशक्ति और संकल्प के साथ कठिनाइयों का मुकाबला करे तो वह अपनी असफलता को सफलता में बदलकर जीवन में सभी प्रकार की खुशियां भरने में क़ामयाब हो सकता है।

आपने कभी सोचा है कि आपके पास धन की कमी क्यों है?

इसका कारण है आपके मन की दरिद्रता। यदि आपका मन दरिद्र है तथा उसमें निर्धनता व अभाव के विचार ही भरे हुए हैं तो आप सम्पन्न कैसे बन सकते हैं? जो अपने मन को दरिद्रता के विचारों से मुक्त कर लेता है, अर्थात जो मन की दरिद्रता को जीत लेता है, उस पर काबू पा लेता है, वह कभी भी दरिद्र नहीं रह सकता।

मन से दरिद्रता के विचार त्यागकर परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करें, सम्पन्नता स्वयं आपके पास दौड़ी चली आएगी।

मन से दरिद्रता के विचार दूर करने का अर्थ है—परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करना और जो भी उस प्रभु से—परमात्मा से—सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, वह कभी भी दरिद्र नहीं रह सकता। सम्पन्नता तो स्वयं उसके पास दौड़ी चली आएगी।

किसी गांव में एक निर्धन महिला रहती थी। उसे किसी कारणवश बड़े नगर में आकर रहना पड़ा। जिस घर में वह रहती थी, उसमें बिजली का प्रकाश था। वहां रात भी दिन के समान थी और सारा घर बिजली के प्रकाश में उजला बना रहता था। उसने अपने गांव के जीवन में इतना प्रकाश देखा ही नहीं था। उसे विश्वास ही नहीं होता था कि इतना अधिक प्रकाश भी सम्भव है।

आप अवश्य ही उस निर्धन महिला के अज्ञान पर हंसेंगे, परन्तु क्या आपने कभी यह नहीं सोचा कि आप भी आयु भर उस स्त्री जैसा ही व्यवहार करते रहे हैं। आप भी तो किसी व्यक्ति की थोड़ी-सी दौलत, थोड़ी-सी सम्पत्ति को देखकर आश्चर्य करने लगते हैं, जबकि आपके पास भगवान की दी हुई विशाल सम्पदा के भण्डारों में से बहुत थोड़ा-सा ही अंश है।

आश्चर्य तो यह है कि आप यह कल्पना ही नहीं कर पाते कि आपमें भी ऐसी अनेक शक्तियां, सामर्थ्य और योग्यताएं हैं, जिनके थोड़े-से प्रयोग मात्र से आप उस व्यक्ति से कई गुना अधिक सम्पन्न बन सकते हैं। आपको अपनी शक्ति का ही ज्ञान नहीं, आपको यह मालूम ही नहीं कि आपकी योग्यता क्या है। इसी अज्ञान के कारण वे शक्तियां, वह ज्ञान व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। यह उसी प्रकार है जिस प्रकार नदी का जल बांध या नहरों के अभाव में व्यर्थ चला जाता है। यदि उसका उपयोग किया जाता तो उससे न जाने कितनी बिजली पैदा होती और न जाने कितने खेत उसके पानी से लहलहा उठते। इसी प्रकार आपको अपनी क्षमताओं का ही पता नहीं। साथ ही आपको अपने पर अविश्वास भी है, इसीलिए आप अपने आपको तुच्छ, निर्धन और दरिद्र मानते रहते हैं।

इसका भाव क्या यह नहीं कि अपने मन के दरिद्र विचारों के कारण ही आप दरिद्र बने रहते हैं?

धनी एवं सम्पन्न होने के लिए मन में प्रसन्नता और उल्लास होना एक आवश्यक शर्त है। धन या ऐश्वर्य, उल्लास और प्रसन्नता से पूर्ण मन की ओर ही आकृष्ट होते हैं। जिसके हृदय में निराशा है, जिसके मन में अनेक सन्देह बसे हुए हैं, जिसमें आत्मविश्वास की कमी है, ऐसे व्यक्ति की ओर समृद्धि का प्रवाह कैसे हो सकता है?

आप थोड़ा ध्यान दें तो आपको प्रतीत होगा कि असंख्य मणि-माणिक्य, धन-दौलत का भण्डार आपके चारों ओर बिखरा पड़ा है। आपके सामने धन-दौलत, सम्पदा का विशाल समुद्र बहता चला जा रहा है। यदि आपमें दृढ़ इच्छाशक्ति और अटल-अटूट आत्मविश्वास हो तो आप भी उसे प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु केवल दृढ़ और प्रबल यत्न और चेष्टा से। यदि आप यह चाहें कि यह धन-दौलत, मणि-माणिक्य आपको प्राप्त हों, परन्तु आप हाथ भी न हिलाना चाहें तो आपको कुछ भी प्राप्त न होगा। यह तो वैसा ही है, जैसे आपके सामने सुस्वादु भोजनों से सजा हुआ थाल पड़ा हो, परन्तु आप जब

तक उसमें से उठाकर कौर मुंह में न देंगे, तब तक आप उसका आनन्द नहीं उठा पाएंगे। इसीलिए आपको धन-सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए चेष्टा तो करनी ही पड़ेगी, अपने हाथ-पांव तो हिलाने ही पड़ेंगे। धन-दौलत आपको कोई देने नहीं आएगा। इसलिए यह स्पष्ट है कि आपकी समृद्धि, आपका धन, आपका सुख, आपके प्रयत्न, आपकी मेहनत आपकी चेष्टाओं पर और आप स्वयं पर ही आश्रित हैं। यदि आप लगातार प्रयत्न करेंगे, निरन्तर चेष्टा करेंगे तो निश्चय ही आपको सुख-समृद्धि भी प्राप्त होगी।

देखा जाता है कि अधिक आशावादी लोग थोड़ा-सा यत्न करते हैं और फौरन ही फल की कामना करने लगते हैं तथा मनोवांछित फल प्राप्त न होने पर निराश हो जाते हैं; परन्तु वे भूल जाते हैं कि उन्हें जितना अधिक ऊंचा उठना है, उतना ही अधिक श्रम भी करना पड़ेगा। उनका उद्देश्य जितना ऊंचा होगा, प्रयत्न भी उतना ही कठोर और अधिक करना होगा। आप बाजार से जितनी अधिक सुन्दर, बढ़िया और टिकाऊ चीज खरीदेंगे, आपको उसका दाम भी उतना ही अधिक देना होगा।

अतः यदि आप धनी होना चाहते हैं, सम्पन्न तथा समृद्ध होना चाहते हैं तो अपने मन में निर्धनता या गरीबी के बारे में विचार उठने ही मत दीजिए। निर्धनता की चिन्ता को मन से निकाल ही दीजिए। भविष्य में होने वाली जलन और डर को मन से निकाल दीजिए। मन को केवल अपने काम को तत्परता से करते रहने के विचारों से पूर्ण रखिए। यदि आप इसमें सफल हो गए तो आप और आपको मिलने वाले व्यक्ति, जो अब तक आप पर दया के भाव प्रदर्शित करते थे, आपके इस परिवर्तन से आश्चर्यचकित रह जाएंगे।

अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए पहला कदम है—मन में सम्पन्नता तथा समृद्धि का निरन्तर ध्यान और मनन। दूसरा कदम है उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न या कोशिश। घर में बैठकर शेखचिल्ली के समान हवाई किले बनाने से काम नहीं चलेगा। इस प्रकार आपको समृद्धि प्राप्त न होगी। उसे प्राप्त करने के लिए तो आपको निरन्तर प्रयत्न करते रहना होगा। इस पर भी सफलता आपको उतनी ही मिलेगी, जितना आप प्रयत्न करेंगे—और यह प्रयत्न भी सही ढंग से होना चाहिए, फूहड़पन से किया हुआ कार्य प्रयत्न नहीं कहलाता।

सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए मेहनत, कौशल यानी व्यवहारचातुर्य और लक्ष्य को सदा ही ध्यान रखना होगा। जो लोग काहिली जैसी अपनी आदतों को बदलना नहीं चाहते और जिन्हें निर्धन बने रहने का एक प्रकार का अभ्यास-सा ही हो गया है, वे अपने बुरे दिनों को नहीं बदल सकते। इसके विपरीत जिस व्यक्ति को निर्धनता कतई पसन्द नहीं और जो सदैव ही उसे मिटाने का यत्न करता है, जिसे अपने लक्ष्य का ध्यान है, वह अवश्य ही एक-न-एक दिन धनी बनकर रहेगा। जो परिवर्तनशील नहीं है, जो अपनी आदतें या स्वभाव नहीं बदल सकता, निश्चय ही वह अधिक दिनों तक निर्धन ही बना रहेगा।

जब आप यह मानते हैं कि आप ईश्वर की सन्तान हैं और ईश्वर ने संसार में किसी भी चीज की कमी नहीं रखी, सब खजाने उसके हैं और यहां मौजूद भी हैं, तब बताइए आप दरिद्र क्यों हैं? यहां इस संसार में विद्यमान खजानों के स्वामी तो आप हैं, क्योंकि

आप इन खजानों को बनाने वाली सन्तान हैं। क्या आपने कभी सोचा कि ये खजाने आपको प्राप्त क्यों नहीं हो रहे? कहीं आप इन्हें प्राप्त करने के नियमों के विरुद्ध तो कार्य नहीं कर रहे? कहीं आप अपने लक्ष्य से तो नहीं हट गए?

यह तो आप जानते ही हैं कि संसार में धन-सम्पदा के भण्डार भरे पड़े हैं। इन भण्डारों की सीमाओं का कोई अन्त नहीं। आपको उन्हें आगे बढ़कर उठाना है। अतः आगे बढ़िए और उन्हें अपने हाथों में उठा लीजिए। आपको ज्ञात है कि इस धरती में हीरे, सोने और चांदी की खानें हैं। क्या आप कभी यह सोच सकते हैं कि ये हीरे, यह सोना या यह चांदी खानों से स्वतः बिना परिश्रम किए बाहर आ सकता है? जब आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि उन्हें खानों से निकालने के लिए श्रम करना पड़ता है तो आप यह कैसे मान बैठे हैं कि बिना हाथ-पांव हिलाए ही सम्पन्नता और समृद्धि के द्वार आपके लिए खुल जाएंगे? आप जानते हैं—

सकल पदारथ हैं जग माहीं,
करमहीन नर पावत नाहीं।

अर्थात संसार में सभी चीजें हैं, किसी भी वस्तु की यहां कोई कमी नहीं है, परन्तु जो व्यक्ति कर्म नहीं करता उसे वे कभी प्राप्त नहीं होतीं। कई लोग कर्म का अर्थ भाग्य से लेते हैं, जबकि करम या कर्म का अर्थ पुरुषार्थ है। जिस किसी व्यक्ति ने भी इस शब्द का महत्व समझ लिया, उसके पास किसी वस्तु की कमी नहीं रहती।

आप संसार की किसी भी चीज में कोई उपयोगिता पैदा कर दें, उसे काम के, उपभोग के योग्य बना दें, आपके खजाने भरने लगेंगे। यह आपके लिए मूलमन्त्र है कि यदि आपने किसी वस्तु में कोई उपयोगिता पैदा कर दी तो समझ लीजिए कि आपके लिए सोने की खान खुल गई। कोई नया आविष्कार कीजिए, किसी नई बात की खोज कीजिए, किसी स्थान पर सड़क बनवा दीजिए, कोई नया नगर, गांव या कस्बा बसा दीजिए, किसी जीवनदायी औषधि का निर्माण कीजिए, आपका भण्डार धन से परिपूर्ण हो जाएगा—वह कभी भी खाली नहीं होगा।

महान आविष्कारक एडिसन ने कहा था—इस सम्पूर्ण संसार के कण-कण में एक अमर आत्मा का निवास है। बस, यही आत्मिक अनुभूति आपको मानव-मात्र की भलाई के लिए प्रेरित करती है। यह मानी हुई बात है कि मानव-मात्र का हितैषी व्यक्ति कभी भी दरिद्र नहीं रह सकता। आपकी प्रत्येक इच्छा पूरी हो सकती है, परन्तु उसके लिए उचित और सही दिशा में किए गए प्रयत्नों की आवश्यकता है। यदि आप एक गिलास पानी में चीनी मिलाएंगे तो वह अवश्य ही मीठा होगा। कोई भी शक्ति उसकी मिठास को नहीं रोक सकती।

किसी निर्धन व्यक्ति को देखकर आप अनुमान लगा सकते हैं कि वह मानसिक रूप से भी निर्धन है, दरिद्र है। यदि आपके मन में समृद्धि की हिलोर उठेगी तो निर्धनता का विकार स्वयं दूर हो जाएगा। जिसके मन में कभी समृद्धि की तरंग नहीं उठी, उसके पास धन-दौलत कहां से आएगी? जिसके मन में दरिद्रता ही बसी हुई है, उसके लिए धन के

भण्डारों का अस्तित्व ही नहीं। उसने तो उन्हें कभी समझा ही नहीं कि यह सब उसका अपना है। वह उन पर अपना नहीं, किसी अन्य का अधिकार मानता है। अतः सबसे पहले अपने मन में समृद्धि के विचारों को स्थान देने की आवश्यकता है। भला सोचिए कि जब आपने अपना कोई लक्ष्य कभी निर्धारित ही नहीं किया तो आप पहुंचेंगे कहां? इसी प्रकार आपने समृद्धि-प्राप्ति को अपना ध्येय नहीं बनाया तो वह आपको प्राप्त कैसे होगी?

सच्चे दिल से यदि आप प्रयत्न करेंगे तो सच जानिए, जितनी धन-दौलत पाने की आपकी इच्छा है, आपको निश्चय ही उससे अधिक समृद्धि प्राप्त हो जाएगी, पर इसके लिए जरूरत है दृढ़ इच्छा अर्थात संकल्प और अटूट विश्वास की। बस, जुट जाइए, आपको सब कुछ प्राप्त हो जाएगा।

बहुत से पुराने विचारों के लोग ऐसे हैं जो समृद्धि को भाग्यरेखा से सम्बन्धित मानते हैं और हस्तरेखाओं को देखते-दिखाते हैं, जबकि आज के इस वैज्ञानिक युग में समृद्धि का सम्बन्ध परिश्रम से है, वह उसकी चेरी है, दासी है।

आपके हृदय में जो वस्तु बीज रूप में स्थित है, वही तो फूले-फलेगी। यदि आपने सचमुच में समृद्धि का बीज हृदय में बोया है तो उसे अपने श्रम से सींचिए, उसमें अपने सुदृढ़ विचारों की खाद दीजिए और तब आप देखेंगे कि वह बढ़ते-बढ़ते एक दिन एक मजबूत वृक्ष बन जाएगा। किसान बीज बोकर आराम से सो नहीं जाता। यदि वह सो जाय तो क्या उसे अन्न प्राप्त होगा? इसी प्रकार समृद्धि का भी परिश्रम से अटूट नाता है। प्रतिभा तो बहुत थोड़ी-सी चाहिए, मानो मन भर में एक किलोग्राम के बराबर; मुख्य चीज तो श्रम है, वह मन भर के बराबर चाहिए।

अपने मन में विचार कीजिए, उसकी गहराइयों में उतरिए और सोचिए कि आप किस प्रकार का काम कर सकते हैं। आपकी दिलचस्पी किस काम में है तथा आपमें किस काम को करने की योग्यता है। एक बार निश्चय करने के बाद उस काम में जुट जाइए। उस कार्य से सम्बन्धित सभी क्रियाएं पूरी कीजिए। मार्ग में आने वाली कमियां, बाधाएं और रुकावटें दूर कर दीजिए। उस कार्य से सम्बन्धित साधन जुटाने में कोई भी कसर न उठा रखिए। फिर उस कार्य को पूरा कीजिए अर्थात सम्पन्न कीजिए। यही आपकी सम्पत्ति है। किसी कार्य को सिरे चढ़ाना और उसे सम्पन्न करना ही सम्पन्नता है। जो किसी कार्य को सम्पन्न नहीं कर पाता, वह असम्पन्न ही रह जाता है—वही दुखी, निर्धन और अपमानित होता है।

जो व्यक्ति अपना काम करने में चतुर है तथा कुशल भी है, उसके लिए समृद्धि का मार्ग खुला हुआ है। उसकी समृद्धि के मार्ग में कोई भी रुकावट नहीं आ सकती। लेकिन जो व्यक्ति अपने काम में टालमटोल कर जाता है, दीर्घसूत्री है, काम को टालता है अर्थात आज का काम कल पर टालता है, वह समृद्धि को कभी नहीं पा सकता। जो अपना कोई लक्ष्य नहीं बनाएगा, केवल भाग्य के भरोसे ही बैठा रहेगा, उसे धन-दौलत कैसे प्राप्त होगी? उसके पास कुछ पैसा या धन है तो वह भी समाप्त हो जाएगा, उसके अधिक बढ़ने या उस व्यक्ति के धनी होने के तो कोई अवसर ही नहीं।

इससे यह स्पष्ट है कि सम्पत्तिवान होना आपके अपने वश की बात है। जब तक आप अपने आप को दरिद्रता के अधीन किए रहते हैं, अपने को एक विवश व्यक्ति मानते हैं, तब तक दरिद्रता भी आप पर अपना सिक्का जमाए रहेगी, परन्तु जब आप उसे धक्के देकर बाहर निकालने पर उतर आएंगे तो उसका आपके घर में टिक पाना कठिन ही नहीं, असम्भव भी हो जाएगा।

आपने देखा होगा और पढ़ा भी होगा कि रेगिस्तानी इलाकों में लोग मिट्टी के छोटे-छोटे से घरौंदे बनाकर ही अपना सारा जीवन बिता देते हैं। उन्हें यह ज्ञात ही नहीं कि जिस धरती पर वे रहते हैं, उसके नीचे अमूल्य खनिज भरे हैं, बेशुमार खजाना छिपा पड़ा है। वे अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करते और अपने अज्ञान के कारण आयु भर निर्धन बने रहते हैं। यदि वे अपनी बुद्धि का थोड़ा-सा भी उपयोग करें, तो वे भी अन्य लोगों के समान समृद्ध और सुखी हो जाएं।

वस्तुतः जो लोग निर्धन होते हैं, उन्हें यह पता ही नहीं होता कि उनमें भी योग्यता तथा क्षमता है। आपको चाहिए कि आप अपनी क्षमता और योग्यता को फौरन पहचानें और जल्दी-से-जल्दी उस कार्य के निर्माण में, उस कार्य को सम्पन्न करने में लग जाएं जिसके निर्माण के लिए आपने जन्म लिया है।

जिस प्रकार कोई व्यक्ति दिशा का ज्ञान न होने से वन में भटक जाता है और बार-बार वहीं आ जाता है जहां से चला था, उसी प्रकार आज असंख्य व्यक्ति सिर्फ इसलिए इधर-उधर भटकते हुए जिन्दगी बिता रहे हैं, क्योंकि उन्हें अपने जीवन की दिशा का बोध ही नहीं है। उन्हें यह पता ही नहीं होता कि उनके जीवन का लक्ष्य क्या है। वे अपने जीवन के निश्चित ध्येय को न पाकर भटकते-भटकते निराश होकर बैठ जाते हैं।

क्या आप यह कल्पना कर सकते हैं कि मेडिकल कॉलेज में भर्ती हुआ वह छात्र कभी डॉक्टर बन सकेगा, जिसे अपने पर डॉक्टर बनने का तनिक भी भरोसा नहीं? वह जीवन भर डॉक्टर नहीं बन सकेगा। भले ही उसमें योग्यता की कमी न हो, परन्तु उसके मन में सन्देह और अविश्वास का जो चोर बैठा है, क्या वह उसे कभी आगे बढ़ने देगा? वह सदा अपने साथियों से पीछे ही रहेगा। उसका अविश्वास उसे सदा पीछे ही रखेगा। इसलिए यह आवश्यक है कि आगे बढ़ने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को अविश्वास या सन्देह की बात सदा के लिए छोड़ देनी चाहिए। समझदार व्यक्ति को अपने पर दृढ़ विश्वास होता है और वह उसी के सहारे सदा आगे बढ़ता रहता है और उन्नति के शिखर पर जा पहुंचता है।

अपने मन में सदा इस बात का स्मरण कीजिए—मैं प्रभु का बेटा हूं। संसार की अपार सम्पत्ति ईश्वर की है, वही इसका मालिक है और मैं उसका वारिस हूं। वह मेरी बपौती है। अतः मैं निर्धनता में अपना जीवन नहीं गुजारूंगा। उस धन-सम्पत्ति के द्वार मेरे लिए खुले हैं। मैं यह गरीबी का लांछन अपने ऊपर और अधिक दिन नहीं रहने दूंगा। मैं अपने जीवन का कायाकल्प कर दूंगा। मुझमें वही शक्तियां हैं, जो उस सर्वशक्तिमान प्रभु में हैं, क्योंकि मैं उसी की सन्तान हूं। मैं उन सारी शक्तियों का प्रयोग अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिए करूंगा।

बाइबल में कहा है—ईश्वर मेरी सहायता करने वाला है, ऐसी स्थिति में कोई कमी, कोई अभाव मुझे कभी भी कष्ट नहीं दे सकता। बाइबल के इस मन्त्र का सदैव स्मरण करते रहिए। अन्तःकरण में आशा की भरपूर भावना रखते हुए अपना कार्य आरम्भ कीजिए। संसार के सभी उत्तम पदार्थ उस परम प्रभु से उसी तरह मांगिए, जैसे आप कोई चीज अपने पिता से मांगते हैं। निश्चित रूप से वह आपको प्राप्त होगी।

एक युवक निर्धनता और मायूसी का जीवन बिता रहा था। कुछ दिन बाद उससे मुलाकात हुई तो उसने बताया कि अब उसके पास मोटरकार है, बंगला है और धन-दौलत आदि सभी कुछ है। उसका कायाकल्प हो चुका था, क्योंकि उसने यह जान लिया था कि निर्धनता उसके अपने हाथों की बनाई हुई है। जबसे उसके मन में ये विचार आने लगे, उसी दिन से उसने अपने मन से गरीबी के भावों की जड़ों को उखाड़कर फेंक दिया तथा दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के कारण ही उसकी सारी मनोकामनाएं पूर्ण होने लगीं।

आशावादी विचारों को अपनाने से ही धन, संपन्नता और सुख-समृद्धि प्राप्त होती है।

निरन्तर आशावादी रहने से ही समृद्धि और सुख का विश्वास हो जाता है। आशा ही सुख और समृद्धि का बोज है। दृढ़ संकल्प को धारण कर जब आप निर्धनता, असफलता और निराशा को ललकारेंगे तो वे आपके पास टिक नहीं पाएंगे। जब आप यह विचार अपने मन से ही निकाल देंगे कि आप निर्धन रहने के लिए ही पैदा हुए हैं तो उसके स्थान पर समृद्धि का विचार आकर बैठ जाएगा और तब आप कर्मशक्ति को जुटाकर काम में लग जाएंगे तथा संसार के सुदृढ़तम व्यक्तियों में आपकी भी गिनती होने लगेगी।

सफलता कैसे प्राप्त करें

आत्मविश्वास और महत्वाकांक्षाएं ही सफलता का मूत्रमंत्र हैं। आपकी महत्वाकांक्षाएं महान एवं बलवती होनी चाहिए। अतः संकीर्ण विचारों व हीन भावनाओं को त्यागकर अपने अन्दर मानवीय गुणों का विकास करें। तब निश्चित ही आप समृद्धिशाली व ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

आत्मसम्मान चाहने वाला कोई भी व्यक्ति कभी यह नहीं चाहेगा कि वह दरिद्र और मूर्ख बना रहे। वह कभी नहीं चाहेगा कि वह लाचार बना रहे। आत्मसम्मानी व्यक्ति इनसे दूर ही रहना चाहेगा। वह सदैव सम्मानपूर्ण स्थितियों में ही रहना चाहेगा—ऐसी स्थितियां, जहां उसे पूर्ण स्वतन्त्रता का अनुभव हो और किसी दूसरे को भी उससे किसी प्रकार के कष्ट का अनुभव न हो।

संसार में अनेक समृद्ध व्यक्ति हैं और अमेरिका में सबसे अधिक हैं। उनमें से किसी व्यक्ति से आप पूछें कि उसका सबसे अधिक सन्तोष और आनन्द देने वाला समय कौन-सा था, तो उसका उत्तर होगा, जब वह निर्धनता और दरिद्रता से समृद्धि की ओर बढ़ रहा था। वह आपको अपना अनुभव बताएगा कि जब वह दरिद्रता और दीनता से समृद्धि की ओर बँढ रहा था तो उसका मार्ग स्वयं प्रशस्त होता जाता था, निष्कंटक होता जाता था। वह यह भी बताएगा कि उस समय उसे जो आनन्द प्राप्त होता था, उसी से उसे प्रोत्साहन मिलता था, उसका हौसला बढ़ता था। उसे अनुभव होता था कि उसकी मनोकामनाएं पूर्ण होकर रहेंगी। ऐसे व्यक्ति के अन्दर ऊंचा उठने की शक्ति का आभास होता है, इससे उसका कार्यक्षेत्र विस्तृत होता जाता है और वह संसार में अपनी महत्ता सिद्ध कर सकता है।

आपको मनुष्य का जन्म मिला है, यही बात इसका स्पष्ट प्रमाण है कि आप महान और तेजोमय हैं, चूंकि आप उस प्रभु की सर्वश्रेष्ठ कृति हैं। क्या प्रभु की यह सर्वश्रेष्ठ कृति दरिद्र बने रहने के लिए है? निर्धनता और अभाव मनुष्य के स्वभाव के अनुकूल

नहीं, परन्तु दुख की बात यह है कि न आपको उस दैवी शक्ति पर भरोसा है और न ही आप वह आवाज सुन पाते हैं, जो हर समय आपके अन्दर प्रतिध्वनित होती रहती है, जो आपको परिपूर्णता की ओर ले जाने का आह्वान करती रहती है। आपमें हिम्मत ही नहीं होती कि आप उस ओर बढ़ें और आपका जो अधिकार है, उसे प्राप्त करें।

बात यह है कि आप बहुत छोटी-छोटी चीजें ही मांगते हैं; उनकी ही आकांक्षा करते हैं और वही आपको प्राप्त भी होती हैं। इस प्रकार आपकी इच्छाएं बिखर जाती हैं और वह दैवी स्वभाव मन्द पड़ जाता है जिस पर आपका स्वाभाविक अधिकार है। इस प्रकार आप महान और दिव्य वस्तुओं की प्राप्ति का द्वार ही बन्द कर देते हैं। इस प्रकार आपका मानसिक क्षेत्र संकुचित होता है और विकास रुक जाता है और आपका स्वभाव ही कुछ ऐसा बन जाता है कि आप क्षुद्र और संकीर्ण बातों के अतिरिक्त न कुछ देख पाते हैं और न ही सोच पाते हैं।

आपको चाहिए कि अपनी इच्छाओं व महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करें और इस विश्वास के साथ प्रार्थना करें कि आपकी इच्छाओं, आकांक्षाओं, अभिलाषाओं को पूरा करना उसका स्वभाव है। यह न समझिए कि उससे कुछ मांगने या मिलने से उसके खजानों में कोई कमी आ जाएगी। उसके खजाने उसी प्रकार अटूट हैं, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश उन सभी के लिए खुला है जो उसे प्राप्त करना चाहते हैं। उसका स्वभाव सबको प्रकाश और गरमी देना है। चाहे जो भी उस प्रकाश को ग्रहण करे, सूर्य के प्रकाश में कोई कमी नहीं आती। एक जलते दीपक से दूसरा दीपक प्रज्वलित किया जाता है तो पहले दीपक में रंचमात्र भी कमी नहीं आती।

इसी प्रकार आप यदि मैत्रीभाव रखते हैं तो इससे आपकी मित्रता रखने की योग्यता का विकास ही होता है, आपका कुछ घटता नहीं। एक दीपक से हजारों-लाखों दीपक रोशन किए जाते हैं। यदि आप इस दैवी शक्ति के प्रवाह को अपनी ओर ला सके और उसका सही उपयोग कर सके, तो आपको इस जीवन का रहस्य ज्ञात हो गया। यदि यह रहस्य आप पर प्रकट हो जाता है तो आपके कार्य-सम्पादन की शक्ति हजारों गुना बढ़ जाएगी। आप उस शक्ति के भागीदार बन जाएंगे। उससे आपकी आत्मा अच्छे संस्कारों से युक्त होती चली जाएगी। दरिद्रता के विचार आपके हृदय से निकल जाएंगे और प्रभु की श्रेष्ठता आप पर प्रकट होने लगेगी। आप उस श्रेष्ठता के उपासक बन जाएंगे। यह श्रेष्ठता उस परमपिता परमात्मा की ही प्राप्ति होती है।

बात दरअसल यह है कि प्रत्येक बुरा कार्य आपकी आंखों पर परदा डाल देता है, जिसके कारण आप परमात्मा की श्रेष्ठता के दर्शन नहीं कर पाते। इसलिए जब आप अपनी आत्मा की आवाज सुनकर प्राणिमात्र से अपनी स्वार्थसिद्धि का विचार त्याग देंगे तो संसार की सभी वस्तुएं आपको सुन्दर प्रतीत होने लगेंगी। कठिनाई यही है कि आप उस दैवी प्रवाह को अपने दुर्विचारों और दुष्कर्मों से अवरुद्ध किए रहते हैं।

प्रत्येक बुरा कार्य आपकी आंखों पर पर्दा डाल देता है। आत्मा को दबा देता है। आत्मा की आवाज सुनकर यदि आप अपनी स्वार्थसिद्धि का विचार त्याग देंगे तो निश्चित ही दुष्कर्मों से अपने आपको बचा सकेंगे।

आप जब संकीर्णता का मार्ग त्यागकर व्यापक दृष्टि अपना लेंगे तो आपको पता लगेगा कि आप इतने दिनों से जिस वस्तु की खोज में लगे थे, वह स्वयं आपको खोज रही थी और वह आपको आधे मार्ग में ही प्राप्त हो जाएगी।

आप यह भी कभी न सोचें कि आपके पास अमुक वस्तु नहीं। यह भी न सोचें कि जो काम दूसरे व्यक्ति कर सकते हैं, वह आप नहीं कर सकते। ऐसा सोचने से आपका भविष्य अन्धकारपूर्ण बन सकता है। आपको तो चाहिए कि आप अपने मन से दरिद्रता और अभाव के विचारों को निकाल दें। जब तक आपको ये विचार घेरे रहेंगे, तब तक आपमें जो अद्‌भुत शक्ति है, वह छिपी रहेगी और आपको इच्छित पदार्थ प्राप्त न हो सकेंगे। आवश्यकता है मानसिक भावों व विचारों को और उदार बनाने की, जो सत्य के समान उज्ज्वल और उजागर हों, क्योंकि भावों का उद्‌गम स्थल मन ही है, वहीं से विचारों का अंकुर फूटता है और उसके बाद ही बाहर के वातावरण में फैल जाता है। मन में तो आपके दरिद्रता के विचार हों और आप समृद्ध बनना चाहें, यह आपकी भूल है। आप प्रयत्न एक वस्तु के लिए करें और आशा दूसरी की रखें तो यह कैसे होगा? इस बात का ध्यान रखें कि आप समृद्धि और सम्पन्नता की कितनी भी इच्छा रखें, दरिद्रता और अभाव के विचार सदा ही आपको निराश और आपके उत्साह को क्षीण करते रहेंगे। अतः यदि आप समृद्ध होना चाहते हैं तो अपने विचारों को समृद्धि के अनुरूप ही बनाइए। यह आवश्यक है और इस तालमेल के बिना न सुख की प्राप्ति होगी, न समृद्धि की।

आपकी यह वर्तमान स्थिति ऐसी क्यों है, इसका उत्तर यही है कि आप अपने आपको ऐसा मानते हैं। यदि आपकी आत्मा संकुचित है या उसमें संकीर्ण विचारों का वास है तो समझ लीजिए कि आप समृद्धि से कोसों दूर भाग रहे हैं, क्योंकि जब आपके विचार

ही समृद्धि एवं सम्पन्नता की ओर नहीं जाएंगे तो वे आपकी ओर क्यों और कैसे आएंगी? जिस वस्तु पर आपको विश्वास ही नहीं है, वह आपको क्यों मिलने लगी? सीमाओं के बन्धन और संकीर्णताएं तो आपमें हैं, प्रभु में नहीं। वह तो चाहता है कि आपको सुख, शान्ति, समृद्धि प्राप्त हो, क्योंकि इसका निर्माण उसने आपके लिए ही किया है। यदि आप उन्हें प्राप्त नहीं कर पाते तो दोष आपका अपना है, किसी दूसरे का नहीं, क्योंकि आपके विचार संकुचित हैं, आपकी आत्मा संकीर्ण है।

कुछ लोगों का कहना है और उनका विश्वास भी है कि इस संसार में कुछ मनुष्यों को निर्धन, दरिद्र और गरीब रहना ही चाहिए, परन्तु क्या आप बता सकते हैं कि परमात्मा ने आदमी का जो ढांचा बनाया है, जिसमें नाक, कान, आंख आदि के लिए स्थान निश्चित है, क्या इसी तरह गरीबी, निर्धनता और कमी के लिए भी कोई स्थान रखा गया है? हमारा यह दृढ़ विचार है कि पृथ्वी पर कोई भी व्यक्ति निर्धन होना ही नहीं चाहिए। संसार में इतनी दौलत होने पर भी यदि कोई व्यक्ति गरीब, दरिद्र और निर्धन रहता है तो दोष उसके संकीर्ण विचारों का ही है।

इससे यह सिद्ध होता है कि विचार ही चरित्र का गठन करते हैं। यदि आपके विचार दरिद्रता और लाचारी के रहेंगे तो आप स्वयं भी दरिद्र और हर बात के लिए लाचार बने रहेंगे। परमात्मा को यह कभी स्वीकार नहीं कि आप जीवन भर दाल-रोटी अथवा केवल उदर-पूर्ति के ही चक्कर में पड़े रहें, आपको अपना जीवन सुधारने का कोई अवसर ही न मिले। मानव को जीवन इसलिए नहीं मिलता कि वह जीवन भर दरिद्र बना रहे। आपकी सबसे महान और बलवती आकांक्षा यह होनी चाहिए कि आप मानवीय गुणों का विकास करके अपने जीवन को समृद्ध और ऐश्वर्यशाली बनाएं।

आपको यह निश्चय कर लेना है कि आप अपने मन में दरिद्रता के विचार न आने देंगे, सदैव सम्पन्नता के विचारों को ही अपने मन में स्थान देंगे। तब निश्चय ही आपको सुख और समृद्धि प्राप्त करने में सफलता प्राप्त होगी।

आप जैसा सोचते हैं, वैसे ही बनते भी हैं। इसका भावार्थ यही है कि आप अपने विचारों के अनुरूप ही अपने भविष्य का निर्माण करते हैं। आपने कभी अवश्य ही अनुभव किया होगा कि आपके आस-पास का वातावरण तब सुखद और सौरभमय रहता है, जब आप समृद्ध होते हैं, ऐश्वर्यशाली होते हैं और आपको पूर्णता का अहसास होता है। जब आप दरिद्र होते हैं, अभावग्रस्त होते हैं, आपके पास किसी भी चीज की कमी होती है तो निश्चय ही आपके आस-पास का वातावरण निराशापूर्ण, घिनौना और निरादरपूर्ण होता है। क्या आप इसीलिए इस संसार में आए हैं कि आप बेकार की ठोकरें खाते फिरें या मारे-मारे फिरते रहें। आपने मनुष्य जन्म लिया है, इसलिए आपकी आकांक्षाएं ऊंची होनी चाहिए, ताकि आप उन्नति की ओर अग्रसर होते रहें। आप अपने दरिद्रता के विचारों के कारण इस दशा को पहुंच गए हैं, जबकि आपमें सम्पूर्ण श्रेष्ठता, महानता और वैभव विद्यमान है। संकीर्णता के विचार अपने मन से निकाल बाहर कीजिए, अपने जीवन का आदर्श ऊंचा बनाइए। यदि आप ऐश्वर्य, सुख और सम्पन्नता का दावा करते हैं तो आप

अवश्य ही ऐश्वर्यशाली बन जाएंगे। इस बात के अनेक प्रमाण हैं कि आप उन सभी उत्तम वस्तुओं के उपभोग के लिए पैदा हुए हैं, जो संसार में विरले ही सौभाग्यशाली व्यक्तियों को प्राप्त होती हैं। फिर आप भी क्यों नहीं उन श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करते? आप भी इस संसार को बनाने वाले ईश्वर के अंश हैं, आपमें भी वे ईश्वरीय गुण विद्यमान हैं। सुख, समृद्धि, सम्पन्नता और ऐश्वर्य के अधिकारी आप भी हैं, परन्तु आपको इसके लिए अपने मन, वचन और कर्म द्वारा उन्हें प्राप्त करने का यत्न अवश्य करना होगा।

यदि आप किसी व्यक्ति को भूखा और दरिद्र देखते हैं तो आपको जान लेना चाहिए कि वह अपनी भूलों के कारण ही अपने लक्ष्य से भटक गया है। अवश्य ही उसने कोई भूल की है। सभी अवस्थाएं आपके विचारों के अनुकूल बनती हैं। आपको मित्र एवं शत्रु अपने विचारों के अनुरूप ही मिलेंगे। किसी से मेल होगा या विरोध, तो भी आपके विचारों के अनुरूप ही होगा। यदि आपके मन में सदा दरिद्रता के ही विचार भरे रहते हैं, चारों ओर अभाव ही दीखता है तो आपकी परिस्थितियां अभावमय ही बनेंगी; परन्तु यदि आपके विचार ऊंचे हैं, उदार हैं और आप मन, वचन और कर्म से प्रयत्न भी करते हैं तो आपकी परिस्थितियां भी निश्चित रूप से आपकी इच्छाओं के अनुरूप बन जाएंगी। आप अपने जीवन में जो कुछ भी कर पाते हैं या जो कुछ आपको प्राप्त है, वह आपके विचारों के अनुरूप ही है, आपके विचारों के प्रभाव से ही प्राप्त हुआ है।

यदि विशेष कारणों के न होने पर भी आपको कोई व्यक्ति दरिद्र, असमृद्ध अथवा अभावग्रस्त दिखाई दे तो समझ लीजिए कि उसके मानसिक विचार त्रुटिपूर्ण हैं। यदि आप अपनी परिस्थितियों या अवस्था से सन्तुष्ट नहीं हैं या आपको अपना जीवन दूभर और कठोर प्रतीत होता है और आप अपने भाग्य को कोसते रहते हैं तो जान लीजिए कि यह सब आपके विचारों का ही कुप्रभाव है। आपने जो लक्ष्य बना रखे हैं, यह उन्हीं का परिणाम है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा कारण हो ही नहीं सकता।

अच्छे विचारों द्वारा ही आप अपना जीवन बदल सकते हैं। समृद्धियुक्त विचारों से ही आपको मनचाही वस्तुओं की प्राप्ति होगी। यदि आप उस प्रभु पर भरोसा रखें, उसकी विशाल सामर्थ्य के प्रति आस्था रखें तो आपकी गरीबी, निर्धनता और दीनता का पता ही न चले, परन्तु आपको तो उस पर विश्वास ही नहीं। आप उस परमपिता से वही सम्बन्ध क्यों नहीं रखते जो एक बेटे का अपने बाप से होता है! यदि आपको यह विश्वास न हो कि यह सुन्दर व स्वादिष्ट पदार्थ कल प्राप्त नहीं होगा तो आप उसे नहीं खाएंगे और जिसे विश्वास होता है, वह सब कुछ खा लेता है। आपके इस विश्वास के कारण ही आपको जो कुछ प्राप्त होता है, वह बहुत थोड़ा होता है। जिस ऐश्वर्य पर आपका अधिकार है, यदि आप उसका दावा नहीं करते तो आप संकुचित, दरिद्र और कंजूस ही बने रह जाते हैं। अपना अधिकार जताते हुए विशाल हृदय से किसी वस्तु को क्यों नहीं मांगते? आप छोटी-छोटी साधारण-सी चीजें पाकर ही क्यों सन्तोष कर लेते हैं? प्रभु तो चाहता है कि आपका जीवन सुखी, समृद्ध और ऐश्वर्यशाली हो और जो पदार्थ आपके

लिए हैं, वे सब आपको प्राप्त हों। वह तो चाहता है कि कोई भी मनुष्य दुखी और दरिद्र न रहे। मानव को जो कुछ चाहिए, वह उसे अवश्य मिलना चाहिए। अभाव उसके स्वभाव के प्रतिकूल है; परन्तु आप जिस वस्तु की कामना करते हैं, उसके लिए आपको मन, वचन और कर्म से यत्न करना चाहिए और अविश्वास की भावना नहीं रखनी चाहिए। जो आप चाहते हैं, यदि उसकी इच्छा भी करते हैं और उसके साथ आपमें अविश्वास भी व्याप्त है तो वह वस्तु आपको प्राप्त नहीं हो सकेगी।

दरिद्रता अथवा गरीबी आपके मन का रोग है। यदि आप सचमुच ही इस रोग से ग्रस्त हैं तो अपने विचारों व मनोभावों को बदल दीजिए। यदि आप इसमें सफल हो गए तो आप स्वयं अपनी आशातीत उन्नति पर आश्चर्यचकित रह जाएंगे।

जो व्यक्ति ऐश्वर्यवान और समृद्ध होते हैं, उन्हें अपनी योग्यता का पूरा-पूरा भरोसा होता है और खुद पर विश्वास होता है। उनके कदम लड़खड़ाते नहीं। वह अपने काम को शंकित रहकर नहीं करते। वे जो भी कार्य करते हैं, जिधर भी कदम उठाते हैं, उनके वस्त्र या रहन-सहन का ढंग, सब-कुछ उस वस्तु की प्राप्ति की ओर चलता है, प्रेरित होता है, जिस वस्तु की प्राप्ति उनका लक्ष्य है और जिसमें उन्हें पूर्ण विश्वास है।

इस संसार में बहुत से लोग तो गरीबी के इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि उसे भगवान का दिया हुआ प्रसाद ही मानते हैं। उन्हें दिन-रात गरीबी ही दीखती है, वे चौबीस घंटे गरीबी के ही राग अलापते और सुनते हैं। उन लोगों ने कभी यह सोचा ही नहीं कि इस गरीबी, दरिद्रता, मलिनता और निकृष्ट विचारों के कारण ही उनकी उस शक्ति का ह्रास हो गया, जिसके द्वारा वे अपनी दरिद्रता दूर कर सकते हैं। इस प्रकार उनके लिए दरिद्रता का भार और भी अधिक बोझिल बन जाता है।

यदि आप यह समझते हैं कि आपकी स्थिति बहुत भयावह हो चुकी है तो भी आप चिन्ता मत कीजिए। बस, उधर से मुंह मोड़ लीजिए। जब तक आपके मन में दरिद्रता के विचार रहेंगे, तब तक आप अपनी स्थिति से चिन्तित ही रहेंगे, आप समृद्धशाली नहीं हो सकेंगे। आपकी स्थिति आपके विचारों अनुकूल ही रहेगी। यदि आपके विचार दरिद्रता के हैं तो आपकी दशा भी वैसी ही रहेगी। आप जिस वस्तु की कामना ही नहीं करते, वह आपको प्राप्त कैसे हो सकती है? नदी जहां से निकलती है, जो उसका उद्‌गम स्रोत है, कभी भी उससे ऊंचे स्थान पर नहीं पहुंच सकती। जिसका मन ही निर्धन है, वह धनवान कैसे बनेगा? यदि आप समृद्ध होना चाहते हैं तो अपने सौभाग्य-सूर्य की ओर अपनी दृष्टि गड़ाइए और कमर कस लीजिए। तब आप देखेंगे कि समृद्धि आपकी ओर बढ़ी आ रही है।

कुछ लोग पैसा तो कमाना चाहते हैं, धनी तो होना चाहते हैं, परन्तु अपने मन को इतना संकुचित रखते हैं कि कभी अधिक धन नहीं कमा पाते। अपने मन-मन्दिर में समृद्धि का दीपक जलाइए तो आपका जीवन भी समृद्धि के आलोक से जगमगा उठेगा।

समृद्धि का आदर्श स्थापित कीजिए। आपने बहुत दिन निर्धनता का दुख भोग लिया।

वास्तव में निर्धन वह नहीं जिसके पास धन-दौलत या जायदाद आदि न हो; गरीब वह है जिसके विचारों में, भावनाओं में गरीबी है, जो निर्धनता के विचारों के कारण अपनी आत्मा का हनन कर रहा है, जिसके मन व विचारों में दरिद्रता बसी है, वही गरीब या निर्धन है।

अपने मन-मन्दिर में समृद्धि का दीपक जलाएं, आपका जीवन उसके आलोक से जगमगा उठेगा। तब आप देखेंगे कि सफलता और समृद्धि आपकी ओर बढ़ी आ रही है।

अधिकांश लोगों को यह ज्ञात ही नहीं कि उनके मन में कितनी अद्‌भुत शक्ति भरी है। किसी भी वस्तु को मन पहले देखता है, आंखें बाद में। आपके मन में किसी सुन्दर वस्तु का चित्र अंकित है तो आंखों से भी वह आपको सुन्दर ही दिखाई देगी।

विश्व भर में जितने भी करोड़पति हुए हैं, उन्होंने पहले अपने मन में ही समृद्ध परिस्थितियां उत्पन्न कीं; तभी वे समृद्धि प्राप्त कर सके। उन्होंने अपना मन, वचन और कर्म उस दिशा में लगाया। वे अपने हाथों से काफी काम करते रहे हैं। उनके मन में सदा समृद्धि का सागर हिलोरें लेता रहा और उसी भावना के अनुरूप उन्हें उसका फल भी प्राप्त होता रहा है।

कंजूसी करके पैसा-पैसा जोड़ने से कोई लाभ नहीं। इस प्रकार आप धनी नहीं बन सकेंगे। इससे तो आपकी आत्मा मलिन ही होगी। समृद्धि तो समृद्धि के नियमों का पालन करने से ही प्राप्त होगी। कंजूस व्यक्ति सदा संकीर्ण हृदय वाला होता है। समृद्धि से तो आदमी उदार और विशाल व्यक्तित्व वाला बनता है। उससे आपको एक विशिष्ट आनन्द की अनुभूति होगी। वस्तुतः यही सच्ची समृद्धि है, यही सौभाग्य है, यही आपका सच्चा ऐश्वर्य है।

समृद्ध जीवन का रहस्य

फिजूलखर्ची मनुष्य के जीवन में संकट का कारण बनती है। आपको उतने ही पांव फैलाने चाहिए, जितनी लम्बी चादर हो। याद रखें–बूंद-बूंद से सागर बनता है। यदि आप अपने बेकार के खर्चों पर अंकुश लगाकर अल्प बचत की आदत डालेंगे तो निश्चित ही एक दिन सम्पन्नता के शिखर पर पहुंचेंगे।

कारनेगी का कहना है कि समृद्धि के लिए मनुष्य को जो बात सबसे पहले सीखनी चाहिए वह यह है कि वह अपने धन की बचत कैसे करे। यदि वह मितव्ययी है और उसके द्वारा धन बचाता है तो यह सबसे अच्छी आदत है और अन्य आदतों से बहुमूल्य भी। बचत ही समृद्धि का मूलमन्त्र है और सौभाग्य का मूलधन भी। सभ्य और जंगली व्यक्ति में भेद जताने वाली बात बचत है। बचत से समृद्धि तो होती ही है, मनुष्य के चरित्र का निर्माण भी होता है।

जे.जी. हालैण्ड का कहना है कि अमेरिका का न्यूइंग्लैंड प्रदेश बहुत कम उपजाऊ है। वहां अनेक कठिनाइयां भी हैं, परन्तु सारी पृथ्वी पर सबसे अधिक सुख-सुविधाओं का विकास वहीं पर हुआ। इसका कारण यही है कि वहां का प्रत्येक निवासी यह यत्न करता है और आशा करता है कि उसे जीवन में समृद्धि और उत्कर्ष प्राप्त करना है। यह लक्ष्य सामने रखकर ही वह कार्य आरम्भ करता है। वहां जो लोग समृद्धि और ऐश्वर्य के स्वामी हैं, वे वही हैं जिन्होंने थोड़ी-थोड़ी बचत करके ही अपने ऐश्वर्य और सुखों का श्रीगणेश किया। उनका नियम था कि उनकी जितनी आय थी, उन्होंने कभी उसे पूरा व्यय नहीं किया। वे उसमें से कुछ-न-कुछ धन अवश्य बचाते रहे। उनका नियम था कि 25 या 50 डॉलर भी साल भर में बच सकते हैं तो उन्हें बचाकर अलग डाल दिया जाए। इस रीति से जोड़ी हुई समृद्धि स्थायी थी।

एक अन्य लेखक ने एक युवक के सम्बन्ध में बताया कि वह अभी वयस्क भी नहीं हुआ था और अशिक्षित भी था। उसने पेनमिलवेनिया की कोयला खानों में काम प्राप्त किया, परन्तु वह परिश्रमी और मितव्ययी था। उसने पत्नी की सहायता से अपने घर

के पास जमीन का एक छोटा-सा टुकड़ा किराए पर ले लिया, और वहां आलू उगाना शुरू किया। वह व्यर्थ में न अपना समय नष्ट करता था और न ही पैसा। उसमें कोई बुरी आदत भी न थी। खान में एक बार दुर्घटना हुई और उसकी एक बांह टूट गई। तब भी वह खेत में जाता और एक हाथ तथा दांतों की सहायता से कपास इकट्ठी करता। प्रतिदिन उसे 25 सेण्ट मजदूरी मिलती। जब भी अच्छी मजदूरी मिलती तो उसमें से वह कुछ-न-कुछ अवश्य बचाता और जब मजदूरी कम होती तो प्रयत्न करता कि वह अपनी गुजर उसी में कर ले। वह उसी को अपना सौभाग्य समझता और प्रभु का धन्यवाद करता। इसी ईमानदारी और श्रम के कारण उसने काफी बचत कर ली और कुछ वर्ष बाद एक अच्छा फार्म खरीद लिया। उसने एक अच्छा घर भी बनवाया और आराम से रहने लगा।

उसका नियम था कि जब तक काम मिले और हाथ में काम हो, वह कभी खाली न बैठता, कभी भी अपना समय व्यर्थ न गंवाता। वह ऊंची दर न मिलने के कारण काम को कभी न छोड़ता। वह यथासंभव धन की बचत करता था। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो ऐसे व्यक्ति का उपहास करते हैं, परन्तु ऐसे व्यक्ति किसी के उपहास की परवाह नहीं करते। एक दिन वही उपहास करने वाले देखते हैं कि उनके पास दिखाने को कुछ भी नहीं और श्रम और बचत करने वाला कहां-से-कहां पहुंच गया।

आज के नवयुवक रेजगारी को कुछ नहीं समझते और उसे यूं ही नष्ट कर देते हैं। उनको यह ज्ञान नहीं कि उसी पर समृद्धि की नींव रखी जा सकती है। प्रति व्यक्ति आय कितनी भी कम हो, पर यदि वह उसमें भी बचत करता है तो कोई-न-कोई धन्धा आरम्भ किया जा सकता है। जिस व्यक्ति के पास कुछ भी नहीं, वह तो असहाय है। वह धन्धा या व्यापार आदि कुछ भी तो नहीं कर सकता। जब लोग निर्धन हो जाते हैं तो उन्हें आत्मरक्षा करने और अपना सम्मान बचाने में भयंकर कठिनाई होती है।

अल्प बचत को बेकार की चीज न समझें। जो व्यक्ति थोड़ा-थोड़ा करके भी धन बचाते हैं, वे विशाल अथवा मध्यम धन-सम्पत्ति के स्वामी होते हैं।

यह एक ऐसी परम्परा है, एक ऐसा पाठ है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक दोहराया जाना चाहिए कि जो थोड़ा-थोड़ा करके भी धन बचाते हैं, वे ही विशाल अथवा मध्यम धन-सम्पत्ति के स्वामी होते हैं। अल्प बचत को बेकार की चीज नहीं समझना चाहिए।

बूंद बूंद सों घट भरै, टपकत रीतौ होय।

यह सिद्धान्त सभी को याद रखना चाहिए।

यदि किसी देश की जनसंख्या 70 करोड़ मान ली जाय और यदि वहां का प्रत्येक निवासी एक पैसा भी प्रतिदिन बचाए तो एक दिन में यह राशि 7 लाख बनती है। यदि साल भर की बचत का योग किया जाय तो आप अनुमान कर सकते हैं कि यह राशि अरबों रुपयों में पहुंचेगी। यदि अल्प बचत के महत्व को समझें तो वह देश न जाने कहां से कहां जा पहुंचे और सम्पन्नता का ऐसा द्वार खुल जाय कि जिसका कोई अनुमान भी न लगा सके। यह धनराशि उस देश की कायापलट करने में भारी सहायक सिद्ध हो सकती है। इससे प्रत्येक परिवार के अर्थतन्त्र को बदलने में भी सहायता मिलेगी। यदि आप व्यक्तिगत रूप से प्रतिदिन रुपया-दो रुपया बचा सकते हैं तो उसके जो भी परिणाम होंगे, उसकी आप कल्पना मात्र ही कर सकते हैं।

एक लेखक ने कहा, "मेरी इच्छा है कि आकाश में सबसे ऊंचे स्थान पर दो शब्द—'बचत बैंक'—स्वर्णाक्षरों में लिख दूं।" शालाओं में बच्चों को बचत की जो शिक्षा दी जाती है, वह बहुत ही अच्छी शिक्षा है। अनेक पश्चिमी देशों में बच्चों के बचत बैंकों का आरम्भ किया गया, जिससे बच्चों का चॉकलेट, टॉफी इत्यादि का बहुत-सा खर्चा घट गया। वे बचत का वास्तविक अर्थ और महत्व समझने लगे। वस्तुतः अल्प बचत का अर्थ केवल धन की बचत ही नहीं, इससे बहुत-सी फिजूलखर्ची और बहुत-सी बुरी आदतों से छुटकारा मिल जाता है।

बच्चों को यह शिक्षा दी जानी चाहिए कि वे पैसे-दो पैसे भी फिजूलखर्च में न डालें, जिन्हें वे प्रायः बिना सोचे खर्च कर देते हैं। यदि वे बचत करेंगे तो हो सकता है कि वे बचे हुए पैसे आगे चलकर उन्हीं के काम आएं। इसी प्रकार यदि छोटी-छोटी चीजें भी संभालकर एक ओर रख ली जाएं तो किसी समय आवश्यकता पड़ने पर काम दे सकती हैं।

मितव्ययी होने की आदत अवश्य डालनी चाहिए, क्योंकि सोच-समझकर की हुई बचत को ही आप कभी उदारतापूर्वक किसी जरूरतमन्द को दान भी कर सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर खर्च भी कर सकते हैं। बचपन में बच्चे अनेक प्रकार की चीजें इकट्ठी करते रहते हैं। यह आदत अच्छी है, इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इसका विकास करके इसे धन की बचत की ओर लाना चाहिए। यह बात सही है कि बड़े लोगों या व्यापारियों को सुतली, डोरी और पैकिंग का बचा हुआ सामान संभालकर रखने की फुर्सत नहीं होती, परन्तु यदि उन्हें किसी प्रकार बचाकर रख लिया जाए तो आड़े वक्त यही चीज़ें बहुत काम आती हैं।

विलियम मैथ्यूज का कहना है कि यह बहुत पुरानी सीख है कि संसार के पदार्थों का मालिक बनने, धनी होने और आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र रहने का उपाय है कि मनुष्य छोटी-से-छोटी वस्तु को भी व्यर्थ न गंवाए, उसे अपने पास जमा रखे। एक-एक पैसे

का हिसाब रखे और प्रत्यक ऐसी मद को, आदत को समाप्त कर दे जिससे धन का अपव्यय होता हो।

बच्चों की पढ़ाई की अनेक पुस्तकों में लिखा रहता है, "तुम पैसे की परवाह करो, पैसा तुम्हारी परवाह करेगा" और "यदि जानबूझकर धन या किसी वस्तु को नष्ट करोगे तो इससे घोर अभाव पैदा होगा और वह तुम्हारे लिए दुखदायी होगा।" ये सभी उक्तियां सच हैं। संसार में जो लोग सम्पन्न होकर जीवन बिताते हैं, वे ऊपर कही गई सभी बातों से प्रेम करते हैं।

अनुभवों का निचोड़ सारतत्व है कि छोटी-से-छोटी वस्तु तथा धनराशि को बचाना, यही धनी बनने की ओर कदम बढ़ाना है। इसका भाव है कि छोटी-से-छोटी वस्तु को भी नष्ट न होने देना और छोटी-से-छोटी राशि को भी बचाना सम्पन्नता की ओर बढ़ना है। यह एक ऐसा फार्मूला है, जो कभी गलत सिद्ध नहीं हो सकता।

आप कहीं भी, किसी भी स्थान पर धनी व्यक्ति को देखें तो आपको पता चलेगा कि उस व्यक्ति का रहस्य बचत तो है ही, साथ ही बची हुई वस्तुओं को संभालकर रखना भी है। धन की प्राप्ति आंधी के आम नहीं, और न ही धन आंधी के आम की तरह किसी को प्राप्त होता है। छत फाड़कर भी किसी को सम्पत्ति नहीं मिलती। लोगों ने निरन्तर धीरे-धीरे पैसे बचाए हैं, कण-कण करके जोड़ा है, इस प्रकार बचत करते हुए उन्हें वर्षों बीते हैं, जबकि अन्य लोग उसे उड़ाते और फेंकते, अपव्यय करते रहे हैं। धनी व्यक्ति बड़ी किफायत से काम लेते हैं; जबकि सर्वसाधारण बिना विचारे पैसा फूंकते रहते हैं। जिन लोगों को अपने भविष्य का ध्यान नहीं होता, वे छोटी-सी राशि को तुच्छ समझते हैं, किन्तु समझदार व्यक्ति फालतू आने-दो आने को भी लगातार जमा करते रहते हैं और सालों बाद वही राशि एक पहाड़ बन जाती है।

कुछ लोग कहा करते हैं कि उनके पास बहुत फालतू धन है और वे उसे फालतू समझकर व्यर्थ में खर्च कर देते हैं। इन लोगों को बचत बैंक का सहारा लेना चाहिए। यदि बचत बैंक का प्रबन्ध न हो तो उन फालतू पैसों को किसी ऐसी जगह रखना चाहिए, जहां वे सुरक्षित पड़े रहें और उन्हें खर्च न किया जा सके। बाद में उन्हें समेटकर किसी बैंक में जमा कर देना चाहिए।

एक सज्जन ने अपने एक कर्मचारी से कहा था कि संकट के दिनों के लिए कुछ-न-कुछ अवश्य बचाकर रखना चाहिए। कुछ दिन बाद उसने अपने कर्मचारी से पूछा, "तुमने कितनी बचत की?"

कर्मचारी ने उत्तर दिया, "बचत तो की थी, परन्तु कल संकट का दिन था और सारी रकम खर्च हो गई। खर्च भी शराब में।"

"ओहो, तुमने उस रकम को बचत बैंक में नहीं रखा। यही तुम्हारी गलती थी।"

एक व्यक्ति के पास थोड़ी-सी जमीन थी, पर उसमें चट्टानें थीं। इसलिए वहां कुछ पैदा न होता था। वह वहां से एक किसी बड़े शहर में जाकर वहां एक कोयला कम्पनी में नौकरी करने लगा। चार साल बाद उसी व्यक्ति को कम्पनी का भागीदार बना लिया

गया। वह युवक बहुत ही नम्र स्वभाव का था। उससे पूछा गया तो उसने बताया कि मेरे पास कोई रुपया-पैसा न था, परन्तु एक ही बात ने मुझे समृद्ध बनने में सहायता की है, वह है बचत। मैंने जो कुछ कमाया, जो भी वेतन मिला, उसमें से कुछ-न-कुछ अवश्य बचाता रहा। इसी बचत के कारण मुझे आज इस कम्पनी का भागीदार बनने का अवसर प्राप्त हुआ। यह घटना शिकागो की है।

बैंजामिन फ्रैंकलिन का कहना है, "यदि आप अपनी आय से कम खर्च करते हैं तो समझ लीजिए कि आपको पारसमणि मिल गई। ईमानदारी और परिश्रम से काम करो और अपनी आय में से एक आना कम कर दो, तब तुम्हारी जेब मोटी होने लगेगी। उस समय तुम्हें जरूरतें कष्टकर न लगेंगी, भूख का डंक तुम्हें सहन न करना होगा और ठण्ड में भी तुम्हें सिकुड़ने की जरूरत न होगी।

फ्रैंकलिन से सम्बन्ध स्थापित करके सभी व्यक्ति अपने को गौरवान्वित अनुभव करते थे। वह ऐसा व्यक्ति था, जिसने बचत के मामले में कभी गफलत नहीं की और यही राज था उसकी महानता का। मितव्ययी होना और बचत करना ही उसकी उन्नति का मूलमन्त्र था।

भोग-लालसाओं में रुपया बरबाद न करके जो व्यक्ति मितव्ययी और बचत करने वाला है उसकी उन्नति निश्चित है।

युवावस्था में प्रायः अधिकांश लोग भोग-लालसाओं में रुपया बरबाद करते रहते हैं, परन्तु मितव्ययी और बचत करने वाला व्यक्ति इस प्रकार की वृत्तियों से बचा रहता है। फ्रैंकलिन अपने जीवन की इस महान कला के आधार पर ही सभी ईसाई घरों में लोकप्रिय ही नहीं अमर भी हो गया। उसकी यह व्यावसायिक बुद्धिमत्ता ही प्रौढ़ावस्था तक पहुंचते-पहुंचते उसे महान बना गई।

आज ऐसा समय है कि जो कोई अल्प बचत करने की बात करता है, लोग उसकी हंसी उड़ाते हैं, उपहास करते हैं, परन्तु यह बात गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए।

अमेरिका में युवकों को अपना खाता खोलने की लगन रहती है। एक युवक की आयु बीस वर्ष की थी और उसे नौकरी करते हुए आठ वर्ष हो गए थे। उसे नौ सौ डॉलर प्रतिवर्ष वेतन मिलता था, परन्तु वह उसमें से कुछ भी न बचा पाता, उल्टा उसे भय लगा रहता कि कहीं उस पर कर्ज न चढ़ जाए। वह युवक यह सोचता था कि उसके खाते में कुछ-न-कुछ रुपया अवश्य बचा रहना चाहिए, चाहे वह कितनी भी छोटी रकम क्यों न हो। आयु के बीसवें वर्ष की समाप्ति पर उसने सोचा कि इस वर्ष उसने अपने वेतन का क्या किया? वह स्वयं कोई सही उत्तर न दे पाया। कई दिन तक इसी उधेड़-बुन में लगा रहा। अन्त में उसने कागज पर लिखना आरम्भ किया और भोजन, वस्त्र व माता-बहन आदि के खर्च लिखे। सारे खर्च का योग बनता था 600 डॉलर। 300 डॉलर कहां गए? कहां फिजूलखर्ची में उड़ा दिए? उसने अन्त में निश्चय किया कि मैं अपना खर्च प्रतिवर्ष 500 डॉलर से अधिक न होने दूंगा और यदि अगले वर्ष मेरा वेतन एक हजार डॉलर हो गया तो मैं इसके आधे में ही अपना खर्च चलाऊंगा। मुझे इसके लिए प्रयत्न करना ही होगा।

उसने अगले ही दिन बचत बैंक में 10 डॉलर से खाता खोल दिया और निश्चय किया कि प्रत्येक सप्ताह 10 डॉलर बैंक में जमा करवाता रहेगा। हो सकता है कि कभी अधिक खर्च हो जाए तो बैंक से पैसा निकलवा लूंगा, परन्तु जहां तक हो सकेगा, मैं बैंक में जमा राशि को नहीं निकलवाऊंगा।

बैंक में रुपया बढ़ रहा था, उसे इस बात की प्रसन्नता थी और साथ ही इस बात की भी प्रसन्नता थी कि वह अपने भविष्य को उज्ज्वल होते देख रहा है। जब साल समाप्त हुआ तो उसके बचत खाते में 500 डॉलर जमा थे। वह कभी-कभी पिक्चर देखने भी जाता था, पर डांस आदि किसी समारोह में नहीं गया। इतने पर भी उसने जब अपने पिछले वर्ष पर दृष्टि डाली तो उसे अनुभव हुआ कि गत वर्ष उससे पहले के सभी वर्षों से अच्छा व आनन्दयुक्त था। इस वर्ष उसने अपने मनोरंजन के लिए पुस्तकों का उपयोग किया था और उसका परिचय भी अच्छे लोगों से हो गया था। उसका वेतन भी बढ़ गया था और उसके बैंक के रुपये का ब्याज भी मिलने लगा था। जब उसके मालिकों को उसकी अच्छी आदतों और उसकी पासबुक का पता चला तो उन्होंने उसे अपनी कम्पनी का भागीदार बनने के लिए कहा।

इस कहानी से पता चलता है कि अच्छी आदतों और थोड़ी-थोड़ी बचत के कैसे उत्तम परिणाम होते हैं।

बहुत-से लोग जिन्होंने कभी मितव्ययी होने और बचत करने के बारे में सोचा भी नहीं, वे आत्मालोचन करें तो उन्हें अवश्य ही यह अनुभव होगा कि उन्होंने इतना रुपया व्यर्थ ही फूंक दिया, जिसका कोई भी निश्चित उद्देश्य नहीं था। इतना सोचकर भी यदि वे निश्चय कर लें और बचत करने लगें तो कुछ समय बाद उन्हें अवश्य ही सन्तोष होगा और प्रसन्नता भी।

एक अर्थशास्त्री ने लिखा है कि कोई भी देश अर्थ-संकट के दिनों में अपने देशवासियों

को छोटा-छोटा बचत-राशियों से किसी भी महान संकट से अपने को बचा सकता है। जब उत्पादन स्थिर हो और व्यय कम हो, लोग सोच-समझकर पैसा खर्च करते हों तो देश अधिक समृद्ध होता है। कारण यही है कि अगर उत्पादन अधिक होगा और लागत कम होगी तो उसका बहुत-सा भाग बच जाएगा। इससे एक तथ्य और सामने आता है कि जिन दिनों हम अधिक धन कमाते हैं, उन दिनों की अपेक्षा आर्थिक संकट के दिनों में हम अधिक धनी होते हैं, क्योंकि हम स्वभावतः कम खर्च करना चाहते हैं। इस बात से यही प्रेरणा मिलती है कि बचत करना बहुत जरूरी है।

यह तो कोई भी जान सकता है और एक अनुभवी अर्थशास्त्री ने इस बात का अनुमोदन भी किया है कि यदि आप नियमित रूप से छोटी-छोटी बचत करते रहेंगे तो समय आने पर आप बहुमूल्य चीजें बड़ी आसानी से खरीद सकेंगे।

आप कोई वस्तु खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए अभी से बचत आरम्भ कर दीजिए। इसका उपाय यह है कि यदि आप खाने में दस रुपया खर्च करते हैं तो ऐसा प्रयत्न कीजिए कि आठ रुपए में ही काम चल जाए। एक आदमी की इच्छा सोने की घड़ी खरीदने की थी। वह अपने दोपहर के खाने पर पचास सेण्ट खर्च करता था, उसने निश्चय किया कि अब वह 25 सेण्ट में काम चलाएगा। छह महीने में ही इतनी रकम इकट्ठी हो गई कि वह घड़ी खरीद सकता था।

घड़ी की बात सुन एक मित्र ने पूछा, "तुमने घड़ी खरीदी या नहीं?"

"बात यह है कि मुझे अब एक और विचार आता है। मैंने सोचा है कि मैं जब पचास सेण्ट के बजाय 25 सेण्ट में खाने का निर्वाह कर सकता हूं तो सोने की घड़ी के बिना भी काम चल सकता है। अब मैंने जो बचत आरम्भ की है, वह मेरे भविष्य के ऐश्वर्य की आधारशिला बन चुकी है। अब मैं उससे अपना मकान खरीदूंगा।"

समाचार पत्र के एक प्रकाशक ने अपने सौ विक्रेताओं को क्रिसमस के अवसर पर एक-एक बैंक पासबुक भेंट की। सबकी पासबुक में एक-एक डॉलर भी जमा करवा दिया था। फिर प्रकाशक ने विक्रेताओं से कहा, "अगले क्रिसमस तक जो व्यक्ति अपने बैंक खाते में एक डॉलर भी और जमा कर पाएगा उसे कम्पनी की ओर से एक डॉलर और दिया जाएगा।

अगले वर्ष के क्रिसमस पर जब जांच की गई तो पचास विक्रेताओं ने एक-एक डॉलर और प्राप्त कर लिया। एक विक्रेता ने तो पचास डॉलर तक जमा कर लिए थे।

यह बचत का व्यावहारिक उपदेश था। इस प्रकार उनमें बचत की आदत पड़ी और उन्हें प्रसन्नता का अनुभव होने लगा। यदि प्रकाशक यह न करता तो शायद उन सौ विक्रेताओं में से एक भी बचत खाता न खोलता।

यदि आप भी सुख और समृद्धि के मार्ग पर चलना और जीवन में कुछ करना चाहते हैं तो आज ही बचत की आदत डालिए और फिजूलखर्ची बन्द कर दीजिए।

जीवन के निर्माण में आशा का महत्त्व

मनुष्य की मानसिकता ही उसके जीवन-स्तर का निर्माण करती है। जिस प्रकार की इच्छाएं, आकांक्षाएं उसके मन में होती हैं, उसी प्रकार का उसका जीवन-स्तर होता है। मन के संकुचित विचारों को त्यागकर उच्च और सम्पन्न बनने की महत्वाकांक्षा से ही आपका जीवन-स्तर उच्च हो सकता है।

आप क्या करना चाहते हैं, इस बात की दृढ़ आशा अपने मन में रखें, क्योंकि आशा इच्छा से अधिक बलवती है। आप जैसी आशा करेंगे, वैसे ही बनेंगे, यह बात अधिक सच है बजाय इसके कि 'जैसा सोचोगे, वैसा बनोगे।' जो कुछ आप सोचते हैं, इच्छा करते हैं, उसका इतना महत्व नहीं जितना इस बात का है कि आप आशा क्या करते हैं। चिन्तन की अपेक्षा आपके मन का निश्चय अधिक गहराई तक पहुंचता है। आपको जिस बात की आशा या विश्वास होता है, आप वही कुछ प्राप्त करते हैं, क्योंकि उसी के कारण आपको दिशा-निर्देश मिलता है।

सफल जीवन का दो शब्दों में वर्णन है—प्रसन्नतायुक्त आशा। आशा से ही हमारे मन में प्रसन्नता रहती है और हम जीवन के संकटों का सामना कर पाते हैं। उत्साहहीनता को दूर निकाल फेंकें, मन में मनहूस और बुरी बातों की आशंका न आने दें। निरुत्साहित करने वाले विचारों से बचें। दिल दहलाने वाले कष्टों से न डरें। निर्धनता, कठिनाइयों और मुसीबतों से अपने मन को आशंकित न होने दें। हमें चाहिए इन सब बातों को धक्के मार-मारकर बाहर निकाल दें। इन बातों के स्थान पर प्रसन्न मन से उज्जवल भविष्य की ओर देखें, भले ही लक्षण ठीक न हों, इस बात की चिन्ता न करें। सफलता के बारे में सोचें, असफलता या बीमारी के विषय में नहीं। आप स्वस्थ हैं, मन में इस विचार को दृढ़ करें। रोग और बीमारी के विचारों को मन से निकाल दें। सम्पन्नता की आशा करें, निर्धनता के बारे में न सोचें। सदा यही सोचें कि आप कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेंगे, उनके सामने हथियार नहीं डालेंगे।

आप अपने विचार इस तरह के बनाएं कि आप हर कठिनाई पर विजय प्राप्त कर लेंगे, उसके सामने हथियार नहीं डालेंगे। तब आप निश्चित ही विजयी होंगे।

सचमुच 'प्रसन्नतापूर्ण आशा' शब्द ही उत्साह को बढ़ाने वाले हैं। सफलता के गुप्त रहस्य इन्हीं दो शब्दों में छिपे हुए हैं। हमारे विचारों में इतनी शक्ति है कि हम जिन चीजों के विषय में सोचेंगे, वही हमारी ओर आकर्षित होंगी। साहस के साथ भविष्य का सामना करने की शक्ति हमें विचारों से ही मिलती है। यदि मन दृढ़ हो, उसमें साहस और उत्साह हो तो जीवन में आने वाले संकट नष्ट हो जाते हैं।

क्या आपने कभी यह सोचा कि जब आप उस सर्वशक्तिमान प्रभु की सन्तान हैं तो फिर जिन श्रेष्ठ वस्तुओं की आपको आवश्यकता है, वे आपको क्यों नहीं मिलतीं? पिता जिस प्रकार अपने बेटों को अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकार देता है, उसी प्रकार आपको प्रभु से समृद्धियों से पूर्ण ऐश्वर्यशाली जीवन भी उत्तराधिकार में मिलता है। अब यह आपका काम है कि आप उस पर अधिकार करें। जब आपका उससे सम्बन्ध है तो आपको चिन्ता किस बात की? उसके भण्डार में तो किसी वस्तु की कमी नहीं। आप निर्धनता से घिरे हैं, अपने को दीन-हीन समझते हैं, आपको सफलता नहीं मिलती, आपके दिन अभावों में कट रहे हैं, आप अपने को तुच्छ समझते हैं तो साफ है कि आपको अपने प्रिय पिता पर भरोसा नहीं। स्पष्ट है कि आप अच्छी और उच्च बातों की आशा ही नहीं करते। आप बुरी बातों के विषय में सोचते हैं और इस प्रकार उन्हें ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जब वे ही बुरी बातें आपके पास आती हैं तो दुख क्यों मानते हैं?

आप जो कुछ मन में सोचेंगे, जिसका ध्यान करेंगे, वही बात मुख पर भी लाएंगे। जैसा बोलेंगे वैसे ही कर्म भी करेंगे, जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल मिलेगा। फिर कष्ट क्यों अनुभव करते हैं? यह सब कुछ तो आपका अपना किया हुआ है। आपको मालूम होना चाहिए कि वह प्रभु अपनी सन्तानों में भेदभाव नहीं करता, तब एक धनी और दूसरा निर्धन क्यों? आपने सोचा कि ऐसा क्यों होता है? ऐसा होता है आपकी आशा के अनुरूप, आपके चिन्तन के कारण और विश्वास के आधार पर।

आपकी मनोदशा से आपकी सफलता और असफलता का गहरा सम्बन्ध है। इसलिए उचित विचार रखने से, अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की अपनी सामर्थ्य पर भरोसा रखने से ही सफलता प्राप्त होती है, अविश्वास और निराशा से नहीं।

बहुत कम व्यक्ति यह समझ पाते हैं कि निर्धनता पहले मन में ही उपजती है। मानसिक विचार ही शरीर तक पहुंचते हैं। पहले हम मन से निर्धन होते हैं, भौतिक रूप से बाद में। इसका कारण यही है कि जैसी हमारी मनोदशा होती है, हम अनायास उसी प्रकार के कार्य की ओर बढ़ते रहते हैं और हमारी उपलब्धियां हमारे विचारों तथा हमारी आशाओं के अनुरूप ही होती हैं। बढ़िया भौतिक सुखों के बिना गुजारा करने की आदत ऐसी पक जाती है कि मानव उससे छुटकारा पाने की कोशिश ही नहीं करता। यदि आप अभावों में ही दिन काटने के अभ्यस्त हो गए हैं तो आपके मन में उन भौतिक सुखों को प्राप्त करने की तीव्र लालसा उत्पन्न ही नहीं होगी। एक बार ऐसी चित्तवृत्ति बन जाने पर समय गुजरता चला जाता है और मनुष्य अपनी कमियों, कमज़ोरियों से छुटकारा पाने की कोशिश ही नहीं करता। आपको चाहिए कि स्वभाव में से निर्धनता के विचारों को निकाल दें। अभावों में गुज़ारा करने की आदत छोड़ें। जीवन की कुछ जरूरी आवश्यकताएं होती हैं, उनके बिना दिन काट देने के विचार छोड़ दें, दीन-हीन बनकर न रहें।

निर्धनता में गुजारा करने की आदत अच्छी नहीं। इससे आपका जीवन सस्ता बनता है। यदि आप सस्ती और घटिया चीजों से गुजारा करने की आदत डालेंगे तो मेहनत करने की आदत नहीं रहेगी। आप अध्यवसाय की बात ही नहीं सोच पाएंगे। ऐसी हालत में आप अकर्मण्य हो जाएंगे। जो आदमी सस्ता भोजन करता है, सस्ते कपड़े पहनता है, घटिया मकान में रहता है, घटिया सामान लाता है, वह निरन्तर घटिया ही होता जाता है। आपके पास सब वस्तुएं हों तब आप संयम रखें, यह और बात है, परन्तु आपके पास कुछ भी न हो और आप संयम की बात करें तो यह आपने आपको धोखा देने जैसी बात है।

सस्तेपन से काम चलाना अच्छी बात नहीं। यह बात मानसिक रूप से घटियापन है। मानव प्रभु की सर्वोत्तम रचना है, इसीलिए आपको सर्वोत्तम वस्तु ही चुननी चाहिए, क्योंकि उसने आपको वे सभी शक्तियां दी हैं जिनसे आप अपना सर्वोत्तम विकास कर सकें और उसके बनाए हुए साधनों से और भी सुन्दर वस्तुओं का निर्माण कर सकें, परन्तु ऐसा होता नहीं, क्योंकि आपकी मनोदशा आपको अपना विकास करने ही नहीं

देती। क्या आप चाहते हैं कि आप जैसे-तैसे दिन काटते हुए ही मर-खप जाएं? जीवन भर सस्ती चीजें अपने चारों ओर इकट्ठी करते रहें और सारे घर-परिवार को निकृष्टता का नमूना बना दें? यह सब आपकी निकृष्ट मनोदशा के कारण ही होता है।

वास्तव में आप निर्धन तभी तक रह सकते हैं जब तक आप इस निकृष्ट निर्धनता को बर्दाश्त करते हैं, सिर छिपाकर जैसे-तैसे गुजर-बसर करते हैं, अपनी स्थितियों को बदलने का यत्न ही नहीं करते और अपनी स्थितियां सुधारने के लिए कमर कसकर खड़े नहीं होते। आपमें जितनी शक्तियां हैं, उन्हें उत्कृष्ट पदार्थों की प्राप्ति में लगाइए, क्योंकि आप श्रेष्ठ पदार्थों को प्राप्त करने के अधिकारी हैं। जरूरत है कि आप अपनी हीन मनोवृत्ति को बदलकर वे सभी पदार्थ प्राप्त करें जो अन्य ऐश्वर्यशाली लोगों के पास हैं।

संसार में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं जिनके पास भले ही धन उतना नहीं होता, परन्तु वे सदा बढ़िया-से-बढ़िया चीजें ही खरीदते हैं। वे कभी भी रद्दी भोजन या घटिया चीजें नहीं खरीदते। वे सदा अच्छी-से-अच्छी चीजें ही खरीदते हैं और साधन न होते हुए भी बढ़िया चीजें हासिल करने में सफल होते हैं।

यह सब होता है उनके प्रबल आत्मविश्वास के कारण, उनकी मानसिक दृढ़ता के कारण। उन्हें अपनी काम करने की शक्तियों पर विश्वास होता है। उस कार्यशक्ति को प्रदान करने वाले भगवान पर विश्वास होता है। यही विश्वास और आशा बड़े-से-बड़े कठिन काम को भी सरल बना देते हैं। उनके विश्वास के कारण उनमें काम करने की शक्ति बढ़ जाती है। फल यह होता है कि वे जिस बढ़िया वस्तु की कामना करते हैं, वह अपने आप उनकी ओर खिंची चली आती है। यह उनका स्वभाव ही बन जाता है कि बढ़िया वस्तुएं ही उनकी ओर आकृष्ट होती हैं।

आपने देखा होगा कि दो साथी हैं, इकट्ठे पढ़े हैं, उन्होंने जीवन में इकट्ठे प्रवेश किया, परन्तु उनमें से एक सदा बढ़िया कपड़े पहनता है, अच्छे वातावरण में रहता है, अच्छी वस्तुओं से घिरा रहता है, जबकि दूसरा सर्वथा इसके उल्टा है। वह नगर के गन्दे भाग में रहता है, सस्ती और घटिया चीजें खरीदता दिखाई देता है, उसके घर की मेज रद्दी वस्तुओं से पटी हुई है।

दोनों साथियों में यह अन्तर क्यों है?

अन्तर का कारण यही है कि एक में बढ़िया जीवन जीने की अदम्य लालसा है और दूसरा इस बात की ओर से निराशा और उदासी से भरा हुआ है। आपकी जैसी मानसिक स्थिति होगी, आपके साथी भी वैसे ही होंगे, वैसे ही साधन आप जुटा पाएंगे, वैसी ही जीवन-सामग्री आपके पास इकट्ठी होगी।

बचत करना अच्छा है, परन्तु दैनिक जीवन के जो आवश्यक खर्च हैं उनमें कटौती करके बेकार की कड़वाहट घोलना कहां की बुद्धिमत्ता है? इस प्रकार आवश्यक खर्चों को घटाकर बचत करने वालों का रुपया संकटों पर ही व्यय होता है, क्योंकि आप जिन बातों

से डरेंगे, वही आपके सामने आएंगी। कारण यही है कि आप जो कुछ सोचते हैं, जैसा सोचते हैं, आपके विचार उन्हीं बातों और उन्हीं चीजों को अपनी ओर खींचते हैं। यदि आप निरन्तर मुसीबत के दिनों का ही ध्यान करेंगे, तो सचमुच में मुसीबत के दिन आएंगे।

सवाल बचत, जमा करने या फिजूलखर्ची करने का नहीं है, सवाल तो आपकी मानसिक स्थिति का है। आप किसी कंजूस के घर जाएंगे तो आपको वहां का वातावरण मनहूस मालूम देगा, आपका दम घुटने लगेगा। कोई भी बात चलेगी तो यही कहेंगे कि हम तो यह काम कर ही नहीं सकते, हममें तो इतनी शक्ति ही नहीं। सोचने की बात यह है कि आवश्यक वस्तुओं के अभाव में अपना जीवन दुखी रखना और पैसा बचाना किस काम का है? यह संकीर्ण मनोवृत्ति ही आपके जीवन की खुशियों को चाट जाएगी। इस तरह के लोगों से बात करने पर आपको महंगाई का रोना सुनाई देगा। ये लोग अपने खाने-कपड़े में, मनोरंजन और घर की साज-सज्जा में कमी करके जो पैसा बचाते हैं, उनका वह सारा-का-सारा पैसा बीमारियों और दुखदायी अवसरों में ही समाप्त हो जाता है।

फिजूलखर्ची बहुत ही बुरी आदत है, पर शरीर को भयंकर कष्ट देकर किया गया संचय उससे भी बुरा है—***अति सर्वत्र वर्जयेत्***। यह 'अति' जीवन के सन्तुलन को बिगाड़ देती है। संचय और फिजूलखर्ची, इन दोनों के बीच का मार्ग अपनाना ही ठीक है। इसी में मनुष्य की कुशलता है। उसकी सूझबूझ का प्रमाण यही है कि वह कम-से-कम खर्च में बढ़िया-से-बढ़िया वस्तुएं हासिल करने का यत्न करे। पूर्णतया उदार मनोवृत्ति से ही संसार में सभी महान कार्य सम्पन्न होते हैं। संकीर्ण मनोवृत्ति और संकुचित विचारों से कभी भी, किसी भी महान कार्य का सम्पन्न होना या उसकी रचना होना कठिन है। विशाल हृदय से ही गौरवपूर्ण कार्य सम्पन्न होते हैं।

यदि आपके मन में निर्धनता के विचार हैं, भय है। अपनी आकांक्षाओं के प्रति संदेह है, अस्थिरता है तो आपके पास वे वस्तुएं कैसे आएंगी जो आवश्यक, भोग्य और वरेण्य हैं; क्योंकि आपकी मनोवृत्ति ही उत्तम पदार्थों के अनुकूल नहीं। आपके मन में जो बातें हैं, वही आपके घर भी रहेंगी। यह प्रकृति का नियम है, इसमें कोई परिवर्तन हो ही नहीं सकता। आप जिन चीजों के बारे में सोचेंगे, वही चीजें तो आपकी ओर आकृष्ट होंगी। आप जिन-जिन वस्तुओं का चिन्तन करते हैं, वही वस्तुएं आपको मिलने लगती हैं। यदि आप निर्धनता की आशंका से दबते हैं, उसी के सम्बन्ध में सोचते हैं तो स्वयं निर्धनता ही आपके द्वार पर आ खड़ी होगी। यदि आप सम्पन्नता, ऐश्वर्य और समृद्धि व सिद्धि के बारे में सोचेंगे तो लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी, ऐश्वर्य आपको प्राप्त होगा।

जब तक आपके मन में दरिद्रता एवं हीनता के विचार भरे हुए हैं, आप सम्पन्न कैसे बन सकते हैं? सम्पन्नता तो आपके पास तभी आएगी जब आप उसके सम्बन्ध में सोचेंगे, उसकी आशा करेंगे, उसकी आकांक्षाओं के साथ उसकी प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करेंगे और उसे प्राप्त किए बिना दरिद्रता के जीवन में रहने से इनकार कर देंगे। यदि आपके मन

में निर्धनता में ही जीवन बिता देने के विचार आते हैं तो समझ लीजिए कि आपने निर्धनता, दरिद्रता और विपन्नता के सम्मुख हथियार डाल दिए और गरीबी के हाथों अपनी हार स्वीकार कर ली। जब आप संघर्ष किए बिना, प्रयत्न किए बिना, गरीबी के आगे हथियार डाल देते हैं तो बताइए कि आपके पास सम्पन्नता और समृद्धि कैसे आएगी?

आपको याद रखना चाहिए कि आप जो कुछ प्राप्त करना चाहते हैं या जो कुछ बनना चाहते हैं, वह तब तक नहीं कर सकते, जब तक कि आप उसके प्रति आशावान न हों। केवल इच्छा से काम नहीं चलेगा, मन में दृढ़ आशा जाग्रत कीजिए। अपने लक्ष्य का विश्वास पक्का कीजिए। सन्देह या भय द्वारा आप क्या प्राप्त करेंगे? आपको जिस बात की चाह है, उसके प्रति मन में सन्देह या भय मत रखिए। आपको जो कुछ भी प्राप्त होगा, वह केवल आशा और दृढ़ विश्वास के बल पर ही प्राप्त होगा।

मनुष्य जैसी आशा करेगा, वैसा ही बनेगा भी। आपकी इच्छाशक्ति कितनी भी शक्तिशाली हो, वह आपकी आशाओं की दासी है, वह आपके अधीन है, आपके वश में है। मानव की कोई भी शक्ति आशा के समान बलवान नहीं। आशा के द्वारा ही आप सारी मानसिक शक्तियों को कार्य में लगा देते हैं और कार्य करेंगे तो परिणाम तो प्राप्त होगा ही। कार्य और परिणाम परस्परापेक्षी हैं।

आपकी इच्छाशक्ति कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, वह आपकी आशाओं की दासी है। अतः आप जैसी आशा करेंगे, वैसे ही बनेंगे।

आप जो कुछ चाहते हैं, आपके अन्तर्मन में अंकित रहता है। निराशा और आशा का अन्तर ही आपके अन्तर्मन को निर्धन, मूढ़ और अल्पसंतोषी बनाता है। एक महान अर्किटेक्ट के मन में एक महान और विशाल भवन का मानचित्र रहता है। तब वह अतीन्द्रिय होता है, परन्तु जब चिन्तन के आकर्षण से मूर्त रूप धारण कर लेता है तो वह इसे इन्द्रियों से ग्रहण करने में समर्थ होता है। संसार की सभी रचनाएं पहले अमूर्त रूप में, विचार रूप में, मनुष्य के मन में उत्पन्न होती हैं। इसी प्रकार सम्पन्नता भी पहले मन-मस्तिष्क में ही जन्म लेती है, उसके बाद ही मूर्त रूप में आती है।

बहुत-सी चीजें ऐसी भी हैं, जिन्हें आप देख नहीं सकते, छू नहीं सकते, सूंघ नहीं सकते, चूंकि वे इन्द्रियातीत हैं, परन्तु उनकी विद्यमानता से इनकार नहीं किया जा सकता। सत्य ऐसी ही चीज है। बिजली की शक्ति दिखाई नहीं देती, पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण, गणित के सिद्धान्त किसे दिखाई दिए हैं, परन्तु आप उनकी विद्यमानता या सत्ता से तो इनकार नहीं कर सकते। यह बात कोरा भ्रम है कि उन्हीं चीजों की विद्यमानता है जिन्हें आप इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं। वास्तविक रूप में आपकी ये अमूल्य शक्तियां अमूर्त और इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं, केवल उनसे जो संरचनाएं होती हैं, उन्हीं को इन्द्रियां ग्रहण कर सकती हैं। इसी प्रकार सम्पन्नता भी आपके मन में अमूर्त रूप में रहती है, भौतिक पदार्थ तो उसकी कृतियां हैं, जिन्हें आप इन्द्रियों के द्वारा अनुभव करते हैं।

संसार के सभी पदार्थ मन की राह आपके जीवन तक पहुंचते हैं। सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान, कृषि और व्यापार आदि का जन्म पहले मन में ही होता है, उसके बाद ही कार्य रूप में परिणत होकर स्वरूप धारण करने और मूर्तरूप में आपके सामने आते हैं। जो व्यक्ति अतीन्द्रिय शक्तियों में विश्वास नहीं रखता, वह मूढ़ है, अज्ञानी है। वह कभी सम्पन्नता प्राप्त नहीं कर सकता।

यह आपके अपने हाथ में है कि आप अपने वातावरण को, अपनी परिस्थितियों को बदलें, पर ऐसा तभी हो सकता है, जब आप अपने विचारों को बदलें, जीवन के प्रति अपनी मानसिकता को बदलें।

अपनी अन्तःप्रेरणा को पहचानो

आत्मा की पुकार पर मनुष्य की सुप्त शक्तियां उसी प्रकार जाग्रत हो उठती हैं जिस प्रकार बारूद के ढेर पर छोटी-सी चिन्गारी फेंकने पर उसके ज्वाला बनते देर नहीं लगती। अतः अन्तरात्मा की आवाज सुनें। तब आपमें आत्मविश्वास का सूर्य उदय होगा जो निराशा का अंत कर जीवन में खुशियां भर देगा।

एक दिन की बात है, एक शेर का छोटा-सा बच्चा अपनी मांद के बाहर खेल रहा था। उसकी मां सोई हुई थी। बच्चा खेलते-खेलते दूर चला गया। बाहर उसे नई चीजें देखने को मिलीं, वह उन्हें देखता हुआ दूर चला गया और अन्त में अपने घर लौटने का रास्ता भूल गया। परेशान होकर अपनी मां को पुकारने लगा। पुकार ही रहा था कि उधर से एक भेड़ आ निकली। भेड़ ने देखा कि छोटा-सा बच्चा अपनी मां के लिए बिलख रहा है, वह उसे अपने साथ अपने घर ले गई। उसे प्यार-दुलार से पालने-पोसने लगी। ज्यों-ज्यों दिन बीतते जाते, भेड़ का प्रेम बच्चे पर बढ़ता जाता। कुछ ही दिन में शेर का बच्चा भेड़ से भी ऊंचा हो गया। कई बार भेड़ उसे देखकर डर भी जाती।

एक दिन उस जंगल में एक शेर आ निकला। उस शेर ने चट्टान पर चढ़कर जोर से दहाड़ की। भेड़ तो डर के मारे दहल उठी, परन्तु शेर का बच्चा कुछ और ही सोचने लगा। उस पर भेड़ के बजाय भिन्न प्रतिक्रिया हुई। उसके मन में कुछ नई तरंगें भी उठीं, जिनका अब तक उसे मन में अभाव था। एक बिजली की-सी तेजी उसकी नस-नस में दौड़ गई। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि उसमें भी ऐसी सामर्थ्य है, जिसका उसे अभी तक ज्ञान ही नहीं था। वह उछलकर बाहर आया और बड़े शेर की भांति दहाड़ने लगा और शेर के सामने जा पहुंचा।

वस्तुतः बात यह थी कि उस शेर के बच्चे को अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान ही नहीं था। वह अपने को भेड़ का बच्चा ही समझे बैठा था और यही सोचता था कि उसमें भेड़ जितनी ही शक्ति है, उसकी अपेक्षा अधिक शक्ति नहीं। पहले तो वह कुत्ते के भौंकने पर ही दुबकने लगता था, पर अपना वास्तविक स्वरूप जान लेने पर वह शेर के सामने आकर

डट गया। जब तक उसे भेड़ का बच्चा होने का भ्रम था, उसे अपना बल भी भेड़ जितना ही प्रतीत हो रहा था और ज़ब उसे यह ज्ञात हुआ कि वह भेड़ के अतिरिक्त कुछ और है तो उसकी शक्ति भी एकदम बढ़ गई। जब तक वह अपने को भेड़ का बच्चा समझता था, तब यदि उसे शेर से भिड़ने को कहा जाता तो वह डर के मारे दुबक जाता, परन्तु जब उसे अपने असली स्वरूप का पता चला तो उसकी सामर्थ्य कई गुना बढ़ गई। अब उसके लिए भेड़ का जीवन जीना कठिन था, क्योंकि वह तो वास्तव में जंगल का राजा था।

अपने अंदर सिंहत्व की शक्ति को जगाइए। इस शक्ति के जागने के बाद कोई ऐसा कार्य नहीं रह जाता जो आपकी शक्ति के बाहर हो।

इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति में सिंहत्व की शक्ति होती है और वह सोई रहती है, पर जब कभी ऐसा अवसर आता है या ठेस लगती है तो वह उसके अन्तःकरण में उतरकर उसके सोए हुए पराक्रम को जगा देती है। तब उसे अपनी पहली अवस्था तुच्छ प्रतीत होने लगती है और आश्चर्य होता है। जब उसे अपनी महानता का ज्ञान होता है तो वह शेर के समान दहाड़ने लगता है। जब मनुष्य को पता चल जाता है कि वह उस दिव्य शक्ति का ही एक भाग है और उसका उस असीम शक्ति से घनिष्ठ सम्बन्ध है, तो उसे अपने अन्दर उस असीम शक्ति का अनुभव भी होने लगता है। तब उसके लिए ऐसा कोई कार्य नहीं रह जाता जो उसकी शक्ति के बाहर हो। उस समय उसकी सारी कमजोरी पूरी तरह नष्ट हो जाती है, वह दैवी शक्ति उसके रोम-रोम में व्याप्त हो जाती है। तब उसका प्रत्येक कार्य ईश्वरीय चेष्टा के अनुरूप हो जाता है।

इस प्रकार आप अनुमान लगा सकते हैं कि गन्दे, नंगे और भूखे बच्चों में न जाने कितने महान व्यक्ति छिपे पड़े होंगे। आप अनुमान लगा सकते हैं कि उनमें क्या कमी है। कमी यही है कि उन्हें अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं। यदि उन्हें अपनी शक्ति का पता चले तो न जाने उनमें कितने महान व्यक्ति निकल आएंगे। जब मनुष्य को अपनी शक्ति का ज्ञान हो जाता है तो वह जी-हुजूर नहीं रह जाता; वह उस समय दास या गुलाम नहीं रह सकता। वह उन्नति की ऊंची उड़ानें भरने लगता है और उसमें अभूतपूर्व परिश्रम करने की शक्ति आ जाती है।

आज आप क्या हैं, इस बात का कुछ भी महत्व नहीं। महत्व की बात तो यह है कि भविष्य में आप क्या बन सकते हैं, आप में क्या संभावनाएं हैं। कोई भी आदमी अपनी जमा-पूंजी किसी घाटे के व्यापार में नहीं लगाता। आपको समझ लेना चाहिए, जो व्यक्ति तरक्की नहीं कर पा रहा उसकी पूंजी लाभ के काम में नहीं लगी हुई। मनुष्य के अन्तःकरण में जो पूंजी संचित है, वह रुपये-पैसे की पूंजी से बहुत बड़ी है। आवश्यकता यही है कि आदमी उसे किसी लाभ के काम में लगाए। जिस आदमी के पास बैंक बैलेंस हो और वह यह समझता रहे कि वह छोटा-सा ऋण नहीं उतार सकता, यही हालत उस आदमी की है जो अपने आपको कमजोर समझे बैठा है।

समझ लीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति में विभिन्न प्रकार की योग्यताओं की बेशुमार पूंजी है। जब तक यह पूंजी किसी लाभ वाले काम में नहीं लगाई जाती, किसी लाभ की आशा कैसे की जा सकती है? इतनी विशाल पूंजी का मालिक होने पर भी यदि कोई व्यक्ति दीन-हीन जीवन बिताता है तो उस पर किसे आश्चर्य न होगा।

क्या आपने कभी अपनी आन्तरिक गुणरूपी पूंजी को किसी लाभकारी काम में लगाने का प्रयत्न किया है? लाभ तो आप पूंजी लगाकर ही ले सकते हैं। अपने व्यक्तित्व को गौरव से युक्त बनाइए। आपमें जो गुण हैं, उन्हें और बढ़ाइए, उभारिए। अपने जीवन के लिए एक निश्चित कार्यक्रम बनाइए और योजनानुसार कार्य कीजिए। इससे आपकी निष्क्रिय शक्तियां सक्रिय हो उठेंगी, सोई हुई प्रतिभा जाग उठेगी। आपको उन शक्तियों का कुछ ज्ञान भी है और विशेष मौकों पर उन शक्तियों का अनुमान भी आपको होता रहता है, परन्तु अचानक वह ज्ञान एक चमक-सी दिखाकर समाप्त हो जाता है। यदि आप एक बार अन्तःप्रेरणा से उन शक्तियों को जगा लें तो संसार की सभी रुकावटें आपके मार्ग से स्वयं हट जाएंगी।

संसार में ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि जिन व्यक्तियों ने अपनी महानता को पहचाना, वे दीन-हीन अवस्था से उठे और उन्नति करते चले गए। उन्होंने समाज-विरोधी कार्यों को छोड़ा और समाज-हित के काम करने लगे। वे तेजपुंज बन गए और लाखों आत्माओं को उनके जीवन से प्रकाश मिला और उन्होंने उन्नति की। आत्मशक्ति का ज्ञान न होना ही कमजोरी है, दुर्बलता है। वैसे मनुष्य और दुर्बलता का पारस्परिक सम्बन्ध नहीं, क्योंकि वह जड़ न होकर चेतन और और सर्वश्रेष्ठ चेतन है।

अनेक विद्वान, शूरवीर और महान पुरुष अपने जीवन में महान कार्य करने में तब सफल हुए, जब उन्हें अपनी शक्तियों का ज्ञान हो गया और उन्होंने उनका प्रयोग किया। जिस दिन उन्हें अपनी शक्तियों का पता चला, उसी दिन उन्होंने अपने तुच्छ जीवन का परित्याग कर दिया। केवल इस प्रकार के लोगों से ही आदर्श जीवन की कामना की जा सकती है। इस समय संसार को डॉक्टरों, वकीलों या राजनीतिज्ञों की आवश्यकता नहीं; आवश्यकता है प्रेरणा देने वाले महान पुरुषों की। आज संसार को अब्राहम लिंकन जैसे व्यक्तियों की आवश्यकता है, जो मानवीय आदर्शों की साक्षात प्रतिमूर्ति हों।

हो सकता है भेड़ों में घिरे रहने के कारण आपकी शक्तियां भी सो गई हों और आप भी अपने को भेड़ ही समझ बैठे हों, परन्तु जब कभी आप चिन्तन करते होंगे, आपको अपनी शक्तियों की अनुभूति अवश्य ही होती होगी। यदि ऐसा नहीं तो कभी एकान्त में अपनी आत्मा की पुकार को सुनने का यत्न करें। यदि आपने एक बार भी अपनी आत्मा की पुकार सुन ली तो आपकी सुप्त शक्तियां जाग्रत हो उठेंगी। केवल एक बार छोटी-सी चिन्गारी फूंकने की जरूरत है, उसके ज्वाला बनते देर नहीं लगती; और एक दीन-हीन मनुष्य के अन्दर से एक पराक्रमी व्यक्तित्व प्रकट हो उठता है। जब आत्मविश्वास का सूर्य उदय होता है तो निराशा का अन्धकार छंट जाता है, समाप्त हो जाता है।

आप जानते हैं कि पिछले हजारों वर्षों से भौतिकी और रसायनशास्त्र के नियमों में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ, तो भी अनेक ऐसे वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने नवीन आविष्कार किए और बेहद ख्याति प्राप्त की। बरसों पहले जो वैज्ञानिक उपकरण लोगों के पास थे, उन्हीं उपकरणों से नए वैज्ञानिकों ने नए आविष्कार किए। आज भी हम प्रतिदिन नए आविष्कारों की बात सुनते हैं। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की शक्तियां असीम हैं। केवल एक बार उनको जाग्रत करने की आवश्यकता है।

मनुष्य को जाग्रत करने के लिए इस सिद्धांत को क्रियात्मक रूप देना होगा। इसी के द्वारा मनुष्य उस सफलता के क्षेत्र की खोज कर लेता है, जिसका उसे अब तक ज्ञान ही नहीं था। आपके जीवन का असन्तोष इस बात का प्रतीक है कि आप यथेच्छ उन्नति नहीं कर पाए और सन्तोष प्राप्त होने तक निरन्तर प्रयत्न भी नहीं करते रहे। जब आपका अन्तःकरण उस प्रेरणा को पा लेता है तो आपको स्पष्ट अनुभव होने लगता है कि आपका गौरवपूर्ण व्यक्तित्व आपके अन्दर ही स्थित है। उसके प्रकट होते ही असम्भव कार्य सम्भव प्रतीत होने लगेंगे।

संसार में अधिकाधिक ऐसे व्यक्ति हैं जो किसी चमत्कार या जादू की प्रतीक्षा करते हैं, लेकिन ऐसा कोई भी अलादीन का चिराग नहीं, जो शक्ति की पूंजी लगाए बिना मन की इच्छाएं पूर्ण कर दे।

यदि आपको भी ऐसा भ्रम है या आप भी किसी जादू की खोज में हैं, तो इस भ्रम को अपने मन से निकाल दीजिए। मनुष्य के बाहर ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो उसकी कामनाओं की पूर्ति कर सके। यह शक्ति उसकी आत्मा में ही है, बाहर नहीं।

आपके बाहर ऐसी कोई शक्ति नहीं, जो आपकी कामनाओं की पूर्ति कर सके। यह शक्ति केवल आपकी आत्मा में ही है, कहीं बाहर नहीं।

मनुष्य को दीन-हीन और तुच्छ कौन बनाता है? उसकी आत्मा में अभाव की प्रेरणा। आत्मप्रेरणा के विकसित होते ही शक्तियों के अखण्ड स्रोत खुल जाते हैं। जीवन में जितना कूड़ा है, वह सब नष्ट हो जाता है। अन्तःप्रेरणा ही आशाओं, आकांक्षाओं को मूर्त रूप प्रदान करती है, इससे आत्मा को तृप्ति और सन्तोष प्राप्त होता है।

आप में ईश्वरीय शक्ति है, आप उससे पृथक नहीं। समस्त ईश्वरीय शक्तियां आपके अन्दर उसी प्रकार आ सकती हैं, जिस प्रकार बिजली के तार में करेण्ट आता है। जरूरत केवल उससे तार जोड़ने की है। जिस दिन आपमें अन्तःप्रेरणा का स्फुरण होगा, उसी दिन आप जीवन के लक्ष्य की ओर अग्रसर होने लगेंगे, यह एक ऐसा सत्य है जिससे इनकार नहीं किया जा सकता।

हीनभावना से दूर रहें

हीन भावना मनुष्य को पंगु बनाकर पतन के गर्त में गिरा देती है। यदि मनुष्य दृढ़ निश्चय कर अपनी हीन भावना से पूर्ण रूप से छुटकारा पाकर अपने अन्दर एक नई स्फूर्ति व साहस का संचार करे तो वह पतन के अन्धकार से निकलकर एक प्रकाशमय व उल्लासपूर्ण जीवन की ओर अग्रसर हो सकता है।

एक बार घुमक्कड़ जाति के लोगों ने किसी व्यक्ति का एक लड़का चुरा लिया। उन्होंने उसे एक किसान के घर यह कहकर रख दिया कि उसके मां-बाप मर गए और वे बहुत ही निर्धन और नीच थे। बच्चा धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। उसने अपने माता-पिता के सम्बन्ध में जो कुछ सुन रखा था, उसके कारण उसमें हीन भावनाएं घर कर गईं। वह अपने आप को दीन-हीन समझने लगा और सोचने लगा कि वह कभी भी कुछ न कर पाएगा, वह किसी काम के योग्य नहीं।

इसी प्रकार बढ़ते-बढ़ते वह बच्चा बारह वर्ष का हो गया। एक दिन उसी गांव में उसी किसान के घर के पास एक सज्जन अपनी पत्नी के साथ आकर रुके। उत्सुकता से वह बच्चा भी उन्हें देखने जा पहुंचा। उन्होंने उस लड़के को देखा और उससे कहा कि हमें खाना बनाने के लिए कुछ सूखी लकड़ियां ला दो। बालक ने जंगल से लकड़ियां ला दीं। उन्होंने बालक को कुछ पैसे दिए। पैसे देते समय स्त्री ने बालक के माथे पर एक चिह्न देखा। उसे ध्यान आया कि उसके अपने बच्चे के माथे पर भी ऐसा ही एक चिह्न था और वह दस-बारह वर्ष पूर्व खो गया था। उसका दिल कहने लगा, हो-न-हो, यह बच्चा हमारा ही है।

पूछताछ करने पर उस महिला के मन की बात सत्य सिद्ध हुई। वह बच्चा उन्हीं का था, परन्तु बच्चे का विकास न हो पाया था। वह हर समय निराश बना रहता तथा दीन-हीन दशा में इधर-उधर भटकता फिरता। उसमें कोई उत्साह न रह गया था, परन्तु ज्यों ही उसे यह पता चला कि उसके माता-पिता सम्पन्न व्यक्ति हैं और उसकी मां की गिनती आदर्श महिलाओं में होती है, तो उसमें महान परिवर्तन होने लगे। उसके शरीर में ऐसी स्फूर्ति-सी आने लगी, जिसका उसने आज तक अनुभव ही नहीं किया था। उसने

जबसे अपने पिता को देखा, उसी समय से उनके समान बनने के स्वप्न देखने लगा। पहली बार उसे ज्ञात हुआ कि वह सम्भ्रान्त परिवार का बच्चा है।

थोड़े ही दिनों में उसमें कुछ महान परिवर्तन हुए और उसे पता चल गया कि वह भेड़ नहीं, सिंह है। अब वह न डरपोक रह गया था, न उदास था, न कायर और न ही बुजदिल। थोड़े ही दिनों में वह दीनता छोड़ उत्साही और आत्मविश्वास से पूर्ण हो गया। यह महान परिवर्तन इसलिए हुआ कि अब उसका आदर्श बदल चुका था।
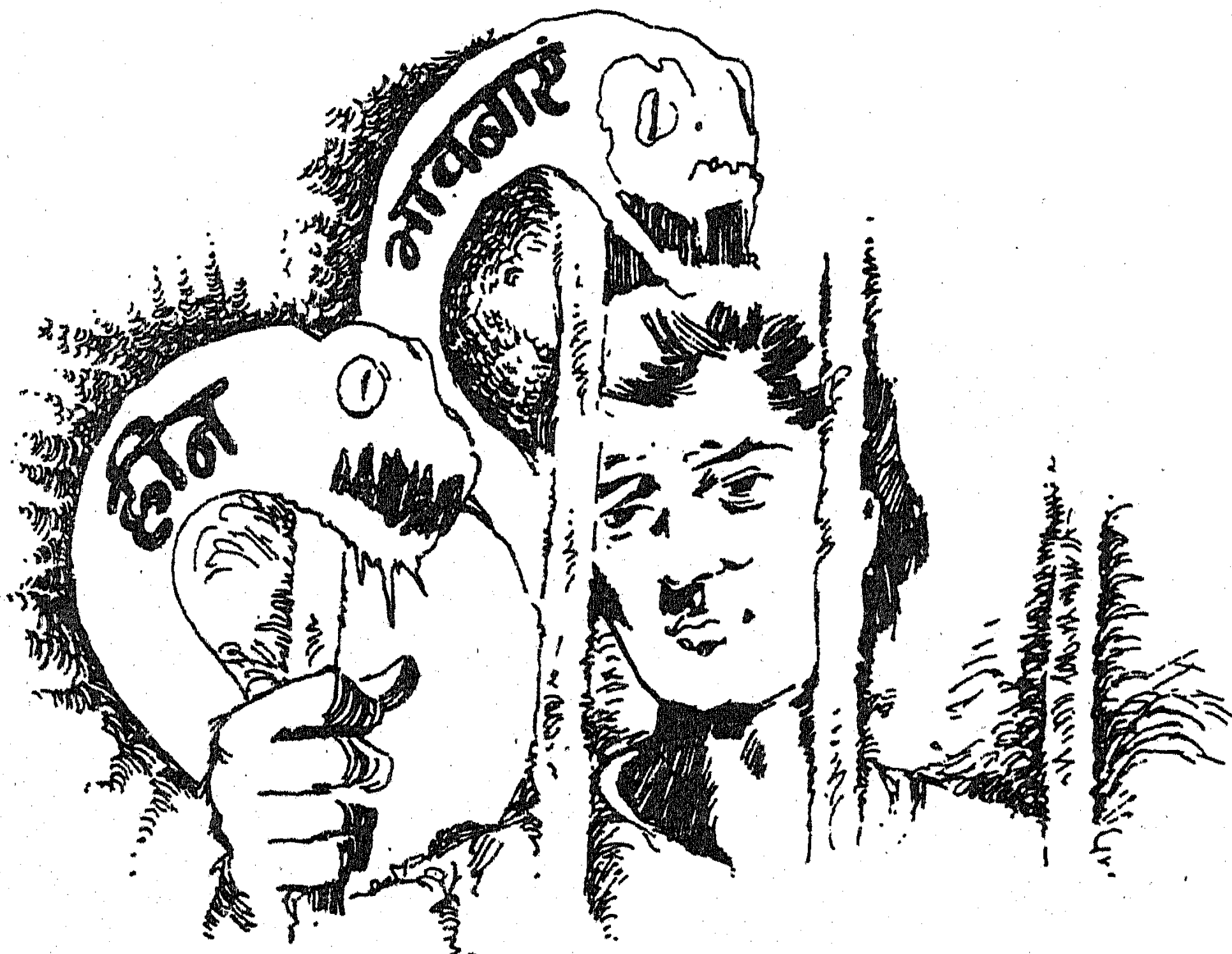
अपने बारे में हीन भावनाओं को त्याग कर ऊंचे विचारों को अपने मन में स्थान दें। आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आप में शक्ति आती जा रही है। आप सामर्थ्यवान हो रहे हैं।

बहुत सम्भव है कि आपमें से बहुत से व्यक्ति केवल इसलिए पिछड़े हुए हों कि उनके मन में यह विश्वास बैठ गया है कि वे दीन-हीन हैं और अच्छे कुल में पैदा नहीं हुए। इसी धारणा के कारण बहुत से व्यक्ति हतोत्साहित रहते हैं तथा उनकी चेतना पंगु बनी रहती है। उनके दिल में सदा यही विचार घूमते रहते हैं कि वे तो कुछ भी नहीं। इस हीन भावना के कारण ही वे तुच्छ और नगण्य बने रहते हैं। उनकी इच्छाशक्ति में वह बल नहीं आ पाता जो हीनता के इस मिथ्या विश्वास को उखाड़ फेंके। उन्हें यह विश्वास करना चाहिए कि यदि वे अच्छा और श्रेष्ठ कार्य करेंगे तो उसका फल भी श्रेष्ठ ही मिलेगा। जब मनुष्य को इस सत्य पर विश्वास हो जाता है तो उसका भ्रम और मिथ्या विश्वास भी समाप्त हो जाता है। यदि माता-पिता से आपको विरासत में कुछ नहीं मिला

तो इसमें अपने को हीन समझने की क्या बात है? आप यह क्यों सोचते हैं कि आपको उस परमपिता परमात्मा से उत्तराधिकार में क्या नहीं मिला? वह तो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। उसने आपको सोचने की शक्ति दी है और आपके लिए इस विशाल विश्व की रचना करके इसे आपके लिए छोड़ दिया है। अब आवश्यकता और किस बात की है? केवल उसके साथ नाता जोड़ लेने की और उसे पहचान लेने की कि वही आपका पिता है। जब आप यह समझ लेंगे तो आपमें अभूतपूर्व शक्ति का संचार होने लगेगा।

जब आप अपने उस वास्तविक पिता से नाता जोड़ लेंगे तो आपकी सभी दुर्बलताएं समाप्त हो जाएंगी और यह हीन भावना नष्ट हो जाएगी कि आप ऊंचे नहीं उठ सकते या उच्च पद प्राप्त नहीं कर सकते। आपको चाहिए कि आप हीन भावना को निकाल बाहर करें और अपने विषय में ऊंचे विचारों को ही अपने मन में स्थान दें। अपने मन में अपना एक महान चित्र बनाइए। अपने आपको उच्च और महान बनाने की आकांक्षा संजोइए। उत्साह की भावना जगाइए और इसके साथ ही दूसरों की सहायता करते रहने का बीड़ा उठाइए। आप देखेंगे कि आप भी ऊंचे उठते चले जा रहे हैं, क्योंकि जब आप दूसरों की सहायता करेंगे तो आप स्वयं सामर्थ्यवान होते चले जाएंगे। किसी दूसरे की सहायता कोई सामर्थ्यवान व्यक्ति ही कर सकता है। इस प्रकार आप देखेंगे कि आपमें स्वयं शक्ति आती जा रही है, आप सामर्थ्यवान हो रहे हैं।

आपको चाहिए कि आप अपने सम्मुख एक ऐसे आदर्श व्यक्ति की ही कल्पना करें जैसे आप स्वयं बनना चाहते हैं, लेकिन यह ध्यान रखें कि वह आपका आदर्श व्यक्ति स्वार्थी न हो वरन् गौरवशाली और महान हो। अपने दोषपूर्ण जीवन पर सन्तोष करके बैठे रहना कहां तक उचित है? आप तो पूर्ण मनुष्य बनने के योग्य हैं। आपमें इतनी शक्ति और सामर्थ्य है कि यदि आप चाहें तो पूर्ण मनुष्य बन सकते हैं। यदि आप चाहें तो अपने को भी सुधार सकते हैं, आप पूर्णतया परिवर्तित हो सकते हैं। आपका जीवन गौरवपूर्ण बन सकता है, क्योंकि आप भी उस महान चेतना के ही तो जीते-जागते अंश हैं।

यदि आप केवल अपनी कमजोरियों, भूलों और त्रुटियों के विचार के मंजर में ही डूबते-उतराते रहेंगे तो उन दोषों से मुक्त नहीं हो जाएंगे। उन दोषों से दबें नहीं, अपने आपको उन दोषों से अधिक सशक्त समझें। जब तक आपके मन में यह विश्वास नहीं जमेगा, आप उन्नति नहीं कर सकेंगे, जब आपका अपने द्वारा पोषित मिथ्या भ्रम दूर हो जाएगा तो आपकी उन्नति भी होने लगेगी।

यदि आप अपना सारा समय अपने दोषों, कमजोरियों और त्रुटियों के चित्र बनाने में ही लगा देते हैं तो आप काम किस समय करेंगे? आपको आज ही, अभी, अपने मन की तख्ती को साफ करके उस पर यह लिखना होगा, 'मैं पूर्ण स्वस्थ हूं, मैं अवश्य सफल होऊंगा।'

आप यदि अपूर्णता का ही ध्यान करते रहेंगे तो आप पूर्ण कैसे बन पाएंगे? अब तक तो आपने अपना दोषपूर्ण, त्रुटियुक्त, दुर्बल और दीन-हीन चित्र ही बनाया और अपने

सामने रखा है। उसी की सोच-फिक्र और उपासना में आपने अपना सारा समय खो दिया। अब उस चित्र को उठाकर एक ओर फेंक दीजिए और उसके स्थान पर अपना एक ऐसा चित्र मन में अंकित कीजिए जो सर्वगुण-सम्पन्न और महान हो। इस प्रकार की धारणा के बाद जब आप काम में लगेंगे तो आप पाएंगे कि आप सर्वथा परिवर्तित व्यक्ति हैं। आपको स्वयं अपने पर ही आश्चर्य होने लगेगा कि आपने अब तक अपनी योग्यताओं को ताले में बन्द कर रखा था—अब तक आपने अपनी शक्तियों को स्वयं कुण्ठित कर रखा था।

यह बात अनुभव-सिद्ध है कि इस हीन भावना के कारण ही बहुत से व्यक्ति वे कार्य नहीं कर पाए जिन्हें वे बहुत सरलता से कर सकते थे, जिन्हें करने की सामर्थ्य उनमें थी। बात यह थी कि उन्हें स्वयं पर भरोसा नहीं था। उन्हें अपनी हीन भावना पर ही भरोसा था और वे उसी पर विश्वास कर लेने के कारण आगे नहीं बढ़ पाते थे। उनका वास्तविक स्वरूप उनके सामने उभरकर आता ही नहीं था।

यदि एक मनुष्य पांच सौ रुपये की नौकरी चाहता है या उसकी मांग करता है और वह चार सौ रुपये पर नियुक्ति स्वीकार कर लेता है तो वह अवश्य ही अपने मालिक की नजरों में गिर जाता है। वह अपनी दृष्टि में भी गिरा अनुभव करने लगता है। इस प्रकार उसे अपनी दृष्टि में ही उठना कठिन हो जाता है। जब आप अपना मूल्य आंकें तो आपको समझ-बूझ से काम लेना चाहिए, क्योंकि यदि आप अपने आपको सस्ता बना देते हैं और अपना मूल्य कम आंकते हैं तो आप अपने पर ही भारी चोट करते हैं, अपने पर ही प्रहार करते हैं। यदि आप अपनी ही दृष्टि में गिर जाएंगे तो दूसरे लोग आपको ऊंचा कैसे समझ सकेंगे?

हजारों-लाखों लोग इसीलिए छोटे-छोटे कामों पर लगे रहते हैं, क्योंकि वे जरूरत से अधिक डरपोक, दब्बू और लज्जा करने वाले होते हैं। कुछ व्यक्ति अपने से उच्च अधिकारियों से असन्तुष्ट रहते हैं, क्योंकि उन्हें पता होता है कि उनमें अधिक योग्यता है और वे काफी ऊंचे पद का उत्तरदायित्व संभाल सकते हैं। वे यह अवश्य सोचते हैं कि उनके साथ अन्याय हो रहा है, पर उन्हें इस अन्याय के लिए स्वयं को ही दोष देना चाहिए। अवसर मिला था, पर उन्होंने उससे लाभ न उठाया। साहस करते तो उत्तरदायित्व संभालते, अपने कन्धों पर लेते; पर उन्होंने अपने व्यक्तित्व को दबाया, वे डर गए, लजा गए और मौका उनके हाथ से निकलकर दूसरों के हाथ में चला गया। अब पछताने से क्या होगा?

यदि आपमें आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व को संभालने की प्रबल आकांक्षा है तो निश्चय ही उच्चाधिकारियों का ध्यान आपकी ओर आकृष्ट होगा।

यह बात गलत है कि योग्यता की विजय अपने आप होती है। सच्चाई यह है कि जिसे अपने मूल्य का पता नहीं, उसे आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिल सकता। जो व्यक्ति

योग्य है, उसे अपना मूल्यांकन पहले स्वयं करना होगा, उसके बाद ही दूसरा व्यक्ति उसका मूल्य समझेगा। परन्तु इसके साथ ही यह बात भी सच है कि आप अपना मूल्य कितना भी अधिक आंकें, परन्तु यदि मौका आने पर संकोच, लज्जा या कायरता के कारण अपना मूल्य प्रकट नहीं कर पाते तो निश्चय ही आप पिछड़ जाएंगे।

आपमें जो योग्यता, शक्ति और सामर्थ्य है, जो कार्यक्षमता है, उसे दूसरों के आगे प्रकट करना ही होगा। दूसरे आपकी योग्यता को खोजेंगे नहीं, क्योंकि किसी के पास इसके लिए समय नहीं होता। यह काम आपका है, यह जिम्मेदारी आपकी है कि आप दूसरों को यह विश्वास दिलाएं कि आप और भी अधिक ऊंचे पद को संभालने के योग्य हैं।

आगे बढ़ें, काम को हाथ में लें और उस कार्य को अच्छे ढंग से करें। उसमें अपनी सूझबूझ का परिचय दें, उत्तरदायित्व को संभालने की इच्छा व्यक्त करें। आपमें जो विशिष्ट गुण हैं, उन्हें प्रकट करें। अपना जौहर दिखाएं। जब तक आप जौहर नहीं दिखाएंगे, आप उन्नति भी नहीं कर पाएंगे।

कुछ मां-बाप, अध्यापक और परिवार के लोग बच्चों में हीन भावनाएं भर देते हैं। हर बात में उनकी आलोचना करते हैं, उन्हें मूर्ख बताते हैं, परन्तु ऐसा करना उचित नहीं; उन्हें अयोग्य, मूर्ख और अनाड़ी कहना ठीक नहीं। बड़े-बूढ़ों या माता-पिता के इस व्यवहार से बच्चों में निरुत्साह पैदा होता है, कायरता आ जाती है। उन्हें बात-बात में डांटते रहने और बुरा-भला कहने से उनकी प्रतिभा मन्द पड़ जाती है, उनकी स्वतन्त्र रूप से सोचने की शक्ति नष्ट हो जाती है और उनकी हंसी-खुशी और मन का सारा उल्लास समाप्त हो जाता है। उनका आत्मविश्वास समाप्त होने लगता है। उनके मस्तिष्क पर इस प्रकार की चोट करना हानिप्रद होता है।

समझदार व्यक्तियों और उनके माता-पिता को चाहिए कि वे उन्हें उत्साहित करें तथा उनका उत्साह भंग न होने दें। यदि उनकी स्वाभाविक प्रतिभा में कुछ कमी है तो आपके निरन्तर निरुत्साहित करने से वह भी समाप्त हो जाएगी और यदि आप उन्हें थोड़ा-सा भी उत्साहित करेंगे तो उनमें प्रतिभा का विकास होता चला जाएगा।

एमिल क्यू का कहना है, 'जिन बातों को आप अपने जीवन में नहीं करना चाहते, उन्हें अपने मन से निकाल दें। यदि आप स्वस्थ रहना चाहते हैं तो स्वास्थ्य का विचार कीजिए। सदैव यही चिन्तन कीजिए कि आप दिनोंदिन अधिक स्वस्थ होते जा रहे हैं। यदि आप धन चाहते हैं, धनाढ्य होना चाहते हैं तो मन में वैसे ही विचार कीजिए और सदा यही सोचिए कि आप दिनोंदिन अधिक धनी होते जा रहे हैं। यदि आप किसी कार्य में सफल होना चाहते हैं तो प्रतिक्षण सफलता का विचार ही कीजिए, असफलता के विचारों को मन से निकाल दीजिए।'

आप जो कुछ बनना चाहते हैं, जैसा बनना चाहते हैं, अपने मन और मस्तिष्क में वैसे ही विचार भर लीजिए और मन के आदेशों के अनुसार काम कीजिए। अपने

मन से हीनता के विचारों को निकाल ही दीजिए। अपनी कमजोरियों और कमियों को भूल जाइए। अपने मन के सामने स्वस्थ, सुन्दर, सफल और एक आदर्श मूर्ति की स्थापना कीजिए और सभी प्रयत्न उस कार्य की सिद्धि के लिए लगा दीजिए। कुछ ही समय बाद ऐसा समय आ जाएगा कि आपके अवरुद्ध मार्ग अपने आप खुलते चले जाएंगे।

अपने गुणों को, योग्यता को, सामर्थ्य को और अपनी दक्षताओं को प्रकट कीजिए। उन्हें दबाना या कुचलना ठीक नहीं। जब आप अपना आदर्श, लक्ष्य या ध्येय दूसरों पर प्रकट कर देंगे तो उनमें से अधिकांश व्यक्ति अपने सहायक बन जाएंगे। हर आदर्श अपने आप में पूर्ण है और पूर्णता को प्रत्येक व्यक्ति मान्यता देता और उसकी सेवा करता है।

आपने अनुभव किया होगा कि जब आप अपने मन में किसी आदर्श मूर्ति की स्थापना करते हैं, उसका निर्माण करते हैं, तो आपको प्रसन्नता होती है और जब आप उस मूर्ति के सम्बन्ध में दूसरों को बताते हैं तो वे भी प्रसन्न होते हैं। जब तक आपके मन में गड़बड़ी नहीं होती, कोई बेचैनी पैदा नहीं होती या कोई दूसरी अव्यवस्था उत्पन्न नहीं होती, आपके आदर्श की मूर्ति स्थित रहती है; किन्तु जब आपके विचारों में समानता नहीं रहती, उनके साथ तालमेल समाप्त हो जाता है, आपके भीतर कोई गड़बड़ होती है तो आपका आदर्श धुंधला पड़ जाता है एवं आपकी आंखों से ओझल हो जाता है। उस समय आपके काम आपके आदर्श या लक्ष्य के अनुरूप नहीं हो पाते और आप असफल हो जाते हैं। एक मशीन तभी तक ठीक काम करती है, जब तक उसके पुर्जों में कोई गड़बड़ी नहीं होती, वे यथास्थान रहते हैं। पुर्जों में थोड़ी-सी गड़बड़ होते ही मशीन रुक जाती है।

आप जब कभी कोई बुरा या अनुचित काम करते हैं तो आपकी आंतरिक शक्तियां उसका विरोध करती हैं, आपका मन उसका विरोध करता है और टोकता है और आपके अन्दर एक द्वन्द्व छिड़ जाता है। इससे आपका मानसिक सन्तुलन नष्ट हो जाता है। उस समय काम करने की आपकी क्षमता नष्ट हो जाती है और जिस कार्य के करने से आपको यश प्राप्त होना चाहिए था, उसके अपूर्ण रह जाने से आपकी निन्दा होने लगती है। आपकी कार्यशक्ति मन्द पड़ जाती है, वह कुंठित हो जाती है और एक कुचक्र-सा चल जाता है।

आप जब कभी कोई बुरा या गलत काम करते हैं तो आपकी आत्मा ही आपको बुरा-भला कहने लगती है, आपका मन कचोटने लगता है। इसका कारण यही है कि आपको मशीन बढ़िया काम करने के लिए मिली थी, आपने उसका दुरुपयोग किया है। इससे स्पष्ट है कि यह शरीर, यह मन, यह आत्मा अच्छे काम करने के लिए मिले हैं। इसलिए आपको चाहिए कि आप अच्छे विचार रखें, अच्छी बातों का विचार करें, अच्छी कामनाएं करें, अच्छी और उच्च महत्वाकांक्षाएं रखें और उचित तथा सही मार्ग पर ही चलें।

जब भी आप कोई बुरा काम करते हैं, आपकी आत्मा उसके प्रति आपको सचेत अवश्य करती है। अतः दुष्कर्मों से बचने के लिए अपनी आत्मा की आवाज को नकारें नहीं।

क्या आप अपने को कमजोर, अधमरा, मन्दगति या दुर्बल मानते हैं? क्या आप भरी जवानी में ही अपने को 75 वर्ष का बूढ़ा मानने लगे हैं? क्या आपको मस्ती, सफलता और लोकप्रियता चाहिए? क्या आप महान नहीं बनना चाहते? यह सदा ध्यान में रखिए कि यदि आप किसी छोटे या तुच्छ व्यक्ति को अपना आदर्श बनाएंगे तो आप भी तुच्छ और छोटे बन जाएंगे। आप अपने मन में जैसा चित्र बनाएंगे, वैसा ही प्रत्यक्ष चित्र भी बनेगा। यदि आप मकान का नक्शा सुन्दर बनाएंगे तो आपका मकान भी सुन्दर बनेगा और यदि नक्शा ही गलत बनेगा, तो मकान कैसे सुन्दर बन सकेगा?

सेण्ट पॉल ने ठीक ही कहा है, "जो पदार्थ पवित्र है, जो प्राणी ईमानदार हैं, उन्हीं का ध्यान कीजिए।" इसका भावार्थ यही है कि पवित्र, सुन्दर, सत्य. ईमानदार और उच्च को ही अपना आदर्श बनाना चाहिए। उन्हीं का ध्यान करना चाहिए और उन्हीं का चित्रण करना चाहिए, उन्हीं के गुणों पर अपना ध्यान केन्द्रित कीजिए और अपना मानदण्ड ऊंचा उठाइए।

जो हाथ आपको सहारा देते हैं, उनके प्रति ईमानदारी और सच्चाई का प्रमाण दीजिए और अपने आदर्श के प्रति अटूट विश्वास और असीम श्रद्धा रखिए। उसी का अनुसरण कीजिए, वैसा ही आचरण कीजिए और उस पर अमल कीजिए। केवल विश्वास ही काफी नहीं, आचरण आवश्यक है। मन की ऊंची आकांक्षा का अनुसरण कीजिए, उसे पूर्ण करने का यत्न कीजिए और अपनी स्थायी आकांक्षा की उपेक्षा कम कीजिए, उसे ध्यान

से, गौर से सुनिए। अपनी आकांक्षा को पूर्ण करने की शक्ति आप में है। यदि यह शक्ति न होती तो यह अभिलाषा आपके मन में न उठती। अतः उसे पूरा करने के लिए आगे बढ़िए। उसे पूरा करने के लिए आप आगे बढ़ेंगे तो उससे सम्बद्ध सफलताएं आपको स्वयं प्राप्त होने लगेंगी।

गहराई से चिन्तन कीजिए कि प्रभु आपको क्या बनाना चाहता है, किस प्रकार का मनुष्य बनाने की उसकी इच्छा है। उसी आदर्श की एक पूर्णता-युक्त मूर्ति अपने मन-मन्दिर में, अपने अन्तःकरण में स्थापित कीजिए। मूर्ति में कोई दोष नहीं होना चाहिए, दाग-धब्बे भी नहीं होने चाहिए, कलंक का कहीं नामोनिशान न हो। बस, यही रूप है जो भगवान ने आपको देने के लिए निश्चित किया है। क्या आप भगवान की आज्ञा पूरी करने के लिए तैयार हैं?

आप ऐसा सोचते ही क्यों हैं कि आप तुच्छ, नाचीज और छोटे हैं? आपको स्मरण रखना चाहिए कि आप तब तक अपने जीवन में महानता नहीं ला सकते, जब तक आप इस प्रकार के विचारों को छोड़ नहीं देते। आपके विचार ही आपका आदर्श हैं, वही उस तक पहुंचने में सहायक भी होंगे।

अपने मन में हीनता की मूर्ति पल भर के लिए भी न टिकने दें, क्योंकि आप तो भगवान की रचना हैं, अतः आप अवश्य ही श्रेष्ठ हैं। ईश्वर पूर्ण है। वह नाशवान नहीं, वह सर्वव्याप्त है, फिर उसकी रचना होते हुए आप हीन कैसे हो सकते हैं?

अब तक आपके मन में जो मूर्ति थी, वह टूटी-फूटी व छिन्न-भिन्न थी, वह न पूर्ण थी और न आदर्श। अब आपने एक पूर्ण मूर्ति बना ली है। अब आप उसे प्रकट कीजिए। उसे अपने चरित्र में उतारिए। आपमें उसका अवतरण होते ही आपको जितनी प्रसन्नता और खुशी होगी, उससे कम औरों को नहीं होगी।

अब यदि आपने यह निश्चय कर लिया है कि आप अपने पूर्ण और विशाल स्वरूप को इस पृथ्वी पर साकार करेंगे, उसे क्रियान्वित करेंगे तो उन कार्यों व दोषों पर प्रभुत्व स्थापित कीजिए, उनके स्वामी बन जाइए जो अब तक आपको गिराते चले आ रहे थे। उन सभी हरकतों को, कष्टों को अपने वश में कीजिए जो अब तक आपकी महत्ता में बाधक बन रहे थे। आपको चाहिए कि आप दीन-हीन, अकर्मण्य और नाकारा बनाने वाली शक्तियों को नई दिशा दें। फिर आपके विराट स्वरूप के प्रकट होने में देर नहीं लगेगी।

एकाग्रता ही सफलता की कुंजी है

अगर आपके जीवन का एक निश्चित लक्ष्य या अपने कार्य व व्यवसाय का कोई निश्चित ध्येय नहीं है, तो आप अपने जीवन में कभी भी सफल नहीं हो सकते। अगर आप अपने जीवन को सार्थक करना चाहते हैं तो एक निश्चित लक्ष्य बनाकर उसके प्रति एकाग्र होकर पूर्ण शक्ति के साथ कार्य करें।

वैज्ञानिकों का ऐसा मत है कि पचास एकड़ धरती पर सूर्य की गरमी में इतनी शक्ति या ऊर्जा है जिससे सारे संसार की मशीनों को चलाया जा सकता है, परन्तु विश्व भर की मशीनें तभी चलेंगी जब वह ऊर्जा एक स्थान पर एकत्र की जा सकेगी या उसे एक बिन्दु पर केन्द्रित किया जा सकेगा। एकत्रित सूर्य-किरणों में इतनी शक्ति होती है कि यदि उन्हें हीरे पर केन्द्रित कर दिया जाय तो उसे भी वाष्प में परिवर्तित किया जा सकता है।

आपने देखा होगा कि अत्यन्त योग्य तथा विशाल प्रतिभा के धनी व्यक्ति प्रायः निर्बल होते हैं। उनकी कमजोरी यह होती है कि वे अपनी योग्यता अथवा कार्यशक्ति को किसी भी एक बिन्दु पर केन्द्रित नहीं कर पाते; दूसरे शब्दों में, अपनी कार्यक्षमता को एकाग्र कर पाना उनके लिए कठिन होता है। सफलता और असफलता में यही अन्तर है।

यदि एक कार्य की योग्यता को एक ही उद्देश्य की ओर लगाया जाय तो सफलता के चरम बिन्दु तक पहुंचा जा सकता है। ठीक इसके विपरीत बहुमुखी प्रतिभा और योग्यता को किसी एक कार्य में भी केन्द्रित न किया जा सके तो उसका कुछ भी परिणाम नहीं निकलता, वह योग्यता निष्फल हो जाती है। तोप की नली में भरे हुए बारूद की एकत्रित शक्ति ही गोले को बहुत दूर तक के लक्ष्य पर फेंकने में समर्थ होती है, वैसे तोप-गाड़ी में चाहे ढेरों बारूद भरा हो, वह गोले फेंकने में असमर्थ रहेगी। तोप की नली में एकत्रित शक्ति ही गोले को फेंक पाती है।

एक उद्देश्य के प्रति समर्पित व्यक्ति को सनकी कहे जाने की आजकल परिपाटी-सी हो गई है। उस व्यक्ति का उपहास भी किया जाता है, परन्तु यह भी स्मरण रखने योग्य बात है कि जिन महान व्यक्तियों ने संसार में उल्लेखनीय परिवर्तन किए, मानव की सभ्यता को नई दिशा दी, वे जीवनपर्यन्त एक ही उद्देश्य के प्रति समर्पित रहे।

सभ्यता के इस चरमोत्कर्ष को प्राप्त युग में एक विषय के विशेषज्ञ व्यक्ति को ही मान्यता प्राप्त होती है। वही अपने आस-पड़ोस तथा देश-विदेश में उस विषय का विशेषज्ञ माना जाने लगता है; पर यह तभी होता है जबकि वह व्यक्ति एक लक्ष्य पर कार्य करता है। इससे सिद्ध होता है कि जिस व्यक्ति का कोई निश्चित लक्ष्य नहीं, निश्चित विचार नहीं, निश्चित उत्कट मनोकामना नहीं, वह किसी भी लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाएगा, विशेषज्ञ कहलाना तो दूर की बात है।

यदि आपको आगे बढ़ना है, आप उच्च श्रेणी में पहुंचना चाहते हैं, लोगों पर अपनी धाक जमाना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि अकर्मण्यता को त्यागकर अपने लिए एक मार्ग चुन लें। आपको एक उद्देश्य निर्धारित करना होगा। सफेदपोश होने की झूठी शान और हाथ से काम करने के संकोच को छोड़ना होगा और अपने उद्देश्य की ओर निष्ठापूर्वक कदम बढ़ाने होंगे। आपको चाहिए कि आप अपनी पूरी शक्ति और योग्यता उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए लगा दें तो निश्चय ही सारी ऋद्धि-सिद्धियां आपको प्राप्त होंगी।

अस्थिरचित्त व्यक्ति, जिनका कोई उद्देश्य निश्चित या स्थिर नहीं होता, किसी भी क्षेत्र में अपना प्रभाव नहीं छोड़ सकते। उन्हें कभी कीर्ति और यश नहीं मिल सकता, न वे अपनी कोई छाप ही छोड़ सकते हैं। आज के इस युग में ऐसे लोगों के लिए कोई स्थान नहीं। प्रायः असफलताओं का कारण व्यक्ति का अस्थिरचित्त होना ही है। किसी एक काम पर मन न टिका पाना स्वयं एक दुर्बलता है। आप इस अवगुण को जितनी जल्दी त्याग दें, उतना ही अच्छा है। इस प्रकार के असफल व्यक्तियों की संसार में कोई कमी नहीं। उनका जीवन उस खाली बर्तन के समान है, जो कुएं में पहुंचने पर भी खाली ही लौट आता है।

एक बार एक अमेरिकन रसायनशास्त्री ने कहा था, "मिस्टर 'ए' ने मुझे हंसी का पात्र बना रखा था, क्योंकि मैं एक ही उद्देश्य के पीछे लगा हुआ था, जबकि वह एक साथ अनेक क्षेत्रों में काम कर रहा था और उन सभी में समान रूप से चमकना चाहता था, परंतु मैं अपनी तोप के सभी गोले एक लक्ष्य की ओर चलाना चाहता था।" यह व्यक्ति पहले साधारण स्कूल-मास्टर था, पर बाद में यही युवक अपने देश की अनेक संस्थाओं में से एक सुप्रसिद्ध संस्था का अध्यक्ष बना। व्यक्ति का नाम था प्रो. हेनरी और यह संस्था थी स्मिथ सोनियन इन्स्टीट्यूट।

सुप्रसिद्ध कवि गेटे का कहना है, "हमें ऐसे किसी भी कार्य को अपना उद्देश्य नहीं बनाना चाहिए जिसे सम्पन्न करने की रुचि, शक्ति और योग्यता हमारे भीतर न हो।"

आपने जिस कार्य को करने का अपना लक्ष्य निर्धारित किया है, उसे आपको अपने हाथों से ही करना चाहिए और उसे ऐसा रूप देना चाहिए जैसा उससे पूर्व कोई न दे पाया हो।

एक पुरानी कहावत है, "एक ही धन्धे में पूर्णतया चतुर व्यक्ति अपने सात बच्चों और अपनी पत्नी का पालन-पोषण कर सकता है, जबकि सात व्यवसायों में लगा हुआ चतुर व्यक्ति अपना निर्वाह भी नहीं कर पाता।"

जिस भी कार्य को करने का लक्ष्य निर्धारित करें उसे इस रूप में करें कि इससे पूर्व उस कार्य को कोई भी उस रूप में न कर पाया हो।

अन्त में विजय उसी की होती है जिसने अपना एक लक्ष्य निर्धारित कर लिया है। हर ओर अपने हाथ-पांव पटकने वाला एक भी काम में सफल नहीं हो सकता। अनेक कामनाओं वाला व्यक्ति कभी भी इतिहास में अमर नहीं हुआ। वह अपनी शक्तियां किसी भी स्थान पर एकाग्र न कर पाने पर नाम नहीं चमका पाता और सदा असफल ही रहता है। उसे संसार के सम्मानित व्यक्तियों में स्थान नहीं मिल पाता।

सफल व्यक्ति वही कहलाते हैं जिनका एक ही और सुनिश्चित कार्यक्रम होता है। वे अपने उद्देश्य की ओर ही एकटक देखते हैं और उसी ओर निशाना लगाते हैं। वे अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर सीधे चलते रहते हैं, उस पर अटल रहते हैं और कभी भी उससे विचलित नहीं होते। उन्हें कभी किसी ने डांवाडोल होते नहीं देखा जो स्थिरचित्त होकर अपनी समस्त योग्यताएं और सम्पूर्ण शक्ति किसी एक लक्ष्य पर लगा देते हैं। इससे उनकी योग्यता और कार्य-शक्ति प्रखर हो जाती है।

उनका उद्देश्य और उनकी धारणा ही उन्हें प्रेरित करती है कि वे एक ही ओर एकाग्र मन से जुटें। यह एकाग्रता ही उनकी योग्यता को बढ़ाती है और उनकी शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि कर देती है। इसके विपरीत कोई लक्ष्य निर्धारित किए बिना अपनी शक्ति और योग्यता का प्रयोग करना, उसे व्यर्थ ही इधर-उधर बिखेरना और कमजोर बनाना है।

आपको चाहिए कि सफलता-प्राप्ति के लिए मन को निश्चित लक्ष्य पर ऐसे एकाग्र करें जिस प्रकार एक अच्छा तीरन्दाज अपनी दृष्टि को सुई की नोक के समान पैना बनाकर केवल अपने लक्ष्य पर गड़ा देता है। उसे उस समय और कोई वस्तु दिखाई नहीं देती।

सम्भवतः आपको ज्ञात हो कि जिस प्रकार बैलेंसव्हील के बिना गाड़ी चूर-चूर हो जाती है, उसी प्रकार एक स्थिर ध्येय या लक्ष्य के बिना प्रयत्न करने वाला मन भी निराश होकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।

आज के युग में मनुष्य को शिक्षित तो होना ही चाहिए, प्रतिभाशाली व अपने कार्य में रुचि रखने वाला भी होना चाहिए, किंतु सबसे आवश्यक बात यह है कि उसका उद्देश्य सुनिश्चित और अटल होना चाहिए। सब कुछ होने के साथ केवल एक व स्थिर ध्येय वाला होना व्यक्ति के लिए अत्यावश्यक है। उसमें किसी एक कार्य के लिए एक ऐसी विशिष्ट प्रतिभा होनी चाहिए कि उसका कार्य भीड़ की रेल-पेल में भी सबसे पृथक चमकता दिखाई दे। तभी कोई व्यक्ति इस युग में सफल हो सकता है।

सदैव अपने उद्देश्य या लक्ष्य पर चट्टान के समान स्थिर रहिए। अपने व्यवसाय को निरन्तर बदलते रहने से आपको जो असफलता हाथ लगेगी, वह आपके लिए घातक सिद्ध होगी। एक नवयुवक पिछले 5-6 वर्षों से सूखे मेवों का व्यापार करता आया है, वह एकाएक किसी अन्य व्यक्ति को देखकर अपने व्यवसाय को बदलना चाहता है। इसका भाव यह हुआ कि पिछले 5-6 वर्ष में उसने जो अनुभव किया, उसे उसने दूसरे व्यवसाय में प्रवृत्त होकर व्यर्थ कर दिया। इस प्रकार जो व्यक्ति अपने जीवन का अधिकांश भाग नए-नए अनुभवों में लगाता रहता है और पिछला जीवन व्यर्थ करता जाता है, वह हर काम में नौसिखिया ही बना रहेगा। वह हर काम को थोड़ा-थोड़ा जान लेना चाहता है, पूर्ण ज्ञान किसी का भी प्राप्त नहीं कर पाता (Jack of all trades but master of none)। वह बीस व्यवसायों का जानकार होने के बावजूद भी अपना जीवन-स्तर अच्छा नहीं बना सकता। वह कभी भी नाम पैदा नहीं कर सकता तथा उसके धनी होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

अनेक युवक ऐसे होते हैं जो किसी एक कार्य में पूर्ण कुशल होने के पूर्व ही हतोत्साहित हो जाते हैं और किसी अन्य कार्य में प्रवृत्त होने की सोचने लगते हैं। मनुष्य को अपने कार्य की कठिनाई का ज्ञान बड़ी सरलता से हो सकता है, जबकि दूसरों के कार्य की कठिनाई जानना उतना सरल नहीं होता। वहां हमें फूल-ही-फूल दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए एक युवक किसी डॉक्टर को अपनी कार में जाते हुए देखता है तो वह सोचने लगता है कि मैंने जो धन्धा अपनाया है वह कितना कठोर और कष्टों से भरा है, मुझे इसमें कितना श्रम करना पड़ता है; परन्तु वह यह नहीं सोचता कि डॉक्टर बनने से पूर्व उस व्यक्ति ने कितने वर्षों तक नीरस ग्रन्थों में अपना सिर खपाया है। खाने-पीने, सोने-ओढ़ने का सुख भूलकर कठिन ग्रन्थों को पढ़ता रहा है। उसने कभी मनोरंजन की ओर ध्यान नहीं दिया, तब कहीं जाकर वह डॉक्टर बना है। उस युवक को पता नहीं कि डॉक्टर बन जाने के बाद भी अनेक वर्षों तक उसे रोगियों की प्रतीक्षा करनी पड़ी होगी, सैकड़ों दवाओं के नाम याद रखने पड़ते होंगे, चिकित्सा-ग्रन्थों के

अनेक निदान और परिभाषाएं उसें अपने दिमाग में रखनी पड़ती होंगी, लोगों के थूक, मल-मूत्र आदि के टेस्ट करने पड़ते होंगे। उस व्यक्ति को यह ज्ञात नहीं होता कि वह आधी रात के समय भी घर से निकलता देखा गया है, क्योंकि उसे किसी रोगी को देखने की पुकार मिली है; परन्तु वह युवक तो उसे कार में बैठे देखकर केवल उसके सुख का ही अनुमान करता है।

जब मनुष्य किसी कार्य में पूर्ण कुशलता प्राप्त कर लेता है तो उसमें महान शक्ति का संचार होता है और वह सही अर्थों में उत्पादक बन जाता है और उसकी प्रवीणता, उसकी कार्यकुशलता मुंह से बोलने लगती है। तब उसे लाभ मिलने लगता है। कई बार व्यक्ति यह समझ लेता है कि कार्यकुशलता की प्राप्ति तक जो अनेक वर्ष उसने इस कार्य को सीखने में बिताए, वे व्यर्थ गए; परन्तु वह यह नहीं सोचता कि इन वर्षों में उस कार्य के सूक्ष्म विवरण का विशाल भण्डार उसके मन-मस्तिष्क में जमा हो रहा था, उसके परिचय का क्षेत्र विस्तृत बन रहा था, उसकी साख बन रही थी, वह विश्वासपात्र व्यक्ति के रूप में उभर रहा था और लोगों के लिए अनुकरणीय बनता जा रहा था। जब वह कार्यकुशलता के चरम बिन्दु पर पहुंचा, तब उसकी सारी जानकारी, कार्यकुशलता, प्रवीणता और साख उस व्यवसाय में उसकी सहायक बन गई। उस व्यक्ति द्वारा विपुल धन कमाने का रहस्य वे वर्ष हैं जो उसने एकाग्र होकर उस कार्य के लिए व्यय किए।

यदि एक व्यक्ति जीवन भर क्लर्क रहा, परन्तु उस समय उसने ईमानदारी और निष्ठा से कार्य किया है, उसने अपने कार्य से अनेक व्यक्तियों को मित्र बनाया है। उसके बाद यदि वह अपना स्वतन्त्र व्यवसाय आरम्भ करता है तो उसे अनुभव होगा कि उसके पास मित्रों के रूप में बड़ी भारी पूंजी जमा है और उसी पूंजी के बल पर वह उन्नति के राजमार्ग पर बढ़ता चला जाएगा।

इसके विपरीत जो युवक बहुत से व्यवसायों में पड़ता है और किसी में भी पूर्ण निष्ठावान नहीं होता, उसे हतोत्साहित होकर सफलता तक पहुंचने से पूर्व ही वापस लौटना पड़ता है। असफलता के चरमबिन्दु के साथ ही सफलता का केन्द्रबिन्दु भी है, परन्तु बहुत से युवक वहां तक पहुंचते ही नहीं, जहां पहुंचकर वही कार्य उन्हें लाभप्रद सिद्ध होने वाला था।

यह एक तथ्य है कि जिन लोगों को हम अपने व्यवसाय में सफल सिद्ध हुआ मानते हैं, उन्होंने उसी कार्य में सफलता पाना अपना ध्येय बनाया था। उन्हें यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक कार्य की अपनी कठिनाइयां और अपनी सुविधाएं हैं। किसी भी कार्य में सुविधाएं-ही-सुविधाएं हों, ऐसा नहीं; फिर भी अनेक युवक थोड़े-थोड़े समय बाद अपना व्यवसाय बदलते रहते हैं। वे अपने जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। सफलता तो एकाग्र होकर किसी एक काम में लगने से ही प्राप्त होती है।

बिना सोचे-विचारे व्यवसाय बदलना आपके मन की अस्थिरता को प्रकट करता है और यह अस्थिरता ही असफलता का मार्ग है।

आज एक फैशन-सा हो गया है कि जब हम किसी व्यक्ति से मिलते हैं तो पूछते हैं कि आजकल आप क्या कर रहे हैं? इसका सीधा-सच्चा भाव यह है कि पहले जब मिले थे तब कोई अन्य धन्धा कर रहे थे तथा अब कोई अन्य कर रहे होंगे।

अनेक व्यक्ति यह भी समझते हैं कि उन्हें कभी-न-कभी अपने काम में सफलता मिल ही जाएगी। यह बात भी ठीक नहीं, क्योंकि एक तो इसमें सन्देह की भावना होती है; दूसरे, यदि आप योजनाबद्ध और सीमा निश्चित करके कार्य नहीं करेंगे तो आपको जीवन भर सफलता प्राप्त नहीं होगी। परिणाम यह होता है कि उद्देश्य निर्धारित करने के बाद उस कार्य की सिद्धि के लिए अन्य बातों का भी ध्यान रखना आवश्यक है। उद्देश्य स्थिर करके आराम से बैठ जाने से सफलता और सिद्धि प्राप्त नहीं होगी, उसके लिए एकाग्र मन से श्रम करना होगा।

दक्षिण अमेरिका के मैदानों में एक विशेष जंगली फूल होता है, जिसका मुंह सदा उत्तर की ओर रहता है। यदि कोई यात्री मार्ग भूल जाए और उसे दिशा-भ्रम हो जाए और उसके पास दिशा सूचक (Compass) यन्त्र भी न हो, तो यह फूल उसकी मदद करते हैं। इसी प्रकार जिस व्यक्ति ने एक ध्येय निश्चित कर लिया और एकाग्रचित्त होकर किया, वह कठिनाइयों के आने पर विचलित नहीं होता और उनका प्रतिरोध कर बहुधा सफलता के मार्ग पर चलता रहता है, अन्ततः विजयी होता है। बिजली, आंधी, तूफान-रूपी कठिनाइयां उसे आगे बढ़ने से नहीं रोक पातीं। इस प्रकार के व्यक्ति चप्पू टूट जाने, मस्तूल के फट जाने और नौका में छिद्र हो जाने पर भी अपनी मंजिल की ओर बढ़ते दिखाई देते हैं। उनकी अपनी दृष्टि अपने लक्ष्यरूपी ध्रुव तारे पर अडिग रूप से टिकी रहती है। अनेक झंझावातों में भी उनका लक्ष्य उनकी दृष्टि से ओझल नहीं होने पाता।

इधर-उधर भटकते विचारों को एकत्र कर उन्हें एक दिशा में प्रेरित करना सरल कार्य नहीं है। निरन्तर चिन्तन, अभ्यास, त्याग और लगन द्वारा ही ध्येय निर्धारित किया जा सकता है। किसी ध्येय पर मन को एकाग्र करने के लिए भूख, नींद और अपने शौक का त्याग करना होगा। उद्देश्य निश्चित न होने से मनुष्य की शक्तियां व्यर्थ में नष्ट होती रहती हैं। सम्भवतः एक कहावत भी है कि बहुत से व्यक्ति बिना काम के ही व्यस्त रहते हैं, बिना कठिनाइयों के ही बेचैन रहते हैं। बिना ध्येय के व्यस्त रहने वाले व्यक्तियों की संख्या अपार है।

जो व्यक्ति अनेक कामों म भटकते रहे हैं और निरन्तर पराजय का ही मुंह देखते रहे हैं, उनके लिए मूल मन्त्र यही है कि वे स्वस्थ-स्वच्छ मन से एक ध्येय निश्चित करें, क्योंकि यदि आप एक निश्चित ध्येय स्थिर और निर्धारित कर लेते हैं, तो आपकी निराशाएं दूर होने लगेंगी तथा असफलताएं दूर भागती दिखाई देंगी। एक उद्देश्य से आपका मन आनन्द से भर उठेगा और उसका भटकाव समाप्त हो जाएगा। मन स्थिर कर लेने पर आप काम भी भली प्रकार कर सकेंगे।

यह आज के युग की मांग है और बढ़ती हुई प्रवृत्ति है कि युवक किसी एक कार्य में प्रशिक्षण लें और उस कार्य में अपनी प्रतिभा की गहरी छाप छोड़ें। उद्देश्य की स्थिरता सुनिश्चित विचारों की संकीर्णता नहीं है; ध्येय यही है कि अपनी शक्तियां इधर-उधर बिखेरे बिना कार्य-सिद्धि में लगाई जाएं। इसका अर्थ यह भी नहीं कि अपने मस्तिष्क में ताला लगा लिया जाय और इर्द-गिर्द के वातावरण से आंखें मूंद ली जाएं।

यदि आपने एक ध्येय, एक लक्ष्य, एक उद्देश्य निर्धारित नहीं किया तो आपकी शक्तियां, आपकी योजनाएं, कार्यक्षमता और गुण सब व्यर्थ हैं। औजारों, उपकरणों का ढेर हो और कारीगर उनका उपयोग न कर सके तो वे सारे यन्त्र, उपकरण व औजार बेकार हैं।
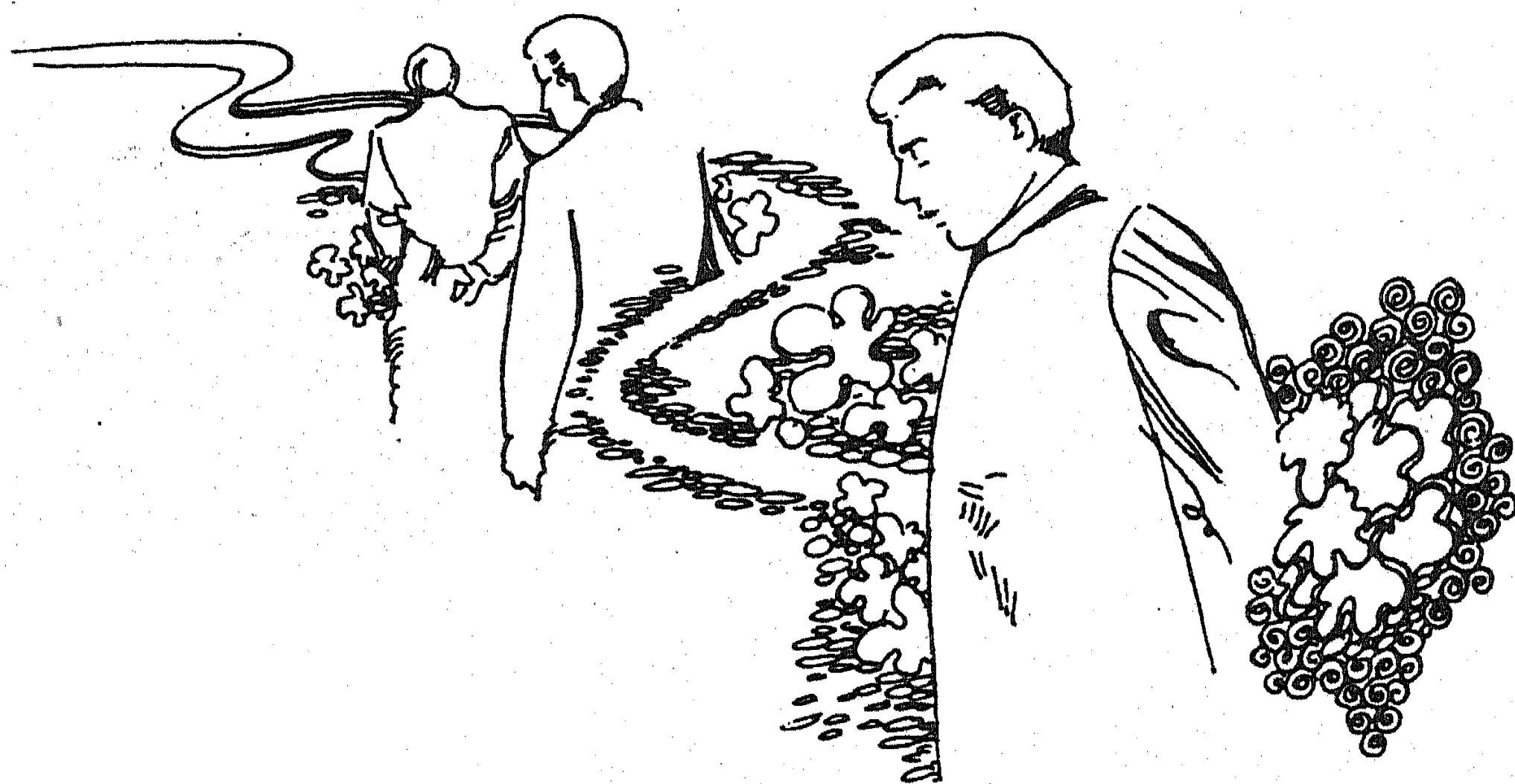
लक्ष्यहीन व्यक्ति जीवन में कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

उच्च शिक्षा और ज्ञानपूर्ण मस्तिष्क उद्देश्य के ज्ञान के बिना व्यर्थ हैं। उद्देश्यहीन व्यक्ति को संसार में कभी यश प्राप्त नहीं होता। वह संसार में किसी भी प्रकार की छाप नहीं छोड़ सकता, वह तो भीड़ में सामान्य जन के समान रह जाता है। उसका व्यक्तित्व उभरकर सामने नहीं आता और वह अयोग्य सिद्ध होता है।

जिस युवक में अपने उद्देश्य के प्रति निष्ठा हो, जो अपने काम में स्फूर्ति अनुभव करता हो, जो अपने काम को योजनाबद्ध तरीके से करता हो और जिसे कार्य में सफलता प्राप्त करने की लगन हो, उसे देखकर सभी व्यक्ति प्रसन्नता अनुभव करते हैं, प्यार करते हैं, उसका आदर करते हैं। गुणी जनों में उसकी गणना होती है।

आ८ आपका व्यक्तित्व आपके विचारों से बनता है

व्यक्ति की पहचान उसके विचारों से होती है, विचारों के अनुरूप उसका चरित्र बनता है। निम्न कोटि के विचार उसे पतन की ओर तथा उच्च कोटि के विचार उसे उन्नति के शिखर पर ले जाते हैं। अतः अपने विचारों को दृढ़ व उच्च रखें। अपने उच्च विचारों पर दृढ़ रहने का लाभ आपको अवश्य प्राप्त होगा।

कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि आदमी का प्रभाव बढ़िया कपड़े पहनने से बढ़ता है। उनका कहना है कि भड़कीली पोशाक और लम्बी-चौड़ी डींग हांकने से दूसरों को प्रभावित किया जा सकता है, परन्तु उनका ऐसा सोचना गलत है, क्योंकि आदमी का व्यक्तित्व उसके विचारों से बनता है; पोशाक या सज्जा से नहीं। क्या आपने कभी यह सोचा कि आपके मन में जो नाना प्रकार की तरंगें उठती हैं या जिन महत्वाकांक्षाओं का जन्म होता है क्या वे व्यर्थ हैं? क्या उनका कोई महत्व नहीं है? ये भावनाएं, ये विचार, ये महत्वाकांक्षाएं दिव्य हैं, जीवन देने वाली हैं और आपमें कार्य करने की जो शक्ति है उसे प्रोत्साहित करने और उभारने वाली हैं।

आप सच्चे मन से, अन्तःकरण से जिस वस्तु की मांग करते हैं, वह आपको अवश्य मिलेगी। आप जिस वस्तु को मन, वचन और कर्म से अपना आदर्श मानते हैं, जिसकी प्राप्ति की अभिलाषा करते हैं, वह आपको अवश्य प्राप्त होगी, क्योंकि जब आप किसी वस्तु को प्राप्त करने की आशा करते हैं तो आपका उस वस्तु से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। आप उस वस्तु के लिए जितने लालायित होते हैं, उस वस्तु से आपका सम्बन्ध भी उतना ही दृढ़ होता जाता है। आपने शायद अनुभव किया होगा कि इतना होने पर भी आपको वह वस्तु प्राप्त नहीं होती। इसका कारण यही है कि आप स्थूल पहलुओं पर ही भटकते रह जाते हैं, वास्तविक लक्ष्य पर आपका उतना ध्यान नहीं जाता, जितना जाना चाहिए। यदि आप अपने कार्य में सफल होना चाहते हैं तो आपको मन, वचन और कर्म से अपने लक्ष्य की ओर ध्यान रखना होगा। जब आप ऐसा करने में समर्थ हो जाएंगे तो विजयपताका आपके हाथ में होगी और संसार आपके कामों से आश्चर्य में पड़

जाएगा। उदाहरण के लिए यदि आप सदा पूर्ण स्वस्थ रहना चाहते हैं और चाहते हैं कि बुढ़ापा आपसे दूर रहे, तो आपको अपने मन में जवानी के सुनहरे विचारों को जन्म देना होगा। यदि आप चाहते हैं कि आपके मुखमण्डल पर सदा तेजस्विता विराजमान रहे, तो आपको अपनी आत्मा में सौन्दर्य का झरना प्रवाहित करना होगा तथा अपने विचारों को सौन्दर्यपूर्ण बनाना होगा।

आप अपने सच्चे मन से, अन्तःकरण से जिस वस्तु को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, वह आपको अवश्य प्राप्त होती है।

अपने आदर्शों पर स्थिर रहने का लाभ आपको अवश्य प्राप्त होगा। दूसरे शब्दों में यही आत्मदर्शन है। इससे आपकी कमजोरी भी नष्ट होती है, चाहे वह शारीरिक हो, चाहे मानसिक या नैतिक। इसी से आप सदा स्वस्थ रहते हैं, आप पर सौन्दर्य विराजमान रहता है और बुढ़ापा आप तक नहीं पहुंच पाता।

आपने जो आदर्श बनाया है, उसमें वह पदार्थ सदा नवीन और सुन्दर रहता है। वह न बासी होता है और न कुरूप। यदि आप अपने आदर्श या लक्ष्य पर दृढ़ रहते हैं तो आपको ऐसा प्रतीत होगा कि आप पूर्णता से साक्षात्कार कर रहे हैं। इससे आपकी श्रद्धा और विश्वास अपने मनोरथ की सिद्धि के आभास से और भी दृढ़ हो जाते हैं। अपने आदर्श पर स्थिर रहने से आपके मनोबल को एक प्रकार की विशिष्ट महानता प्राप्त होती है, आपका मनोबल बढ़ता और दृढ़ होता है।

आप जैसा बनना चाहते हैं, उसका आदर्श सदा अपने सामने रखिए। ऐसा करने से कार्यक्षमता के भाव आपके मन में उठेंगे। कमी वाले विचारों को मन से बाहर निकाल दीजिए। यदि आप ऐसा कर सकेंगे तो आप स्वयं देखेंगे कि लक्ष्य-प्राप्ति के लिए किए जाने वाले यत्नों का कैसा फल प्राप्त होता है। आपको पता चलेगा कि आपके प्रयत्न कितने फलदायक हैं।

आपको यह ज्ञात होना ही चाहिए कि आशाजनक विचारों में कितनी अद्भुत शक्ति है। इस बात का अनुभव करके तो देखिए। आप यह निश्चय कर लीजिए कि जो कुछ भी होगा, वह अच्छा ही होगा। आप देखेंगे कि आपके इन आशाजनक विचारों का आपकी मानसिक और शारीरिक उन्नति पर बड़ा ही आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ेगा। यदि यह विचार आपका स्वभाव बन जाय तो आप जितनी भी आशा करेंगे, आपकी विजय होगी। ऐसी स्थिति में आपकी विजय को कोई रोक नहीं सकता।

आपको अपने मन में यह विश्वास पक्का कर लेना चाहिए कि प्रभु ने आपको जिस काम के लिए बनाया है, आप अवश्य ही उसे पूरा कर लेंगे। परन्तु यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस सम्बन्ध में आपके मन में शंका या किसी प्रकार का संदेह नहीं रहना चाहिए। जब भी, जहां भी, तनिक भी सन्देहजनक विचार आपके मन में आए, उसे फौरन अपने मन से बाहर निकाल फेंकें। केवल अच्छे और अपना हित करने वाले विचारों को ही मन में स्थान दें, दुष्ट विचारों को अपने पास न आने दें।

आप जो भी काम करें, अपने भावों एवं विचारों को आशापूर्ण रखें और शुभ समाचार देने वाला बनाएं। इससे आपकी काम करने की शक्ति बढ़ेगी। आपको यह अनुभव होने लगेगा कि आपका कल्याण हो रहा है। यदि आप एक बार अपने मन में सौभाग्यपूर्ण और आनन्द देने वाले चित्रों को देखने की आदत बना लेंगे तो आपको निराश और बुरे विचार परेशान नहीं करेंगे। यदि यही आदत आपकी सन्तान में पड़ जाय तो सारी सभ्यता और भी उन्नत हो जाय। इस प्रकार प्राप्त की गई उत्तम संस्कृति से आप अपने उन शत्रुओं को भी जीत सकते हैं, उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं जो आपके सुख, शान्ति और सफलताओं को लूटते और नष्ट करते रहते हैं।

प्रायः लोग सोचा करते हैं कि व्यावहारिक संसार में प्रवेश पाने के लिए धन की आवश्यकता है, परन्तु आप मनसा, वाचा और कर्मणा प्रयत्न करें कि आपका भविष्य उज्ज्वल हो, आप जीवन में सुखी और सफल हों और आनन्द देने वाली सामग्रियां आपको प्राप्त होती रहें और यदि आप केवल इसी पूंजी के बल पर संसार में प्रवेश करेंगे तो आपको निश्चित रूप से फल प्राप्त होगा।

संसार में ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो अपनी इच्छाओं को प्रचण्ड रूप देने के बजाय उन्हें मन्द बनाते हैं, उन्हें कमजोर करते हैं। वे यह तथ्य नहीं जानते कि अपनी आकांक्षाओं की सिद्धि के लिए अडिग, निश्चित तथा सुदृढ़ धारणा बहुत ही आवश्यक

है। निरन्तर प्रयत्न करते रहने से प्रत्येक मनुष्य अपनी आशाओं को पूरा कर सकता है, उनसे साक्षात्कार कर सकता है।

यदि आपकी इच्छाओं, आकांक्षाओं की सिद्धि के मार्ग में कुछ रुकावटें आती हैं तो आपको घबराना नहीं चाहिए, वरन् सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए। निश्चित जानिए कि आप उन कठिनाइयों पर अवश्य ही विजय प्राप्त कर लेंगे, पर यह ध्यान रहे कि लक्ष्य प्राप्ति के लिए केवल अभिलाषा से काम न चलेगा, उसके लिए निरन्तर मेहनत और प्रयत्न करना होगा। यदि ऐसा नहीं होगा अर्थात आप परिश्रम नहीं करेंगे तो आपकी आकांक्षाएं पानी के बुलबुले के समान फूटकर नष्ट हो जाएंगी।

आपकी आकांक्षा, अभिलाषा और दृढ़ निश्चय मिलकर कार्य करें तो निश्चय जानिए कि सफलता की उत्पादक शक्ति कई गुणा बढ़ जाएगी। सफलता आपकी राह ताकती मिलेगी। आपको यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए कि आपकी अभिलाषा के परिणाम तभी निकलेंगे, जब उसे दृढ़ निश्चय में बदल दिया जाय। आपको चाहिए कि आप दृढ़ निश्चयी बनें और सदैव एक प्रकार की पूर्णता का अनुभव करें। अपने मन में यह दृढ़ धारणा रखें कि आप उस प्रभु के ही अंश हैं, अतः आप भी उसके समान सर्वांगपूर्ण हैं। ऐसा सोचने-समझने से आपको ऐसी स्फूर्तिदायक शक्ति प्राप्त होगी, जिससे निर्बल धारणाएं मिट्टी में मिल जाएंगी और आपकी कार्य करने की शक्ति में आशातीत वृद्धि होगी। पूर्णता का आदर्श आपके सामने रहना चाहिए, वही बातें सोचनी और कहनी चाहिए, जिन्हें आप पूर्णता तक पहुंचाना चाहते हैं। आपके केवल कहने, सोचने या चाहने से कोई लाभ नहीं होगा। कुछ लोग कहा करते हैं, "अब तो हम किसी काम के नहीं रहे, अच्छा हो कि भगवान हमें उठा ले।" वे हर समय यही रोना रोते देखे जाते हैं, "हम बहुत ही मन्द-भाग्य हैं, हमने इतना काम किया, पर समय हमारा साथ ही नहीं देता।" इन्हें यह मालूम नहीं कि उनके ये निराशाजनक विचार ही उनकी शांति और सुख को समाप्त कर रहे हैं। ऐसे लोगों के लिए यही परामर्श है कि वे अपने मन से इन कुविचारों को निकाल दें, उन्हें लेशमात्र भी स्थान न दें। इस प्रकार के विचारों से दूर रहने में ही भलाई है। आपको हर समय यही सोचना चाहिए कि उच्च्व विचारों से ही आत्मा को सुख और शान्ति प्राप्त होगी, ऊंचा उठने की शक्ति मिलेगी और आप हर एक पूर्णता को प्राप्त करेंगे।

यदि आप किसी काम में पूर्ण निष्णात और दक्ष होना चाहते हैं तो अपने सामने ऊंचे आदर्श रखिए और तन-मन से उसमें लग जाइए और तब तक उसमें लगे रहिए, जब तक आपको उसकी सफलता में लेशमात्र भी शंका या सन्देह रहे।

व्यक्ति की पहचान उसके आदर्शों से ही होती है, वह उन्हीं से पहचाना जाता है, उन्हीं के अनुरूप उसका चरित्र बनता है। अतः किसी मनुष्य के आदर्श का पता लगाने के लिए उसके चरित्र को पहचानना होगा, उसके स्वभाव को परखना होगा, इससे ही उसके आदर्शों का ज्ञान हो सकेगा।

आपको इस बात का ध्यान भी रखना चाहिए कि आपका आदर्श ही आपके जीवन में वास्तविकता भरता है। आपको यह मान लेना चाहिए कि जैसा आपका आदर्श होगा,

आपके मुख पर वैसा ही प्रतिबिम्ब झलकने लगेगा। ऐसा असम्भव है कि आपके आदर्श का प्रतिबिम्ब आपकी आंखों में न झलके। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आपके मन में उठने वाले विचार दिव्य हों। यह बात पक्की समझ लीजिए कि गरीबी से आपका कोई सम्बन्ध नहीं, निर्बलता से भी आपका कोई रिश्ता नहीं, रोग और बीमारियों से आपका कोई नाता नहीं। आपको यह विश्वास रखना चाहिए कि आपके द्वारा कोई बुरा काम नहीं होगा, सदैव अच्छे-से-अच्छा काम ही सम्पन्न होगा।

कई बार आपके विचार में यह बात आई होगी और आपने सोचा होगा कि आपकी आत्मा किस चीज के सहारे उन्नति के मार्ग पर बढ़ सकती है? वह कौन-सी दिव्य वस्तु है जिसे पाकर आपकी आत्मा आनन्दमय हो सकती है? पाठक महोदय! यह अन्य कोई वस्तु नहीं, यह केवल आपके आदर्श से पैदा हुआ प्रभाव ही है। आपके जीवन-पथ को आलोकित करने वाली पवित्र ज्योति आपके मन से ही निकलती है।

अपने आदर्श तक पहुंचने में आपका दृढ़ विश्वास, आस्था और उसके प्रति श्रद्धा आपकी बहुत सहायक होती है अथवा यूं समझ लीजिए कि आपकी श्रद्धा ही आपकी आशाओं-आकांक्षाओं का मूल है। इसका भाव यह नहीं कि आप केवल श्रद्धा पर ही रुक जाएं। यदि आप थोड़ा सोचकर देखें तो आपको पता चलेगा कि हमारे मन में ऐसा अद्‌भुत व आश्चर्यजनक पदार्थ छिपा हुआ है जो श्रद्धा, आशा और विश्वास आदि सब बातों से महत्वपूर्ण है। यह कहना बड़ी बात न होगी कि आपकी अभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला यही है। आप अवश्य सोचते होंगे कि वह क्या हो सकता है, इसका उत्तर है सत्य, शाश्वत सत्य!

जिस लक्ष्य पर आप दृढ़ विश्वास करते हैं, वह आपको अवश्य प्राप्त होगा। वह अवश्य फलीभूत होगा। उत्पादक शक्ति का यही नियम है। उदाहरण के लिए, यदि आप प्रभावशाली व्यक्ति हैं तो समाज में आदर व प्रतिष्ठा प्राप्त होने के साथ आपको सभी सांसारिक सुख भी प्राप्त होंगे। यदि आप ऐसा सोचते हुए अपने प्रयत्न आरम्भ करते हैं तो आपमें एक अद्‌भुत शक्ति उत्पन्न हो जाती है जिससे आपके मनोरथ सफल होते हैं। यदि आप चाहते हैं कि आप अपने जीवन के ध्येय को पूरा कर सकें तो आपको अपने सारे विचारों को अपने आदर्श व लक्ष्य की ओर लगाना होगा। मन, वचन और कर्म से प्रवृत्त हो जाने से आपको आदर्श में सफलता प्राप्त होगी। आप दिव्य वस्तुओं की कल्पना कीजिए और यह भी सोचिए कि आप अपने उद्देश्य पर पहुंच रहे हैं और क्रमशः आपकी उन्नति हो रही है, आपको ब्रह्मानन्द प्राप्त होने वाला है।

कुछ लोगों का कहना है कि इन स्वप्नों से कुछ नहीं होगा, परन्तु उनका विचार सही नहीं। कहने का अर्थ यही है कि आप कोई भी कार्य आरम्भ करने से पहले अपनी इच्छा को सुदृढ़ कर लें और सारी मानसिक शक्ति उसी ओर लगा दें, उससे आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। आपकी शक्तियों में बड़ी क्रियाशीलता है। इन्हीं शक्तियों के भरोसे आप विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को आदर्श पर कायम रख सकते हैं।

शायद आपके मन में यह बात उठे कि यह सब हवाई किले हैं, इनसे कुछ नहीं होगा, परन्तु देखा जाय तो हवाई किले बनाना भी व्यर्थ नहीं है। यह सब इसी प्रकार है जैसे

कोई कलाकार या दक्ष कारीगर जब कोई सुन्दर व उपयोगी वस्तु बनाता है तो पहले उसका भव्य चित्र उसके मन में चित्रित होता है। इसी प्रकार आप भी अपनी अभिलाषाओं को पहले मन में चित्रित करते हैं, उसके बाद उन्हें कार्यरूप में परिणत करते हैं।

यह तो आप जानते ही हैं कि आप जो कुछ करते हैं, वह पहले आपके मन में ही उपजता है, फिर वही रूप, शक्ल-सूरत आपके सामने आती है। आप जो कल्पना करते हैं, वह आपके जीवनरूपी भव्य भवन का नक्शा है, पर आपको उस कल्पना को कार्यरूप में परिणत करना होगा। यदि आप उसे कार्यरूप में परिणत नहीं करेंगे तो वह कल्पना मात्र ही रह जाएगी।

आपकी कल्पना ही आपके जीवनरूपी भव्य भवन का नक्शा है। अतः अपनी कल्पना को कल्पना ही न रहने दें, उसे कार्यरूप में परिणत करें।

जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, पहले-पहले वे अपने आदर्शों के स्वप्न ही लिया करते थे। उसके पश्चात आदर्शों को सिद्ध करने के लिए जिसने जितना यत्न किया, उसे उतनी ही सफलता प्राप्त हुई। आपको भी अपने आदर्श पर स्थिर और दृढ़ रहना होगा। यदि आपको यह अनुभव होता है कि आपका आदर्श प्रत्यक्ष रूप में पूरा नहीं हो सकता तो यह बात आपके लिए हितकर नहीं। आपको उन लोगों के पास बैठना चाहिए, उन्हीं के साथ रहना चाहिए, जिन्होंने उस कार्य को पूरा किया है या पूरा करने में लगे हुए हैं। आपको प्रयत्न करना चाहिए कि सदा आनन्दमय वातावरण में रहें। नई आकांक्षाएं-अभिलाषाएं पैदा करने वाले वातावरण में रहें। आपका आदर्श कभी धुंधला नहीं होना चाहिए, उसे प्रकाशमान बनाए रखें।

आप जब रात को सोते हैं तो थोड़ी देर बिस्तर पर बैठकर अपने आदर्श पर विचार करें और अपनी कल्पनाओं में उसका सुन्दर-से-सुन्दर रूप देखने का यत्न करें। इन कल्पनाओं का मतलब उन स्वप्नों से नहीं जो क्षणिक हैं। यहां आशय उस सच्ची लगन से है जो आपको सदा याद दिलाती रहती है कि आप अपने जीवन को ऊंचा उठाकर महान बना दें और उन स्वप्नों को साकार रूप दे दें, जिन्हें आपने कल्पना में देखा है। यहां आशय उन मौलिक अभिलाषाओं से है जो आपके आदर्श को सिद्ध करने में सहायक हैं, जो आपको पूर्णता की ओर ले जाती हैं और जो आपकी आत्मा के विकास में सहायक हो सकती हैं।

आपकी अभिलाषाएं व आकांक्षाएं ही आपकी प्रतिदिन की प्रार्थनाएं हैं। प्रकृति आपकी प्रार्थना को सुनती है और उसका उत्तर भी देती है। बहुत कम लोगों को यह बात मालूम है कि ये अभिलाषाएं ही शुद्ध हृदय से निकली हुई प्रार्थनाएं हैं और प्रभु हमें अवश्य ही इनका फल प्रदान करता है। शायद आप यह नहीं जानते कि एक दैवी उपदेशक आपकी आत्मा में बैठा हुआ समय-समय पर आपकी सहायता और रक्षा करता रहता है। वही आपको ठीक मार्ग पर चलाता और आपके प्रश्नों के सही उत्तर भी देता है। जो व्यक्ति अपने आदर्श पर पहुंचना चाहता है उसे अपनी आत्मा से निर्देश प्राप्त करना चाहिए। ऐसा करने पर आप अपने लक्ष्य पर पहुंचेंगे और शीघ्र पहुंचेंगे। आपको ज्ञात होना चाहिए, आपकी हार्दिक अभिलाषाएं व आकांक्षाएं ही आपकी शक्ति हैं, वही आपमें बल और स्फूर्ति भरती हैं, उन्हीं से आपकी योग्यता बढ़ती है।

आप जानते हैं और आपने देखा भी होगा कि इस संसार में सभी वनस्पतियां समय पर ही फलती-फूलती हैं। यदि आप कहीं देखें कि कोई फूल या पौधा समय से पहले ही मुरझा जाय या नष्ट होने लगे, तो आप पाएंगे कि उसके सम्बन्ध में कहीं कुछ गलती हुई है या सावधानी में कोई कमी रह गई है। यही बात मानव-जीवन पर भी लागू होती है। आपने देखा होगा कि कुछ मनुष्य पूर्ण आयु भोगते हैं और बहुत से समय से पूर्व ही काल-कवलित हो जाते हैं। ऐसा अवश्य ही किसी-न-किसी असावधानी से होता है। यदि अन्य प्राणियों की तुलना मनुष्य से करें तो देखेंगे कि मनुष्य को अपना विकास करने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। यदि आप अपनी कल्पनाओं का अनुसरण करेंगे, उन्हें स्थिर रखेंगे तो उनके पूर्ण होने का समय अवश्य आएगा। उस समय आपके आसपास का वातावरण खिल उठेगा, परन्तु उस समय को पास लाने का यत्न आपको करना ही होगा, केवल खाली बैठे सपने देखने से सफलता की सुनहरी घड़ियां नहीं आ सकेंगी।

आपको अपने आपको असमर्थ नहीं मानना चाहिए, क्योंकि हर मनुष्य में पूर्ण और आदर्श व्यक्ति बनने की शक्ति मौजूद है। यदि आप अपने आदर्श की पूर्ति के लिए मन, वचन और कर्म से प्रयत्न करेंगे, तो आपको अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी।

अपने आप पर संयम रखें

जिस मनुष्य का अपने आप पर वश नहीं होता, वह क्रोध, ईर्ष्या व घृणा के आवेश में अनेकों निन्दनीय कार्य कर समाज की निगाहों में घृणा और निन्दा का पात्र बनता है। यदि मनुष्य स्वयं पर संयम रखने में विजय प्राप्त कर ले तो वह सर्वत्र सम्मानित व सभी का चहेता बन सकता है।

यदि आप यह प्रमाणित कर सकें कि आप अपने को वश में रख सकते हैं तो आप निश्चित रूप से शिक्षित हैं; लेकिन यदि आप में आत्मसंयम का अभाव है तो आपकी सारी शिक्षा व्यर्थ है।

आप अपने स्वामी स्वयं बनें—अर्थात आप अपने आपको वश में रखें, तभी आप कोई महान कार्य कर पाएंगे।

कोई भी व्यक्ति जब तक अपना स्वामी स्वयं न हो, उसके लिए कोई भी महान कार्य कर पाना असम्भव है।

आत्मसंयम न होने के कारण असंख्य व्यक्तियों के जीवन नष्ट हो चुके हैं। उनमें ऊंची महत्वाकांक्षाएं थीं, विशिष्ट योग्यताएं भी थीं, उच्च-शिक्षा भी उन्होंने प्राप्त की थी, परन्तु वे अपने आपको वश में नहीं रख पाते थे, अतः वह सब कुछ व्यर्थ हो गया। वे व्यक्ति होनहार थे, सभी को उनका भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता था, किन्तु उनमें अपने को वश में रख पाने की सामर्थ्य न थी, इसीलिए उनका जीवन व्यर्थ हो गया।

आप प्रतिदिन समाचार पत्रों में इस प्रकार के समाचार पढ़ते हैं कि किसी ने क्रोध में आकर किसी को गोली मार दी या चाकू से घायल कर दिया। इस कार्य का मूल्य भी उन्हें चुकाना पड़ता है—वे अपनी आजादी खो बैठते हैं। जेलों में जाकर कैदियों से बात कीजिए, सुधार-गृहों में अपराधी बालकों से पूछिए, आपको पता चलेगा कि उनमें बहुत से ऐसे हैं जो केवल क्रोध में आने के कारण कोई ऐसा काम कर बैठे, जिसके कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। क्रोध तो एक मिनट का था, परन्तु उनके सारे जीवन पर एक ऐसा धब्बा छोड़ गया जिसे धो पाना असम्भव है। बन्दूक से गोली छूटी, किसी को लगी। वह तो सदा के लिए संसार से कूच कर गया, परन्तु जो अपराध हो चुका, वह कभी भी 'अनहोना' नहीं हो सकता।

क्रोध से जिस समय मनुष्य का खून खौल उठता है, उस समय आंधी के झोंके की तरह वह क्या अपराध नहीं कर डालता? क्रोध का एक झोंका आया और मनुष्य अपने ऊंचे पद से गिरा या कोई ऊंचा पद मिलने वाला था तो वह अवसर टल गया। क्रोध के आवेशपूर्ण एक क्षण में मनुष्य अपने वर्षों के काम, श्रम अथवा अनुभव के फल को, परिणाम को व्यर्थ कर देता है, उन्हें उखाड़ फेंकता है; वर्षों का श्रम एक क्षण में बेकार हो जाता है।

एक बहुत ही योग्य सम्पादक था। वह अनेक श्रेष्ठ दैनिक समाचार पत्रों में सर्वोच्च पद पर काम करता रहा था। उसकी लेखनी में शक्ति थी। वह योग्यतापूर्वक अनेक विषयों पर लिख सकता था। इतिहास का भी पण्डित था। वह कोमल-हृदय का व्यक्ति था। आवश्यकता पड़ने पर वह अनेक लोगों की सहायता भी कर चुका था, परन्तु उसमें कमी यही थी कि पल भर में पारा गरम होते ही वह उस उच्च पद से त्यागपत्र दे देता था, जिसे प्राप्त करने के लिए उसे वर्षों परिश्रम करना पड़ा था। इस प्रकार उसका वर्षों का परिश्रम पल भर में धूल में मिल जाता था। उस जैसी योग्यता वाले व्यक्ति बहुत कम होते हैं, परन्तु उसे काम के लिए निरन्तर भटकना पड़ता था, आज कहीं, कल कहीं। कार्य की अस्थिरता के कारण उसके परिवार का निर्वाह भी कठिनाई से हो पाता था। कारण यही था कि वह क्रोध का 'दास' था, उसे वश में न कर पाता था।

क्रोध के दास व्यक्ति हमें अनेक क्षेत्रों में मिल जाएंगे। एक क्षण में पारा ऊपर हो जाने के कारण महीनों और वर्षों के काम पर पल भर में पानी फेर देते हैं। अनेक बार ऊंचे पदों पर पहुंचकर भी नीचे उतर आते हैं।

मैं कई ऐसे वृद्ध व्यक्तियों को जानता हूं जिनका जीवन क्रोधी स्वभाव के कारण ही बिगड़ गया। अपने से मतभेद रखने वाले व्यक्ति का उन्होंने कभी सम्मान नहीं किया और इसी वजह से सम्मानित पदों से हाथ धोते रहे। क्रोध से उन्हें क्या हानि होगी, उन्होंने

इस बात की चिन्ता नहीं की। वे अपनी जबान पर लगाम न लगा सके और न कहने योग्य बात भी दूसरे व्यक्ति के मुख पर कह गए, क्योंकि वे क्रोध में पागल हो उठते थे।

आपने देखा कि यह सौदा कितना महंगा है। क्रोध के आवेश में आप अपनी बात, अपने विचार और अपना मन जबरदस्ती दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क पर लादना चाहते हैं। परिणाम यह होता है कि आपका अपना भविष्य डगमगा जाता है।

एक योग्य व्यापारी से मेरा परिचय था। उसकी सारी साख धीरे-धीरे नष्ट हो गई। कारण यही था कि वह अपने ग्राहकों को अपने विचार बताना चाहता था। अपने विचार, अपना मत बताने की झोंक में वह क्रोध में आ जाता और आगा-पीछा सोचे बिना जो मुंह में आता, बक देता। गालियां तक देने लगता; बिना किसी कारण या तर्क के क्रोध में आ जाता। परिणाम यह हुआ कि उसके ग्राहक टूटते गए। उसके अपने कर्मचारी भी डरते और उससे दूर रहते। धीरे-धीरे उसका काम इतना बिगड़ा कि दिवालिया होने की नौबत आ पहुंची।

अनेक व्यक्ति क्रोधावेश में मनुष्य नहीं रह जाते, राक्षस बन जाते हैं। एक व्यक्ति जब क्रोध में आ जाता था तो उस समय उसके सामने जो चीज आ जाती उसे फेंककर तोड़ देता था। वह प्रायः सभी से गाली-गलौज पर उतर आता; जो उसे शान्त करना चाहते, वे भी उसके क्रोध के शिकार बन जाते। क्रोध के आवेश में उसकी आंखें लाल अंगार-सी जलने लगतीं और परिचित व्यक्ति दूर भाग जाते। वैसे वह सचेतन मन से किसी पर क्रोध न करना चाहता था। क्रोध का उबाल उतर जाने पर वह निढाल और बेबस हो जाता, हालांकि वह स्वस्थ और तगड़ा व्यक्ति था।

क्रोध की आंधी आने पर मनुष्य पागल हो जाता है, वह क्रोध-रूपी राक्षस के अधीन हो जाता है। इसीलिए आप कह सकते हैं कि जो व्यक्ति क्रोध को नहीं रोक सकता, उसे वश में नहीं कर सकता, वह समझदार नहीं हो सकता। क्रोध के आवेश में व्यक्ति ऐसे काम कर बैठता है जिससे कई बार उसे जीवन भर पछताना पड़ जाता है।

बहुत से लोग क्रोध के वशीभूत होकर किए गए पिछले कार्यों पर पश्चाताप करते देखे जाते हैं। उन कामों को याद करके उन्हें अपने ऊपर लज्जा आती है, कष्ट अनुभव करते हैं और निरन्तर मानसिक पीड़ा सहन करते रहते हैं।

क्रोध, ईर्ष्या, बदला लेने और घृणा की भावना के कारण कैसी-कैसी दुर्घटनाएं होती हैं, उनसे मानव-इतिहास भरा पड़ा है। शायद ही कोई ऐसा लेखक हो जो इन दुष्ट भावनाओं के परिणामों का ब्योरा लिख सके।

तनिक विचार कीजिए! आपने अपने मन में किसी महत्वाकांक्षा को वर्षों संजोया, वर्षों उसके लिए यत्न किया। अचानक क्रोध के राक्षस ने आकर आप पर अधिकार जमा लिया और आप ऐसे काम कर बैठे कि सारा भविष्य ही अन्धकारमय हो गया।

मदिरा के एक प्याले से शरीर को उतनी हानि नहीं होती जितनी क्रोध के एक घूंट से होती है। किसी भी काम से चरित्र में इतनी कमजोरी नहीं आती, जितनी क्रोधावेश के कारण आती है। घृणा के कारण जीवन इतना कलंकपूर्ण हो सकता है, जितना शराब की पूरी बोतल से नहीं होगा। अत्यधिक सिगरेट आदि पीने, चिन्ता व सोच-फिक्र से शरीर

के सौन्दर्य की उतनी हानि नहीं होती, जितनी ईर्ष्या, जलन और क्रोध से होती है।

क्रोध की आग में निरन्तर जलते रहने के कारण ही आज अनेक श्रेष्ठ व्यक्ति दुख भोग रहे हैं।

क्रोध के कारण मनुष्य की आयु भी कम होती है। कुछ लोग क्रोध के कारण घण्टों कांपते रहते हैं और तब तक किसी काम के योग्य नहीं हो पाते, जब तक पूर्णतया शान्त नहीं हो जाते।

मैं एक परिवार को जानता हूं। परिवार के सभी सदस्य आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। इसी क्रोध के कारण उन्होंने अपने घर को नरक बना लिया है। जब क्रोध का दौरा पड़ता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि वे एक-दूसरे को काट खाएंगे। पल भर में उनकी शक्लें बदल जाती हैं। पल में ऐसा दीखने लगता है मानो राक्षस आपस में लड़ रहे हों। इस प्रकार आपस के लड़ाई-झगड़े, एक-दूसरे पर आक्षेप, चिढ़ाना, एक-दूसरे की निन्दा करना, आरोप लगाना क्रोध के कारण ही होता है। इसका परिणाम भी एक ही होता है—घर की शान्ति और समृद्धि का नाश।

ऐसा दीखता है कि अनेक व्यक्ति क्रोध की दया पर ही जीते हैं। क्रोध आने पर उन्हें अपने वश में रख पाना बड़ा कठिन होता है। क्रोध में पागल होकर वे अपने प्रियजनों की हत्या तक कर देते हैं। थोड़ी देर पहले जिससे गले मिल रहे होते हैं, उसी की छाती में छुरा घोंप देते हैं।

एक महिला क्रोध में अपने को संभाल नहीं पाती थी। क्रोध की आंधी गुजर जाने पर उसके शरीर में शक्ति न रहती थी और बच्चे जैसी कमजोर हो जाती थी। क्रोध के एक झोंके के बाद उसे संभलने में कई दिन लग जाते थे।

चिकित्सक यह भली-भांति जानते हैं कि क्रोध का स्वास्थ्य पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है। अनेक व्यक्ति क्रोध के झोंके संभाल नहीं पाते और उनका स्वरूप इतना विकृत हो जाता है कि कुछ समय बाद उन्हें पहचान पाना भी कठिन हो जाता है। कैंसर जैसे भयानक रोगों का एक कारण क्रोध भी होता है।

जब कोई व्यक्ति ईर्ष्या के वशीभूत हो जाता है तो वह संसार को दूसरे ही रूप में देखने लगता है।

इस तीखी भावना से मनुष्य की शक्तियां समाप्त होने लगती हैं। मनुष्य की तर्कशक्ति का भी ह्रास होता है। वह ईर्ष्यारूपी चुड़ैल का शिकार होकर न्याय-तर्क-बुद्धि सबसे हाथ धो बैठता है।

ईर्ष्यारूपी शत्रु को मस्तिष्क में स्थान देने से दिमाग का ढांचा ही बिगड़ जाता है और जब इसका मस्तिष्क पर अधिकार हो जाता है तो मनुष्य की स्मरणशक्ति, धैर्य और रचनात्मक शक्तियां लुप्त हो जाती हैं। इस प्रकार ईर्ष्या व राग-द्वेष मनुष्य की शांति के महान शत्रु हैं।

कई व्यक्ति तो इन भावनाओं के वशीभूत होकर अपने जीवन से ही हाथ धो बैठते हैं। क्रोध, ईर्ष्या और दूसरे के प्रति घृणा के झोंके को बरदाश्त न कर पाने के कारण अनेक व्यक्तियों की हृदय-गति बन्द हो जाने से मृत्यु तक होती देखी गई है।

आप ईर्ष्यारूपी चुड़ैल का शिकार होकर
न्याय-तर्क-बुद्धि सबसे हाथ धो बैठते हैं।

इन दुष्ट भावों के आवेश में पागल होने वाले अनेक व्यक्ति देखने में आते हैं। वस्तुतः मानव-शरीर में जो भी अंग अधिक निर्बल होता है, उस पर इन तीव्र भावों के आवेश का बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है।

जब मस्तिष्क में क्रोध भरता है तो मस्तिष्क के तन्तुओं में विषैली प्रतिक्रिया आरम्भ होती है। इस प्रतिक्रिया में मस्तिष्क के तन्तु टूट-फूट जाते हैं और वह विकृत हो जाता है।

इन्हीं क्रोध-घृणा, ईर्ष्या-द्वेष और बदले आदि की भावनाओं के कारण बहुत से व्यक्तियों को अपस्मार (मिर्गी), हिस्टीरिया या पागलपन के दौरे पड़ते हैं। इनके कारण हमारे भीतरी अंग इतने क्षतिग्रस्त हो जाते हैं कि उनका उपचार हो ही नहीं सकता। क्रोधी का शरीर विकृत हो जाता है। उसके मुख की कान्ति नष्ट हो जाती है और उसका रंग काला पड़ जाता है।

चरित्र का उत्तम निष्कर्ष आत्मसंयम है। जो व्यक्ति अपने आपको वश में कर सकता है, वही दूसरों को भी प्रभावित कर सकता है। उसी में प्रभावित करने की सामर्थ्य होती है। जो अपने को वश में नहीं रख सकता, वह दूसरों के लिए ही आफत नहीं, वरन अपने लिए ही भयंकर आफत बन जाता है।

अपने निश्चय पर अटल रहना बुरा नहीं, परन्तु इसके साथ ही दूसरों के मत को सुनना और समझने का यत्न करना भी श्रेष्ठ गुण है। क्रोध होने का भयंकर कारण उपस्थित होने पर भी जो व्यक्ति शान्त रह सकता है, वही श्रेष्ठ व्यक्ति है।

सम्पदा के मालिक कैसे बनें

निर्धनता का कारण अकर्मण्यता है। यदि आपके विचार अपनी अयोग्यता और आत्मनिन्दा पर ही लगे रहे तो आप सदैव गरीबी की दलदल में धंसे रहेंगे। इसके विपरीत दृढ़ निश्चय व पर्याप्त प्रयासों के साथ धन, ऐश्वर्य और सम्पत्ति प्राप्त करने के नियमों का पालन करने से सम्पन्नता आपसे दूर नहीं रह सकती।

इस संसार में अपना घर कितने लोगों के पास है? करोड़ों लोग सड़कों पर सोते हैं फुटपाथों पर पड़े रहते हैं, गन्दी जगहों में रहते हैं, टूटी-फूटी झुग्गियों में रहते हैं। ऐसा क्यों?

अपनी अकर्मण्यता व अपनी दीन-हीन परिस्थितियों से समझौता कर लेने के कारण ही मनुष्य बेघर-बार बनता है।

क्या संसार में मकान बनाने की सामग्री की कमी है? इस संसार में कमी तो किसी भी चीज की नहीं, मकान बनाने के लिए ईंट, गारा, चूना ही चाहिए। इन चीजों की संसार में कोई कमी नहीं, फिर भी इस संसार में रहने वाले सभी व्यक्तियों को मकान प्राप्त नहीं है। इसका कारण है उनकी अकर्मण्यता। अपनी दीन-हीन परिस्थितियों से समझौता कर लेने के कारण मनुष्य बेघर-बार बना हुआ है।

आदमी के मन में कार्य के सम्बन्ध में निरन्तर विचारधारा चलती रहे, उसमें निरन्तर कर्म की प्रेरणा बनी रहे, वह निरन्तर कार्य में लगा रहे और एक के बाद एक प्रयत्न करता रहे तो किसी भी पदार्थ को प्राप्त कर लेना असम्भव नहीं। जिस काम को एक व्यक्ति कर सकता है, उसे दूसरा भी कर सकता है। हम अपने मन में उठने वाले विचारों को कुचल देते हैं, हममें आत्मविश्वास नहीं होता या कम होता है, हमारी आकांक्षाएं छोटी, ओछी और तुच्छ होती हैं, इन्हीं कारणों से हमें विपुल धन-सम्पदा प्राप्त नहीं होती, हमारा सम्बंन्ध उससे टूट जाता है।

सम्पन्नता और धन-प्राप्ति के नियम गणित के नियमों के अनुरूप सही और निर्दोष हैं। यदि हम धन, ऐश्वर्य और सम्पत्ति के नियमों का पालन करें तो सम्पन्नता का विशाल स्रोत हमारी ओर बढ़ने लगेगा।

यदि आपके मन में सन्देह, चिन्ता और भय भरे हुए हैं, तो आपको सफलता कैसे प्राप्त होगी? इस स्थिति में आपके लिए सफलता पाना असम्भव होगा। चूंकि आपने तो अपनी सम्पन्नता के द्वार स्वयं बंद कर रखे हैं। कुचले, दबे, दीन-हीन बने, डरपोक, सन्देह और निराशा से भरे हुए मन वालों को कभी भी अपार धन-सम्पदा प्राप्त नहीं हो सकती। एक मार्ग पकड़ लीजिए, चुन लीजिए। सम्पत्ति अथवा फाकामस्ती में से किसी एक को चुन लीजिए। वैसे आपको फैसला यही करना चाहिए कि नकारात्मक निर्णय न करें, 'न' का मार्ग न अपनाएं।

यदि आप एक बार 'हां' का निर्णय कर लेते हैं और कोई सन्देह नहीं रखते तो आपके लिए पूर्ति के द्वार खुलते चले जाएंगे। जो मन डरता है, सन्देह से भरा रहता है, उसकी शक्तियां क्षीण हो जाती हैं, उसकी रचनात्मक शक्ति क्षीण हो जाती है, वह धन-समृद्धि को नकारता रहता है, ऐसी स्थिति में उसे धन-समृद्धि कैसे प्राप्त होगी?

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मनुष्य अवसर से लाभ उठाना चाहता है, धन-सम्पदा भी प्राप्त करना चाहता है, सभी प्रकार के साज-सामान भी चाहता है, परन्तु उसके मन की स्थिति ऐसी है जिसमें सन्देह भरे हुए रहते हैं, भय भरा रहता है, वह अवसर से लाभ उठाने की कभी कोशिश नहीं करता। इसके विपरीत जब व्यक्ति अपने ऊपर भरोसा कर लेता है, जब उसके मन में दृढ़ आत्मविश्वास का भाव उदय हो जाता है, तब वह अथक परिश्रम करने लगता है और जब परिश्रम करने लगता है तो वह विशाल धन-सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है। मनुष्य के अपने सन्देह और भय ही उसे कंगाल बनाए रखते हैं।

यदि आपने अपने मन को धन-सम्पत्ति से दूर ही रखा है, यदि आपने अपने मन में धन-सम्पदा का स्वामी बनने की चाह ही नहीं की तो आपका मन भले ही कितना भी शक्तिशाली और सामर्थ्यवान हो, आपको धन-सम्पदा प्राप्त हो ही नहीं सकती।

हमने स्वयं अपने जीवन को कुचला है। हम स्वयं बौने बने हुए हैं। हमने इस संसार की सबसे महान शक्ति से अपना सम्बन्ध ही तोड़कर अपने आप को तुच्छ बना लिया है। इसलिए पूर्ति का अक्षय स्रोत हमसे कटा रहता है, हमारा सम्बन्ध कट जाता है और ज्यों ही मनुष्य के मन में आत्मविश्वास का भाव जाग्रत होता है कि मैं उस 'दिव्य शक्ति' का ही एक अंश हूं, तो सारी स्थिति ही बदल जाती है।

हमारे सीमित रहने का कारण हमारा मन है। हम थोड़ा-सा मांगते हैं तो हमें थोड़ा ही मिलता है। थोड़े के लिए प्रयत्न करते हैं तो अधिक कैसे मिलेगा? हमें विरासत में जो कुछ मिला है, जब उस विशाल भण्डार में से ही अधिक ग्रहण करने से डरते हैं, जब हम स्वयं अपने अधिकार का त्याग कर देते हैं तो फिर हमें अधिक धन-सम्पदा कैसे प्राप्त होगी? नकारात्मक और बाधक विचार ही हमारी प्रगति में बाधक हैं। हमारे विचार ही हमारी उन्नति को रोकते हैं। हमारी मानसिक संकीर्णता ही हमारे विकास में रुकावट डालती है। हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान ही नहीं होता, यही अज्ञान हमें शक्ति के अथाह स्रोत से अलग किए रहता है। यही कारण है कि धन के स्वामी कुबेर के अक्षय भण्डार, विपुल धन-सम्पत्ति के विशाल स्रोत और कारूं के खजाने हमारे लिए स्वप्न भर रह जाते हैं और हम जीवन भर फटेहाल रहकर गरीबी में ही मर जाते हैं।

उठो, कमर कस लो! भय, चिन्ता और सन्देह को मन से उखाड़कर बाहर फेंक दो! यह बात भी मन से निकाल दो कि धन-सम्पन्न वही व्यक्ति बन सकते हैं, जिन्हें उसके अवसर प्राप्त होते हैं, जिनमें योग्यता ज्यादा है और जिनका भाग्य अच्छा है। ये विचार गलत और दोषपूर्ण हैं।

जो आदमी अपने विचारों और कार्यों को विपुल साधनों की प्राप्ति में लगाता है, भरसक मेहनत और चेष्टा करता है, उसे बेशुमार धन-दौलत प्राप्त होती है। आप चक्की के गाले में जितना गेहूं डालेंगे, उतना ही आटा निकलेगा। यदि आपने अपना आत्मविश्वास, अपनी चेष्टाएं और प्रयत्न धन प्राप्त करने में लगा दिए हैं, तो विश्वास रखिए कि आपकी फसल भी अच्छी होगी।

आपको चाहिए कि महान और विशाल भावनाओं से ओत-प्रोत रहें। अपने मन को विशाल बनाइए, अपने प्रयत्नों को अधिक व्यापक बनाइए। सहायकों की संख्या बढ़ाइए। यदि आपके विचारों में समृद्धि है तो आपको समृद्धि अवश्य ही प्राप्त होगी, लेकिन यदि आपके विचारों में दरिद्रता भरी हुई है तो आपकी स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।

असाधारण बन जाइए, साधारण बने रहने से इनकार कर दीजिए। मध्यमार्गी भी बनें। इसका सबसे अच्छा उपाय यही है कि छोटे-छोटे कामों को भी इतनी खूबी से कीजिए कि वे भी गौरवपूर्ण और बड़े कार्य बन जाएं।

मैं एक ऐसी महिला को जानता हूं जिसे अपने आस-पास के वातावरण की पूरी जानकारी रहती थी। वह उसका तर्कसंगत अध्ययन भी रखती थी। जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण भी बहुत श्रेष्ठ था। वह जीवन के गौरवपूर्ण अर्थ को भी समझती थी। उस महिला का बात करने का ढंग इतना अच्छा था कि कोई भी व्यक्ति उससे बात करके गौरवान्वित होता था। उस महिला की शक्ल-सूरत, वेशभूषा, आचरण, बातचीत या घर-बार में कोई भी बात 'साधारण' नहीं थी, उसका सब-कुछ असाधारण प्रतीत होता था। वह साधारण-से-साधारण वस्तु को ऐसे तरीके से सजाती-संवारती कि उसका हर कार्य कला का नमूना बन जाता था। वह प्रत्येक कार्य को महान और गौरवपूर्ण बना देती थी। वह सबसे स्नेह करती थी। इन सब बातों का फल यह होता कि उसे किसी वस्तु की चिन्ता नहीं होती थी। चिन्ता किए बिना सब कुछ उसके घर पहुंच जाता था। वह किसी से द्वेष नहीं रखती थी, उससे भी कोई द्वेष नहीं रखता था। उस महिला का स्वभाव इतना मधुर और कोमल था जैसे प्रभात की सूर्य-रश्मियां। उस महिला के जीवन में कोई कमी नहीं, उसके पास भय की छाया मात्र नहीं, किसी प्रकार की चिन्ता नहीं, शंका और सन्देह उसे लेशमात्र नहीं था। वह महिला बहुत धनी है। उसके पास अपार धन-सम्पत्ति है। उसके पास किसी भी वस्तु का अभाव नहीं और सबसे विशिष्ट बात तो यह है कि उसकी बातें सुनकर लोगों के मन में समृद्धि के भाव जाग्रत होते हैं।

इसके विपरीत कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो धनाढ्य होते हुए भी उदार-हृदय नहीं होते। जितनी सम्पत्ति उनके पास होती है, वह उसके अनुकूल व्यवहार नहीं कर पाते। वे तंगदिल होते हैं। उनकी आदतें भूखे और मनहूस लोगों जैसी होती हैं। लालच और स्वार्थ के कारण उनका हृदय शुष्क हो चुका होता है। वे उस बंजर धरती के समान होते हैं, जहां कोई फसल हो ही नहीं सकती।

आपको विशाल धन-सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए पहले वैसे विचार मन में लाने होंगे और मन में उसके प्रति दृढ़ निश्चय भी करना होगा। उसके बाद ही आप जीवन में धन प्राप्त कर सकते हैं। जब आप अपने विचारों को क्रियान्वित करते हैं, तभी आपको फल प्राप्त होता है। यदि आप विचाररूपी बीज ही नहीं बोएंगे तो सम्पत्ति और धन की फसल कहां से प्राप्त करेंगे? आपका मन कमी और अभाव के विचारों से घिरा हुआ है तो आप विशाल सम्पत्ति के मूर्तरूप कैसे हो पाएंगे? यदि आपको विशाल धन-सम्पदा के मार्ग पर चलना है तो उसके सम्बन्ध में अपने विचारों को दृढ़ करना होगा और उस मार्ग पर चलना होगा।

यह बात हमें हृदयंगम करनी होगी कि जो वस्तु हमारे अन्दर है, उसे हम बाहर न खोजें। हमें इस बात का भी स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए कि सब प्रकार की पूर्ति का विशाल भंडार या अथाह स्रोत हमारे मन में है। जब हमें इस बात का ज्ञान हो जाएगा, तब हमें कोई कमी नहीं रह जाएगी, तब हमें कोई भी अभाव नहीं सता पाएगा।

यह दिव्य झरना जो हमारी सब प्रकार की प्यास बुझा सकता है, हमें तृप्त कर सकता

है, वह हमारे अपने अन्दर ही है। हमारा काम इतना ही है कि हम उस अथाह अन्तःस्रोत से अपना सम्बन्ध जोड़ लें। अफसोस बस यही है कि हम उस स्रोत से दूर रहकर ही अपने अभावों को पूरा करना चाहते हैं, जो असम्भव है।

विशाल धन-सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए पहले मन में वैसे विचार लाएं, फिर मन में उसके प्रति दृढ़ निश्चयी होकर कर्म करें। उसके बाद ही आप जीवन में धन प्राप्त कर सकते हैं।

जिस व्यक्ति के मन में कोई सन्देह नहीं, संशय का कोई स्थान नहीं, जिसे भ्रम नहीं, जो ढुलमुल या दीन नहीं और जिसे अपने श्रम और प्रयत्न में अटूट विश्वास है, वह पूर्ण रूप से धनी बने बिना रह ही नहीं सकता।

हमारे कहने का आशय यही है कि हम अपने जीवन में जिस पदार्थ पर अपना मन एकाग्र करते हैं, वही हम प्राप्त करते हैं। हम जो काम करते हैं, हमारी स्थितियां, हालत और भाग्य उसी के अनुसार बनते हैं। जब हम जीवन की सारी शक्तियों को एक लक्ष्य पर केन्द्रित कर देते हैं तो हम उस लक्ष्य की प्राप्ति में सफल सिद्ध होते हैं। यदि हमारा मन निर्धनता पर ही केन्द्रित रहेगा, हमारे विचार अपनी अयोग्यता और आत्मनिन्दा पर ही केन्द्रित रहेंगे, तो हम धन-सम्पत्ति को पास भी न आने देंगे, अपने पास आने से रोक देंगे। इसके विपरीत यदि हम अपने विचार अपार धन-सम्पत्ति और बेशुमार माल और साधनों पर केन्द्रित करेंगे, तो वे हमें प्राप्त होंगे।

यदि हमें यह विश्वास हो कि संसार के सर्वोत्तम पदार्थ हमारे लिए ही हैं और उन्हें प्राप्त करने का हमारा जन्मसिद्ध-अधिकार है, हमारा उन पर पूरा हक है, अधिकार है,

हम स्वास्थ्य, खुशियां और धन-सम्पत्ति पाने के पूर्ण अधिकारी और योग्य हैं और हम उन्हें प्राप्त करके ही रहेंगे तो संसार की कोई भी शक्ति हमारे मार्ग में रुकावट न डाल पाएगी। बाधाएं तो आएंगी, परन्तु यदि आपके प्रयत्न अधिक बलवान हैं तो वे एक ओर हट जाएंगी। पहाड़ जैसी कठोर और सख्त बाधाएं भी हमें कुछ विचलित न कर सकेंगी। तब हम जो कुछ प्राप्त करेंगे, जो भी हमारी उपलब्धि होगी, वह हमारे विचारों से भी बढ़-चढ़कर होगी, जिस प्रकार एक भवन मॉडल से कहीं अधिक विशाल और सुन्दर होता है। हमारे मन की स्थिति, हमारी एकाग्रता और काम करने की शक्ति ऐसे निर्णय करे जो हमारे भाग्य का निर्माण करे।

संसार में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो प्रसन्न रहने की इच्छा से काम करते हैं, लेकिन वे अपने मन में अकेलापन केन्द्रित किए रहते हैं। वे यह बात सोचते रहते हैं कि संसार में उनका कोई मित्र-दोस्त नहीं। उन्हें सदा अपने दुर्भाग्य की चिन्ता व्याकुल किए रहती है। यदि आपके मन की स्थिति ऐसी ही है तो इसे फौरन ही बदल डालिए। यह स्पष्ट समझ लीजिए कि मनोदशा में परिवर्तन किए बिना आप अपने जीवन को बदल नहीं सकते। मानसिक विचारों में परिवर्तन किए बिना आपके आस-पास के वातावरण में भी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता और आपकी स्थिति में भी कोई अन्तर नहीं पड़ेगा, आप अपनी आर्थिक स्थिति न बदल पाएंगे।

अपने मन को ऊंचा उठाइए। उसे उदार बनाइए, उसे विशाल और विचारयुक्त बनाइए। उसकी रचनात्मक शक्ति को जगाकर उसे काम में लगा दें। उदार, दानी, दायित्वपूर्ण, विचारक, प्रसन्नचित्त और महान तथा उदात्त व्यक्ति को ही लक्ष्मी जयमाला पहनाती है, उसका ही वरण करती है। अनुदार व तंगदिल का साथ छोड़ देती है। यदि किसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्त भी हो जाए, तो उसे उससे सुख प्राप्त नहीं होता।

भूखे आदमी के मन में पाप रहता है, *'बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्'*। विपुल धन-सम्पत्ति आपके पास हो तो दरिद्रता भाग जाएगी, बुराइयां समाप्त हो जाएंगी। तब सारा संसार आपका होगा, क्योंकि आपका प्रवेश सर्वत्र होगा, कोई स्थान ऐसा नहीं रहेगा, जहां आप जा ना पाएं।

यदि संसार के सभी व्यक्ति दीन-हीन होते तो ईश्वर की सृष्टि-रचना का ध्येय ही व्यर्थ हो जाता, क्योंकि उसने इस प्रकृति को, इस विश्व को अतुल धन सम्पत्ति से युक्त बनाया है। आप भी अपनी दीनता को दूर कर दीजिए, हीन भावों को हटाइए, तभी आपका भला होगा। आप अपना भला ही नहीं करेंगे, दूसरों की सहायता करने की सामर्थ्य भी आपमें उत्पन्न हो जाएगी।

अप्राप्य को प्राप्त करें

जीवन में सफलता पाने के लिए उदार होना आवश्यक है। दूसरों की सेवा करने की प्रसन्नता से बढ़कर श्रेष्ठ वस्तु और क्या हो सकती है? मनुष्य को चाहिए कि वह जहां भी जाए प्रसन्नता के फूल बिखेरता जाए। जो व्यक्ति दूसरों के जीवन में सहायक होता है, वह जीवन के सर्वोत्तम परिणाम बटोर लेता है।

जेम्स रथचाइल्ड एक अत्यन्त समृद्ध व्यक्ति था। वह था तो फ्रांस का निवासी, परन्तु पूरे विश्व में प्रसिद्ध था। एक दिन की बात है कि वह और एक प्रसिद्ध फ्रेंच कलाकार साथ बैठे भोजन कर रहे थे। बातों-बातों में कलाकर डेलक्राक्स ने धनपति रथचाइल्ड से कहा, "मेरा एक शिष्य एक सम्मानित व्यक्ति का चित्र बनाना चाहता है, जो कठिनाइयों में फंसकर धनी से निर्धन हो गया है, परन्तु इस काम के लिए यह आवश्यक है कि उस व्यक्ति के चेहरे पर दुर्भाग्य की दीन-हीन अवस्था और समृद्धि तथा ऐश्वर्य का सम्मिश्रण झलकता हो। मेरे शिष्य को ऐसे चेहरे वाला मॉडल नहीं मिल रहा।"

बातें चलती रहीं, दोनों खाना खाते रहे। खाना समाप्त हो जाने पर रथचाइल्ड ने कलाकार से कहा, "क्या आपका शिष्य मुझे मॉडल के रूप में स्वीकार करेगा?"

कलाकार इतने समृद्ध व्यक्ति को एक भिखारी के मॉडल के रूप में स्वीकार करते हुए हिचकिचाया, किन्तु जब रथचाइल्ड ने आग्रह किया तो उसके कलाप्रेम के कारण कलाकार को उसका आग्रह स्वीकार करना पड़ा।

अगले ही दिन रथचाइल्ड स्टूडियो में भिखारी के रूप में बैठा था। उसका रूप बिल्कुल भिखारी-सा लग रहा था। कलाकार थोड़ी देर के लिए कहीं बाहर गया तो उसका शिष्य स्टूडियो में आया और वह भिखारी को देख बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने उसे वास्तविक भिखारी समझकर एक सिक्का उसके हाथ पर रख दिया। रथचाइल्ड ने वह सिक्का अपनी जेब में रख लिया और उसका धन्यवाद किया। शिष्य चला गया।

चित्रकार के लौटकर आने पर रथचाइल्ड ने पूछा कि वह नौजवान शिष्य कैसा है? चित्रकार ने बताया कि वह बहुत ही प्रतिभाशाली है, परन्तु है बहुत निर्धन, अपनी शिक्षा का खर्च भी नहीं चला सकता।

कुछ समय बाद उस शिष्य छात्र को एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि दान का प्रतिफल अवश्य मिलता है।

रथचाइल्ड ने उसी छात्र को और आगे विद्या ग्रहण करने के लिए दस हजार फ्रांक सहायता के रूप में दिए, जिसने उसे भिखारी समझकर एक सिक्का दान में दिया था।

व्यापार अथवा अन्य कार्य करने वाले व्यक्ति प्रातः चिन्ताओं में उलझे रहते हैं, परन्तु प्रसन्नचित्त रहते हैं। उनकी सफलता उनके प्रसन्नचित्त रहने के कारण ही होती है। यह बात इस घटना से स्पष्ट है।

किसी ने कहा है कि जब हम अपने कर्तव्यपालन के लिए कुछ भी उठा नहीं रखते, कोई कसर नहीं छोड़ते, प्रसन्नता और अप्रसन्नता का कुछ भी ध्यान न रख हम काम में लगे रहते हैं तो हमें और प्रसन्नता प्राप्त होती है।

सफलता प्राप्त करने के लिए उदार होकर अपना कर्तव्य पालन करते हुए उसमें दुख नहीं, आनन्द की अनुभूति करें।

यदि आप भी अपने जीवन में सफलता चाहते हैं तो आपको भी उदार होना चाहिए और अपना कर्तव्य-पालन करते हुए ही हर क्षण आनंन्द की प्राप्ति करनी चाहिए। यह तभी होगा जब आप यह चिन्ता छोड़ देंगे कि आपको अपने काम या कर्तव्य-पालन से सुख मिलेगा या नहीं। यही भावना जॉन हावट ने इन शब्दों में व्यक्त की है, "जब हम दिन भर अपना कर्तव्य पूरा करते हैं तो इसी भावना द्वारा अर्धरात्रि को आनन्द का मधुर संगीत सुनाई देता है।"

प्रसन्नता की भावना की तुलना हम कलकल बहते स्फटिक के समान स्वच्छ जल के झरने से कर सकते हैं। ग्लेडस्टन का कहना है, "मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता श्रम से प्राप्त होती है। मैं छोटी आयु से ही श्रम करने लगा था, उसका पारितोषिक मुझे मिला। आज के नौजवान सोचते हैं कि हर प्रकार के परिश्रम से दूर रहना ही आराम है, परन्तु मैं परिश्रम के एक काम से हटकर दूसरे परिश्रम के काम में लगने को ही विश्राम समझता हूं। जब मैं पढ़ते-पढ़ते थक जाता हूं तो मैं बाहर खुली धूप में जाकर शारीरिक व्यायाम करने लगता हूं। इससे मेरे दिमाग को शान्ति मिलती है और थकान उतर जाती है। प्रकृति हर समय प्रसन्न रहती है, हर क्षण श्रम करती रहती है। जब हम सो जाते हैं, तब भी हमारा हृदय धड़कता रहता है और गतिशील बना रहता है। मैं प्रकृति के निकट रहकर अपने आप में प्रकृति का अनुकरण करता हूं। इसी कारण मुझे गहरी नींद आती है, खाना अच्छी तरह पच जाता है और सब शक्तियां उत्तम ढंग से सुरक्षित रहती हैं।"

होरेस मान कहते हैं, "अच्छी आदतों के कारण मेरे लिए मेरे कार्य का उतना ही महत्व है जितना मछली के लिए पानी का। मुझे लोगों से यह बात सुनकर आश्चर्य होता है कि मैं यह काम बदलना चाहता हूं, क्योंकि मुझे यह काम पसन्द नहीं। मेरे लिए जब भी कोई काम सामने आया तो मैंने उसके सम्बन्ध में कभी सोचा ही नहीं और सामान्यता से जुट गया और वह काम पूरा हो गया।"

ला ब्रूरे का कहना है कि सबसे बढ़िया और बुद्धिमत्तापूर्ण आनन्द दूसरों का आनन्द बढ़ाने में है। हाथार्न का मत है कि दूसरों को आनन्दित करने में जो आन्तरिक आनन्द मिलता है, वही सबसे बढ़िया और उत्तम है।

कार्लाइल कहते हैं, "इससे बढ़कर महानता और प्रसन्नता का विषय और कोई नहीं कि भगवान की बनाई हुई धरती के किसी कोने को और अधिक समृद्ध और उपयोगी बनाया जाए। किसी व्यक्ति को थोड़ा अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण बनाया जाए, उसे अधिक वीरतापूर्ण बनाया जाए तथा अधिक सुखपूर्ण बनाकर उसे अधिक सौभाग्यपूर्ण बनाया जाए।"

सेवा करके सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त करने की प्रसन्नता से बढ़कर और श्रेष्ठ वस्तु क्या हो सकती है?

लिंकन का कहना है, "ऐसा जान पड़ता है कि भगवान साधारण लोगों से अधिक प्यार करता है, क्योंकि उसने इस संसार में साधारण व्यक्ति ही अधिक बनाए हैं, बजाय विशिष्ट व्यक्तियों के।"

प्रसन्नता का प्याला दूसरों के आगे बढ़ाने से अधिक और बढ़िया काम क्या हो सकता है? जो व्यक्ति इस काम में लगा हुआ है, उससे बढ़कर सुन्दर कौन हो सकता है? दूसरे लोगों की उन्नति की कामना के कारण ही स्वर्ग की रक्षा हुई है।

जो दूसरों के जीवन के अन्धकार में आशा का उजाला करते हैं, उनका कभी भी नाश नहीं होगा। वे सदा-सदा के लिए अमर हैं। उनका नाम सदा जीता-जागता रहेगा।

चार्ल्स लैम्ब का कहना है, "मैं जानता हूं और मेरे लिए यह आनन्द की बात है कि केवल धन-सम्पत्ति के द्वारा ही किसी को सुख या आनन्द नहीं मिलता।"

फ्रैंकलिन का कहना है, "धन का ऐसा स्वभाव ही नहीं है कि केवल उसी से आनन्द की प्राप्ति हो। हां, जो अपना धन दूसरों के हित के कार्यों में खर्च करते हैं, उन्हें अवश्य ही सुख मिलता है।"

जॉन एंजेलो का जीवन कितना सुखी और आनन्दपूर्ण था, क्योंकि उसे अपनी कविता की पुस्तकों की एक लाख प्रतियों और गद्य की पचास हजार प्रतियों से जितनी आय होती थी, वह उसे दान में दे डालती थी। उसके घर के पास ही एक अस्पताल था। वह हर दूसरे दिन वहां से स्वस्थ होकर लौटने वालों को अपने खर्च से भोजन खिलाती। अपने इस कार्य से उसे जितनी प्रसन्नता होती, शायद किसी दूसरे कार्य से नहीं।

रस्किन को विरासत में दस लाख डॉलर मिले थे। एक लेखक ने लिखा है कि इस धन से रस्किन ने लोगों की भलाई के काम आरम्भ कर दिए। उसने उन गरीब विद्यार्थियों को सहायता देनी आरम्भ की, जो पैसे की कमी के कारण आगे पढ़ने में असमर्थ थे। उसने मजदूरों के लिए ऐसे सुन्दर मकान बनवाए, जहां वे लोग आराम से रह सकें। उसने लन्दन के बाहरी भाग में बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने का काम शुरू किया। इन खेतों में काम करने से उन लोगों को भी रोजी-रोटी मिलने लगी जो सामाजिक अत्याचारों और कमजोरियों के कारण पतित हो गए थे। कहते हैं कि जनरल बूथ ने रस्किन के इसी काम से कालोनाइजेशन फार्मों की प्रेरणा प्राप्त की। रस्किन गरीब कलाकारों की सहायता के लिए सदा तैयार रहता था। नौजवानों में कला के प्रति प्रेम जगाने का उसने बहुत बड़ा काम किया। वह चित्रों को खरीदकर कलाकारों को प्रोत्साहित करता रहता था। उसने एक चित्रकार से दस वाटर-कलर चित्र खरीदे और उसे 3760 डॉलर मूल्य चुकाया। ये चित्र उसने अपने घर में नहीं रखे, वरन स्कूलों में टंगवा दिए। सन् 1877 तक वह अपनी सम्पत्ति का तीन चौथाई भाग खर्च कर चुका था। इसके साथ ही वह अपनी पुस्तकों से होने वाली आय भी खर्च कर देता था। उसने लोगों के परोपकार की इतनी विशाल योजना बनाई और अपने लिए केवल 1500 पौण्ड की वार्षिक राशि बचाई, शेष सारे धन को खर्च करने का निश्चय कर लिया।

पीटर कूपर अपने जीवन के अन्तिम चरण में अमेरिका के सबसे अधिक प्रसन्न लोगों में था। उसकी प्रसन्नमुद्रा दूर से ही चमकती थी।

जो मनुष्य निराश हो चुका है, यदि वह संसार के मानचित्र को सामने रखकर जनसंख्या के अनुसार यह अनुमान लगाए कि संसार में ऐसे भी लाखों-करोड़ों व्यक्ति हैं जो उसकी नाममात्र की सुख-सम्पत्ति से अपनी निराशा बदलने को तैयार हैं, तब उसकी आंखें खुलेंगी। तब उसे पता लगेगा कि वह तो अनेक व्यक्तियों से अधिक सुखी है और उनकी सहायता भी कर सकता है। उस समय वह अपने संकट और निराशा

को भूलकर दूसरों की सहायता करने लगेगा। मनुष्य को चाहिए कि वह जहां भी जाय, प्रसन्नता के ही फूल बिखेरता जाय। हो सकता है कि उसे उस रास्ते पर जाने का पुनः मौका ही न मिले।

चीन-विद्रोह के दिनों में गार्डन नामक एक अंग्रेज ने वहां जाकर जनता की बहुत सेवा की। स्वामिभक्तिपूर्वक खूब काम किया। चीन की सरकार की ओर से उसे सर्वोत्तम सम्मान दिया गया। जब वह इंग्लैण्ड लौटा तो अपने सम्मान की चिन्ता किए बिना, गन्दे मुहल्ले में बस गया और उसने अपना घर मुहल्ले के बच्चों से भर लिया। उसने उन्हें शिक्षा दी और उन्हें अच्छे कामों में लगाया। वे जहां भी रहते, वह उनसे पत्र-व्यवहार करता रहता और उन्हें अच्छी सलाह देता रहता।

जॉन सांग ने लिखा है—ब्रिटेन के एक कस्बे में मेरा भाषण होने वाला था। यह जगह रेलवे स्टेशन से काफी दूर थी। वहां पर एक आदमी अपनी कार में मुझे लेने आया। जब चले तो उसने अपने गले में रूमाल बांध लिया। थोड़ी देर बाद उसने रूमाल को सिर पर लपेट लिया।

मैंने उससे पूछा, "क्या तुम्हें जुकाम है या सर्दी लग रही है?" उसने उत्तर दिया, "नहीं श्रीमान, ऐसा नहीं है। बात यह है कि इस खिड़की का शीशा टूटा हुआ है। मैं अपना सिर आगे करके हवा को रोकने की कोशिश कर रहा हूं कि कहीं आपको ठण्ड न लग जाए।"

मैंने पूछा, "मेरे कारण तुम अपने को सर्दी के खतरे में क्यों डाल रहे हो?"

उसने उत्तर दिया, "महोदय! बात यह है कि आज मैं जो कुछ भी हूं, आपके कारण ही हूं। शायद आपने मुझे पहचाना नहीं। किसी समय मैं गलियों में गीत गाता फिरता था, मेरी गोद में मेरा भूखा बच्चा और मेरे पीछे चीथड़ों में लिपटी मेरी पत्नी हुआ करती थी। एक बार मैंने आपका भाषण सुना था। मैं आपसे मिला था तो आपने कहा था, तुम मनुष्य हो।"

"बस, उसी दिन से मैंने भगवान की मदद से मनुष्य बनने का संकल्प कर लिया था। अब मेरी पत्नी बहुत प्रसन्न है। मेरे पास अपना अच्छा आरामदेह घर है। प्रभु आपका भला करे। मैं आपके लिए अपना सिर तो क्या, जान भी देने को तैयार हूं।"

एक घायल बुढ़िया एक घर में, काली अंधेरी रात में सहायता के लिए घुसी। वहां दो नन्ही लड़कियां थीं। उन्होंने अपनी चादर फाड़कर उस बुढ़िया के लिए पट्टियां बनाईं। आप अनुमान कर सकते हैं कि उन लड़कियों को कितना आनन्द प्राप्त हुआ होगा।

सर वाल्टर स्काट ने भी लिखा है, "आत्मबलिदान की शिक्षा तो दो, परन्तु इसका व्यवहार प्रसन्न मन से करना चाहिए। तब तुम उस सौभाग्य के विधाता होगे जिसकी कल्पना उस प्रभु ने भी नहीं की।"

ऐसे आदमी संसार में कितने हैं जो अपना तुच्छ स्वार्थ छोड़कर वह बलिदान कर सकें जिससे दूसरों के जीवन आशाओं और आनन्द से भर उठते हैं?

एक महिला ने बताया कि उसने एक बार अपनी भूल के लिए किसी से क्षमा मांगी, परन्तु क्षमा करने वाले ने ऐसी बात कह दी कि क्षमा मांगने वाली चकित रह गई।

जो व्यक्ति दूसरों के जीवन में सहायक होता है,
वह जीवन के सर्वोत्तम परिणाम बटोर लेता है।

बात यूं हुई कि वह महिला ज्यों ही क्षमा मांगने के लिए मुड़ी तो वह एक बालक से टकरा गई। उससे टकराते ही महिला बोली, "नन्हे बेटे, मुझे खेद है, क्षमा करना।"

बालक ने अपने सिर से हैट उतारा और झुककर महिला का अभिवादन किया और मुस्कराहट के साथ कहा, "मैं आपको क्षमा करता हूं, साथ ही आपका अभिनन्दन भी करता हूं। यदि आप फिर कभी मुझसे टकरा जाएं और मैं गिर भी पडूं तो भी मैं एक शब्द भी न बोलूंगा और न शिकायत ही करूंगा।"

हमारे जीवन की एक बड़ी भूल यह भी है कि हम अपनी प्रसन्नता, अपनी मुस्कान अपने मन में ही जमा रखते हैं। उसे बाहर प्रकट नहीं करते। हमें अपनी प्रसन्नता, मुस्कान और सहानुभूति के मामलों में कभी कंजूसी नहीं करनी चाहिए। जो हमारे साथ हैं या जो हमारे साथ नहीं हैं, उनके प्रति भी हमें अपनी प्रसन्नता और पूरी सहानुभूति प्रकट करनी चाहिए।

एक फ्रांसीसी लेखक का कहना है, "यदि एक, दो या चार शब्दों से कोई प्रसन्न हो सकता है तो वह शब्द न कहने वाला व्यक्ति अवश्य ही नीच है। एक मोमबत्ती से दूसरी मोमबत्ती जला दी जाय तो पहली मोमबत्ती में से कुछ कम नहीं हो जाता। यदि आप दीप से दीप जलाएंगे तो प्रकाश आपको भी मिलेगा। यदि आप अपनी प्रसन्नता से, मुस्कान से, दूसरे का दीप जलाएंगे, उन्हें प्रसन्न करेंगे तो आपके दीप में से कुछ भी कम न होगा। आपके दीपक का प्रकाश मन्द नहीं पड़ेगा।"

सिडनी स्मिथ का कहना है, "तुम प्रतिदिन कम-से-कम एक मनुष्य को प्रसन्न करो, उसे आनन्दित करो। इस प्रकार दस वर्षों में 3650 लोगों को आनन्दित कर चुके होगे, यानी एक छोटा-सा नगर ही आपके द्वारा आनन्दित हो चुका होगा। ऐसे व्यक्ति का नाम अपने आप लोकप्रिय हो जाता है।"

डॉ० रैफल्स का कहना है कि यदि मैं किसी व्यक्ति के साथ दस मिनट भी रहता हूं तो उसे प्रसन्न कर देता हूं। यह मेरा नियम है।

एक व्यक्ति ने कहा था, "यदि कोई व्यक्ति एक बच्चे को आधे घण्टे तक प्रसन्न करता है तो वह भगवान का सहकारी बन, उसके कार्य को ही करता है।"

एक छोटे बच्चे ने अपनी मां से कहा, "पता नहीं, मेरी छोटी बहन मुझसे प्रसन्न क्यों नहीं होती, परन्तु मैं जब उसे प्रसन्न करने का प्रयत्न करता हूं तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।"

एक और बालक का कहना है, "मैं जिस किसी को प्रसन्न करता हूं, वह हंसता है। इससे मुझे प्रसन्नता मिलती हैं और मैं अधिक जोर से हंसने लगता हूं।"

एक राजा था। वह अपने छोटे-से बेटे को बहुत प्यार करता था। वह उसे प्रसन्न करने के लिए कुछ भी कर सकता था। उसने बच्चे को सवारी के लिए घोड़ा दिया, रहने के लिए बढ़िया कमरा दिया, तस्वीरें दीं, खिलौने दिए, पुस्तकें दीं, अध्यापक लगाया और साथी भी जुटा दिए। रुपये-पैसे से खरीदी जाने वाली हर चीज उसे दी, परन्तु इतना करने पर भी राजकुमार प्रसन्न न हो सका। वह जहां भी जाता, डरता रहता और वही चीजें मांगता तो उसके पास न होतीं। अन्त में एक जादूगर राजमहल में आया। उसने राजकुमार को देखा। वह राजा से बोला, "मैं आपके बेटे को प्रसन्न कर सकता हूं। उसके चेहरे पर मुस्कराहटें ला सकता हूं, परन्तु यह रहस्य बताने से पहले मेरा मूल्य चुकाना होगा।"

राजा ने उसे मूल्य चुकाने का आश्वासन दे दिया।

जादूगर उस बालक को एक कमरे में ले गया। उसने एक सफेद कागज पर किसी चीज से कुछ लिखा। उसने एक मोमबत्ती बालक को दी और उसे जलाने के लिए कहा। बालक ने कागज में आग लगा दी। सफेद अक्षर आग लगने से नीले रंग में बदल गए। बच्चे ने जो कुछ पढ़ा उसमें लिखा था, "तुम प्रतिदिन एक-न-एक व्यक्ति पर दया किया करो।"

राजकुमार इस बात पर आचरण करने लगा तो कुछ समय बाद राज्य भर में सबसे अधिक लोकप्रिय एवं प्रसन्नचित्त बालक बन गया।

एक लेखक ने लिखा है, प्रसन्नता एक सुन्दर आभूषण है। इस आभूषण में छोटे-छोटे नग जड़े हैं। किसी के प्रति दयालुता, दूसरों के छोटे-छोटे काम, भद्र व्यवहार, दूसरों की बात समझने की चेष्टा, दूसरों की सहायता, उनसे सहानुभूति, स्वार्थ-त्याग, दूसरों को ठेस न पहुंचाना, दूसरों के दोषों को न उघाड़ना, दूसरों की कमजोरी में उनके प्रति उदार होना ऐसी छोटी-छोटी बातें हैं, जिन्हें यदि हम जोड़ें तो हमें अपने दिन के आनन्दमय होने के रहस्य का पता चलेगा। इन छोटी-छोटी बातों के बदले साल भर में कोई एक बड़ा कार्य करना उतना महत्वपूर्ण नहीं। इन छोटी-छोटी बातों से ही हमारा जीवन बनता है, उनमें वे नगण्य बातें भी होती हैं, जिन्हें हम भूल जाते हैं।

जीवन में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि हम जिस व्यक्ति के सम्पर्क में आएं, उसकी कुछ-न-कुछ भलाई अवश्य करें। सहानुभूति, वास्तविकता को पहचानने की पैनी दृष्टि और थोड़ी-सी कार्यकुशलता आदि ऐसी बातें हैं, जिनकी हम सबको आवश्यकता है।

बोस्टन जाने वाली गाड़ी में एक महिला अपने पिता के साथ यात्रा कर रही थी। पिता

वृद्ध होने के साथ विकृत-मस्तिष्क भी था। गाड़ी तेजी से चली जा रही थी कि न जाने बूढ़े को क्या सूझा, वह बोला, "गाड़ी रोको, मैं बाहर आऊंगा।" महिला उस वृद्ध को संभालने में लगी हुई थी, पर वृद्ध मान नहीं रहा था। पास ही एक लम्बा-सा आदमी समाचार पत्र को नीचे को झुकाकर उस वृद्ध को देख रहा था। जब उस महिला ने उस व्यक्ति को देखा तो वह बोला, "क्या मैं आपकी कुछ सहायता करूं?"

उस महिला ने सारी स्थिति समझाई।

वह व्यक्ति उस वृद्ध के पास गया। उसका नाम लेकर उसका अभिवादन किया, उससे हाथ मिलाया और उसे हंसी-मजाक की बातों में लगा लिया, जिससे वह गाड़ी से बाहर निकलने की बात भी भूल गया और अपने गन्तव्य स्थान पहुंचने तक उस बात को भूला रहा।

बोस्टन पहुंचकर उस व्यक्ति ने वृद्ध को घोड़ागाड़ी में बिठाया और उस महिला ने जब सुरक्षित घर पहुंचने का आश्वासन दिया तो उस व्यक्ति ने विदा मांगी। वह जाने को ही था कि उस महिला को विचार आया कि सहायता करने वाले इस सज्जन का तो मैंने नाम भी नहीं पूछा। महिला बोली, "कृपया क्षमा करें! क्या मैं आपका शुभ नाम जान सकती हूं?" मुस्कराते हुए उस व्यक्ति ने कहा, "फिलिप्स ब्रुक्स।"

महिला तो आश्चर्यचकित रह गई। ओह! लम्बा व्यक्ति अभिवादन करके आंखों से ओझल हो चुका था।

प्रसन्नता का प्रचार करने वाले एक और महान व्यक्ति बेचर का कहना है, "यह तो एक वरदान जैसी बात है कि बिना समझे-बूझे आदमी दूसरों को प्रसन्न करने का प्रयत्न करे। उसे यह अनुभव ही नहीं होना चाहिए कि वह ऐसा कार्य कर रहा है।

"क्या फूल जानते हैं कि वे सुन्दर और मधुर हैं? ये गुलाब और गेंदे के फूल दिन भर मुझे खुश रखते हैं, इसके बावजूद ये गुलदस्ते में कैद पड़े हैं। उन्हें कुछ पता नहीं कि मैं उनके विषय में क्या सोचता हूं। उन्हें यह भी ज्ञात नहीं कि वे कितना गौरवमय कार्य कर रहे हैं।"

जिस व्यक्ति में माधुर्य, शान्ति, उत्साह, साहस, आशापूर्ण विश्वास और प्रसन्नता आदि गुण हों और उसे इसका तनिक भी अहं न हो, सोचिए वह व्यक्ति कितना महान होगा। बढ़िया स्वभाव और विशालहृदय तथा दृढ़चरित्र व्यक्ति के ये गुण जीवन के अंश ही होते हैं। ऐसा व्यक्ति किसी काम को तो बाद में आरम्भ करेगा, प्रसन्न पहले हो जाएगा।

जिस व्यक्ति के चित्त में स्वाभाविक रूप से संगीत-लहरी उठती है, जिसका चित्त संगीतमय है, मानो उसे भगवान ने विशेष रूप से भेजा है। वह स्वभाव से ही विशालहृदय होता है, वह प्रकाशपुंज होता है, तेजस्वी होता है। वह अपनी आकृति और कार्यों से अपने साथियों को प्रसन्न, शान्त और उत्साहित करके उनकी परोक्ष रूप से सहायता करता रहता है। भगवान ऐसे व्यक्तियों को वरदान देता है, क्योंकि वह दूसरों के लिए स्वयं वरदान हैं। फिलिप्स ब्रुक्स के सम्बन्ध में बेचर के यही विचार थे।

प्रसन्नहृदय रहने के गुण की केवल फूलों से ही तुलना की जा सकती है। फूल बालक,

वृद्ध अथवा किसी भी आयु के व्यक्ति को भेंट किए जा सकते हैं। इसी प्रकार प्रसन्नता से भरा हृदय, करुणा से पूर्ण कार्य आबाल-वृद्ध, काम में फंसी महिलाओं, पुरुषों और अपंग लोगों के लिए समान रूप से ग्राह्य हैं।

डॉ. चामर का कहना है, "शान से जियो और शान से मरो और अपने पीछे सद्गुणों की ऐसी चिरस्मृति छोड़ जाओ, जिसे समय के झंझावात कभी नष्ट न कर सकें। अपना नाम दया की पुस्तक में लिखा दो और जो व्यक्ति आपके सम्पर्क में आते हैं, उनसे प्यार करो तथा उन पर दया करो, आपको कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। इसी करनी पर आपके शुभ कार्य उसी प्रकार चमकेंगे, जिस प्रकार आकाश में तारे।"

मनुष्य के जीवन में प्रसन्नता लाने का सबसे बड़ा उपाय है; संतुलित जीवन। संतुलित जीवन क्या है—केवल मानवता।

रॉबर्ट वाट्स ने लिखा है, "बिना सम्मान के कोई सफलता नहीं, आत्मा निर्मल हुए बिना कोई सुख नहीं, केवल अपने लिए जीवन बिताना जीवन नहीं, उसका कोई लाभ नहीं। यह आवश्यक नहीं कि आप अतुलित सम्पत्ति कमाएं, परन्तु यह परम आवश्यक है कि आपका व्यवहार कष्टरहित हो व आप उपयोगी बनें। आप जहां भी जाएं, अच्छाइयां-खुशियां बिखेरें। इस प्रकार आपका जीवन एक वरदान होगा।"

एक फ्रेंच कहावत है कि सुखी व्यक्ति वही है जो इस संतुलित और सामंजस्यपूर्ण संसार के विरुद्ध आचरण नहीं करता। जो व्यक्ति प्रकृति की वाणी को सुनता है, आत्मा की आज्ञा का पालन करता है और उस अदृश्य प्रकाश को देखता है, जो न धरती पर दिखाई देता है न आकाश पर, ऐसे जीवन को ही हम सामंजस्यपूर्ण जीवन कह सकते हैं।

प्रत्येक स्वस्थ और पवित्र विचार, प्रत्येक उच्च्च आकांक्षा, जिसका आधार सत्य और परोपकार हो, जीवन को उच्च्च बनाने की प्रत्येक अभिलाषा, अच्छे उद्देश्य और स्वार्थहीन प्रयत्नों से ही मनुष्य की आत्मा दृढ़ होती है। इन गुणों से आत्मा में सन्तुलन आता है और वह सौन्दर्य से भर जाती है। यही वे गुण हैं, जिनसे मनुष्य में आत्मविश्वास जाग्रत होता है। यही गुण उस दिव्य शक्ति के गुण हैं। यही दिव्य शक्ति है। इन्हीं से व्यक्ति में उच्च्चतम कोटि की प्रसन्नता का उद्गम हो जाता है। इसी स्थिति को एक प्राचीन लेखक ने 'आत्मा का स्वर्ग' लिखा है।

एक कवि ने कहा है, "मेरा शरीर भले ही इस धरती पर चलता है, परन्तु मेरी आत्मा में पंख लगे हैं।" जब महानता की गरिमा, संगीतमयता और आध्यात्मिक पवित्रता हमारी आंखों, कानों और हृदय में बैठ जाती है तो हम क्या नहीं कर सकते? हमारा प्रेम, हमारी आशाएं और हमारा आनन्द प्रभु की प्रार्थना बन जाता है।

दुविधा का दामन छोड़िए

किसी भी उचित कार्य को करने में दुविधा में न पड़ें। दुविधा में पड़ना हाथ आए सुअवसर को गंवाने के समान है। अवसर गर्म लोहे के समान होता है। यदि दुविधा में पड़कर उस पर उस समय चोट नहीं की तो कोई लाभ नहीं। अतः तुरन्त निर्णय लेने वाला व्यक्ति ही अपने लक्ष्य में सफल हो सकता है।

डॉक्टर जॉनसन का कहना है, "जितना समय आप यह फैसला करने में लगाते हैं कि आपका बालक दो पुस्तकों में से कौन-सी पुस्तक पढ़े, उतनी देर में दूसरा बालक दोनों ही पुस्तकें पढ़ सकता है।"

जोन ऑफ आर्क की सफलता का रहस्य भी यही था कि वह समस्या को समझते ही उसके बारे में तुरन्त निर्णय ले डालती थी।

कोलम्बस की सफलता का रहस्य भी उसका दृढ़ संकल्प ही था। उसने युवावस्था से ही चलते रहने और बढ़ते रहने को ही अपना ध्येय बना लिया था।

आप भी ऐसे अनेक लोगों को जानते होंगे जो उद्देश्यहीन जीवन बिताते चले जा रहे हैं। उनके मस्तिष्क में विचार तो होते हैं, लेकिन वे ऐसे ही हैं जैसे किसी बक्से में रखा औजारों का ढेर। ऐसे व्यक्ति न तो स्वयं ही प्रसन्न रह सकते हैं और न ही किसी अन्य के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि यदि वे दिन भर किसी पत्थर पर चोट मारते रहें तो एक मूर्ति बनाकर दिखा देंगे, पर उनका ऐसा सोचना बिल्कुल गलत है। बिना किसी रूपरेखा के पत्थर पर मारी गई चोटों से कोई प्रतिमा नहीं बन सकती। हां, पत्थर अवश्य टूट सकता है। इसलिए पत्थर पर चोट मारने से अच्छा यही रहेगा कि पहले आप अपने मन में किसी मूर्ति की रूपरेखा बना लें और तब छेनी या हथौड़े का प्रयोग करें।

निरुद्देश्य व्यक्ति विश्वसनीय भी नहीं हो सकता और न ही ऐसे व्यक्ति की जीवन-नैया किसी किनारे लग सकती है।

दुविधाग्रस्त मस्तिष्क से कोई काम नहीं हो सकता। आप इतिहास के पन्नों पर दृष्टि

डालें तो देखेंगे कि दृढ़निश्चयी व्यक्तियों ने ही राष्ट्रों का निर्माण किया है। जो आरामतलब थे, वे सदा अपने दुर्भाग्य को ही कोसते रह गए। इंग्लैण्ड के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री विलियम पिट का ध्यान सदा अपने उद्देश्य की ओर रहता था। बचपन से ही उसे यह विश्वास हो गया था कि वह अपने पिता का सुयोग्य पुत्र प्रमाणित होकर रहेगा। जीवन के बाईसवें वर्ष में वह इंग्लैण्ड का संसद सदस्य बना और तीन साल बाद ही वहां का प्रधानमन्त्री बन गया। दृढ़ संकल्प का इससे बढ़िया एवं प्रेरक उदाहरण और क्या होगा?

विलियम मैथ्यूस का कहना है, "हर दस व्यक्तियों में से नौ ऐसे होते हैं जो योजनाएं तो बड़े विशाल पैमाने पर बनाते हैं, पर करते कुछ नहीं; जबकि उनमें से कई यदि चाहें तो बहुत-कुछ कर सकते हैं। इसका कारण यही है कि उनके पास विचार तो होते हैं, लेकिन वह संकल्पशक्ति नहीं होती जो कुछ करने के लिए आवश्यक है।"

आप मानसिक तौर पर कितने भी सशक्त, संतुलित एवं विचारवान क्यों न हों, लेकिन यदि आपमें संकल्पशक्ति नहीं है या आप तुरन्त निर्णय नहीं ले सकते तो आप कभी भी सफल नहीं हो सकते। आपकी सफलता का रहस्य केवल दो शब्दों में निहित है और वह शब्द हैं, 'तुरन्त निर्णय।'

आप मानसिक तौर पर कितने भी सशक्त, संतुलित एवं विचारवान क्यों न हों, यदि आपमें तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता नहीं तो आप कभी सफल नहीं हो सकते। सिकन्दर का कहना था कि मेरी सफलता का कारण यह है कि मैं जो सोचता हूं उस पर फौरन ही निर्णय ले लेता हूं।

किसी ने सिकन्दर से पूछा, "तुमने देशों पर देश किस प्रकार जीत लिए?" तो उसने उत्तर दिया, "मैं जब सोचता हूं तो उस पर फौरन ही अमल भी करता हूं।"

नेपोलियन भी कभी झिझक से काम नहीं लेता था। जिस काम को भी वह उचित समझता था, उसको फौरन ही कर डालता था और केवल इसी एक गुण के कारण वह समस्त यूरोप का अधिपति बन बैठा। वाटरलू के मैदान में उसकी हार हुई तो उसका एकमात्र कारण यही था कि वह तुरन्त निर्णय न ले सका।

अतः आप भी यदि सफल होना चाहते हैं तो तुरन्त निर्णय लेने की आदत डालिए, लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि आप जो निर्णय लें उसके बारे में कोई विचार ही न करें। खूब सोच-समझकर ही निर्णय लें। निर्णय तो मूर्ख व्यक्ति भी ले सकता है, लेकिन उसका परिणाम आप स्वयं समझ सकते हैं। उससे कुछ निर्माण नहीं हो सकता, विनाश ही होगा।

जो व्यक्ति सदा इसी दुविधा में पड़े रहते हैं कि पहले कौन-सा काम किया जाय अथवा वे व्यक्ति जो किसी अन्य व्यक्ति की बात सुनकर अपने निर्णय को बदल देते हैं, कभी कुछ नहीं कर सकते। सफल वही हो सकते हैं जो बुद्धिमत्तापूर्ण, दृढ़ संकल्प के सहारे, बिना छोटी-मोटी बातों से घबराए, निरन्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहते हैं। बहुत से व्यापारी अपने निर्णय पर ही अटल रहकर भारी लाभ कमा लेते हैं, हालांकि उन्हें कई बार भारी हानि भी उठानी पड़ती है, लेकिन अन्त में उन्हें लाभ ही होता है।

तुरन्त निर्णय लेने के साथ ही यह भी जरूरी है कि आप सही निर्णय लें। निर्णय तो मूर्ख व्यक्ति भी ले सकता है लेकिन उसका परिणाम आप स्वयं समझ सकते हैं।

इसी प्रकार यदि आपके विचार भी पूर्ण परिपक्व हों और आपका मस्तिष्क शान्त एवं संयत हो तो कोई कारण नहीं कि आप भी शीघ्र निर्णय न ले सकें और सफल न हो सकें।

यदि कोई व्यक्ति दृढ़निश्चयी होने के बावजूद बार-बार असफल होता है और निराश होकर बैठ जाता है तो यह बात उसके लिए बड़ी विनाशकारी सिद्ध होती है। इससे पता चलता है कि उस व्यक्ति के मन में दृढ़ निश्चय तो है, परन्तु वह दुविधाग्रस्त भी है और शायद इसीलिए बार-बार असफल हो रहा है।

किसी ने ठीक ही कहा है कि शीघ्रता की अपेक्षा दुविधा बहुत बुरी है, पर दुविधापूर्ण स्थिति में लिया गया निर्णय उससे भी बुरा है। अतः यदि आप सफल होना चाहते हैं तो दुविधा को छोड़िए और शान्त एवं संयत मन से दृढ़निश्चय करके काम में जुट जाइए, आप अवश्य ही सफल होंगे।

रुको नहीं, आगे बढ़ो

आपके रास्ते में जो भी कठिनाइयां आएंगी, वह आपकी प्रगति के साथ-साथ सुलझती चली जाएंगी। कठिनाइयां ही आपकी असली सहायक हैं। कठिनाइयों से संघर्ष करते समय आप उनके प्रत्येक पहलू पर विचार करने पर विवश हो जाते हैं। यही विचार आपके आगे बढ़ने में सहायक होते हैं।

सेनेका का कथन है, "हम जो कुछ सीखते हैं, वह पाठशाला में नहीं, जीवन में सीखते हैं।"

बुलवर का कथन है, "मेरे विचार में विश्व भर में सबसे उत्तम सीख वह है जो हम अपने से अधिक शिक्षित व्यक्ति से वार्तालाप द्वारा प्राप्त करते हैं।"

फ्रैंकलिन कहते हैं, "अनुभवों की पाठशाला में बहुत खर्च बैठता है, परन्तु मूर्ख व्यक्ति वहां पर भी कुछ विशेष नहीं सीखते, क्योंकि वह उपदेश ही दे सकते हैं, चाल-चलन नहीं। जो सलाह-मशवरे से भी कुछ नहीं सीख सकते, उनकी भला कोई क्या मदद करेगा? यदि आप बुद्धिमत्तापूर्ण बात ध्यान से नहीं सुन सकते तो ठोकरों के सिवा आपको और क्या मिलेगा?"

बीचर ने एक स्थान पर कहा है, "कर्तव्य-कर्मों में मात्र ऐसा कोई कर्म नहीं, जिसके किए जाने से हजार गुना अधिक लाभ मानव को न पहुंचे। ईश्वर की सृष्टि में कोई भी उचित कर्म स्वार्थ का नहीं, अपितु परमार्थ का ही है। व्यापारी प्रायः अपने ही लाभ की बात सोचता है, लेकिन फिर भी उसके काम में कुछ-न-कुछ परहित की बात रहती है।

एक चर्मकार था। एक बार वह दिन भर गप्पें लड़ाता रहा। सारा दिन नेताओं की राजनीति की बातों में बीत गया। उसने दिन की कमी पूरी करने के लिए रात में काम करने की सोची। वह रात को बैठा काम कर रहा था तो एक नन्हे नटखट बालक ने दरवाजे की दरार में से झांककर कहा—"मोची रे मोची! तू दिन भर तो इधर-उधर दौड़ता-फिरता रहा, अब रात को काम कर रहा है?"

चर्मकार ने यह बात अपने एक मित्र को सुनाई तो उसने कहा, "तुमने उस नटखट बालक के दो-चार थप्पड़ क्यों नहीं लगाए?"

चर्मकार ने कहा, "नहीं, मैंने तो उस समय अपने हाथ का काम भी छोड़ दिया और सोचा कि यह बच्चा ठीक ही बात कहता है। मैंने उस बच्चे से कहा, लड़के, तुम ठीक कहते हो, मैं तुम्हें दोबारा यह कहने का मौका न दूंगा। लड़के की बात मेरे लिए ईश्वर की आवाज बन गई और मेरे लिए जीवन भर यह बात लाभप्रद रही। मैंने उसी से सीखा कि आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए और काम के समय किसी प्रकार की कमजोरी या शिथिलता भी नहीं दिखानी चाहिए।" तबसे उस चर्मकार ने अपना समय व्यर्थ बिताना छोड़ दिया और एक व्यवसायी के रूप में आत्मनिर्भर हो गया। आगे चलकर वह एक लेखक और वैज्ञानिक के रूप में भी प्रसिद्ध हुआ।

एक जिल्दसाज था। वह स्कूल की पुस्तकों पर जिल्दें चढ़ाया करता था। एक दिन वह किसी बच्चे की पुस्तक पर जिल्द चढ़ा रहा था कि उसकी दृष्टि पुस्तक पर चिपके एक रद्दी कागज पर पड़ी, जिस पर लिखा था, "चलते चलो, बढ़ते चलो। तुम्हारे सामने जो कठिनाइयां आएंगी, वह तुम्हारी प्रगति के साथ-साथ सुलझती जाएंगी। बढ़ते चलो, प्रकाश होने वाला है और तुम्हारे मार्ग में नित्यप्रति बढ़ने के साथ स्वच्छता की चमक-दमक भी आती जाएगी।"

यह रद्दी कागज एक पत्र की नकल थी जो किसी ने अपने मित्र को लिखा था, परन्तु उस जिल्दसाज ने उसी रद्दी कागज के टुकड़े पर लिखे संदेश को अपना मार्ग-दर्शक बना लिया और वह अपने युग का प्रसिद्ध नक्षत्रवेत्ता बन गया। उसका कहना है कि प्रगति का वह परामर्श मेरा सबसे बड़ा गुरु बन गया। इस व्यक्ति का नाम आरेगो था।

एडमण्ड बर्क का कहना है, "हमारा प्रतिद्वन्द्वी ही हमारा असली सहायक है। हम कठिनाइयों से जो संघर्ष करते हैं, उसी के द्वारा हम अपने उद्देश्य से जुड़े रहते हैं। उसी संघर्ष द्वारा हम विवश हो जाते हैं कि हम उससे सम्बन्धित प्रत्येक पहलू पर विचार करें। उसी की सहायता से हम गहराई तक पहुंचते हैं, केवल धरातल तक ही नहीं रहना जानते।"

कूपर संस्थान के संस्थापक ने वहां लगाई जाने वाली शिला पर यह बात अंकित करवाई, "इस संस्था के निर्माण से मैं यह उद्देश्य पूरा करना चाहता हूं कि हमारे युवकों के सामने सभी वैज्ञानिक भण्डार प्रकट हों, युवक सृष्टि के सौंदर्य को देखें और उसके निर्माता से प्यार करना सीखें।"

चार्ल्स नार्डहाफ ने लिखा है, "माता-पिता का लाडला बेटा शीत ऋतु में अंगीठी के पास दुबका बैठा रहता है, जबकि दूसरे लड़के बर्फ पर खेल रहे होते हैं। वह देर तक आराम से बिस्तर में सोया रहता है और उसकी जेबों में टॉफी और चॉकलेट आदि भरी रहती हैं और उसकी जान की चिन्ता उसके मां-बाप को सदा परेशान रखती है। हो सकता है ऐसा लड़का भैंसों के पीछे बदन उघाड़े और नंगे पांव फिरने वाले बच्चों को देखकर तरस खाए, परन्तु इतिहास और अनुभव यह बताता है कि उपयोगी मनुष्य बनने और संसार में मान और प्रसिद्धि प्राप्त करने का अधिकार मेहनती और बलिष्ठ बालक को ही है।"

बेकारी और गतिहीनता से प्रकृति घृणा करती है, चाहे ये बुराइयां धनी लोगों में हों या निर्धनों में।

विद्यार्थी जीवन में बच्चों को बने-बनाए नियम पढ़ने को मिलते हैं, परन्तु वास्तविक शक्ति तो उन्हें तभी प्राप्त होती है, जब वे जीती-जागती दुनिया के सम्पर्क में आते हैं।

यदि आप सुप्रसिद्ध अमरीकनों का इतिहास पढ़ें तो आपको पता चलेगा कि योग्य व्यक्ति पहाड़ी और चट्टानी क्षेत्रों में ही पैदा हुए।

महाकाव्य क्या हैं? पहाड़ों, घाटियों, सागरों और कोलाहल से भरे नगरों की आवाजें! यह आवाजें लेखनी में बद्ध आवाजों से कहीं अधिक भावपूर्ण और अर्थपूर्ण हैं।

ये पहाड़ियां ही महाकाव्य हैं, जिनमें हिब्रू, हिन्दू और यूनानियों की पुस्तकों व ग्रंथों की अपेक्षा अधिक प्राचीन गाथाएं अंकित हैं। पुस्तकें भी गूंगी और यह पहाड़ियां भी, परन्तु तभी तक, जब तक कोई विलक्षण व्यक्ति इन तक नहीं पहुंच पाता। उनके शब्द बड़े ही रहस्यपूर्ण हैं, परन्तु कोई विशिष्ट व्यक्ति ही उन्हें सुन सकता है।

अथाह सागर भी एक महाकाव्य है, परन्तु आवश्यकता है उस अन्तरात्मा की जो उसमें उठने व गूंजने वाली ध्वनियों को समझने का ज्ञान रखती हो। उनमें निहित काव्य चिरनवीन हैं। उनकी कविता एक बार अमर गायक होमर के कानों में पड़ी और वह उस अंशमात्र से ही सदा के लिए अमर हो गया। आप भी अपनी चित्तवृत्तियों को एकाग्र करके उसे सुनें और अपने ज्ञान-विज्ञान की दम्भ भरी बातों को भुला दें।

मानव समूह से भरपूर नगर भी एक महाकाव्य होता है। वहां हंसाने, रुलाने और आपस में लड़ाने वाली सभी तरह की काव्य-गाथाएं विद्यमान हैं, जिन्हें आंकना किसी भी लेखनी के लिए असम्भव है। जो व्यक्ति लाखों चरणों में पददलित इस महाकाव्य को पढ़ लेता है, वह आकाश की सीमाओं से भी ऊंचा उठ जाता है, उन्हें लांघ जाता है और पाताल की गहराइयों को छू लेता है। सृष्टि के गूढ़ रहस्य उसकी आत्मा पर प्रकट हो जाते हैं।

बीचर कहता है, "ऐसे अमर काव्य मुझे पढ़ने को दो। यौवन से लेकर बुढ़ापे का जीवन बहुत क्षुद्र और अल्प है, परन्तु जीवन की यह गतिशीलता तभी कृतकृत्य होगी जब मैं इन महाकाव्यों का एक पृष्ठ भी पढ़ पाऊं।"

बीचर का कहना है कि समाचार पत्र सामान्य जन के लिए शिक्षक के समान हैं। उनके लिए उनमें अपार कोष भरा रहता है। एक साधारण स्तरीय समाचार पत्र भी सामान्य वार्ता से अधिक उपयोगी है। उसकी भाषा भले ही सूखी और भद्दी क्यों न हो, परन्तु उसमें कुछ शिष्टता तो होती ही है। समाचार पत्र मानव मात्र को सहानुभूति की शिक्षा देते हैं। अन्य लोगों के कष्टों और कठिनाइयों से हमें परिचित कराते हैं। इससे हमारे परोपकार का दायरा और अधिक विस्तृत होता है।

बच्चों को सिखाना चाहिए कि वे प्रत्येक स्थान पर सौन्दर्य को खोजें। प्रकृति की विविधता और सृष्टिरूपी इस महान काव्य को पढ़ें। प्रकृति के उपहार सर्वशक्तिमान प्रभु के अमर सन्देश हैं, जिनमें उसके सृजन की गाथा भरी हुई है। सुसंस्कृत व्यक्ति ही उन्हें पढ़ और सुन सकता है।

प्रकृति का यह सन्देश है कि आप उसके नियमों का पालन करके सुख और प्रसन्नता के उपहारों को प्राप्त करें। प्रकृति आपसे कहती है कि मैंने संघर्षरत रहने के लिए ही आपको सुदृढ़ता प्रदान की है। उसी ने आपको कठिनाइयां सहने की सामर्थ्य दी है ताकि

आप ऐसा चरित्र बनाएं, जिससे आपको महान उद्देश्यों की प्राप्ति हो। जैसे एक माता अपने बच्चे के सामने खिलौने रखती है ताकि वह उन्हें पकड़ने का प्रयत्न करे, जिससे उसके अंग-प्रत्यंग सुदृढ़ हों; इसी प्रकार प्रकृति भी आपके सामने अनेक क्रीड़ाएं करती है और आपको शक्ति का अपार स्रोत देती है। जब आप निष्ठापूर्वक कर्म में लगे रहते हैं तो आप सामने की ओर दृष्टि गड़ाए उन्नति के मार्ग पर बढ़ते चले जाते हैं।

बच्चों को सिखाएं कि वे प्रत्येक स्थान पर सौन्दर्य को खोजें।

ब्राइट का कहना है, "जो व्यक्ति प्रकृति से प्रेम करता है, उसे उसमें विभिन्न आकृतियां दिखाई देती हैं, प्रकृति उनसे तरह-तरह की बोलियों में बात करती है। जब व्यक्ति दुखी होता है तो प्रकृति अपनी सुकोमल संवेदना के साथ उसके चिन्तन में घुल-मिल जाती है। इससे उसके चिन्तन से तीव्रता कम हो जाती है, भले ही उसे इस बात का ज्ञान न हो।"

वर्ड्सवर्थ कहता है, "वसन्त ऋतु में वनों में खिले हुए फूलों से उत्पन्न अनुभूति से मानव नैतिकता के विषय में इतना अधिक सीख सकता है जितना उसे संसार के समस्त ज्ञानी भी नहीं सिखा सकते।"

मानव जाति के लिए उद्यम व परिश्रम स्वयं एक गुरु है। परिश्रम बहुत अच्छा अध्यापक है। वह हमें पुरानी रूढ़ियों के वातावरण से निकालकर सृष्टि की विशाल पाठशाला में लाता है, जहां मनुष्य भौतिकता के सम्पर्क में आता है। कर्मठ व्यक्ति के मार्ग में आने वाले कांटे परिश्रम की रगड़ से घिस-घिसकर सुकोमल हो जाते हैं और उसके चरित्र में एक चमक आ जाती है। धैर्य, साहस और कठोरता का पाठ आप परिश्रम से ही सीख सकते हैं। इससे आपके संकल्प को दृढ़ आधार मिलता है और आप कर्मठ जीवन के लिए कमर कसकर आगे बढ़ने को उत्सुक हो जाते हैं।

मनुष्य स्वभाव से सुस्त होता है, इसलिए आवश्यक है कि वह अन्तःप्रेरणा से अपने दुर्बल विचारों को निकाल फेंके और सशक्त हो जाए, भोगविलास की विरासत को दूर फेंककर आगे बढ़े और फूले-फले। बाप-दादा से मिली सम्पत्ति और आरामतलबी मानव के मार्ग में भारी रुकावटें हैं। उसे अपने बलबूते पर नवीन सृजन के लिए जागरूक होना है और उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ना है।
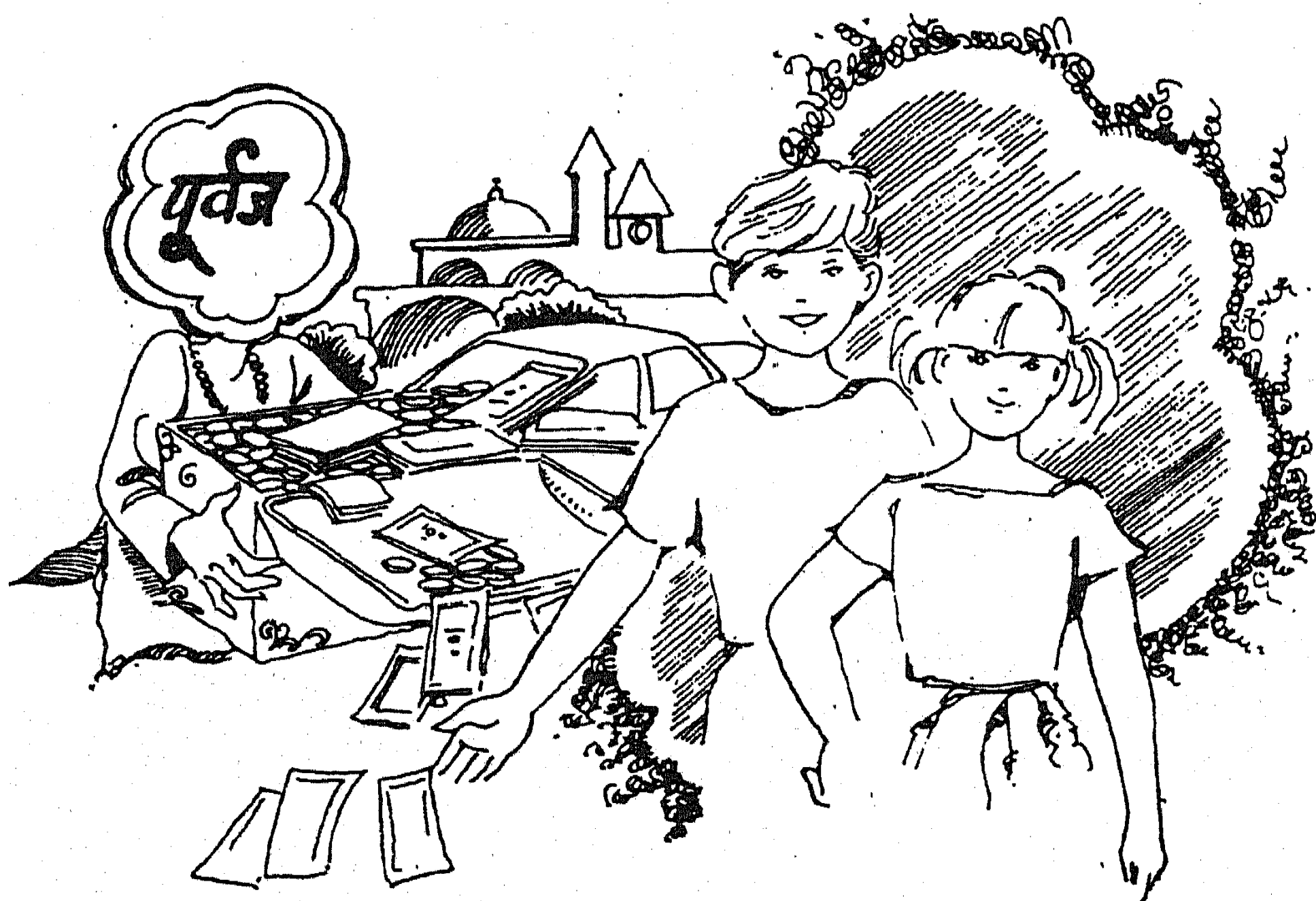
पूर्वजों से मिली सम्पत्ति और आरामतलबी सफलता के मार्ग में भारी रुकावटें हैं।

ओ आशा-अभिलाषा! लोग तुझे युगों-युगों से कोसते आए हैं, परन्तु तू मानव जाति की गुरु ही सिद्ध हुई। तूने ही मानव जाति को गहन अन्धकार से प्रकाश की ओर प्रेरित किया है और कठिनाइयों भरे अगम्य मार्गों से निकालकर कुछ बन जाने के लिए प्रेरित किया है। तूने ही कितनी महान आत्माओं की कुण्ठा समाप्त की है और उनके लिए प्रकाश के द्वार खोले हैं। कैसी-कैसी प्रतिभाओं का तूने निर्माण किया। तूने ही पौसिन को पेरिस की सड़कों पर साइनबोर्ड बनाते पाया और उसे कितने ऊंचे स्तर का कलाकार बनाया। चेंटरी तुम्हें गधे पर दूध लादे मिला, जिसे वह अपनी माता की दुकान पर ले जा रहा था। तूने ही उसे महान मूर्तिकार बना दिया। रिचर्ड फोली किस दशा में मिला, बांसुरी बजाकर पेट भरता हुआ स्वीडन की ओर जा रहा था कि वहां कील तोड़ने का काम सीख सके। तूने ही उसे ख्याति के उच्च शिखर पर पहुंचा दिया। शेक्सपियर को कहां पाया? थियेटर के बाहर लोगों के घोड़ों की लगाम थामे। तूने ही उसे सुप्रसिद्ध और महान नाटककार बना दिया। होमर तुम्हें यूनान के तट पर आवारा घूमते हुए मिला था और तूने ही उसके मुख से इलियड जैसी संगीत-काव्य-लहरी सुनवाई।

अपनी चेतना और हिम्मत को जगाएं

आपने सुना ही होगा "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत" अर्थात यदि आप अपने मन में निराशा, रोग या मृत्यु के विचार लाएंगे तो सचमुच ही निराश या रोगी हो सकते हैं। इसके विपरीत यदि आप अपने मन में साहस, हिम्मत और स्फूर्ति के विचार लाएंगे तो सदैव प्रगति ही करेंगे।

चेतना और हिम्मत से ही आदमी सजीव बनता है, मांसपेशियां उसे सजीव नहीं बनातीं। प्रत्येक विचार मनुष्य के मस्तिष्क में ही पहले उठता है, उसकी प्रेरणा ही से अंग-प्रत्यंग कार्य आरम्भ करते हैं। जो हमारे मन-मस्तिष्क में होता है, वही शरीर के विभिन्न अंगों में भी पहुंचता है। इस प्रकार मनुष्य अपनी आत्मकथा अपने शरीर के ढांचे में लिखता है।

शरीर पर मन का क्या प्रभाव होता है, यह बात सिद्ध करने के लिए किसी वैज्ञानिक प्रयोग की आवश्यकता नहीं। विचारों के कारण ही मनुष्य रोगी और स्वस्थ होता है। यह स्वतःसिद्ध तथ्य है। जीवन के अनुभवों से यह तथ्य प्रकट होता रहता है। इस सम्बन्ध में अनेक चिकित्सकों के संस्मरण भी प्रकाशित हो चुके हैं।

कुछ विशेष प्रकार के विचार तो इतने बुरे होते हैं, उनमें कुछ तो घातक होते हैं और कुछ बहुत ही बुरे प्रभाव हमारे शरीर पर छोड़ जाते हैं, परन्तु हम उनके इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि अनायास ही, अनजाने में ही अनेक रोगों को अपनी ओर आकृष्ट करते रहते हैं।

किसी व्यक्ति के दिल को धक्का लगता है या हार्ट अटैक होता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। इसका क्या अभिप्राय है? अभिप्राय यही है कि किसी ऐसे विचार ने उसके एक शारीरिक यन्त्र पर इतने जोर का प्रहार किया कि वह शरीर-यन्त्र चलते-चलते रुक गया। किसी भय के विचार ने उसकी हृदयगति को बन्द कर दिया, किसी उत्तेजना से हृदय इतने तीव्र वेग से धड़कने लगा कि उसके मस्तिष्क की धमनी फट गई, अत्यधिक प्रसन्नता में उसके मस्तिष्क की ओर रक्त का प्रवाह इतना तेज हो गया कि शिराओं को क्षत-विक्षत कर दिया। किसी प्रियजन की मृत्यु हुई, उसके शोक ने भोजन की पाचन-क्रिया को गड़बड़ा दिया, शरीर के अणुओं की टूट-फूट के बाद उनकी नई संरचना बन्द हो

गई और शरीर के क्रिया-कलापों में बाधा पड़ने लगी और शरीर दुबला-पतला होकर सूखता चला गया और अन्ततः व्यक्ति इस संसार से कूच कर गया।

इन सब बातों से आपने देखा कि शरीर में रोग तो ऐसा कोई नहीं था, वरन् एक रोगी विचार ने जन्म ले लिया, जिसने आत्मा को शरीर से पृथक कर दिया। हम कहते हैं कि मृत्यु हो गई, परन्तु मृत्यु विचारों के कारण हुई, रोग के कारण नहीं।

लन्दन की बात है। एक दिन वहां चलने वाली ट्राम का बिजली का एक तार टूटकर सड़क पर गिर गया। ट्राम से एक व्यक्ति उतरा। उसने उस तार को देखा। उसने सुन रखा था कि बिजली का तार छू जाने से आदमी को धक्का लगता है और उससे आदमी की मृत्यु भी हो जाती है। उस व्यक्ति के मन में इस विचार की एक लहर उठी और वहीं गिरकर उसकी मृत्यु हो गई। वह बिजली के तार से दूर था, तार से उसका सम्पर्क हुआ ही नहीं, उसे झटका नहीं लगा, वरन् उसे अपने विचारों के झटके ने ही समाप्त कर दिया, उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। यदि उस व्यक्ति का मन सुदृढ़ होता तो सम्भवतः थोड़ा धक्का खाने से भी उसकी मृत्यु न होती।

एक खूबसूरत औरत के चेहरे पर गोल्फ स्टिक से चोट लग गई। ज़बड़ा टूट गया, परन्तु डॉक्टरों के इलाज से कुछ ही दिनों में उसका चेहरा ठीक हो गया, केवल चोट का एक निशान ही उस सुन्दरी के चेहरे पर रह गया। इस निशान के कारण उस महिला के सौन्दर्य में कुछ कमी आ गई। वह उस आघात को सहन न कर सकी। उसे इतना दुख हुआ कि उसने लोगों से मिलना-जुलना ही बन्द कर दिया और वह हर समय एक कमरे में बन्द रहने लगी। किसी के सामने आने में उसे संकोच लगता। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिनों में वह सुन्दरी विक्षिप्त हो गई। उसके इलाज के लिए दूर-दूर से डॉक्टर बुलाए गए। यूरोप भर के विशेषज्ञों ने उसे देखा, इलाज-उपचार किए, परन्तु उसे कोई लाभ नहीं हुआ। सौन्दर्य कम होने के विचार ने उसकी सारी प्रसन्नता समाप्त कर दी और वह सारे दिन बिस्तर पर पड़ी रहने लगी। फिर डॉक्टरों ने उसके रोग के निदान का यत्न किया, परन्तु उसके शरीर में कोई प्रत्यक्ष रोग नहीं था। उसके रोग का कारण था—सौन्दर्य नष्ट हो जाने का प्रबल विचार।

सचमुच आप कहेंगे कि इस प्रकार के विचार मूर्खतापूर्ण हैं, सचमुच हैं। यह ठीक है, इस प्रकार के घातक विचारों को मन में लाना मूर्खता है, क्योंकि एक रोगी विचार पूर्णतया स्वस्थ शरीर के स्वाभाविक क्रियाकलापों में रुकावट डाल देता है। इस प्रकार के विचारों के आते ही उन्हें मन से निकाल दिया जाए, उन्हें मन पर आक्रमण न करने दिया जाए तो शरीर के स्वास्थ्य को जरा भी हानि नहीं पहुंचेगी। भय तथा शोक के विचारों से कुछ ही घण्टों में सिर के बाल सफेद होते देखे गए हैं। इनका कारण यह बताया गया है कि किसी तीव्र भावना के आवेग से हमारी त्वचा में कुछ ऐसे रासायनिक परिवर्तन होते हैं जिनके कारण केशों का रंग एकदम बदलने लगता है। जो काम आयु के अनुसार कई वर्षों बाद होना था, वह रुग्ण विचारों के कारण समय से पूर्व कुछ ही काल में हो जाता है और सुन्दर युवक बूढ़ा दिखाई देने लगता है।

डॉ. रोजर्स का कहना है कि बहुत से ऐसे कारण हैं, जिनसे शरीर के अन्य अंगों पर तो कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता, परन्तु सिर के केश मर जाते हैं। दुख, शोक और तीव्र चिन्ता और भय आदि भावावेग ही इसके कारण हैं।

कई व्यक्तियों की तो मृत्यु इसी आशंका में हो गई कि वे घायल हो गए थे, जबकि वास्तविकता यह थी कि उनके शरीर पर कहीं घायल होने का निशान तक न था। मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने अपने एक साथी को बहकाया कि उसके शरीर से खून बह रहा है, जबकि न तो उसे चोट लगी थी और न सचमुच में कहीं से खून ही बह रहा था, परन्तु साथियों के कहने मात्र से वह छात्र बेहोश हो गया।

किसी तीव्र भावावेग, उत्तेजना, खतरे का डर या अचानक अत्यधिक प्रसन्नता से अनेक व्यक्ति रोगी होते देखे गए हैं। ऐसा इसीलिए होता है कि उनका मन दुर्बल होता है अथवा मस्तिष्क किसी भाव के आकस्मिक धक्के को सहने में असमर्थ होता है।

आत्मा में वह शक्ति है कि जो शरीर को भयंकर यन्त्रणाओं से भी बचा सकती है। यदि आत्मा की उस शक्ति का प्रयोग न किया जाय तो किसी भी तीव्र विचार से रोग हो सकते हैं और मृत्यु भी हो सकती है।
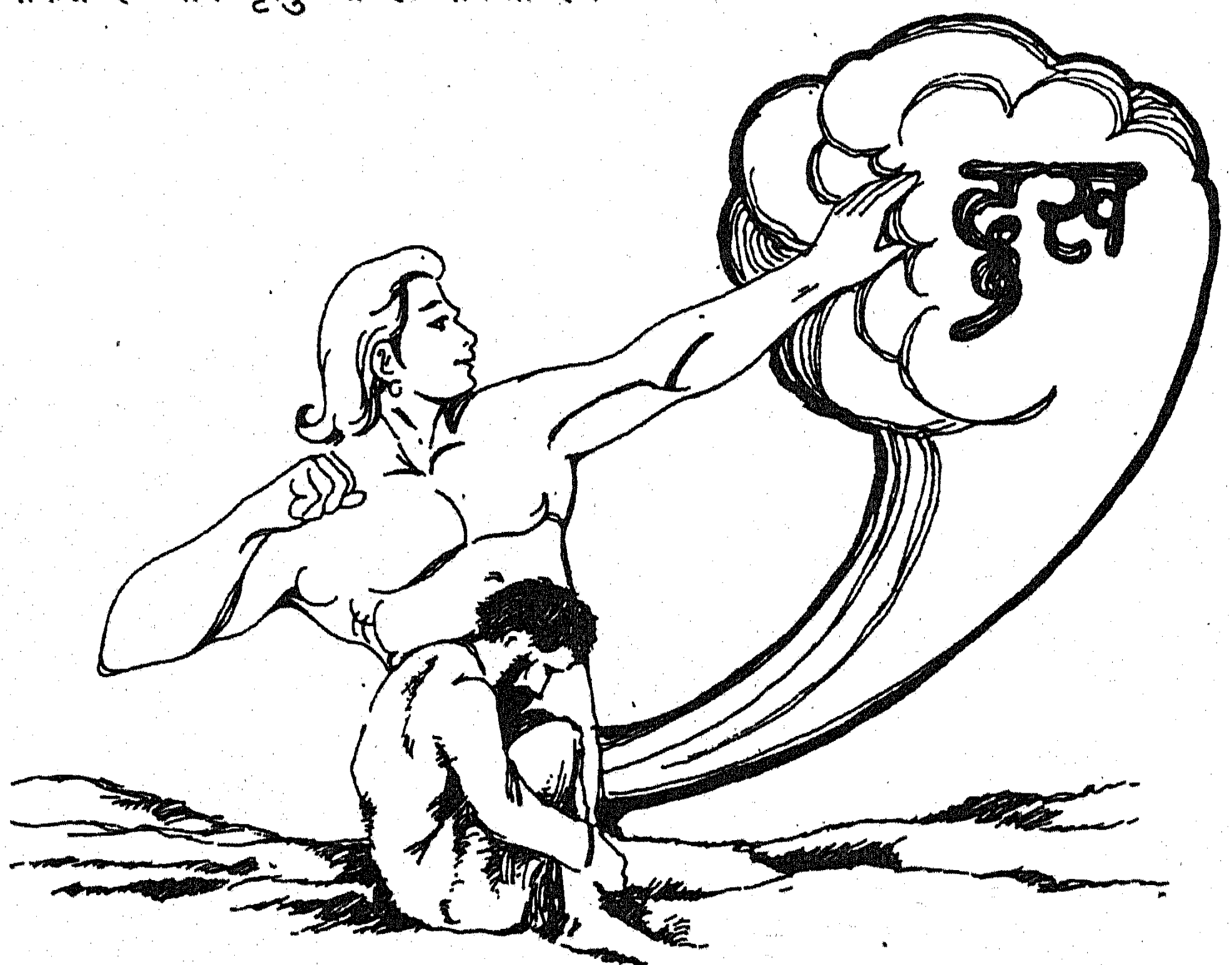
आपकी आत्मा में वह शक्ति है जो शरीर को भयंकर दुखों से बचा सकती है। आत्मा की इस शक्ति का उपयोग करें, अन्यथा आप किसी भी तीव्र विचार से रोगी भी हो सकते हैं और मर भी सकते हैं।

एक महिला कई वर्षों से बीमार थी। वह हर समय खाट पर ही पड़ी रहती थी। मल-मूत्र त्यागने के लिए उठने भर की शक्ति उसमें न थी। एक दिन अचानक उसके घर में आग लग गई। पति उस समय बाहर गया हुआ था और उसके तीन बच्चे ऊपर

की मंजिल में थे। आग की बात सुनते ही वह—हाय मेरे बच्चे, हाय मेरे बच्चे—चिल्लाती हुई भागी और बारी-बारी से तीनों बच्चों को आग से बचा लिया।

यह सब कैसे हुआ?

यह इस प्रकार हुआ कि आग के भय से उस महिला के मस्तिष्क में एक प्रबल विचार उठा और उस विचार से उस महिला में यह भावना उत्पन्न हुई कि वह कुछ भी कर सकती है। मस्तिष्क के जो विचार अंगों को काम करने का आदेश देते हैं, उन्होंने उसमें यह विश्वास भर दिया कि वह उठकर बच्चों को बचा सकती है, हालांकि उसके अंग-प्रत्यंगों में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ था। अंगों, मांसपेशियों में कार्य करने की शक्ति बाद में आती है, सबसे पहले मस्तिष्क में ही यह विश्वास दृढ़ होता है कि मैं इस काम को कर सकता हूं।

आग भड़क जाने पर उस महिला को खतरा दिखाई दिया। उस खतरे ने महिला को बच्चों की प्राणरक्षा के लिए ललकारा। साहस ने उसे सहारा दिया। उसे अपनी बीमारी का ध्यान भी न रहा। वह अपने आपको दुर्बल समझकर सदा चारपाई पर पड़ी रहती थी, पर कुछ-न-कुछ करने की विचार-शक्ति के प्रचण्ड आवेश में ही उसने अपने बच्चों को बचा लिया। कार्य की विषमता को देखते हुए मन में उचित स्थिति उत्पन्न हुई और महिला में साहस का संचार हुआ और वह कार्य उसने किया जो अपने को सर्वथा असमर्थ समझे हुए महीनों से चारपाई पर पड़ी थी।

शरीर को समर्थ बनाने की मन की इस शक्ति का स्वरूप हमें कई बार देखने को मिलता है। फिर भी आश्चर्य और अफसोस की बात है कि मनुष्य इस मानसिक शक्ति को पहचान नहीं पाता, उसे पहचानने में असमर्थ रहता है। इसी शक्ति का प्रयोग न कर पाने के कारण हम अपने को अशक्त और निर्बल मानते रहते हैं। विद्युत-शक्ति जिस प्रकार सैकड़ों-हजारों मील दूर, सागरों के पार सन्देश पहुंचाने में समर्थ है, उसी प्रकार विचारों की शक्ति मस्तिष्क से चलकर विघ्न-बाधाओं को पार करती हुई हममें कार्य करने की सामर्थ्य का संचार कर देती है।

विशेषज्ञों ने भी रोगों को दूर करने में मन की शक्ति के महत्व को स्वीकार किया है। जहां औषधियां और चीर-फाड़ भी असफल हो जाती हैं, वहां मन की शक्ति अद्भुत चमत्कार दिखाती है। डॉ. विलियम आस्लर चिकित्सा विज्ञान के महान विद्वान हुए हैं। उन्होंने इन्साइक्लोपीडिया में लिखा है—

"विश्वास से मनोबल बढ़ता है। उससे अंगों में रक्त-संचार बढ़ता है। स्नायु और नस-नाड़ियां बिना उत्तेजित हुए अपना काम करने लगती हैं। तब रोग दूर होने की क्रिया आरम्भ हो जाती है। इसके विपरीत अविश्वास की भावना से बलवान-से-बलवान शरीर में भी निराशा का संचार होता है जिससे कि शरीर मृत्यु की ओर बढ़ता है। विश्वास के कारण एक चम्मच भर गंगाजल या आटे व राख की गोली से रोगों को रोकने की इतनी चमत्कारपूर्ण शक्ति उत्पन्न होती है, जितनी मूल्यवान दवाओं से भी संभव नहीं। दवाइयां या अन्य प्रतिक्रियाएं चिकित्सक में पूर्ण विश्वास की भावना की तुलना में अत्यन्त गौण हैं।"

कोलम्बिया विश्वविद्यालय के डॉ. स्मिथ ने भी लिखा है, "चिकित्सा का नवीन और प्राचीनतम ढंग है विश्वास। विश्वास द्वारा उपचार करने की शक्ति किसी विशेष जाति,

श्रेणी या वर्ग की बपौती नहीं है। देवी-देवताओं में विश्वास या रोगी का अपनी शक्तियों में विश्वास का रोग दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि विश्वास के कारण इस प्रकार की मनःस्थिति का निर्माण होता है जो शरीर में रोग दूर करने की शक्ति का संचार करती है। इन बातों से भले ही क्षय रोग दूर न हो, टूटी हुई टांग न जुड़ सके, मारे गए अंग काम करने के योग्य न हो सकें, परन्तु इस विश्वास से रोगी की चिकित्सा के लिए सहायक वातावरण का निर्माण होता है। इनसे रोगों की मनःस्थिति डॉक्टरी चिकित्सा को तुरन्त ग्रहण करने में समर्थ हो जाती है। इससे शरीर में चिकित्सा के अनुकूल स्थिति उत्पन्न होती है। चिकित्सा की प्रत्येक प्रक्रिया में विश्वास और आशा ही सबसे अधिक सहायक होती है। तन्त्र, मन्त्र, सम्मोहन, नीम-हकीम तथा अन्य लोग विश्वास की इसी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं और किसी रोग की चिकित्सा की विशेष योग्यता प्राप्त किए बिना विश्वास की शक्ति को बदनाम किया करते हैं, परन्तु विश्वास की रोग-निरोधक या रोग दूर करने की शक्ति से इनकार नहीं किया जा सकता। मनुष्य का मस्तिष्क ग्रहणशील होता है, वह जिस पर विश्वास करने की इच्छा करे, विश्वास कर सकता है। यदि व्यक्ति के मन में रोग को दूर करने का अटूट विश्वास हो जाए तो रोग दूर हो सकता है और यदि उसमें अविश्वास की भावना और बुरे विचार भर जाएं तो अज्ञात रोग से भी पीड़ित हो सकता है।"

अधिकांश बीमारियां चिकित्सकों द्वारा दिखाए गए भय से होती हैं या फिर आपकी अपनी कल्पनाओं या आशंकाओं से।

स्वस्थ रहने का सुनिश्चित विचार यही है—"मैं कभी भी रुग्ण नहीं हो सकता।" अधिकांश बीमारियां चिकित्सकों द्वारा दिखाए गए भय से होती हैं या हमारी अपनी कल्पना या आशंका से।

दृढ़ संकल्प का महत्त्व

किसी भी कार्य को करने में यदि आप यह शंका अनुभव करते हैं कि यह कार्य आपसे हो पाएगा या नहीं, तो वह कार्य चाहे कितना ही आसान क्यों न हो, आप उसे पूरा नहीं कर पाएंगे। यदि आपमें कठिन-से-कठिन कार्यों को करने का दृढ़ संकल्प हो तो आप उन्हें निश्चित ही पूरा कर सकते हैं।

ऐसा व्यक्ति बहुत कठिनता से ही मिलेगा जो दृढ़ विश्वास के साथ यह कह सके कि जो कार्य मुझे करना है, मैं वह अवश्य करूंगा। जो मैं कर सकता हूं, करूंगा। जो कार्य मुझे करना चाहिए और मैं कर सकता हूं, वही मुझे करना चाहिए। ईश्वर की कृपा से मैं इस कार्य को अवश्य ही करूंगा।

22 सितम्बर, 1862 को जिस समय अब्राहम लिंकन ने स्वाधीनता का घोषणा-पत्र तैयार किया तो उस समय उसने अपनी डायरी में यह प्रतिज्ञा लिखी थी, "मैं ईश्वर के सम्मुख प्रतिज्ञा करता हूं कि स्वाधीनता की घोषणा करके ही रहूंगा।" और उसने स्वाधीनता की घोषणा की।

यह प्रण करने से पूर्व उसके मन में कुछ सन्देह था, उसके मन की अवस्था अनिश्चित-सी थी, शायद यह उसका स्वभावजन्य सन्देह ही था, जिसके कारण वह निर्णय करने से हिचकिचा रहा था, पर इस प्रण के पश्चात उसने पूर्ण मन से यह निश्चय कर लिया कि वह इधर-उधर की कोई बात नहीं सोचेगा और इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी समूची शक्ति लगा देगा।

बहुत कम लोग जानते हैं कि उत्साहयुक्त निर्णय में तथा मन में एक ही निर्णय को बार-बार दोहराने में और अपने निर्णय को कार्यरूप में परिणत करने में कितनी शक्ति खर्च होती है। बड़े-बड़े कार्य तभी पूरे होते हैं, जब उस कार्य को करने का बीड़ा उठाने वाले व्यक्ति को पूरा विश्वास होता है कि वह आदमी जान की बाजी लगाकर भी उस कार्य को पूरा कर देगा। यदि व्यक्ति इस रचनात्मक निश्चय को अपने मन में बार-बार दोहराता है तो उससे अटूट विश्वास और शक्ति जाग्रत होती है, उससे वह निर्णय

परिवर्तित नहीं हो पाता। इस विश्वास के कारण उस व्यक्ति में कार्य पूरा करने की योग्यता भी पैदा हो जाती है। यह आत्मविश्वास जितना दृढ़ होगा, जितना घना होगा, सफलता भी उतनी ही प्राप्त होगी। दृढ़ निश्चय और अटल विश्वास की जितनी मात्रा होगी, सफलता भी उतनी ही मात्रा में प्राप्त होती है। तोप से जो गोला छोड़ा जाता है उसमें इतनी शक्ति नहीं होती, शक्ति उस वेग में होती है जिस वेग से वह गोला फेंका जाता है। वह फेंकने वाली शक्ति ही उस गोले को अधिक संहारक बना देती है।

बड़े-बड़े कार्य तभी पूरे होते हैं, जब आप जान की बाजी लगाकर उस कार्य को पूरा करने का दृढ़ संकल्प कर लेते हैं।

कुछ लोग प्रायः कहा करते हैं कि यदि ईश्वर ने चाहा और उसकी इच्छा हुई, यदि भाग्य में ऐसा हुआ। वे यह नहीं समझते कि यह 'यदि', 'किन्तु' लगाकर आप स्वयं अपनी इच्छाशक्ति में सन्देह प्रकट करने लगते हैं। 'किन्तु', 'परन्तु' एक बहाना है, अपने आपको धोखा देना है, अपने आपको ठगना है। भगवान तो सदा यही चाहते हैं कि मनुष्य बड़े-बड़े काम करे। इस स्थिति में हमें 'यदि', 'किन्तु', 'परन्तु' का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इस 'यदि' से आपमें काम करने की जो महान शक्ति है, वह कम होती है, उसकी प्रखर धार मन्द पड़ती है, विघ्नों को पार करने, उन्हें काट फेंकने वाली तलवार कुन्द हो जाती है। इस 'यदि' के विपरीत यदि आप निश्चित रूप से, 'अवश्य ही' आदि शब्दों का प्रयोग करें तो आपकी रचनात्मक और कार्य सम्पन्न करने वाली शक्ति तीक्ष्ण हो जाती है, प्रबल हो उठती है।

आप भी एक-दो ऐसे व्यक्तियों को जानते होंगे और उनकी तरह के अनेक अन्य लोग भी हैं जो कहते हैं कि मैं कभी 'हां' में उत्तर देता ही नहीं कि मुझे क्या करना है, क्योंकि मुझे मालूम ही नहीं कि ईश्वर की इच्छा क्या है। मैं यदि 'अवश्य' कहूं तो यह उसका अपमान होगा।

धन्य है उनके इस तर्क को! क्या ईश्वर यह नहीं चाहता कि हम महान कार्य कर पाएं और उनमें सफलता प्राप्त करें। कमजोर आत्मा वाले कायर व्यक्ति ही ऐसा विश्वास दिलाने में असमर्थ होते हैं कि वे अवश्य ही यह कार्य कर देंगे। जिसने भी अपना मूल्य घटा लिया, अपनी शक्ति को कम आंका और जिसने अपने को कमजोर व दीन-हीन मान लिया, वही हर बात में 'शायद' और 'यदि' आदि शब्दों का प्रयोग करता है। दृढ़निश्चयी, आत्मविश्वास से पूर्ण और अपने प्रण का पक्का व्यक्ति तो कहेगा—"मैं साहस की प्रतिमूर्ति हूं, साहस हूं, कर्ता हूं, मैं ही उत्साह और स्वास्थ्य का स्वरूप हूं, मैं शक्ति का पुंज हूं, मैं ही बल और शक्ति हूं, विपुल धन-ऐश्वर्य हूं, मैं प्रभु की पूर्ण अपरिमित सम्पदा का अंश हूं, मैं धन-सम्पन्न हूं, संसार के सभी श्रेष्ठ पदार्थ मुझे विरासत में मिले हैं और मैं उस प्रभु की सर्वोत्कृष्ट रचना हूं।"

दृढ़ होकर अटूट निश्चय कीजिए। यह प्रतिज्ञा कीजिए और प्रण कर लीजिए कि आप जो महत्वाकांक्षा रखते हैं, उसे पूरा करने के लिए इतना जोरदार यत्न करेंगे कि वह कार्य आपसे सम्पन्न होने योग्य हो जाय। ऐसा तो कभी मत कहिए, "मैं कभी-न-कभी तो सफल होऊंगा ही।" इसके स्थान पर यह कहिए, "सफलता तो मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मैं तो सफलता का साकार रूप हूं, मैं निश्चित रूप से समय के अन्दर ही सफलता प्राप्त करूंगा। यह मत कहिए कि मुझे आगे चलकर प्रसन्नता प्राप्त होगी, वरन यह कहिए कि मेरा तो जन्म ही प्रसन्न रहने के लिए हुआ है। स्वयं प्रसन्न रहना और दूसरों को प्रसन्न करना मेरा धर्म है।"

मन में ऐसी आदत डालिए कि वह इस बात का दावा करे कि 'यह काम मेरा है, निश्चित रूप से मैं इसमें सफल हो जाऊंगा। मैं अपनी इच्छा को अवश्य ही कार्यान्वित कर दूंगा।'

मन की इस प्रकार की भावना में अनन्त शक्ति होती है। निरन्तर उत्साह में भरकर यह उद्घोष करते रहिए कि "मैं स्वस्थ हूं, मैं ही बल हूं, मैं पराक्रम और शक्ति हूं, मैं सिद्धान्त और सत्य हूं, मैं ही सौंदर्यरूप हूं। ईश्वर ने ही मुझे पूर्णता की मूर्ति बनाया है, सत्य, न्याय और सौन्दर्य का स्वरूप बनाया है।" इस प्रकार की भावनाएं रखने से ही जीवन में इन गुणों का समावेश होने लगता है।

मनुष्य में यह विश्वास होना चाहिए कि मैं वैसा ही हूं जैसा मुझे होना चाहिए। इस विश्वास से मनुष्य की कार्य करने की शक्ति दुगुनी हो जाती है। जिस व्यक्ति को यह विश्वास होता है कि वह विपुल धन-सम्पत्ति पैदा कर सकता है, निश्चय ही वह व्यक्ति

अतुल धन-दौलत उपार्जित कर लेगा। ऐसा व्यक्ति प्रातःकाल उठकर यह कभी नहीं कहेगा, "मैं आज कुछ कर सकूंगा या नहीं, यह कहना कठिन है; किन्तु मैं प्रयत्न करूंगा, शायद सफल हो जाऊं।" दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति के मन में संकल्प और विश्वास का आधार होता है। वह बार-बार यही सोचता रहता है, "मैं अवश्य ही यह काम करूंगा, मुझे यह करना है।" यह निश्चय निर्णयात्मक है। यह निश्चय उसे प्रेरणा देता है कि वह अपनी योजना के अनुसार सही ढंग से काम आरम्भ कर दे और इतनी प्रबल शक्ति से काम में जुट जाए कि सफलता स्वतः मिलनी आरम्भ हो जाए।

आप प्रण तो करते हैं कि मैं स्वस्थ रहूंगा, धन-दौलत भी कमाऊंगा, परन्तु आप स्वयं ही अपने प्रण पर अटल नहीं रह पाते, अटल रहने का विश्वास नहीं जुटा पाते। यदि आपका विश्वास स्थिर नहीं, वह ढुलमुल है तो आपको अपने प्रण से भी कोई सहायता नहीं मिल सकेगी। आप जिस बात का प्रण करते हैं, उस कार्य में और अपने प्रण में आपका अटल विश्वास होना ही चाहिए।

सुदृढ़ प्रतिज्ञा में अथाह शक्ति होती है। आपको चाहिए कि उत्साहपूर्वक अपने 'अहं' को प्रकट करें। बताइए कि आप यह करेंगे। एक बार निर्णय करके अपनी शक्ति उसमें लगा देंगे तो उस काम की सफलता से आपको कौन रोक सकेगा!

न्यूयार्क में एक महान संगीतकार था। वह लड़कियों को ऑपेरा (गीत नाटक) के लिए शिक्षित किया करता था। उसकी शिष्याओं में एक लड़की थी जिसमें संगीत की महान योग्यता तो छिपी थी, परन्तु उस लड़की में आत्मविश्वास नाम को भी नहीं था। संगीत शिक्षक ने उसे यह परामर्श दिया कि वह झिझक को त्यागे और आत्मविश्वास को जगाकर अपना व्यक्तित्व प्रकट करे। इस कार्य के लिए उसने उसे उपाय सुझाया कि प्रतिदिन दर्पण के सम्मुख खड़ी होकर पूरी ताकत से बार-बार दोहराया करे, "मैं स्वयं संगीत हूं। मैं ईश्वर की संगीत-शक्ति की प्रतिभा हूं। मैं स्वर-झंकार से पूर्ण हूं, मैं अपना अभिनय बहुत उत्तम रूप से कर सकती हूं। मैं अपना पार्ट अदा करते समय सभी को मुग्ध कर दूंगी। मैं सबसे श्रेष्ठ अभिनेत्री हूं। मैं अपने अभिनय को सम्मानपूर्ण और गौरवपूर्ण बनाऊंगी।"

उस लड़की ने अपने गुरु की इस बात का अक्षरशः पालन करना आरम्भ किया। वह लड़की जो संकोच और लज्जा में डूबी रहती थी और लोगों के सामने झिझकती और कतराती थी, अपने गुरु के उस परामर्श से उसने वह काम कर दिखाया जो अनेक प्रयत्नों के द्वारा संगीत और अभिनय का पाठ पढ़ाने से भी नहीं हो सकता था। गुरु के बताए मार्ग से उसका आत्मविश्वास इतना बढ़ गया कि उसकी शंका और संदेह मिट गया, उसका संकोच दूर हो गया और वह रंगमंच पर बिजली की-सी तेजी से चमक उठी।

दर्पण के सम्मुख खड़े होकर उच्च स्वर से प्रतिज्ञा कीजिए, संकल्प लीजिए, यह आत्मविकास का महान उपाय है। इस प्रकार अपने आपको सुझाव देना, पूर्ण उत्साह में भरकर अपने मन के साथ वार्तालाप करना, सच्चाई के साथ स्वयं से बातचीत करना,

यही एक ऐसा उपाय है जिसके द्वारा मनुष्य अपने अर्धचेतन मन में छिपी हुई शक्तियों को जगा सकता है। केवल विचार करने से इतनी शक्ति जाग्रत नहीं होती, जितनी अपनी आत्मा को सुझाव देने और प्रण करने से होती है।

आप सब जानते हैं कि जब आप पूर्ण उत्साह में भरकर किसी काम को पूरा करने का संकल्प कर लेते हैं तो आपकी शान अद्‌भुत रूप से बढ़ती है। जब आप अपने दृढ़ संकल्प को अपने मन में बार-बार दोहराते हैं तो इससे आपकी शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि होती है। इसी संकल्प की पुनरावृत्ति करें तो अर्धचेतन मन की शक्तियां पूर्ण रूप से जाग्रत हो जाती हैं। तब आपको अपने वास्तविक रूप का ज्ञान होगा और आप उसका अत्यधिक विकास करने में समर्थ होंगे। तब यही शक्तियां आपको आश्चर्यजनक काम करने के योग्य बना देंगी।

जोर से शब्दों के उच्चारण करने में जो शक्ति है, वह मन में चुपचाप दोहराने में नहीं। जब आप जोर से बोलते हैं तो आपका हृदय पूरी तरह आन्दोलित हो उठता है। उसमें हलचल मच जाती है, ऊंची आवाज में बोले गए शब्दों से आपकी सोई हुई शक्तियां जाग उठती हैं, परन्तु यदि आपको गम्भीर चिन्तन का अभ्यास हो जाए और आप मन को एकाग्र कर सकें, तब अपनी प्रतिज्ञा को जोर से दोहराने की आवश्यकता नहीं होती।

आप जब किन्हीं शब्दों को जोर से बोलते हैं तो उनका आपके मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। ऊंचे स्वर में बोले गए शब्दों में अधिक स्पष्टता होती है, उनमें एक तेजी होती है, बशर्ते कि वे सच्चे दिल से भावावेश में कहे गए हों। केवल मन में सोचने का उतना गहरा प्रभाव नहीं पड़ता। यदि आप उन्हीं शब्दों को खूब जोर से, उत्साह में भरकर, भावावेश और दृढ़ निश्चय से बोलें तो इस बात की अधिक आशा रहती है कि आप उस बात को क्रियान्वित करके रहेंगे।

आप अपने मन में उठने वाले शब्दरहित विचारों के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि आप उनकी आवाज बहुत ही कम सुन पाते हैं, परन्तु जब आप अपने विचारों को खूब जोर से बोलते हैं तो जागरूक हो जाते हैं और अपनी इच्छाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति आपमें आ जाती है। जब आप खूब जोर से अपने सम्मुख कोई निश्चय करते हैं तो आपके मन पर उसका बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

अपने आपको उत्साहित करने के लिए ऊंचे स्वर में कोई निश्चय करना ऐसा उपचार है जिसके परिणाम बहुत अद्‌भुत होते हैं। इससे आपकी दुर्बलताएं और त्रुटियां दूर होती हैं।

हमारे एक मित्र ने बताया कि वह जोर से बोलकर स्वयं को अपनी त्रुटियां बताया करता था। इसका बहुत गम्भीर प्रभाव हुआ। इस तरह उसकी कमजोरियां दूर होने लगीं और आगे चलकर वह व्यक्ति आश्चर्यजनक रूप से सफल सिद्ध हुआ। जब आपका हृदय, आपका दिल अपने आपसे बात करता है, तब वह बिना झिझक के अपनी कमजोरियां प्रकट करता है। वे छिपी नहीं रहतीं और तब ही मनुष्य उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है।

अपने आत्मबोध द्वारा अपने कार्य
का स्तर अधिक-से-अधिक ऊंचा करें,
आपको अवश्य सफलता प्राप्त होगी।

आप यदि यह समझें कि आपकी महत्वाकांक्षा में कहीं कोई कमी है तो मानसिक अभ्यास द्वारा आप अपनी महत्वाकांक्षा को अधिक प्रबल बना सकते हैं। यदि आप समझते हैं के आपके कार्य का स्तर ऊंचा नहीं तो आप आत्मा के बोध द्वारा अपने कार्य के स्तर को ऊंचा उठा सकते हैं। यदि आप समझते हैं कि आपको अपने उद्देश्य पर दृढ़ विश्वास नहीं तो अपने से वार्तालाप करके अपने विश्वास को और अधिक दृढ़ कर सकते हैं।

उस मित्र ने बताया कि वह प्रतिदिन प्रभातकाल में ही यह निश्चय दोहराया करता था, "मैं बड़ा आदमी बनने वाला हूं, मैं अधिक बड़ा कार्य करने के लिए संसार में आया हूं। मैं समाज में महत्वपूर्ण व्यक्ति बनने के लिए आया हूं।" इसी प्रकार सायंकाल को भी वह ऊंचे स्वर में दोहराता, "दिन भर में मैं आज अमुक कार्य में असफल रहा। कल यह काम अवश्य करूंगा। कल मुझे क्रोध आ गया, यह मेरी भूल थी, कल मैं जो कुछ कर बैठा उससे अपने कर्मचारियों से ही मेरी हेठी हुई और मैं उनकी नजरों में नीचा गिर गया। यह काम मेरे लिए उचित नहीं था, आगे से वैसी भूल नहीं करूंगा।"

इस मित्र में एक दुर्बलता यह थी कि वह शीघ्र ही कोई निर्णय नहीं ले पाता था। वह किसी भी महत्वपूर्ण कार्य का तुरन्त निश्चय नहीं कर पाता था कि उसे कहीं दुबारा उस पर विचार न करना पड़े। वह अंतिम घड़ी तक निर्णय न कर पाता था। उसके कार्यालय के लिफाफे भी अन्तिम समय तक बन्द नहीं किए जाते थे, उन पर हस्ताक्षर भी नहीं किए होते थे। ठेके सम्बन्धी बातों को भी वह बीच में लटकाए रखता था और अन्त में वह सभी काम जल्दबाजी और हड़बड़ी में करता था। इस जल्दबाजी में उससे अनेक भूलें ही जाया करती थीं।

एक दिन उसने अपनी इस भूल को समझा। उस दिन से वह अपनी भूल को दोहराता। वह यह भी कहता कि इस भूल के कारण वह ऊंचा नहीं उठ सका। वह कहा करता था कि सभी सफल व्यक्ति तुरन्त निर्णय करते हैं और उनका निर्णय अटल होता है।

त्रुटियां या भूलें कैसी भी हों वे आपकी प्रगति में भयंकर रूप से बाधक होती हैं; वह चाहे काम को टालने की हों या समय का पालन न करने की हों, फौरन ही क्रोधित होने की हों या तर्कहीन व्यवहार की आदत हो। बुरी आदत सदा बुरी है और वह आपको कमजोर बनाती है, परन्तु जब मनुष्य अपने मन के साथ बातचीत करता है, बुराइयां छोड़ने का निश्चय करता है, तब वह अपने अधिक श्रेष्ठ एवं गुणी स्वरूप को प्रकट करने लगता है। बार-बार उस आदर्श मूर्ति की कल्पना करता है, जिसके समान वह स्वयं बनना चाहता है। तब वह निरन्तर अपनी योग्यता बढ़ाता जाता है और अपने हाथ में लिए हुए कार्य को पूर्ण करने का दृढ़ निश्चय करता है, प्रण करता है।
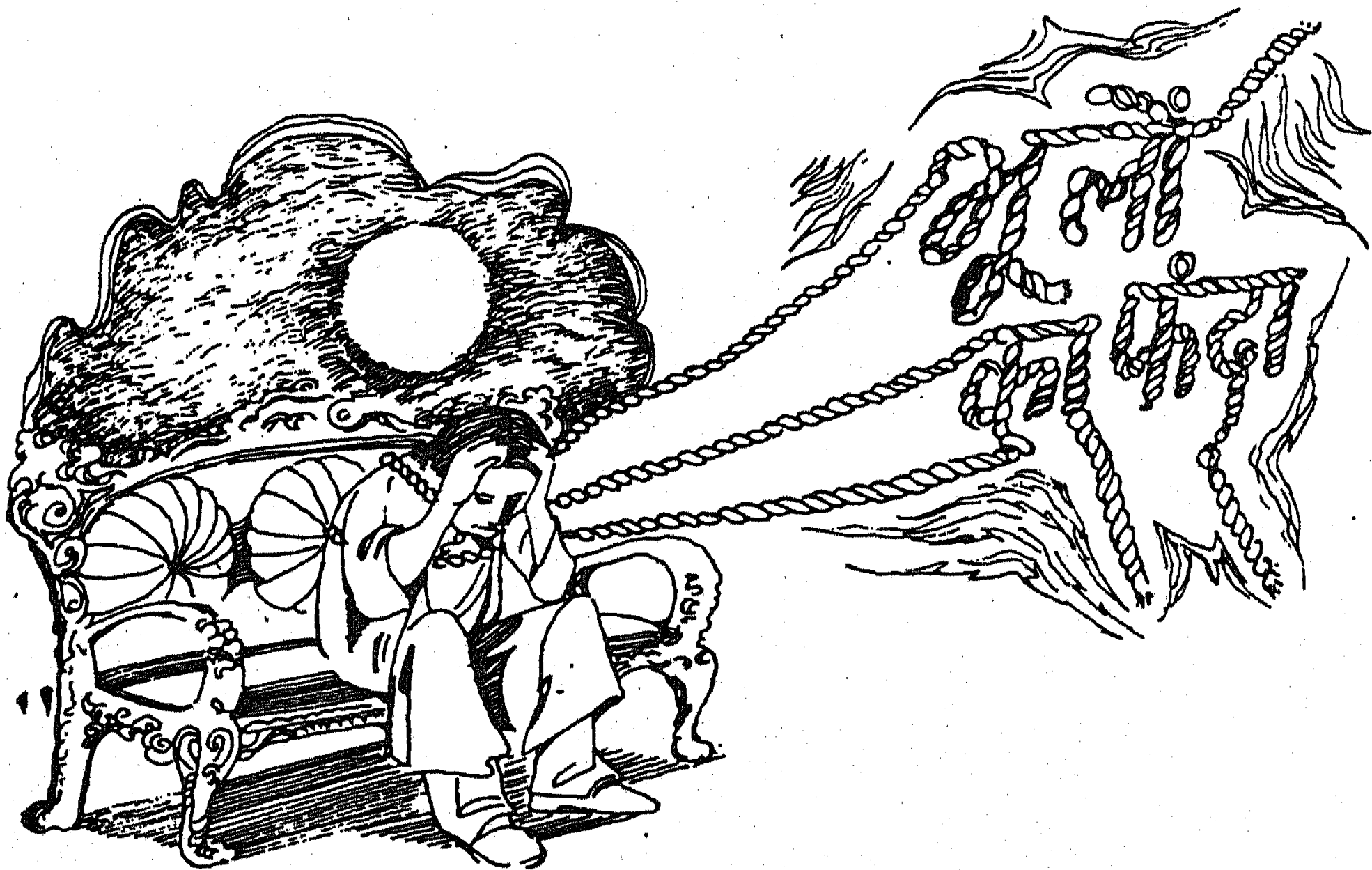
त्रुटियां या भूल चाहे काम को टालने की हों, समय का पालन न करने की या फौरन ही क्रोधित होने की अथवा तर्कहीन व्यवहार की, वे आपकी प्रगति में भयंकर रूप से बाधक हैं।

सफलता के लिए अपनी आत्मा से इस प्रकार का उद्बोधन जितना अधिक सहायक होता है, अन्य कोई भी उपाय उतना कारगर नहीं होता।

न्यूयार्क का एक युवक प्रातःकाल सेण्ट्रल पार्क में घूमने जाया करता था। उस समय वह अपने अन्तर्मन से बातें किया करता था। वह बात करता था, "दिन भर भले ही कुछ भी हो, मैं आपे से बाहर नहीं होऊंगा, परिस्थितियां कैसी भी हों, मैं सज्जनता हाथ से न छोड़ूंगा। मैं चिन्ता और दुर्बलता के भाव अपने मन में न आने दूंगा, क्योंकि इनसे शक्तियां क्षीण होती हैं। मुझे तो पूरी तरह प्रभावशाली ढंग से काम करते रहना है।"

उस युवक ने बताया कि इससे उसकी कार्यकुशलता में भारी वृद्धि हुई। इसके साथ ही पहले उसमें काम के समय जो हीन भावना पैदा हो जाती थी, वह भी समाप्त हो गई। आत्मसुधार की यह विधि विशेष टॉनिक का काम करती है। इससे श्रेष्ठतम कार्यशक्ति का विकास होता है। मन के साथ बातचीत करके मनुष्य दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति करता जाता है।

आप भी उस युवक की विधि अपनाकर अपनी सहायता कर सकते हैं। इस प्रकार अपने मन के साथ बात करके मनुष्य को वही लाभ प्राप्त होता है जो किसी हितैषी सलाहकार से बात करके होता है।

जब कभी आपको आत्मसम्बोधन का अवसर मिले तो आपको ऐसे एकान्त में चले जाना चाहिए, जहां कोई भी न हो। उस समय आप अपने निश्चय पर विचार करें और अपने से बातचीत करें। यदि आप आवश्यक समझें तो भावावेश में अपने को सुधारने का निश्चय करें। आप यह देखकर आश्चर्य में पड़ जाएंगे कि आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तन होने लगे हैं। इस समय आप जो निश्चय करेंगे, आप उन पर स्थिर रहेंगे। उस समय आपको अपने निश्चय के अनुसार कार्य करने के लिए अधिक शक्ति और अधिक योग्यता प्राप्त होगी।

मनुष्य में कई दोषपूर्ण आदतें होती हैं, अनेक अवगुण भी होते हैं, जिनसे आदमी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ नहीं पाता, क्योंकि इन अवगुणों से जीवनशक्ति क्षीण होती है। ऐसे अवगुणों को, ऐसी आदतों और स्वभाव को आप आत्मसम्बोधन द्वारा ही दूर कर सकते हैं। अपने आप से बात करने से यह दोष दूर होने लगेंगे और आप अपनी दुर्बलता पर विजय प्राप्त कर लेंगे। अपने अवगुणों, अपनी बुरी आदतों के सम्बन्ध में आपको आत्मसम्बोधन इस प्रकार करना होगा—"यह है वह बुरी आदत, जिसने मेरी शक्ति को नष्ट किया है। इस अवगुण के कारण ही मैं अपने काम में इतना साहसी और उत्साही नहीं रह पाया। इसी के कारण मेरा स्वास्थ्य भी चौपट हुआ और इसी की वजह से मैं अपने काम में उतना चतुर नहीं रहा, जितना मुझे होना चाहिए था। इसी खराब आदत के कारण ही मैं अपने मन को वश में नहीं कर पाता, जैसा होना चाहिए। इसके कारण ही मेरी यह दीन-हीन अवस्था हो गई है। मैं अब निश्चय कर रहा हूं कि मैं इसका परित्याग कर दूंगा। मैं अबसे उसे छोड़ रहा हूं।"

व्यक्ति को इसी आदत के सम्बन्ध में आत्मसम्बोधन में यह भी कहना चाहिए—"इस गन्दी आदत के कारण मेरा जीवन क्षीण हुआ था और मैं दीन-हीन बना था। इसी के कारण मैं लोगों की हंसी का पात्र बना और इसी वजह से मैं दूसरों के मुकाबले पिछड़ जाता हूं, यद्यपि अन्य लोगों की अपेक्षा मुझमें अधिक योग्यता है, परन्तु यह सब होते हुए भी वे लोग मुझसे बहुत अच्छा काम कर जाते हैं। भविष्य में मैं इस आदत से छुटकारा पा लूंगा। मुझे हर कीमत पर इससे छुटकारा पाना ही है और इसके शिकंजे से मुक्त होना है।"

यदि वह दोष एक दुराचार है तो आप अपने मन से यूं बातें कीजिए—"मेरे जीवन को

कलंकित करने वाली इस आदत से बुरी और कोई बात नहीं। मैंने अपने जीवन के सुख और आनन्द को स्वयं नष्ट किया है। यह तो अभिशाप है, मेरे जीवन का कलंक है। यह तो मनुष्यता का कलंक है। इसी के कारण मेरी सन्तान और पत्नी का भविष्य भी अन्धकारमय बन रहा है। इसके अतिरिक्त मुझमें कोई दोष नहीं। इससे मेरा चरित्र, मेरा आत्मसम्मान और निश्चय नष्ट हुए हैं। इसी के कारण मैं जीवन में प्राप्त सुअवसरों से लाभ नहीं उठा पाया। मैं अपनी दृष्टि में ही गिर गया हूं; इसी के कारण मुझे पश्चाताप की ज्वाला में जलना होगा। इसी के कारण मैं अपने किसी भी काम में सफल नहीं हुआ। मैं अब और खतरा मोल नहीं ले सकता। अकस्मात तो यह आदत छूट नहीं पाएगी, इसीलिए मैं निश्चय करता हूं कि इस बुरी बला को अपने से दूर रखूं। अरे मेरे मन के पाप! मुझसे दूर हो जा।"

आप जब कभी भी अकेले हों, इस तरह अपने मन से बातचीत कीजिए और इस आदत के निश्चय को दोहराइए। इससे आपकी इच्छाशक्ति इतनी दृढ़ और प्रबल हो जाएगी कि आपकी बुरी आदतें निर्बल होकर नष्ट हो जाएंगी।

आत्मसम्बोधन और चिन्तन के समय आपको अपने निश्चय पर अटल रहने का पुनः प्रण करना होगा, अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त करके अपनी शक्तियों व क्षमताओं पर विचार करना होगा और अधिक सामर्थ्य प्राप्त करने की ओर ध्यान देना होगा। इस प्रकार के आत्मसम्बोधन से यह बुरी आदत स्वयं छूट जाएगी और आप उस पर काबू पा लेंगे। बस, देरी तभी तक है जब तक आप इसे जड़मूल से नष्ट करने का बीड़ा नहीं उठा लेते।

ऐसा न तो कभी सोचिए और न मन से कहिए, "यह बुरी आदत छूटनी कठिन है।" सदा कड़े शब्दों में प्रण करना चाहिए, "मैं तो बहुत ही सुदृढ़ व्यक्ति हूं, मैं जैसा चाहूंगा वैसा ही होगा, वैसा ही बनूंगा। मैं अपनी बुराई की जड़ खोद डालूंगा। इसे मैंने आज, नहीं-नहीं अभी से छोड़ दिया।" ठहाका मारकर अपनी बुरी आदत का उपहास उड़ाओ और कहो, "तो मैंने इस पर विजय प्राप्त कर ली। मेरा जन्म इसलिए नहीं हुआ कि मैं बदनाम जीवन व्यतीत करूं और पापी या गन्दा आदमी कहलाऊं। क्या ईश्वर ने मुझे इसीलिए बनाया है? मैं जब तक इस गन्दी आदत के वश में रहूंगा, कभी उच्च और सम्मानित व्यक्ति नहीं बन पाऊंगा, मैं इस आदत का गुलाम बनकर नहीं रहूंगा। अब यह गन्दी आदत मेरे जीवन में कभी नहीं आ सकती। मैंने आज इसकी जड़ खोद ही दी। बस, अब यह कभी नहीं पनप सकेगी।"

यदि आप इस प्रकार आत्मसम्बोधन करेंगे तो आप देखेंगे कि आपके शारीरिक ढांचे में ही परिवर्तन आने लगा है। आपकी दिनचर्या भी बदल जाएगी और आपके काम करने के ढंग में सम्मानजनक परिवर्तन आ जाएगा। आपको अपनी विजय का अनुभव होगा, आपको सुख का अनुभव होगा। आप मनचाही उन्नति और प्रगति की ओर बढ़ने लगेंगे।

पहले-पहल जब आप अपने आप से बातें करेंगे तो आपको यह व्यवहार मूर्खतापूर्ण प्रतीत होगा। आप आरम्भ में इसका महत्व न आंक सकेंगे, परन्तु ज्यों-ज्यों आपको पता चलेगा कि इस क्रिया द्वारा आपमें किस प्रकार शक्ति का संचार हो रहा है तो आप स्वयं और उत्साह से इसका अभ्यास करने लगेंगे।

आपमें दोष चाहे बड़ा है या छोटा, आत्मसम्बोधन की विधि से आप उसे दूर कर सकते हैं। यदि आपके स्वभाव में दब्बूपन हो, आप लोगों का सामना करने में शरमाते हों, आपको अपनी कार्यशक्ति अथवा योग्यता पर भरोसा न रहा हो, चाहे कैसी भी बुरी लत लग गई हो, आप निश्चित रूप से आत्मसम्बोधन द्वारा उससे छुटकारा पा सकेंगे, आत्मसम्बोधन ऐसी रामबाण औषधि है कि आप इसकी शक्ति से चकित रह जाएंगे।

आप अपने आपको छोटा क्यों समझते हैं? आपका जन्म गौरवशाली कार्य करने के लिए हुआ है। आप की रीढ़ की हड्डी में बल होना चाहिए, आपके कदम स्थिर होने चाहिए और दृष्टि निर्भय। आपका जन्म कीचड़ में गिरने के लिए नहीं हुआ, लजाने या शरमाने के लिए भी नहीं, निन्दापूर्ण जीवन बिताने के लिए भी नहीं, सदा गिड़गिड़ाने के लिए भी नहीं, सदा क्षमा मांगने के लिए भी नहीं। आपको जीवन अपमान सहने के लिए नहीं मिला, कमजोर और दुष्ट कहलाने के लिए भी नहीं मिला।

आपमें यदि किसी कार्य को आरम्भ करने की शक्ति या क्षमता नहीं तो दृढ़ता से निश्चय कीजिए कि आप अवश्य ही काम करेंगे। आप काम आरम्भ करें तो दृढ़तापूर्वक प्रण कीजिए कि आप इसे पूर्ण करके ही रहेंगे। निश्चय करके उसमें जुट जाइए। काम को बढ़िया बनाइए और अपनी सारी कार्यकुशलता को उसमें झोंक दीजिए। निरन्तर श्रम कीजिए और फिर देखिए कि सफलता के फूल खिलते चले जाएंगे।

यदि आपके स्वभाव में संकोच है, आपको मित्र बनाने की कला नहीं आती और आप अपने को घटिया समझते हैं, अपने को उतना अच्छा नहीं समझते जैसा समझना चाहिए तो आज ही निश्चय कर लीजिए कि आप अपने में परिवर्तन करेंगे। आप आज से ही आत्मसम्बोधन आरम्भ कीजिए, आपकी सारी कमजोरी और बुराइयां दूर हो जाएंगी।

आत्मसम्बोधन करते हुए अपने मन में यह बात न आने दीजिए कि लोग आपको देखकर आपकी हंसी उड़ा रहे हैं, परन्तु घबराइए नहीं और अपने को श्रेष्ठ व्यक्ति समझिए, श्रेष्ठ व्यवहार कीजिए, फिर किसकी हिम्मत है जो आपका मजाक उड़ाए।

आप आत्मसम्बोधन कीजिए, "मैं तो श्रेष्ठ मनुष्य हूं, मैं राजकुमार हूं; मैं ईश्वर की श्रेष्ठ रचना हूं। फिर मैं स्वयं को घटिया क्यों समझूं? मैं किस बात में निकृष्ट हूं? मैं तो वे सभी श्रेष्ठ कर्म कर सकता हूं जिन्हें दूसरे व्यक्ति कर सकते हैं। मेरे जीवन का लक्ष्य तो पूर्ण मनुष्य बनना है। मैं तो प्रत्येक स्थिति का सामना कर सकता हूं, तो फिर हार किस बात से मानूं?"

यदि आप किसी कार्य के सम्बन्ध में शीघ्र निर्णय नहीं कर सकते, यदि आप दुविधा में पड़े रहते हैं, असमंजस में डूबे रहते हैं तो एकान्त में दृढ़ होकर अपने मन से कहो, "ओ मेरे मन! जल्दी-जल्दी और दो टूक फैसला किया कर, दुविधा की आदत छोड़ दे। आज से मैं ऐसा न चलने दूंगा।"

आप आज ही निश्चय कर लीजिए कि आप काम को इस रफ्तार से करें कि आपकी योग्यता के सम्बन्ध में किसी को सन्देह न रहे। अपने मन से कहिए, "काम न करने से तो अच्छा है कि काम किया जाए, भले ही उसमें कुछ भूलें रह जाएं, क्योंकि मनुष्य भूलों से ही सीखता है।"

यदि आपने किसी कठिन काम को करने का बीड़ा उठाया है, भले ही वह असम्भव प्रतीत होता हो, परन्तु उसे करने का उत्तरदायित्व आप पर आ पड़ा है तो किसी एकान्त स्थान में चले जाइए। अपने आपसे बातचीत आरम्भ कीजिए, परन्तु एक मित्र की तरह और ऐसे मित्र की तरह जिसमें वह काम करने की योग्यता हो, परन्तु साहस न हो। इस बातचीत में अपने दृढ़ निश्चय का प्रण कीजिए। अपने आत्मविश्वास को बढ़ाइए। अपने व्यक्तित्व को विजयी का रूप दीजिए और पूरे उत्साह, जोश और उमंग के साथ वह काम आरम्भ कर दीजिए।

अपने आपसे बातचीत के समय यदि आप अपने प्रति ईमानदार हैं, दृढ़ता से अपना निश्चय दोहराएंगे, यदि आप अपने निर्णय को अन्तिम, अटल और अपरिवर्तित मानकर चलेंगे तो आपको महान आश्चर्य होगा कि वह काम सरल हो गया है और आपकी कार्यशक्ति बढ़ जाएगी। आपका उत्साह बढ़ेगा, आपका आत्मविश्वास बढ़ जाएगा और आपमें अपने विचारों को कार्यरूप में परिवर्तित करने की शक्ति आ जाएगी।

एक नवयुवक परिचित लोगों से भेंट करने में भी लज्जा अनुभव करता था। उनसे बातचीत में भी वह घबराता और संकोच करता। ऐसा अपना अवमूल्यन करने से ही हुआ था। वह अपने आपको दूसरों से घटिया समझता था। वह अपने गुणों को, अच्छाइयों को भी बुराई समझता था। किसी व्यक्ति ने उसे आत्मसम्बोधन का सुझाव दिया। अपने मन से बातचीत करने से वह एक सर्वथा परिवर्तित व्यक्ति बन गया। बाद में लोगों को सन्देह होता था कि क्या यह वही व्यक्ति है जो पहले झेंपता और हिचकिचाता था। आत्मविश्वास के कारण उसके व्यक्तित्व का ऐसा विकास हुआ कि वह जहां भी जाता, अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ता; जब बातचीत करता तो लगता मानो फूल झड़ रहे हैं। उसकी बातचीत का लोगों पर तुरन्त प्रभाव पड़ता।

उस युवक ने अपने अनुभव मुझे बताए कि वह गांव की ओर जाकर नदी के किनारे टहलता हुआ अपने मन से बातचीत करता, "आर्थर, क्या तुममें कोई गुण नहीं? यदि कोई गुण है तो उसे ढूंढ़ो। मूर्ख मत बनो। तुम भी वैसे ही श्रेष्ठ व्यक्ति हो जैसा अन्य कोई श्रेष्ठ व्यक्ति है। अपने मस्तक को ऊंचा उठा लो और मनुष्य बनो। दूसरों से बातचीत और व्यवहार करने में डरना और संकोच करना छोड़ो। लोगों के पास जाओ और उनसे बातचीत करो और अपने को घटिया मत समझो। खुश रहो। तुम तो ईश्वर की सन्तान हो। इस संसार में तुम्हारा भी उतना ही अधिकार है जितना किसी बड़े-से-बड़े आदमी का। कभी भी क्षमायाचना की मुद्रा में दूसरों के सामने मत जाओ।

उस युवक ने अपने गुणों पर विचार किया और उनकी सराहना करनी आरम्भ कर दी। वह उन गुणों को दूसरों के सामने प्रकट करने लगा, इससे उसने ऐसा चमत्कार देखा कि लोग उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखने लगे।

वह फिर एकान्त में जाता और अपने से कहता, "आर्थर, तुमने तो कमाल कर दिया। तुमने बहुत बढ़िया काम किया। यह तो बहुत गर्व की बात है। इससे प्रकट होता है कि तुम वाकई योग्य व्यक्ति हो। प्रत्येक अवसर पर इसी तरह आगे बढ़कर अपने व्यक्तित्व का प्रकाश किया करो। लोग तुम्हारी प्रशंसा करते थे। तुम संसार में 'कुछ' बन सकते हो।"

दब्बू और लज्जाशील व्यक्तियों के लिए अपने आपसे बातचीत करने से बढ़कर कोई अन्य उपचार नहीं। यदि आपका आत्मविश्वास समाप्त हो गया है और आप आत्मनिर्भरता प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने आपसे बातें कीजिए।

अपने मन की तुच्छ इच्छाओं को त्यागकर अपने सम्पूर्ण विचारों को अपने लक्ष्य पर केन्द्रित करें, आपकी मनोकामनाएं निश्चित ही पूर्ण होंगी।

जब मनुष्य को अपने महत्व का अनुभव हो जाता है, उसे इस बात का भान हो जाता है कि उसमें भी दिव्य गुण हैं तो लघुता स्वयं समाप्त हो जाती है। उस समय वह दीन-हीन नहीं रहता। जिसे अपनी कार्य करने की शक्ति का बोध हो जाता है, वह धूल में क्यों पड़ा रहेगा? वह अपने लिए उचित व गौरवपूर्ण पद अवश्य ही प्राप्त करके रहेगा।

आप जिन पदार्थों को प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, उन्हें प्राप्त करने का, उन्हें वश में करने का प्रण कीजिए। आप जिन गुणों को प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प कीजिए। अपने मन की सारी शक्तियों को अपने उद्देश्य की ओर लगा दीजिए। मन की तुच्छ इच्छाओं को दूर हटाकर अपने सम्पूर्ण विचारों को अपने लक्ष्य पर केन्द्रित कर दीजिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो यह निश्चय समझिए कि आपकी मनोकामनाएं अवश्य पूर्ण होंगी।

इच्छापूर्ति का सरल मार्ग

ऐश्वर्य और समृद्धि, इनकी इच्छा सबसे पहले हमारे मन में जन्म लेती है। यदि हमारे मन का झुकाव समृद्धि की ओर नहीं है, अर्थात वह किसी अन्य दिशा में प्रयत्नशील है तो धनी या सम्पत्तिवान व्यक्ति बनना असम्भव है। इच्छा उस नींव की भांति है जिस पर वास्तविकता का महल साकार होता है।

इच्छा पूर्व में जाने की हो और हम पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख हों तो जाहिर है कि पूर्व दिशा के गंतव्य को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। यह एक सर्वथा हानिप्रद परिस्थिति है। हम जो कुछ बनना चाहते हैं, उसका एक ढांचा सबसे पहले हमारे मन में ही बनता है। इसके पश्चात मन द्वारा निर्मित रूपरेखा को आधार बनाकर ही हमारी इच्छा या अभिलाषा एक आकार के रूप में हमारे समक्ष आती है।

जिस व्यक्ति को गरीबी का ही दुःस्वप्न सदा भयभीत करता है, वह अपने लिए प्रायः दरिद्रता को स्वीकार कर लेता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी विपुल धन-सम्पत्ति का स्वामी नहीं बन सकता। आप जिस लक्ष्य की इच्छा ही नहीं करते, उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

जब आप कदम-ब-कदम निराशा और असफलता की ओर बढ़ रहे हैं, तब इष्ट-सिद्धि के मन्दिर में कैसे पहुंच सकते हैं?

आपने प्रकाश की ओर से मुंह ही फेर लिया है। निराशा से आपका हृदय कंपित है तथा आपकी मनोवृत्ति भी आपको काहिली और निष्क्रियता की ओर ले जा रही है—अर्थात आप अपने लक्ष्य से एकदम उल्टी दिशा की ओर जा रहे हैं—फिर आपका सारा पौरुष (पुरुषार्थ) व्यर्थ हो जाए और आपकी सारी योग्यताएं बेकार सिद्ध हो जाएं तो इसमें आश्चर्य का विषय कुछ भी नहीं।

अधिकांश व्यक्ति संसार की जटिल समस्याओं का ठीक प्रकार से—सोच-विचार करके—मुकाबला नहीं करते। वे प्रायः अपनी ही कोशिशों के नतीजों को अपने ही अकरणीय आचरण से नष्ट कर देते हैं, क्योंकि उनकी चित्तवृत्ति का उनके प्रयत्नों से कहीं मेल नहीं होता।

जिस व्यक्ति को गरीबी का ही दुःस्वप्न सदा भयभीत करता है, वह कभी भी विपुल धन-सम्पत्ति का स्वामी नहीं बन सकता।

काम किसी अन्य दिशा में करना तथा किसी दूसरे लक्ष्य की सिद्धि की आशा करना भ्रान्ति ही है। जो व्यक्ति ऐसा करते हैं वे आते हुए इष्ट-सिद्धि के परिणाम को हतोत्साहित करते एवं अपने से दूर भगाते हैं, क्योंकि वे कभी अपने चिर-अभिलषित लक्ष्य पर ध्यान को एकाग्र नहीं करते तथा पूरे आत्मविश्वास के साथ प्रयत्नशील नहीं होते, अतः अभिलषित लक्ष्य यानी इच्छित पदार्थ की प्राप्ति से सदा दूर ही रहते हैं। केवल दृढ़ इच्छाशक्ति एवं आत्मविश्वास के साथ अपनी समग्र योग्यताओं को इच्छित लक्ष्य पर एकाग्र करने से ही सफलता प्राप्त होती है। कार्य के पूरा होने की आशा, दृढ़-निश्चय तथा आत्मविश्वास की पूंजी से कार्य शुरू करने वाला व्यक्ति कभी पराजय का मुंह नहीं देखता।

धन-सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य-प्राप्ति की इच्छा रखना और दरिद्रता के भय से सदा भयभीत रहना परस्पर विरोधी व एक-दूसरे को नष्ट करने वाली चेष्टाएं हैं। आप जिस लक्ष्य को पाने की इच्छा रखते हैं, उसे प्राप्त करने के लिए यदि आपको अपनी योग्यता पर ही भरोसा नहीं है, तो यह बात आपको लक्ष्य-सिद्धि की विपरीत दिशा में ही ले जाएगी। इच्छित वस्तु की प्राप्ति में सफल होने का एकमात्र मार्ग यही है कि आप जिस वस्तु को चाहते हैं, उसकी प्राप्ति की आशा भी करें और उसे निकट लाने के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति तथा आत्मविश्वास से अपने को सदा उद्यत रखें। यदि आपको अपनी शक्ति पर, कार्य-सम्पादन की अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं है तो आप असफलता का ही वरण करेंगे।

जो व्यक्ति अपनी इष्ट-प्राप्ति में पूर्ण रूप से सफल होना चाहता है, उसे अपने हृदय को सफल होने की भावना से भरा-पूरा रखना चाहिए। उस व्यक्ति को सदा प्रगतिशील दृष्टिकोण से, रचनात्मक एवं विधेयात्मक विचारों से, हानि-लाभ की गम्भीर और सन्तुलित भावना से तथा सबसे अधिक दृढ़ आशावाद से परिपूर्ण रहना चाहिए।

आप जिस दिशा की ओर चल रहे हैं, उसी दिशा में पहुंचेंगे। यदि लक्ष्य निश्चित करने के बाद भी आपके पैर अभाव की ओर, दरिद्रता की दिशा में ही गतिशील हैं तो स्वभावतः आप वहीं पहुंचेंगे। इसके विपरीत यदि आपके पैर उधर का मार्ग छोड़कर समृद्धि और ऐश्वर्य के मार्ग पर चल पड़ेंगे, तो आप अवश्य ही अपने लक्ष्य—धन-सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति—को प्राप्त करने में सफल हो जाएंगे।

हममें से काफी लोग किंकर्तव्यविमूढ़ होकर प्रायः एक-दूसरे की काट करने वाले कामों में ही लगे रहते हैं। उनका अगला कदम प्रायः पिछले कदम की काट की दिशा में ही उठता है। जब हमने मन ही में यह भावना बना ली है कि हम तो दरिद्र ही रहेंगे तो हम धनी कैसे बन सकते हैं? जब हमारे दिल-दिमाग में दरिद्रता ही अपने पैर जमाकर बैठ गई तो वहां समृद्धि और ऐश्वर्य के लिए जगह ही कहां बची है? हम जिस चीज का पूरी शक्ति से विचार कर रहे हैं, वही तो हमारे सामने आएगी।

विचार-शक्ति का अभाव, निराशाग्रस्तता, अनिश्चय और भय से उद्विग्न रहना, आत्मविश्वास की दरिद्रता और काहिली ने ही हमें दरिद्र बना रखा है।

यदि आप सम्पत्तिवान बनने का प्रयत्न कर रहे हैं और आपने अपनी योग्यता और शक्ति को पूर्ण रूप से सम्पत्तिवान बनने में लगा रखा है, तो फिर दरिद्रता तथा अभावग्रस्तता का नाटक मत कीजिए। आप अपनी मनोवृत्ति धनिकों-जैसी बनाइए। अपने हृदय को विशाल बनाइए और धनी आदमी जैसी ही आदतें बनाइए। आपकी किसी भी चेष्टा से लोगों पर गरीबी प्रकट नहीं होनी चाहिए। आपके चारों ओर का वातावरण जब तक दरिद्रता तथा अभाव की दूषित वायु से बिगड़ा हुआ है, तब तक दूसरे लोगों पर आपके दरिद्र होने का ही प्रभाव पड़ेगा। ऐसी दशा में आपकी कोई मूल्यवत्ता (साख) नहीं बन सकेगी और न आप समृद्धि एवं ऐश्वर्य को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो सकेंगे।

कहानी मशहूर है कि जैसे ही लोमड़ी की मीठी बातों के लोभ में आकर चिड़िया मुंह खोलती है, वैसे ही चोंच में अटके हुए चारे से छुट्टी पा जाती है। जब-जब आप अपने अभावों का रोना रोते हैं, उतनी ही बार जैसे आप ढोल पीट-पीटकर लोगों को बताते हैं कि आप गरीब हैं—"मैं तो बहुत ही दरिद्र हूं, मेरी कार्यशक्ति बिल्कुल शून्य है। जैसा दूसरे कर रहे हैं, वह मैं नहीं कर सकता। मैं कभी अमीर नहीं बन सकता। मुझमें वे विशेषताएं नहीं जो अन्य लोगों में हैं। मैं सदा ही असफल रहा हूं, मेरा भाग्य कभी साथ नहीं देता"—यदि आप आपकी विचार-सरिता इसी रूप में बह रही है तो समझ लीजिए कि अपने मार्ग में आप स्वयं ही झाड़-झंखाड़ खड़े कर रहे हैं। ऐसा करके आप दरिद्रता

रूपी दुश्मन को हराने का मौका ही गंवाए दे रहे हैं। इस प्रकार आप न सिर्फ अपनी शान्ति और सन्तोष को गंवा रहे हैं, बल्कि कष्टों, व्याधियों और भाग्यहीनता को भी आमंत्रित कर रहे हैं।

विचारशक्ति चुम्बकीय गुण से युक्त होती है। वह सदा हमारे विचारप्रवाह में बहने वाली वस्तुओं को ही आकर्षित करती है। यदि आपकी विचार-सरिता में दरिद्रता की तरंगें ही उठती हैं तो आप समृद्धि के सागर पर कभी न पहुंच सकेंगे। यदि आप सदा व्याधियों-कष्टों का ही विचार करते रहते हैं तो आप स्वास्थ्य-सरिता के जल का आचमन नहीं कर सकेंगे। आपके मन में जिन भावों का चित्र बन रहा है, उसके विपरीत कोई तस्वीर आपके हृदय-पटल पर नहीं आ सकेगी; क्योंकि आपकी चित्तवृत्ति जिस निर्माण-कार्य में लगी हुई है, वही साक्षात होकर आपके समक्ष प्रकट होगा। निष्कर्ष एकदम स्पष्ट है; आप जो कुछ प्राप्त करते हैं, वही पहले आपके मन के परदे पर आता है और वही बाद में आपकी आंखों के सामने आता है।

अनादर, अभाव और असफलता का सर्व सम्मिलित त्रास, बहुत प्रबल इच्छाशक्ति वाले मनुष्य की बुद्धि को भी कुंठित कर देता है।

अनादर, अभाव और असफलता का सम्मिलित त्रास बहुत प्रबल इच्छाशक्ति वाले मनुष्य की बुद्धि को भी कुंठित कर देता है। इसके कारण मनुष्य की कार्य सम्पादन करने

वाली प्रमुख शक्तियों को आघात लगता है। डर और उसकी भावना व्यक्ति की कार्यशक्ति को एकदम नष्ट कर देते हैं। निरन्तर चिन्ताशील बने रहने वाले व्यक्ति की चमक एकदम मन्द हो जाती है और सफलता की प्राप्ति के लिए उसकी रचनात्मक शक्ति का ह्रास होकर उसकी सारी शक्तियां जवाब दे जाती हैं।

प्रत्येक काम को निर्माण-बुद्धि से देखना तथा उसके उज्ज्वल पक्ष को आशापूर्ण दृष्टि से देखना, उसकी सफलता का पूरा भरोसा करना, अपने दिल-दिमाग को सफलता-प्राप्ति का विश्वास दिलाते रहना, शक-शुबहे के विचारों को दूर रखना, परिणाम के शुभ होने का दृढ़ विश्वास रखना, सच्चाई के साथ किए गए हर एक काम के पूरा होने की आस्था रखना—ये उस व्यक्ति की विशेषताएं होती हैं जो काम को पूरा करता है। ऐसे उद्योगी व्यक्ति कभी असफल नहीं होते।

सन्तुलन, आरोग्य और इष्ट-सिद्धि ही इस दुनिया की वास्तविकताएं हैं। असन्तुलन, व्याधि और कार्य की असफलता इन्हीं के अभाव की दशाएं हैं। अपने हृदय में स्थापित आशा की मूल भावना के बल पर ही आप सन्तुलन, आरोग्य और अपने इष्ट की सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं।

आशा आपकी महत्वाकांक्षा के भवन की निर्मात्री शक्ति है। उत्साह से दीप्त आशा का होना, गिरते मन के लिए सूर्योदय के समान शक्तिप्रद है। वानस्पतिक संसार के जीवन के लिए जिस प्रकार सूर्य की राशियां आवश्यक हैं, उसी प्रकार हर एक प्रकार की कार्य-सम्बन्धी गतिशीलता के लिए आशा-सूर्य का आलोक आवश्यक है। आशा का जीवित-जाग्रत होना हमारे विषादग्रस्त मन के लिए सूर्योदय के समान आह्लादकारी है। इसी से सफल मानव जीवन का निर्माण एवं विकास होता है। आशा की तरंगों में बहती हमारी मानसिक चित्तवृत्तियां उसी तरह तेजस्वी बनती हैं, जिस तरह सूर्य की रश्मियों से समस्त वनस्पति-जगत में चेतना की लहर दौड़ जाती है।

आशाहीनता एकदम नकारात्मक एवं ह्रासात्मक है। निराशावादिता एक ऐसी नारकीय नदी है जिसमें व्यक्ति की सब विशेषताएं—योग्यताएं—जीवन-रस से शून्य हो जाती हैं और इस प्रकार जीवन की प्रगति अवरुद्ध हो जाती है।

जो व्यक्ति हर समय निराशा में डूबे रहते हैं, उनका भविष्य अन्धकारमय ही रहता है। जो हर समय यही सोचता रहेगा कि मेरे हर काम का नतीजा बुरा होगा—मैं हर काम में असफल ही रहूंगा—या जो व्यक्ति केवल काम के अधिकारपूर्ण पहलू का ही विचार करते हैं, वे अपने जीवन में अवांछित, अनिष्टप्रद घटनाएं रोकने में असमर्थ रहते हैं।

किसी भी पदार्थ या वस्तु को अपनी ओर खींचने का पहला मनोवैज्ञानिक मन्त्र है—उसी पदार्थ या वस्तु के बारे में निरन्तर विचार करना। हर एक पदार्थ का प्रतिबिम्ब उसके निजी बिम्ब के अनुसार ही होता है। इस प्रकार वस्तु वैसी ही होती है, जैसी उसके विषय में हमारी भावना होती है। निष्कर्ष यही है कि हम मन में जैसी भावना करते हैं, वैसी ही हमारी उपलब्धि होती है।

यदि कोई मनुष्य चित्रकार या संगीतज्ञ बनना चाहता है तो उसे अपने दिल-दिमाग में चित्रकला या संगीत से सम्बन्धित विचारों को ही स्थान देना चाहिए और निरन्तर उन्हीं विषयों पर सोचना तथा उन विषयों के विशेषज्ञों की संगति करनी चाहिए। उन्हीं विषयों का साहित्य—पुस्तकें, मासिक-पत्रिकाएं देखनी चाहिए। किसी भी प्रकार की मन को निरुत्साहित करने वाली बातें मन में नहीं आने देनी चाहिए। जो व्यक्ति हीन भावों से त्रस्त रहता है, वह प्रायः दीन-हीन ही रह जाता है।

पुरुषार्थ, साहस व निडरता से किए गए सभी कार्यों में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है।

- किसी से भी भयभीत न होओ, साहसी बनो!
- काहिली छोड़कर पुरुषार्थी, उद्यमी बनो!
- किसी भी बाधा या खतरे से मत डरो, निर्भय बनो!

यदि आनन्द में रहना चाहते हो तो विषाद को दूर करो। यदि धनवान बनने की इच्छा हो तो दरिद्रता के विचारों से मुक्ति प्राप्त करो। जिन बातों से आपके मन में दुख पैदा होता है, उनके सम्पर्क में आने से सदैव बचो। ऐसी बातें आपकी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के मार्ग की स्थायी बाधाएं हैं।

निराशा-सम्बन्धी चिन्तन को दिल-दिमाग से दूर हटा दीजिए, उन्हें भूलने की चेष्टा कीजिए। निराशा के विपरीत सदा आशा से भरे विचारों का स्वागत कीजिए। फिर कुछ समय के बाद आप यह देखकर विस्मय करेंगे कि जिन वस्तुओं की, जिन पदों की, जिन कुर्सियों पर बैठने की आप इच्छा करते थे, वे आपकी ओर खिंचते चले आ रहे हैं।

● अपने लक्ष्य के प्रति सदा आशावादी विचार रखिए।
● अपने कार्य के प्रति संलग्नता की नीति अपनाइए।
● अपने उद्देश्य के प्रति गम्भीर और एकाग्र रहिए।

आज आप चाहे जिस दशा में हों—निर्धन हों या किसी निम्न पद पर हों—भविष्य में धनी बन सकते हैं, ऊंचे पद पर व ऊंची कुर्सी पर बैठ सकते हैं। यदि आपमें यह दृढ़ विश्वास है कि आप वर्तमान दीन-हीन दशा से निकलकर समृद्धि और ऐश्वर्य के स्वामी बनेंगे, तो अपने विचारों में से दरिद्रता को तुरन्त दूर कर दें। आप निरन्तर ऐसे विचारों में मन को रमाइए जिनसे सौन्दर्य-बोध जाग्रत हो, प्रसन्नता प्रवाहित हो, हर्ष और आनन्द की तरंगें नाचें। यदि आपके मन में अपनी महत्वाकांक्षा खूब स्पष्ट है तथा उसकी रूपरेखा भी बिल्कुल साफ है तो अपने लक्ष्य पर अपना सारा ध्यान एकाग्र कीजिए और आत्मविश्वास की जमीन पर खड़े होकर अपनी समस्त योग्यताओं के साथ उसे प्राप्त कीजिए। तब आपकी उपलब्धियों को देखकर समाज दंग रह जाएगा।

अपने हृदय में इस विश्वास की जड़ें भली-भांति जमा लीजिए कि आप अपनी चिरकाल से पाली-पोसी अभिलाषाओं को अवश्य पूरी करेंगे। चाहे हमें वर्तमान में इसे पूरा करने के लिए कोई मार्ग नहीं सूझ रहा हो, कोई उपाय नहीं बन रहा हो, किन्तु यदि हम अपने विश्वास का पोषण निरन्तर करते रहेंगे, तो एक-न-एक दिन इसके लिए हमें मार्ग भी सूझ जाएगा, न केवल सूझ जाएगा, बल्कि सिद्धि साक्षात हमारे द्वार पर आकर दस्तक देगी। हमें चाहिए कि अपनी मनोवृत्ति को निरन्तर निर्माण-कार्यों की ओर अभिमुख रखें, अपने लक्ष्य पर निरन्तर दृष्टि रखें। तब यह अवश्यम्भावी हो जाता है कि सिद्धि के सब बानक स्वयं हमारे आस-पास खड़े दिखाई देते हैं या हमें कहीं-न-कहीं, किसी भी समय लक्ष्य-प्राप्ति का मार्ग दिखाई पड़ने लग जाता है।

जिसको अपने आप पर दृढ़ विश्वास या आस्था है, जो निरन्तर अपने लक्ष्य का चिन्तन करता है, जो निरन्तर अपनी कार्य-सम्पदा शक्ति को तीव्र करता रहता है, जो प्रत्येक कार्य को ध्यान को एकाग्र करके करता है, जिसका पुरुषार्थ सतत प्रयत्नशील है और जो कार्यसिद्धि के लिए कठोर परिश्रम और संघर्ष करता है, वह व्यक्ति अपने जीवन में सफलता की जयमाल न पहने, यह असम्भव है। प्रत्येक दशा में उसकी सफलता स्पष्ट और निश्चित है।

अपने मन को सदा उत्साह से भरा-पूरा रखिए। अपनी दिनचर्या सदा काम में व्यस्त रहने की रखिए। अपनी शक्तियों पर सदा गहरा विश्वास रखिए तथा अपनी कार्यशक्ति को सब संशयों से मुक्त रखिए। तब आप जिस दिशा में भी जाएंगे, विजयश्री आपके मस्तक पर टीका लगाएगी।

सन्देह और हिचकिचाहट कार्य-पूर्ति के दो सबसे मायावी शत्रु हैं। ***'संशयात्मा विनश्यति'*** कहकर गीता में भी इन दुर्गुणों की चर्चा की गई है। ये दोनों सन्देह और

संशय—बड़ी-से-बड़ी रचनाशक्ति को नष्ट कर देते हैं। हमारी पूरी महत्वाकांक्षा की दीवार को ढहा देने की शक्ति हमारे इन शत्रुओं में है।

अपने मन में सदा यह बात बार-बार दोहराते रहिए—"मुझे जिस लक्ष्य पर पहुंचना है, मैं उस पर अवश्य पहुंचूंगा। वहां मुझे प्रत्येक मूल्य पर पहुंचना है, मुझे अपने प्राप्तव्य लक्ष्य पर पहुंचने का पूर्ण अधिकार है और मैं वहां पहुंचकर ही रहूंगा।"

मन में सफलता की विचारधारा को अजपा जाप की तरह निरन्तर जीवित-जाग्रत रखने में एक आश्चर्यजनक आकर्षक शक्ति है। सफलता, आरोग्य और सदा प्रसन्न रहने की भावना से यदि आपका अन्तःकरण निरन्तर भरा-पूरा रहता है तो विश्व की प्रत्येक बाधा आपके मार्ग से हटती जाएगी।

विजयश्री की प्राप्ति में दृढ़ विश्वास रखिए और इस विश्वास को दोहराते रहिए। केवल इसी को ध्यान की एकाग्रता का विषय बनाइए। पूरे उत्साह के साथ अपनी प्रयत्न-श्रृंखला जारी रखिए। पूरे उल्लास के साथ सब बाधाओं को दूर करते हुए निरन्तर आगे ही आगे बढ़ते रहिए, आप अवश्य अपने लक्ष्य पर पहुंच जाएंगे।

एक चालीस वर्षीय व्यक्ति के द्वारा पूरे बीस वर्षों में जो कुछ कमाया गया था, वह सब एक अग्निकाण्ड में भस्म हो गया। अब उसके पास अपने बड़े परिवार का पेट भरने की भयंकर समस्या थी और सिवाय कड़ी मेहनत और गम्भीर आत्मविश्वास के उसके पास कुछ भी शेष नहीं रह गया था, किन्तु उसने इतनी दुर्घटना के बाद भी पराजय स्वीकार नहीं की। उसने यह मानने से साफ इनकार कर दिया कि अब वह दुबारा अपने शेष जीवन में पहले जैसी धन-सम्पत्ति इकट्ठी नहीं कर सकेगा। ऐसे तेजस्वी व्यक्ति का तेज मन्द करने का साहस किसमें था? क्योंकि उसने पराजय को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था, अतः वह अपने दृढ़ निश्चय और पूरी शक्ति के साथ पुनः कार्य-क्षेत्र में खम ठोककर खड़ा हो गया और सब लोगों ने देखा कि कुछ ही समय के परिश्रम के बाद वह पुनः पहले से अधिक सम्पत्ति का स्वामी बन गया था।

मनुष्य होने के नाते आप संसार के सबसे उत्तम प्राणी हैं। कितनी भी विपरीत परिस्थितियों में पूरे आत्म-बल, शरीर-बल एवं बुद्धि-बल के साथ खड़े रहने की प्रचुर शक्ति आपको विश्वनियन्ता से प्राप्त हुई है। फलतः आप किसी भी वातावरण या परिस्थिति के दास नहीं बन सकते। आपका निर्माण तो परिस्थितियों तथा वातावरण का सृजन करने के लिए हुआ है। ईश्वर ने स्वतंत्र कर्तव्य-शक्ति दी है। ऐसी दशा में संसार को निरन्तर अपने निर्णय तथा निर्माण की शक्ति से विस्मित करते रहिए।

इस सच्चाई से सभी परिचित हैं कि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। सबसे पहला कारण हमारी वह मानसिक प्रेरणा या उमंग होती है जो हमें कोई नया तथा अनोखा कार्य करने का उत्साह प्रदान करती है। यह मानसिक उत्साह या उल्लास ही हमारे लिए सफलता की परिस्थितियां या वातावरण बनाता है। लेकिन यदि इस मानसिक

उल्लास के स्थान पर हमारा मन विषादग्रस्त होता है तो असफलता का वातावरण बनते भी देर नहीं लगती। अतः यह स्पष्ट तथ्य है कि जैसे हमारे विचार होंगे, हमारे कार्यों का परिणाम भी उनके अनुरूप ही होगा। हमारे कार्यों का परिणाम हमारी विचारधारा से विपरीत किसी भी दशा में हो ही नहीं सकता।

हमारा स्वभाव (प्रकृति), हमारी आदतें और हमारी प्रवृत्तियां सब हमारे विचारों का ही प्रतिबिम्ब होती हैं। हमारी सारी गतिविधियों पर इनका गहरा असर होता है। यदि हम कोई नया काम करना चाहते हैं तो हमें अपने मन को निर्माण की भावना से ओत-प्रोत रखना ही होगा। अव्यवस्थित, चिन्ताओं से आहत, निराशा से प्रताड़ित और दरिद्रता के नाग से दंशित मन सदा ऋणात्मक या नकारात्मक स्थिति में रहेगा। इस दूषित स्थिति में हमारे मन में सदा आत्मघाती या निषेधात्मक विचार ही उत्पन्न होते हैं और उनसे हमारी कार्य-सम्पादन शक्ति का भयंकर पतन होता है। इससे हमारे मन की प्रसन्नता और सफलता के मार्ग में बाधाएं खड़ी हो जाती हैं।

हमारी मानसिक विशेषताएं या योग्यताएं हमारी सेविकाएं हैं। वे हमें ठीक वे ही चीज देती हैं, जिनका हम निरन्तर चिन्तन करते हैं। यदि हम उन पर यह विश्वास करें कि वे हमें सर्वोत्तम वस्तुएं भी दे सकती हैं तो निश्चय ही वे हमें सर्वोत्तम वस्तुएं ही देंगी, किन्तु अपनी भयभीत मानसिकता से हमारी योग्यताएं भी भय-त्रस्त हो जाती हैं। निरन्तर निषेधात्मक विचारों से त्रस्त-भयभीत रहने वाले व्यक्ति घटनाओं के होने का इन्तजार करते रहते हैं। जैसा भी, जो कुछ भी सामने आ जाए, उसे ही मौन रहकर सह लेते हैं। उनकी मान्यता होती है कि किसी भी तरह की घटनाओं को प्रभावित करना उनकी शक्ति के बाहर है।

इसके सर्वथा विपरीत रचनात्मक या धनात्मक मनोवृत्ति वाले लोग घटनाओं को प्रभावित करने की न केवल शक्ति रखते हैं, बल्कि वे तुरन्त उन्हें बदल डालने के लिए प्रयत्न-रत हो जाते हैं।

यह कहना समीचीन और सर्वथा उचित है कि रचनात्मक प्रतिभा वाले व्यक्ति ही महान कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होते हैं। जो व्यक्ति कुछ नया करना चाहता है, उसमें एक बेचैनी होती है, एक छटपटाहट होती है। ऐसा व्यक्ति अग्रगामी (आगे रहने वाला) होता है, काम को आगे बढ़ाने वाला होता है। उसमें काम को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक मात्रा में उत्साह, उमंग और साहस होते हैं। इनके बल पर ही वह संसार को नई चीज बनाकर दिखा देता है और इस प्रकार संसार को विस्मित करके इतिहास में अपना स्थान बना लेता है।

कभी-कभी रचनात्मक प्रतिभा वाले व्यक्तियों की ऐसे लोगों से भी भेंट हो जाती है जो उन्हें ताड़ना के रूप में कुछ ऐसा कह देते हैं, जो उनके आत्मविश्वास और प्रतिभा को खंडित कर डालता है। जब उन्हें—"आप इस पद के अनुरूप योग्यता ही नहीं रखते" या "आप इस व्यापार या व्यवसाय की बारीकियों से अभी अनजान मालूम पड़ते हैं" या "आपमें इस

कार्य को पूरा करने की योग्यता ही नहीं है"—इस प्रकार के वाक्य कहकर अपमानित किया जाता है तो उनकी रचनात्मक शक्ति जवाब दे जाती है। इस तरह के वाक्यों से उनके मन में जितनी कटुता या अवसाद का जन्म होता है, उसके कारण व्यक्ति छोटे-से-छोटे काम को भी शुरू करने में हिचकिचाता है, झिझकता है। उसकी क्रियात्मक प्रतिभा एकदम शून्य हो जाती है। जब उसकी इच्छाशक्ति दुर्बल हो जाती है, उसमें अपेक्षित वेग नहीं रह जाता तो उसकी दृष्टि में महत्वपूर्ण कार्य भी महत्वहीन हो जाते हैं। इस प्रकार एक भरा-पूरा नेतृत्व के गुणों से युक्त व्यक्ति भी खुशामदी टाइप का बेकार व्यक्ति बन जाता है।

किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए बलवती आशा रखने के साथ-साथ मानसिक व बौद्धिक शक्तियों का प्रयोग आवश्यक है।

किसी भी कार्य को, जिसे पूर्ण करने का हमारा व्रत अथवा संकल्प है, अन्तिम रूप से सिद्ध करने में हमारा अटूट विश्वास होना चाहिए। उस कार्य को पूरा करने की हममें बलवती आशा होनी चाहिए तथा सफलता की श्रेणी तक पहुंचने के लिए हमें अपनी—मानसिक एवं बौद्धिक –सभी शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए। ऐसी दशा में उस कार्य को हम निश्चित रूप से पूरा कर सकेंगे।

हमारा आशावाद जितना ही उत्कट होगा, हमारा उत्साह उतना ही विकट होगा। हमारी मानसिक एकाग्रता जितनी दृढ़ होगी, हमारी सफलता उसी अनुपात में भव्य होगी।

इसी बात को हम इस तरह भी कह सकते हैं—हमारी मानसिक शक्तियों का स्वरूप हमारी आशावादिता एवं संकल्प शक्ति के अनुरूप ही होता है।

हम जिस वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करते हैं, उसके स्वरूप का आधार हमारी आशा-आकांक्षा, हमारे विश्वास, हमारे दृढ़ संकल्प और हमारे प्रयत्नों के अनुरूप ही होता है। परिणामस्वरूप वह वस्तु हमें हमारे संकल्प के अनुरूप ही प्राप्त होती है।

जो व्यक्ति सदा श्रेयमार्ग का आलम्बन करता है, यदि अपनी इच्छित वस्तु की प्राप्ति के लिए दृढ़ निश्चय कर लेता है तो उसके मार्ग में कितने ही अवरोध (रुकावटें) आएं, अपनी दृढ़ निश्चयात्मक शक्ति के बल पर वह उन पर विजय प्राप्त करता है और अपने निश्चित लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। वह अपने विरोधी-विचारों—शत्रुसंकल्पों पर भी विजयी होता है, अतः कार्य-सिद्धि का हर्ष उसे मिल ही जाता है। यदि वह अपने अशुभ विचारों से हतोत्साहित हो जाता तो अपने लक्ष्य की प्राप्ति में असफल रह जाता।

हमारा संकल्पहीन मन अनन्त शक्तियों का उद्गम स्रोत है। इनमें से सभी शक्तियों को हम प्रयुक्त नहीं कर सकते, परन्तु हम इन शक्तियों के अस्तित्व को भली-भांति अनुभव कर सकते हैं। ये शक्तियां हमारे आदेशों का यथासम्भव पालन करती हैं और इस प्रकार दृढ़ निश्चयों की पूर्ति कराने के मार्ग में सहायक होती हैं।

कल्पना कीजिए—यदि आप अपने विषय में ऐसा सोचते हैं कि मैं तो अनिवार्य रूप से शक्तिहीन हूं, मुझमें किसी भी कार्य को करने की योग्यता का अभाव है, मुझमें उन योग्यताओं का एकदम अभाव है जो दूसरे उन्नतिशील लोगों में है, तो ये विचार ही आपके मन में अपनी जड़ें मजबूती से जमा लेंगे। इस प्रकार के विचारों को अस्वीकार करना आपकी अस्मिता के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध होगा। यह स्वीकार अदृश्य रूप से आपके अचेतन में स्थान बना लेगा और तब आपकी सभी मानसिक शक्तियां प्रभावहीन हो जाएंगी और वे जो कुछ भी प्रस्तुत करेंगी, वह एकदम तुच्छ और व्यर्थ होगा। यदि आपके विचारों में अयोग्यता, असामर्थ्य एवं दुर्बलता होगी तो आपके जीवन का सारा ढांचा ही दुर्बल, अस्थायी और विनयशील होगा। तब आपके मुंह से भी जो शब्द या वाक्य निकलेंगे वे भी आपकी असामर्थ्य, अकुशलता और दरिद्रता ही व्यक्त करेंगे।

इसके सर्वथा विपरीत यदि आप पूर्ण दृढ़ता से यह संकल्प व्यक्त करें कि मैं विश्व की सभी उत्तम विभूतियों को प्राप्त करने का पात्र हूं, सभी समृद्धियों को प्राप्त करना मेरा जन्मजात अधिकार है—और इस प्रकार निरन्तर यह घोषित करते रहें कि मेरा जीवन लक्ष्य महान है, जो मेरे आचार-व्यवहार और मेरी प्रवृत्तियों से प्रकट होता है—मैं दावा करूं कि कार्य-सम्पादिका शक्ति पर मेरा पूरा अधिकार है, आरोग्यता मेरी सहज सम्पत्ति है, बीमारी से मेरा दूर का भी सम्बन्ध नहीं, अविवेक और असन्तुलन से मेरी कभी मित्रता नहीं—तो मैं अपने मन को इतना क्रियाशील, इतना उत्साही और इतना प्रबल बना सकता हूं कि वस्तुओं को नष्ट करने की अपेक्षा मैं उन्हें नया रूप दे सकता हूं, विध्वंस के स्थान पर नवनिर्माण कर सकता हूं तथा उस दुर्लभ वस्तु या पद को प्राप्त कर सकता हूं, जिसकी मेरे मन में चिरकाल से आकांक्षा है।

हमारे 'रचनात्मक' होने का एक ही अर्थ है—पूर्ण आरोग्य तथा पूर्ण समृद्धि (धन-सम्पत्ति)। हमको इसी लक्ष्य के लिए योग्य बनाया गया है कि हम अपनी प्रतिभा से नई-नई वस्तुओं का उत्पादन करें। निषेधात्मक या विनाशात्मक चिन्तन का अर्थ है—अस्वस्थता, दरिद्रता और विचारशून्यता। रचनात्मक या विधेयात्मक विचारधारा व्यक्ति की संरक्षिका है, वह मनुष्य को अविवेक और असन्तुलन से बचाती है। हारे हुए या पराजित मनोवृत्ति वाले लोगों के समुदाय में वे ही व्यक्ति हैं, जिनका चिन्तन निषेध-परक या ऋणात्मक होता है। विजयी व्यक्तियों के गोल में केवल वे लोग हैं, जो रचनात्मक और निर्माणशील हैं तथा जिनका चिन्तन विवेकपूर्ण या संतुलित है।

उत्साह, उल्लास, कर्मठता, परिश्रमशीलता एवं साहसिकता से युक्त मानसिक प्रवृत्तियां मनुष्य की सर्वाधिक सुरक्षापूर्ण उपलब्धियां हैं। जब हमें 'नहीं' के साथ अपनी दृढ़तापूर्ण असहमति व्यक्त करनी चाहिए, तब यदि हम 'हां' कहते हैं तो यह भी हमारा दोषपूर्ण व ऋणात्मक चिन्तन है। इस प्रकार जब हमारा चिन्तन अविवेकयुक्त एवं असंतुलित होता है, तब हम प्रायः गलत निर्णय या निश्चय कर बैठते हैं। किसी उपयोगी व्यवसाय में साहस के साथ धन लगाने से चूक जाते हैं और इसी तरह के और मूर्खतापूर्ण कार्य कर बैठते हैं। ऋणात्मक मनोवृत्ति वाला व्यक्ति महत्वपूर्ण अवसरों पर भी कभी ठीक निर्णय नहीं ले पाता, जिस समय हम निरन्तर भूल-पर-भूल करते हैं, साहस के स्थान पर भीरुता का प्रदर्शन करते हैं और रुकने के स्थान पर आगे बढ़ जाते हैं—जब हम पूर्णतया निरुत्साहित होते हैं, आशावादिता से शून्य होते हैं, असन्तुलन से डांवांडोल होते हैं और थोड़े सुख के लिए बुरा-भला कुछ भी कर डालने से परहेज नहीं करते, तब हमारा सम्पूर्ण चिन्तन निषेधात्मक या ऋणात्मक ही होता है और यही दशा हमारी तब होती है जब हम भय या चिन्ता से दिङ्मूढ़ होते हैं, क्योंकि निषेधात्मक दशा में हमारा मन उत्साही न होकर कायर बन जाता है।

हमारे मन पर निषेधात्मक या ऋणात्मक विचारों का आक्रमण प्रायः तभी होता है, जब हम किसी रचनात्मक विचार या क्रिया में व्यस्त नहीं होते। जिस समय हमारी कार्य-सम्पादन शक्ति किसी काम में लीन होती है, उस समय ऋणात्मक विचार (घृणा, ईर्ष्या, चिन्ता, फिक्र या भय) हम पर आक्रमण नहीं करते। इससे स्पष्ट है कि हमारा ऋणात्मक (खाली) मन ही चरम निराशा का (शैतान का) आखेट-स्थल बनता है।

प्रायः सामान्य दशा में स्वस्थ मन विवेक, नियम और नीति के अनुसार ही कार्य करता है।

रचनात्मक चिन्तन का अर्थ यही है कि हम अपनी सब विशेषताओं व योग्यताओं के साथ कुछ उपयोगी तथा विशिष्ट उत्पादन करते रहें। निषेधात्मक चिन्तन का अर्थ है—आधि-व्याधि, चिन्ता-दरिद्रता आदि हर प्रकार के कष्ट।

अपनी पूरी शक्ति लगाकर निरन्तर काम में लगे रहने का ही अर्थ है—कार्य-कुशलता।

कुछ व्यक्ति ऐसे ढीले-ढाले बनकर काम करते हैं—और शायद यह उनका सहज

स्वभाव होता है—कि सब मिलाकर भी उनके काम करने का समय (घण्टों का जोड़) बहुत कम रह जाता है। वे पूरे उत्साह के साथ कभी भी अपने काम में लीन नहीं होते, अतः उनकी कुल प्राप्ति बहुत ही कम होती है।

हम किसी भी व्यक्ति से जब पहली बार मिलते हैं तो उसे देखते ही तुरन्त बतला देते हैं कि उसकी कार्यक्षमता (काम करने की शक्ति) प्रचण्ड है या दुर्बल—अर्थात वह शक्ति धनात्मक है या ऋणात्मक। ऐसा व्यक्ति जितना भी बोलता है, उसका प्रत्येक वाक्य इस सत्य को प्रकट कर देता है। हमारे वाक्यों की विशेषता हमारी कार्यकारी शक्ति से अत्यधिक प्रभावित होती है।

कार्य-सम्पादन की शक्ति रखने वाला व्यक्ति जहां भी जाता है, अपने क्रियात्मक वातावरण को भी साथ ही ले जाता है। कुछ लोगों की मनोवृत्ति इतनी रचनात्मक, इतनी धनात्मक या इतनी तीव्र तरंगयुक्त होती है कि सामान्य मनोवृत्ति के व्यक्ति उनसे प्रभावित होकर तुरन्त ही उनका अनुकरण करने-लगते हैं। इस प्रकार के दृढ़ चरित्र वाले कार्यार्थी पुरुष के लिए संसार स्वयं मार्ग बना देता है। महाराज भर्तृहरि ने ऐसे ही व्यक्तियों की प्रशंसा में कहा है—***"मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम।"*** अर्थात—"प्रबल मन वाले तथा कार्य को किसी भी मूल्य पर पूरा करने वाले व्यक्ति न तो दुखों की चिन्ता करते हैं और न ही सुखों की अपेक्षा।" ऐसा व्यक्ति जहां भी पहुंचता है, वहीं आदेश देकर अपने सब कार्य पूरे कराता है। ऐसे व्यक्ति का बोला हुआ एक-एक शब्द गहरे आत्मविश्वास से भरा होता है। सामान्य चरित्र वाले व्यक्ति 'मनस्वी और कार्यार्थी' व्यक्ति के चरित्र की छानबीन नहीं करते। वे तो सहज स्वभाव से, मौन रहकर उसके आदेशों का पालन करने के लिए दौड़ पड़ते हैं।

अनुभव से देखा गया है कि ऐसे स्वभाव वाले अपरिचित व्यक्ति, साक्षात्कार होते ही, हमें अपनी क्रियात्मक शक्ति से प्रभावित कर लेते हैं। उनका दर्शनजन्य प्रभाव ही रचनात्मक, धनात्मक एवं आक्रमणकारी होता है। उनके मन में किसी भी कार्य को सम्पन्न करने के लिए आवश्यक ऊर्जा इतनी प्रभूत मात्रा में होती है कि उनके आते ही हमें ऐसा अनुभव होता है कि 'नेता' आ गया। उसके कुछ काल के सम्पर्क से हम ऐसा अनुभव करने लगते हैं कि यह व्यक्ति जिस काम को भी हाथ में लेगा, उसे अवश्य ही पूरा करेगा। प्रत्येक परिस्थिति को इस व्यक्ति की इच्छा के अनुसार ही बदलना या ढलना होगा।

इसके एकदम उल्टे कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिनके चेहरे से ही दुर्बलता या निष्क्रियता टपकती है, अपनी ऋणात्मक या नकारात्मक मानसिकता के कारण वे हम पर ऐसी छाप छोड़ते हैं मानो वे बेहद लापरवाह हैं, टाल-मटोल करने वाले तथा हर एक काम में असफल रहने वाले व्यक्ति हैं—जिन्हें अपने मार्ग पर द्रुतगति से चलना नहीं आता या जैसे उन्हें अपने कार्य को पूरा करने के लिए कोई रोशनी प्राप्त नहीं होती।

यदि आप समाज पर यह छाप डालना चाहते हैं कि आपका चरित्र क्रियाशील अर्थात

व्यक्तित्व प्रबल है तो प्रत्येक दशा में आपके विचार रचनात्मक यानी धनात्मक होने चाहिए। आपके मन पर इन्हीं धनात्मक या रचनात्मक विचारों का प्रभाव होना चाहिए।

सब कलाओं में सबसे श्रेष्ठ कला अपने मनुष्य-जीवन को सफल एवं विजयी बनाना है। इस कला का ठीक ढंग से प्रयोग करके कोई भी व्यक्ति कुशल बन सकता है।

जो विद्यार्थी विद्याध्ययन पूर्ण करने के बाद सफल होने की कला में पारंगत हुए बिना जीवन-यापन के क्षेत्र में आता है—अर्थात जिस युवक को किसी गुरु ने यह न बताया हो कि धनात्मक और ऋणात्मक विचार किन्हें कहते हैं, इन दोनों में क्या अन्तर है तथा इन दोनों का स्वरूप क्या है—वह शीघ्र ही असफल होकर घर लौट जाता है। उसके मन में प्रतिक्षण पैदा होने वाले सन्देह और संशय, उसका डरपोकपन, उसमें आत्मविश्वास की कमी और निषेधात्मक मानसिकता के लक्षण दूसरों पर बहुत ही शीघ्र प्रकट हो जाते हैं, उत्साह से एकदम शून्य भावनाओं से उसकी स्वाभाविक रचनाशीलता ढक जाती है तथा धनात्मक प्रतिभा मन्द हो जाती है। वह जहां भी काम करता है, लोग उसे अपने 'संस्थान का एक बोझ' की तरह देखते हैं। इस प्रकार एक दक्ष व्यक्ति होते हुए भी वह आकस्मिक रूप से ऋणात्मक (क्रियाहीन) विचारों का शिकार हो जाता है।

कॉलेज या विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यक्ति के हित में कितनी आवश्यक है या अनावश्यक—यह विवाद का विषय हो सकता है; परन्तु किसी भी युवक के लिए यह जानना कि मन और मस्तिष्क की शक्तियां रचनात्मक, जाग्रत, प्रचण्ड और प्रभावशाली कैसे बनती हैं, अत्यन्त आवश्यक है और यह असंदिग्ध रूप से विवाद का विषय नहीं है। प्रत्येक सफलता के आकांक्षी युवक के लिए यह जानना भी—कि मन को कैसे सदा धनात्मक स्थिति में रखा जा सकता है तथा ऋणात्मक या विघातक विचारों से कैसे बचा जा सकता है—बहुत आवश्यक है।

देखने में आता है कि जो कॉलेजों में या विश्वविद्यालयों में बहुत छात्र अच्छे माने जाते हैं, वे भी शिक्षा-समाप्ति के बाद जब जीवन के कर्म-क्षेत्र में आते हैं तो ऋणात्मक या निषेधात्मक मनोवृत्ति से इस प्रकार प्रभावित होते हैं कि जीवन-निर्माण की प्रक्रिया में असफल होकर बैठ जाते हैं। शिक्षा की समाप्ति के बाद यदि युवकों को गहन मानसिक प्रशिक्षण देने के लिए कुछ महीनों के कोर्स की व्यवस्था की जाए तो उनकी मानसिक प्रवृत्तियों को दृढ़, शक्तिशाली और धनात्मक बनाया जा सकता है।

धनात्मक मनोवृत्ति वाले युवक में रचनात्मकता एवं उत्पादकता के मूल्यवान गुण पैदा हो जाते हैं। इस प्रकार के विचारों के प्रभाव से व्यक्ति में से निषेधात्मकता का दुर्गुण दूर हो जाता है। यदि आपमें कार्य में लीन होने की प्रवृत्ति नहीं है, यदि आप किसी कार्य को प्रारम्भ करने में घबराहट महसूस करते हैं, तो इस प्रकार के अल्पकालीन प्रशिक्षण से आप बहुत शीघ्र रचनात्मक प्रवृत्ति वाले बन सकते हैं। धनात्मक विचारों से प्रशिक्षित व्यक्ति में या व्यक्ति की कार्य-सम्पादन सामर्थ्य में गहन उत्पादकता उत्पन्न की जा सकती है। इस

प्रशिक्षण के बाद व्यक्ति जो भी कार्य करेगा, उसी में उपयोगिता और सुन्दरता पैदा हो जाएगी। यहां तक कि उसके आमोद-प्रमोद के क्षण भी कलात्मकता से रंगीन हो उठेंगे।

ऋणात्मक या निषेधात्मक विचारों से किसी भी व्यक्ति का मन बहुत दुर्बल हो जाता है। "मैं यह नहीं कर सकता या मैं वह नहीं करता"—जैसी मनोवृत्ति वाला व्यक्ति अपनी समग्र कार्य-शक्ति को शिथिल कर देता है। यह मनोवृत्ति मनुष्य में निराशा की भावना पैदा करके उसे असफलता, पराजय और पतन की ओर ले जाती है।

सम्पूर्ण योग्यता न होने पर भी आशा से भरे हुए व्यक्ति का काम सर्वांगपूर्ण, उपयोगी और सुन्दर होगा, जबकि निराशावादी व्यक्ति का कार्य असुन्दर, असंगत, अनुपयुक्त एवं असम्बद्ध होगा।

निराशा से ग्रस्त मन में तथा आशा से उत्साहित मन में जमीन-आसमान का अन्तर होता है। सारी योग्यताएं समान होने पर भी आशा से भरे हुए व्यक्ति का काम सर्वांगपूर्ण, उपयोगी और सुन्दर होगा, जबकि निराशावादी व्यक्ति का कार्य असुन्दर, असंगत, अनुपयुक्त एवं असम्बद्ध होगा।

विश्राम करते हुए मन में तथा ऋणात्मक मन में भी भारी अन्तर होता है। विश्राम की दशा में भी व्यक्ति का मन आशावादी हो सकता है, जबकि ऋणात्मकता से ग्रस्त मन कार्य करते हुए भी निराशा से आक्रान्त होता है।

हमारा मन एक करघे के समान है और विचार धागों के समान हैं। यदि हमारे विचार निराशा, कुण्ठा से प्रभावित हैं, उत्साह से शून्य हैं तो वे ऐसे गन्दे धागों के समान हैं

जिनसे बुना हुआ कपड़ा भी दोषयुक्त और भद्दा होगा, किन्तु यदि हमारे विचाररूपी धागे निर्मल हैं, उत्कृष्ट कल्पना और उत्साह के विविध रंगों से रंगीन हैं तथा साहस, कर्मठता एवं वीरता की भावनाओं से मजबूत हैं, तो उनसे बुना हुआ कपड़ा भी उपयोगी, सुन्दर और टिकाऊ होगा।

आप अपने मन को निरन्तर इस विश्वास से आन्दोलित रखिए कि आप ठीक वैसे ही व्यक्ति बन रहे हैं, जैसा बनने की आकांक्षा आप अपने मन में करते हैं। हम जैसा आरोग्य, जैसी दक्षता और जैसी कार्य-सम्पादन शक्ति चाहते थे, वह हमने प्राप्त कर ली है। ऐसे गहन विश्वास से ओत-प्रोत विचारधारा से आपके ज़ीवन में क्रान्ति हो सकती है। जब हममें अपने जीवन को सर्वांग-सम्पूर्ण और निर्दोष बनाने के लिए अपने सामर्थ्य के प्रति विश्वास उत्पन्न हो जाता है, तो निश्चयात्मक रूप से हम बहुत ऊंचे उठ जाते हैं।

हमारी जीवन-पद्धति पर सदा ही श्रेष्ठ विचारों एवं सद्गुणों का शासन होना चाहिए। हमें इस दिशा में भी सदा प्रयत्नशील और सतर्क होना चाहिए कि दुर्गुण या बुरे विचार कभी भी हमारे मन-मस्तिष्क पर प्रभावी न हों। हमें रचनात्मकता या धनात्मकता के विपरीत विचारों से सदा ही अपनी रक्षा करनी होगी।

जब हम भूमि में अच्छा बीज बोते हैं, अच्छी खाद और उचित पानी देते हैं, मौसम भी ठीक रहता है तो पौधे में अंकुर फूटने से लेकर फलयुक्त होने तक की सभी क्रियाएं, भली प्रकार पूरी होती है। पौधे के सूखने या नष्ट होने की सम्भावना तभी होती है, जब भूमि की उर्वरता कम हो जाती है या मौसम एकदम प्रतिकूल हो जाता है या पौधे को धूप या पानी ठीक से नहीं मिलते।

इसी प्रकार जब किसी व्यक्ति के विचार निष्क्रियता से बोझिल हो जाते हैं, कर्म-शक्ति कम हो जाती है, उत्साह और उल्लास मन्द पड़ जाते हैं, साहस और आत्मविश्वास का निपट अभाव हो जाता है, तब उसका व्यक्तित्व एकदम नाकारा और प्रभावहीन हो जाता है।

यदि हमारी चित्तवृत्ति शुद्ध और सत्य मार्ग का अवलम्बन करती है तो हम पर दूसरों के गलत विचारों का कुछ भी प्रभाव नहीं होगा। लोग तो उल्टे-सीधे सुझाव प्रायः देते ही रहते हैं; किन्तु यदि आपका मन सुगठित और सुशिक्षित नहीं है, तो उसे अपने लक्ष्य से विचलित होते देर नहीं होगी। यदि आपको गलत बातें सुनने को विवश किया जाता है, किन्तु आप अपने मन पर उनका कुप्रभाव न होने देने के संकल्प पर दृढ़ हैं, तो वैसे गलत परिवेश में रहते हुए भी आप उन गलत एवं दूषित विचारों से अपनी रक्षा भली-भांति कर सकेंगे। यदि आप घातक सलाहों का निराकरण करने के अपने प्रण पर अटल हैं तो उनका कुछ भी प्रभाव आप पर नहीं हो सकता।

इसके विपरीत, यदि आप गलत या दूषित सलाहों को ध्यान से सुनते हैं या उन पर आचरण करने के लिए तैयार हो जाते हैं—अर्थात अपने मन को चंचल बनाए रखते हैं और दूसरों के द्वारा लक्ष्य से भ्रष्ट होने को तैयार हो जाते हैं—तो अपने जीवन को सम्पूर्ण

रूप से नष्ट कर देते हैं। गलत परामर्शों को सुनने वाला, उनको उत्साहित करने वाला तथा उनका स्वागत करने वाला व्यक्ति अवश्य ही लक्ष्य से भ्रष्ट हो जाता है।

यदि हम संकल्प कर लें, अपने लक्ष्य को निरन्तर दोहराते रहें, बार-बार अपने लक्ष्य की पूर्ति का प्रण करते रहें, तो अपने पथ पर आरूढ़ बने रह सकते हैं और शनैः-शनैः उस लक्ष्य के लिए कार्य करना हमारे आचरण में आ सकता है और वह हमारा स्वभाव बन सकता है। तब हम अपने जीवन के प्रभाव को पूर्णतया अपने लक्ष्य की ओर मोड़ सकते हैं और अपनी सब शक्तियों को उसी की सिद्धि के लिए लगा सकते हैं। कुछ काल के पश्चात हममें कर्म-सम्बन्धी हमारी योग्यता और परिश्रम की प्रचण्ड तरंग प्रवाहित होगी, जो न केवल सब विघ्न-बाधाओं को बहा ले जाएगी, हमें भी हमारे लक्ष्य के सुरम्य तट पर ले जाकर खड़ा कर देगी।

हमें विरोधी विचारधाराओं की ओर से पूरी तरह से सावधान रहना चाहिए। घृणा, ईर्ष्या, निर्दयता, बदला, द्वेष को उत्तेजित करने वाली सभी भावनाएं सिद्धि के मार्ग की विनाशक भावनाएं हैं। ये सारी भावनाएं हमारी कार्य-सम्पादन की शक्ति को समाप्त कर डालती हैं और हमारे आगे बढ़ने के मार्ग में भारी अड़चनें पैदा कर देती हैं।

हमारे जिस आचरण से किसी के भी साथ हमारा वैमनस्य बढ़ता है तो उससे हमारे प्रयत्नों को लकवा मार जाता है, जबकि विचारों की शान्ति, सन्तुलन और स्वतन्त्रता से हमारी कार्य-कुशलता बढ़ती है।

इन सब चेतावनियों का सारांश यही है कि हमारी विचारधारा ध्वंसात्मक न होकर रचनात्मक होनी चाहिए।

साहस से भरी तरंग, आत्मविश्वास से पुष्ट तरंग एवं दृढ़ संकल्प रूपी स्नायु-तरंग—ये हमारे अन्तःकरण रूपी बिजलीघर की ऐसी विद्युत तरंगें हैं जो हमें लक्ष्य के समीप ले जाती हैं।

जो भी व्यक्ति अपने को असफल या अल्प-सफल समझते हैं, वे यदि अपने अन्तःकरण से ऋणात्मक या निषेधात्मक विचारों की तरंगों को निकालकर बाहर कर दें तो सफल व्यक्ति कहला सकते हैं।

अन्तःकरण रूपी विचार-भण्डार से ऋणात्मक विचार रूपी कूड़े (सड़े-गले, अनुपयोगी विचारों) को निकालकर बाहर फेंकना भी एक कला है। भय उत्पन्न करने वाले विचार, चिन्ता पैदा करने वाले विचार तथा ईर्ष्या, द्वेष, कुण्ठा, निराशा एवं अकर्मण्यता को उत्तेजना देने वाले विचार ही वह सड़े-गले विचार हैं जिन्हें आपको यथाशीघ्र अपने मन से बाहर निकाल फेंकना चाहिए और उसके स्थान पर उत्साह, उल्लास, आशा, कर्मठता, दानशीलता, दयालुता आदि के विचारों को जगाइए। इन विचारों के द्वारा आपकी मनोभूमि एकदम उर्वर हो जाएगी। आपकी चित्तवृत्ति रचनात्मक हो जाएगी और ऐसा होने पर आपकी प्रगति को संसार की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकेगी।

हमारी चित्तवृत्तियों का हमारे चारों ओर के निकटवर्ती क्षेत्र पर तुरन्त प्रभाव पड़ता है। यदि हम आशापूर्ण विचार अपने मन में रखते हैं तो दूसरों को भी आशा से भरा-पूरा बना सकते हैं। यदि हममें आत्मविश्वास पूरी मात्रा में रहता है तो दूसरे केवल हमारे संग-मात्र से आत्मविश्वासी बन सकते हैं। इसी प्रकार सफलता-प्राप्त व्यक्ति दूसरों को भी सफल बना सकते हैं। यशस्वी व्यक्ति दूसरों को यश-प्राप्ति का मार्ग-निर्देश कर सकते हैं।

दूसरे लोग जब हमको विश्वास के योग्य नहीं मानते या वे हमें कायर और बुजदिल समझते हैं, तो इसका एकमात्र कारण यही है कि ऋणात्मक या नकारात्मक विचारों ने हमारी कार्यशक्ति और विचारशक्ति दोनों को प्रभावहीन करके हमें सर्वथा अयोग्य बना दिया है। हम जब तक अपने अन्तःकरण को इन विघातक विचारों से मुक्त नहीं कर लेते, तब तक लोग हमें किसी उत्तरदायित्व से युक्त प्रतिष्ठित पद पर बैठने की योग्यता वाला व्यक्ति नहीं समझ सकते।

विजयी स्वभाव वाले व्यक्तियों की एकमात्र पहचान यही है कि उनमें आत्मविश्वास एवं साहस के साथ निर्भयता की भावना के दर्शन होते हैं। दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करने के लिए आपको अपना स्वभाव और आवरण इन्हीं उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न बनाना चाहिए।

दूसरे शब्दों में हमारा आत्मविश्वास जितना सुदृढ़ और सुस्पष्ट होगा, हमारे ऊपर दूसरों का विश्वास उतना ही गहरा और घना होगा। हम पर दूसरे लोग भरोसा करें, इसके लिए हमें अपने चाल-चलन (आचार-विचार), वेशभूषा, भावभंगिमा एवं बातचीत से सफलता तथा आत्मविश्वास की भावना ही व्यक्त करनी चाहिए।

जो मनुष्य सदा विजयी लोगों जैसा आचरण करता है, जो संसार में पग-पग पर अपना पराक्रम प्रकट करता है, उस पर सबको गहरा विश्वास पैदा हो जाता है। उसके विषय में यह माना जाता है कि वह कोई भी बड़ा कार्य कर सकेगा।

इसके उलट—जो व्यक्ति अपने आचार-विचार और कामों से झेंपना, खुशामदीपन या कायरता की भावना प्रकट करता है, वह कभी भी उत्तम व्यक्तित्व का स्वामी नहीं हो सकता, बल्कि सफल व्यक्तियों की दृष्टि में वह उपहास का पात्र बनता है।

यह संसार सदा विजयी व्यक्ति का ही स्वागत करता है। यहां लोग प्रायः उसी व्यक्ति को चाहते हैं जिसके व्यक्तित्व से पौरुष, उत्साह, उल्लास एवं विजय की भावना प्रकट होती हो, जिसको देखते ही चारों ओर उत्साह और उमंग का वातावरण पैदा हो जाए। ऐसे ही व्यक्ति को लोग अपने सिर-आंखों पर बिठाते हैं।

अपनी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक शक्तियों का निरन्तर सही चिन्तन-मनन करने से ही आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न होती है और इसकी झलक व्यक्ति के मुखमण्डल पर भी देखी जाती है, जो दूसरों को अवश्य ही प्रभावित भी करती है। यदि आपकी मनोवृत्ति से शक्ति और सामर्थ्य की भावना प्रकट नहीं होती तो इस दुनिया में आपको एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व से सम्पन्न व्यक्ति की प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हो सकती।

कुछ लोगों को यह देखकर विस्मय होता है कि सफल लोग उन्हें निर्बल, अयोग्य और तुच्छ या नगण्य समझते हैं, किन्तु इसमें उनको दोष नहीं दिया जा सकता। सच्चाई यही है कि उनके विचारों, चेष्टाओं और कामों से 'विजयी' व्यक्ति की भावना नहीं झलकती—उनकी मनोवृत्ति उत्साह, उल्लास, साहस एवं पराक्रम वाली नहीं होती।

जिस व्यक्ति के चरित्र में रचनात्मकता भली प्रकार से घुल-मिल नहीं गई है, वह कभी भी अपने में चुम्बक जैसी आकर्षण शक्ति पैदा नहीं कर सकता। चुम्बकीय शक्ति को चरित्र में पैदा करने का तो एक ही रहस्य है और वह यही है कि व्यक्ति नीचे से ऊपर तक 'रचनात्मक' हो। उसके हाथ-पैर और मन-मस्तिष्क प्रतिपल, प्रतिक्षण कुछ-न-कुछ जमा करने के लिए उतावले रहते हों। यह एक ऐसी चरित्रगत विशेषता है कि पूरा समाज ही ऐसे व्यक्ति की ओर आकर्षित हो जाता है। ऐसे सभी व्यक्ति पहले अपने चरित्र पर विजय प्राप्त करते हैं—चरित्र का गठन करते हैं—बाह्य संघर्षों पर विजय प्राप्त करना तो फिर एक सामान्य बात हो जाती है।

कुछ व्यक्ति इतने ठण्डे, निष्क्रिय और प्रभावहीन होते हैं कि उन्हें देखते ही यह भावना जागती है कि ये कभी कुछ नहीं कर सकते। ये ठण्डे लोग ऐसा मानकर चलते हैं कि धन-दौलत या लक्ष्मी उन्हीं लोगों को प्राप्त होती है, जो भाग्यवान होते हैं—जो लोग इनको भाग्य में ही लिखाकर लाते हैं। ऐसे लोग अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कभी कोई प्रयत्न नहीं करते। इनसे लोग सदा बेगार में पकड़े हुए मजदूर की तरह काम लेते हैं। वे अपने जीवन की शुरुआत ही इस तरह करते हैं कि उन्हें निरन्तर कठोर परिश्रम करते हुए जीवन बिताना पड़ता है। किसी भी एक कार्य में कुशलता प्राप्त करने के लिए यदि वे शुरू में प्रयत्न करते तो उनका जीवन भी आनन्द और उत्साह से व्यतीत होता।

औचित्य की भावना से चलने वाला जीवन निरन्तर प्रगति की दिशा में ही अग्रसर रहता है। दक्षता—निरन्तर अधिक दक्षता, अपनी आज की दक्षता से कल की दक्षता को कमजोर सिद्ध कर देना—यही निरन्तर विकासशील व्यक्तित्व का अर्थ है। जो अपने परिचय का, ज्ञान का, जानकारियों का क्षेत्र निरन्तर बढ़ाता ही जाता है, जो दक्षता या कार्यशकुलता प्राप्त करने के लिए निरन्तर परिश्रम करता है, जो अपने मानसिक और बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करने के लिए सदा सजग और सतर्क रहता है, उसे जीवन में ऐसी महान सन्तुष्टि प्राप्त होती है, जैसी अन्य किसी तरह भी प्राप्त नहीं हो सकती।

अपने आक्रामक व्यक्तित्व का प्रसार करने की भावना से बढ़कर श्रेयस्कर कोई दूसरी भावना नहीं होती। निरन्तर कर्म-पराक्रम का, विजय का यश प्राप्त करने वाला व्यक्ति सदा अपने अनुयायियों पर शासन करता है।

बाल्यावस्था से ही बच्चे के मन पर ऐसे संस्कार दृढ़ कर देने चाहिए कि तेरा जन्म तो निरन्तर विजय प्राप्त करने के लिए ही हुआ है। उसके शरीर और मन का गठन ऐसा होना चाहिए कि वह सदा ही पराक्रम में रुचि ले और विजयी होकर यशस्वी बने। यह संस्कार उसके हृदय में सदा जाग्रत रहना चाहिए कि तेरा जन्म पराजय के लिए नहीं हुआ है।

यदि हम बच्चों की मनोवृत्ति को विजय की भावना से पुष्ट कर सकें, उनमें

आत्मसम्मान को सर्वोपरि समझने का अहसास जगा सकें और उनकी शक्तियों का उन्हें सम्यक बोध करा सकें, तो वे अपने जीवन में किए जाने वाले किसी भी कार्य में असफल नहीं होंगे। ऐसे बच्चे अपने बाद के जीवन में जहां भी जाएंगे, पौरुष, उत्साह, आत्मविश्वास और विजय की भावना का ही प्रसार करेंगे। बच्चों को शिक्षित करने या उनका निर्माण करने में इस बात का सर्वाधिक महत्व है।

जीवन को शारीरिक दृष्टि से सामंजस्य से युक्त और संतुलित बनाने से पूर्व उसे मानसिक दृष्टि से सामंजस्यपूर्ण और विवेक द्वारा नियन्त्रित बनाना अधिक आवश्यक है।

समाज में आपका जिन लोगों से भी परिचय या सम्पर्क है, उनके साथ आपके सम्बन्ध बहुत सन्तुलित, मधुर और उत्तम होने चाहिए। परिवारजनों के साथ भी आपको अत्यन्त न्यायपरायण होना चाहिए। इसके बाद ही आप अपने परिवार के क्षेत्र से बाहर के व्यक्तियों के साथ अच्छे और सन्तुलित सम्बन्ध बनाने में सफल हो सकते हैं। यदि आप इन्साफपसन्द हैं, स्वस्थ और प्रसन्न रहने वाले हैं तो अपने परिचय-क्षेत्र में आने वाले हर एक आदमी के साथ आप अच्छे व मधुर सम्बन्ध स्थापित कर सकेंगे।

अपनी मनोवृत्ति द्वारा हम सब दिशाओं में विजयी हों—इसके लिए हमें अपने मन से सब तरह के निषेधात्मक या ऋणात्मक विचार—ईर्ष्या, द्वेष, जलन, प्रतिकार की भावनाओं को एकदम दूर करना होगा। हमारी छवि एक शान्त प्रकृति वाले सज्जन और उत्तरदायी व्यक्ति की होनी चाहिए।
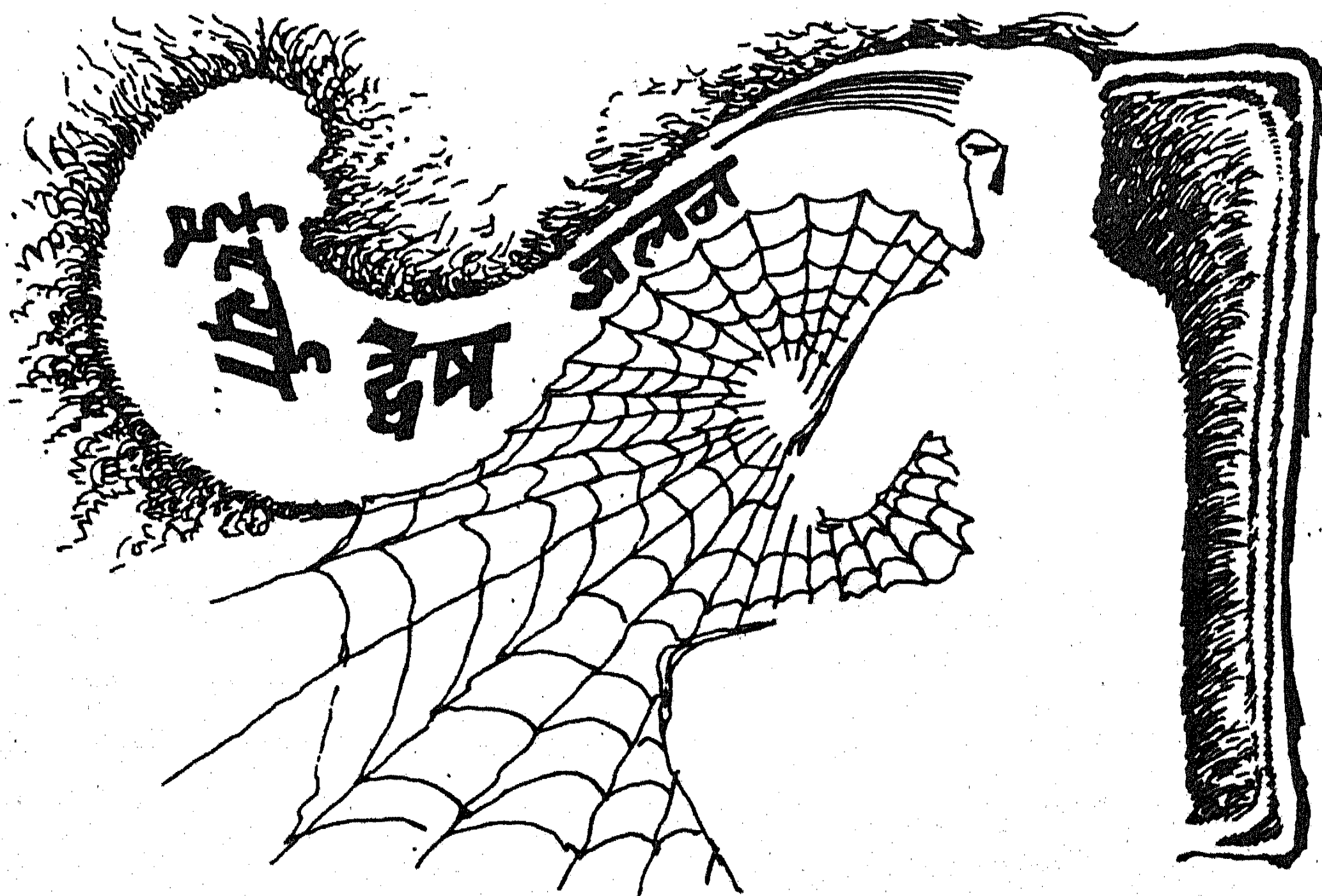
समस्त दिशाओं में विजयी होने के लिए हमें अपने मन से सभी विरोधात्मक विचारों ईर्ष्या, द्वेष, जलन व प्रतिकार की भावनाओं को एकदम दूर करना होगा।

कार्य-दक्ष और सदा प्रसन्न रहने वाले व्यक्तियों का इतिहास बताता है कि हमे कर्म-कुशल एवं सफल व्यक्ति बनने के लिए उत्साह, अध्यात्म और हिम्मत की सतत आवश्यकता होती है। आप कुछ भी करना चाहते हों, जीवन में कुछ भी बनना चाहते हों—उपर्युक्त तीनों बातों का सहारा ही आपको सफल करेगा।

जो युवक जीवन-क्षेत्र में अभी-अभी उतरा है और सफल होने की कामना भी रखता है, उसे यह आशंका अपने हृदय में नहीं रखनी चाहिए कि मैं इस कार्य में सफल हो सकूंगा या नहीं—या मैं तो इस कार्य के योग्य ही नहीं। मेरे कार्य-क्षेत्र में तो लोगों की पहले से ही भीड़ लगी हुई है, और इसमें अधिकतर लोग तो अपना जीवन-निर्वाह भी नहीं कर पा रहे। मुझ जैसे तो बहुत लोग इस क्षेत्र में बेकार ही चले आए हैं। मुझे लगता है कि इस क्षेत्र में आकर मैंने बड़ी भारी गलती की है। फिर भी मैं प्रयत्न करूंगा कि औरों से अच्छा काम करूं—शायद मैं किसी काम का आदमी बन जाऊं।

जो युवक कार्य-क्षेत्र में उतरने से पहले इस प्रकार विचार करता है या कहता है, वह अच्छी शुरुआत करने वाला नहीं माना जा सकता है। ऐसी आशंकाओं से भरा हुआ युवक अपने काम को सफलतापूर्वक नहीं कर सकेगा, उसका वित्तीय पक्ष सदा कमजोर रहेगा और वह शीघ्र ही अपने घर को वापस लौट जाएगा।

लोग हमारे बारे में 'हम कैसे दीखते हैं' इससे नहीं, बल्कि 'हम क्या कहते हैं,' इससे अनुमान लगाते हैं।

आपको इससे स्पष्ट हो गया होगा कि हमारे शब्दों का प्रभाव दूसरों पर कितना गहरा होता है। इसलिए यह बहुत ही आवश्यक है कि हम अपनी वास्तविक योग्यता ही दूसरों के सामने प्रकट करें। हम जो भी चाहें कह सकते हैं, परन्तु यह बात भली-भांति ध्यान में रखें कि हम जो कुछ भी कहते हैं, लोग उसी के द्वारा हमारा मूल्य लगाते हैं। हमारी बातचीत तथा चेष्टाओं और हाव-भावों का लोगों पर जो भी प्रभाव पड़ता है, उसी से वे लोग हमें 'अच्छा' या 'बुरा' समझते हैं। हम अपने को दूसरों के बीच जैसा प्रकट करते हैं, वैसा ही उन पर हमारा प्रभाव पड़ता है। अच्छा और प्रभावशील व्यक्ति वही है, जो लोगों पर अपने सद्गुण, कर्म-दक्षता और कर्म-पराक्रम को प्रकट करे।

हम कितने भी चालाक हों, बनावटी प्रशंसा द्वारा हम अपने हीन व्यक्तित्व को छिपा नहीं सकते। हम अपने वास्तविक जीवन को दूसरों से अधिक देर तक छिपाकर नहीं रख सकते। हमारी बोल-चाल कितनी ही मीठी और लुभावनी क्यों न हो, हमारी हृदयगत ईर्ष्या-द्वेष की भावना और घृणा छिप नहीं सकती। यदि हमने किसी के साथ अन्याय या अत्याचार किया है तो मीठे शब्दों द्वारा उसे धोखा नहीं दे सकते। अतः स्पष्ट है कि सन्तुलित व्यक्तित्व के लिए अन्तःकरण की निर्मलता, विचारों की स्वच्छता एवं चिन्तन सम्बन्धी शुद्धता नितान्त आवश्यक है।

उस व्यक्ति की हालत का अनुमान कीजिए जो धनी बनने की सोचता है, परन्तु

उसका मुंह और मनोवृत्ति कहती है—"ओ समृद्धि और ऐश्वर्य, मुझसे दूर ही रहो, मेरे पास मत आओ। मुझे तुम्हारी जरूरत तो है, परन्तु भगवान ने तुम्हें मेरे लिए नहीं बनाया। मेरे भाग्य में तो दीन-हीन बनकर ही जीवन बिताना लिखा है। भाग्यशाली व्यक्ति ही तुम्हें प्राप्त करने के लिए अधिकारी हैं, मैं तुम्हें प्राप्त करने की आशा ही नहीं रखता।"

ऐसी मनोवृत्ति रखने वाले व्यक्ति के पास धन-सम्पत्ति कभी नहीं आ सकती। जो सदा मन में भयभीत रहता है, आशंकाओं और चिन्ताओं से कांपता रहता है, वह धन-सम्पत्ति को अपने पास फटकने नहीं दे सकता।

यह सत्य है कि सभी लोग धन-सम्पत्ति को अपने से दूर नहीं देखना चाहते, परन्तु ऐसी दीन-हीन मुखाकृति बनाए रहते हैं कि धन-दौलत कभी उनके निकट नहीं आती। वे अपने मन पर सन्देह के बादलों का घटाटोप सदा बनाए रखते हैं। निराशा और कुण्ठा से विजड़ित रहते हैं और इस प्रकार अनजाने ही समृद्धि को अपने से दूर ठेलते रहते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें न सफल व्यक्तियों में रखा जा सकता है, न असफल व्यक्तियों में। वे न तो समृद्ध होते हैं, न ही निर्धन। वे सारे जीवन नाप-तोलकर ही कमाते और खर्च करते हैं।

आइए, विचार करें, ऐसा क्यों होता है?

ऐसे लोगों का अन्तःकरण दुविधा में विभक्त होता है। आधे मन में निर्माणात्मक-रचनात्मक विचारधारा रहती है और आधे में निषेधात्भक या ऋणात्मक। ऐसे लोगों की दशा घड़ी के पेंडुलम की तरह होती है। जब कभी उनमें उत्साह और आशा का संचार होता है, उनका साहस और आत्मविश्वास जोर मारता है, तब वे कुछ कमाई कर लेते हैं, किन्तु जब उनका मन उदास-विषादपूर्ण होता है तो वे जीती हुई बाजी को भी हारने में विलम्ब नहीं करते। साहस छूटते ही वे सन्देह और भ्रम की गिरफ्त में आ जाते हैं और इस तरह काम छोड़ देते हैं। मन के ऋणात्मक विचारों में भ्रम हो जाने के कारण वे कुछ भी रचनात्मक नहीं कर पाते, अतः प्रत्येक समय लाभ से वंचित रहते हैं।

समय की पुकार है—कृपया अपने को बदलिए! अपने मन को प्रतिपल, प्रतिक्षण, निर्माणोन्मुख रखिए। तब आप जीवन में उन सभी स्पृहणीय वस्तुओं, स्थितियों और सुखों को प्राप्त कर सकेंगे, जो आप के लिए आवश्यक हैं, शुभ और आनन्दप्रद हैं।

आत्मसंयम का महत्त्व

मनुष्य की सभी अयोग्यताओं में से क्रोध सर्वाधिक विनाशकारी है। क्रोध के वशीभूत होकर मनुष्य अपने विवेक को खो बैठता है और अनेक हानियों से उसका सामना होता है। यदि मनुष्य संयम करके अपने क्रोध को नियंत्रण में रखे तो वह एक सुखी, खुशहाल व उल्लासपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है।

एक सुप्रसिद्ध चिकित्सक का कहना है—"आवश्यकता से अधिक परिश्रम, गर्मी या सर्दी, जीवनोपयोगी भोजन की कमी, गन्दा रहन-सहन, सुस्ती या निर्बलता मानव-मात्र के घोर शत्रु हैं, लेकिन इन सबसे भी बढ़कर है मनुष्य पर उसके उग्र विचारों का दुष्प्रभाव। अस्थिर चित्तवृत्ति वाले व क्रोधी व्यक्ति प्रायः शीघ्र ही मृत्यु का शिकार बन जाते हैं।
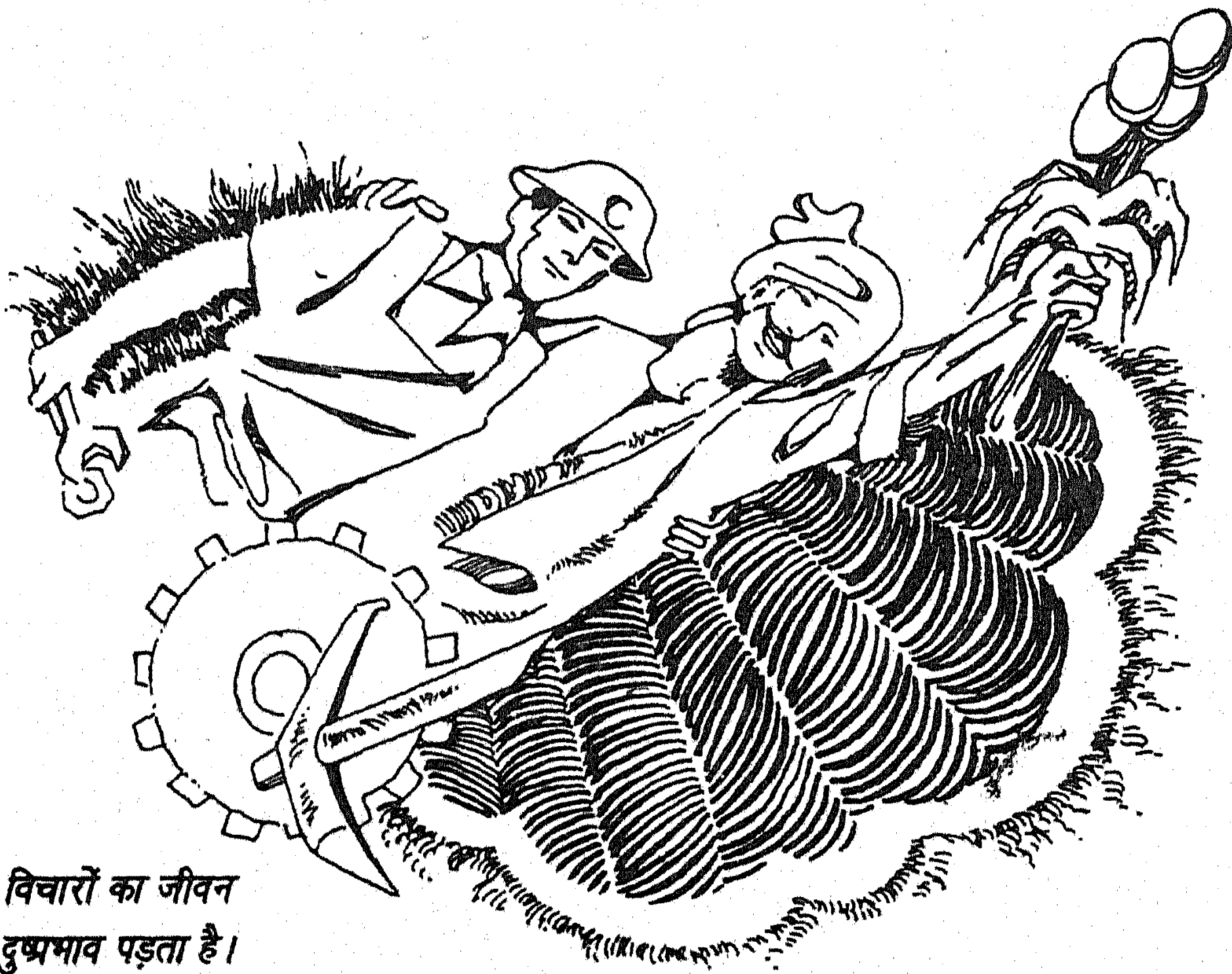
उग्र विचारों का जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

मैथ्यू हैनरी ने एक ऐसे पति-पत्नी के बारे में लिखा है जो बहुत ही उग्र और जल्लाद थे, लेकिन उन दोनों में एक समझौता हो चुका था और वह यह था कि एक ही समय पर दोनों कभी नाराज नहीं होंगे। आप आश्चर्य करेंगे कि केवल इस एक नियम के पालन करते रहने से ही उन दोनों का सम्पूर्ण जीवन अत्यन्त सुखपूर्वक व्यतीत हो सका।

एक बार एक पागल व्यक्ति अचानक ही ड्यूक ऑफ विलिंग्टन के वाचनालय में घुस आया और कहने लगा, "मैं आपोलोन हूं और मुझे तुम्हारी हत्या करने के लिए भेजा गया है।" इस पर ड्यूक महाशय हंसकर बोले, "तुम मुझे मारने के लिए आए हो? बड़ी अजीब बात है। क्या तुम मुझे आज ही मार डालना चाहते हो?" पागल व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मुझे समय और दिन तो नहीं बताया गया है, पर मैं आपको मारूंगा अवश्य।" ड्यूक ने कहा, "देखो भाई, आज तो मुझे बहुत काम करना है, कितने ही जरूरी पत्रों के उत्तर भी देने हैं, और भी अनेक काम करने हैं। तुम फिर कभी आना और आने से पहले सूचना भी दे देना ताकि मैं तैयार रहूं।" ड्यूक इतना कहकर अपने काम में लग गए और वह पागल व्यक्ति ड्यूक की इस निर्भीक स्थिरता से शंकित होता हुआ चुपचाप उनके कमरे से बाहर निकल गया।

सुकरात को जब भी क्रोध आता था तो वह अपने स्वर को अत्यन्त धीमा कर लेता था और इस प्रकार अपने क्रोध को दबा लेता था। आप भी ध्यान रखें, जब भी कभी आपको क्रोध आए, तो आप अपना मुंह बन्द रखें। इससे आपका क्रोध बढ़ेगा नहीं और कुछ ही देर में स्वतः शान्त हो जाएगा। क्रोध के वशीभूत होकर अनेक लोग अपनी जान से हाथ धो बैठे हैं, इसलिए पहले तो आप क्रोध करें ही नहीं और यदि क्रोध आ ही जाए तो चुप रहने का प्रयत्न करें। इस प्रकार अपनी वाणी पर संयम रखने से आपका क्रोध शान्त हो जाएगा और आप अनेक प्रकार के कष्टों से बचे रहेंगे।

जॉर्ज हरबर्ट ने भी कहा है—"वाद-विवाद में भी शान्तिपूर्वक ही बोलना चाहिए, क्योंकि आवेश के कारण ही राई जितनी छोटी-सी बात भी पहाड़ जैसी बड़ी बन जाती है और सच बात भी अनैतिक कहलाने लगती है।"

एक सज्जन ने अपने मित्र से पूछा, "आपका किसी से कोई झगड़ा नहीं होता, इसका कारण क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया, "जब भी कोई मुझ पर क्रोधित होता है तो मैं चुप्पी साध लेता हूं। बस, इस प्रकार वह क्रोध करने वाला अपने आप ही कुछ देर में शान्त हो जाता है और मैं भी झगड़े से बच जाता हूं।"

ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से सम्बन्धित क्वींस कॉलेज के एक कमरे की खिड़की पर ये शब्द लिखे हुए हैं, "कभी इस कमरे में सम्राट हैनरी रहा करता था, जो बड़ा वीर था और जिसने अनेक युद्धों में शत्रु पर विजय प्राप्त की; परन्तु जो स्वयं को वश में करने के लिए आजीवन कशमकश करता रहा।"

एक बार इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री बीकन्सफील्ड से पूछा गया कि आप सभी राजाओं को

कैसे प्रसन्न रख पाते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया, "मैं कभी भी किसी से किसी की बात नहीं कहता, विरोधियों की सदा उपेक्षा कर देता हूं और कभी उनकी परवाह नहीं करता।" यह एक ऐसा सिद्धान्त है, जो किसी भी व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

एक बार किसी राजनैतिक दल में किसी नए सदस्य का आगमन हुआ तो उसके साथियों ने उसे बताया कि अमुक व्यक्ति बड़ा अनुभवी है, तुम उसके पास चले जाओ। वह तुम्हें राजनैतिक सफलताओं के बारे में रहस्यपूर्ण जानकारी दे सकता है और वोट प्राप्त करने के लिए आवश्यक सारे दाव-पेंच भी सिखा देगा।

नया सदस्य तुरन्त ही उस व्यक्ति के पास जा पहुंचा और उसका शिष्य बनने के लिए आग्रह करने लगा। अनुभवी व्यक्ति ने कहा, "ठीक है, मैं तुम्हें सारे गुर सिखा दूंगा, लेकिन मेरे कुछ नियम हैं। जब-जब भी तुम उनका उल्लंघन करोगे, तुम्हें प्रत्येक बार पांच डॉलर का दण्ड भरना पड़ेगा।" नया सदस्य तुरन्त इसके लिए तैयार हो गया और बोला, "मुझे स्वीकार है।"

अनुभवी व्यक्ति ने पूछा, "तो आप अपना पाठ कब से आरम्भ करेंगे?'

नया व्यक्ति बोला, "अभी आरम्भ किए देते हैं।"

"तो पहला पाठ यह है कि यदि कोई तुम्हारे प्रति दुर्वचन कहे तो तुम क्रोध नहीं करोगे और इस सम्बन्ध में हर पल सावधान रहोगे।" अनुभवी व्यक्ति ने नए सदस्य को बताया।

"वाह! यह कौन बड़ी बात है? लोग मेरी कितनी भी निन्दा या बुराई करें, मैं किसी की भी परवाह न करूंगा और सदा सावधान रहूंगा।"

"ठीक है, यह मेरा पहला पाठ था। हालांकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे जैसे सिद्धान्तहीन और नालायक व्यक्ति का सदस्य बनना मुझे कतई नापसन्द है।"

"वाह! आप यह कैसे कह सकते हैं?"

"ठीक! अब आप पांच डॉलर रख दें।"

"ओह! याद आया, यह तो पहला पाठ था।"

"जी हां, यह पाठ ही था और यह भी ध्यान रखें कि मैं जो भी कहता हूं, सच ही कहता हूं। आप वाकई नालायक हैं।"

"क्या जी, तुम तो फिर से वही बात दोहरा रहे हो।"

"ठीक है, आप पांच डॉलर और निकालिए।"

"वाह! यह भी खूब रही। यह तो बड़ी गलत बात है। कमाल कर दिया, इतनी जल्दी दस डॉलर ऐंठ लिए।"

"जी हां, दस डॉलर। बस आप देते जाइए और जरा जल्दी-जल्दी भुगतान कीजिए, क्योंकि कर्ज का भुगतान करने के मामले में आप पहले से ही काफी बदनाम हैं।"

"चुप कमीने।"

"ठीक है, लाइए पांच डॉलर और निकालिए।"

"धत तेरे की, फिर भूल गया। अच्छा, आगे से मैं अपनी जबान पर खूब काबू रखूंगा।"

"ठीक है, और अब चूंकि आप अपनी गलती मान रहे हैं, मैं भी अपनी बातें वापस ले रहा हूं। ये बातें तो मैंने आपको यूं ही कह दी थीं। वैसे तो आप सम्मानित व्यक्ति हैं, भले ही आपने जिस परिवार में जन्म लिया, था वह चाहे जितना भी नीच रहा हो और आपके पिताजी भी काफी बदनाम व्यक्ति थे।"

"यार, तुम तो बड़े चालाक हो।"

"ठीक है, और पांच डॉलर निकालिए।"

और इस प्रकार वह अनुभवी सदस्य उस नए व्यक्ति को जो पाठ पढ़ाता चला गया, वह पाठ था आत्मसंयम का। काफी देर के बाद उस अनुभवी सदस्य ने नए सदस्य को बताया, "मेरे भाई! ध्यान देकर सुनो और सदा याद रखो कि तुम जितनी बार भी लोगों पर नाराज होगे, तुम्हें उतने वोटों की हानि सहनी पड़ेगी। सदा ध्यान में रखो कि नोटों के मुकाबले वोट अधिक कीमती हैं। बालकों को बचपन से ही यह सिखाना आवश्यक है कि वे धीरज से काम लें और अपनी चित्तवृत्ति को स्थिर रखकर अपने आपको क्रोध से बचाएं तथा स्वस्थ रहें। उन्हें यह भी समझा देना चाहिए कि स्वस्थ और शुद्ध जीवन तथा हर्षोत्फुल्लता ऐसी औषधियां हैं, जो बड़े-बड़े डॉक्टरों से भी नहीं मिल सकतीं। यह बात बालकों के मन में कूट-कूटकर भर दें कि किसी भी प्रकार की अनैतिकता, कैसे भी कुविचार अथवा किसी भी प्रकार की दुश्चिन्ताएं या वाहियात कल्पनाएं, कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका न केवल उनके मानसिक जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है, वरन् ये उनके शारीरिक स्वास्थ्य को भी नष्ट-भ्रष्ट कर देती हैं।

क्रोध से अधिक भयंकर एवं दुष्प्रभावकारी कोई भी दूसरी बात नहीं है, लेकिन जब व्यक्ति आत्मसंयम करना सीख जाता है तो वह किसी भी प्रकार की दुर्भावनाओं पर विजय प्राप्त कर सकता है। तब उसका व्यवहार इतना मधुर और शान्तिदायक बन जाता है कि जो भी उसके सम्पर्क में आता है, वह उसी का होकर रह जाता है। तब वातावरण एक ऐसे माधुर्य से ओत-प्रोत हो जाता है, जिसका वर्णन कठिन ही नहीं, असम्भव भी है।

जब आप क्रोध-भरे वातावरण से चुपचाप दम साधे बाहर निकल जाते हैं तो क्रोध करने वाले व्यक्ति को जितना खेद होता है और वह जितनी ग्लानि अनुभव करता है, उसे उसके मन के सिवा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं जान सकता।

जॉर्ज वाशिंगटन भी ऐसा ही व्यक्ति था। उसके मुकाबले का व्यक्ति आज तक देखने में नहीं आया। उसने कभी भी क्रोध नहीं किया। उसका चित्त सर्वथा स्वस्थ, स्नेही और सत्य से परिपूर्ण था। सामान्य व्यक्तियों में जो दुर्बलताएं पाई जाती हैं, वह क्रोध के कारण भभक उठने का ही परिणाम होती हैं। जो लोग जल्दबाज होते हैं और अत्यधिक दौड़-भाग करते हैं, वे कभी यह सोच भी नहीं सकते कि उनकी सवारी स्वस्थ है या अड़ियल अथवा जिस घोड़े या टट्टू पर वे सवारी कर रहे हैं, वह कहीं अन्धा तो नहीं है कि खुद भी गिरे और

सवार को भी मुंह के बल गिरा दे। वह तो औरों को सरपट भागते देखते हैं तो स्वयं भी उसी बेतुकी चाल से सरपट भागने लगते हैं। क्या ऐसी सवारी आपके लिए ठीक है?

पैन्सिलवानिया का एक दुकानदार अपनी सहनशीलता के लिए बड़ा प्रसिद्ध था। एक व्यक्ति ने उसके धीरज की परीक्षा लेनी चाही और उसकी दुकान पर पहुंचकर उसे कोई कपड़ा दिखाने को कहा। दुकानदार ने उस सज्जन को एक-एक करके कपड़े के रंगारंग थान दिखाने आरम्भ कर दिए। कुछ देर बाद उन सज्जन को एक कपड़ा पसन्द आ गया और वह दुकानदार से बोले, "यह ठीक है। इसमें से मुझे एक पैन्स का कपड़ा चाहिए।" दुकानदार ने बड़ी शान्तिपर्वूक पैन्स-भर कपड़े का टुकड़ा काटकर और उसे कागज में लपेटकर ग्राहक के सुपुर्द कर दिया तो वह व्यक्ति दुकानदार के धैर्य की पराकाष्ठा देखकर आश्चर्य से भर उठा।

जॉन हैन्डरसन का जीवन भी शान्ति और धैर्य का एक अद्भुत उदाहरण था। एक बार उसके किसी साथी ने विवाद में उससे-रूठकर उसके मुंह पर शराब से भरा गिलास दे मारा। इस पर हैन्डरसन ने शान्तिपूर्वक अपना मुंह साफ किया और अत्यन्त धैर्यपूर्वक उसी साथी से बोला, "यह तो हुआ। आइए, अब फिर से उस विवाद को आरम्भ करें।"

एक सुप्रसिद्ध लेखक का कहना है, "कौन मां ऐसी है जो स्वयं पर तो अंकुश रख नहीं सकती और अपनी सन्तान पर अंकुश रखना चाहती है? घर या बच्चों पर तो शासन तभी किया जा सकता है जब माताएं स्वयं पर शासन करना सीखें। जो माताएं अपनी भावनाओं को ही वश में नहीं रख सकतीं, वे अपने बच्चों को कैसे अनुशासन में रख सकती हैं?"

एक बार एक जासूस पकड़ा गया तो उसने अपने आपको गूंगा और बहरा सिद्ध कर अपनी जान बचा ली। हुआ यों कि जब उसे बन्दी बना लिया गया तो उसे दुश्मन फौज के कमाण्डर के सामने पेश किया गया, पर उसने कोई भी ऐसी हरकत न की, जिससे यह सिद्ध हो सकता कि वह गूंगा और बहरा नहीं है। अन्त में कमाण्डर ने उसे मुक्त करते हुए कहा, "ठीक है, अब तुम जा सकते हो।" जासूस फिर भी चुपचाप बैठा रहा! यदि वह तनिक भी चूक जाता तो उसे फांसी के फन्दे पर लटकना पड़ता, लेकिन आत्मसंयम के कारण ही उसकी जान बच गई।

अब तो आप मान गए होंगे कि आत्मसंयम में कितनी प्रबल शक्ति है। वास्तव में यह एक ऐसा गुण है जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। इसी एक गुण के कारण अब्राहम लिंकन जैसा झगड़ालू और उग्र व्यक्ति इतना ऊंचा उठ सका। अपने यौवनकाल में लिंकन बड़ा ही झगड़ालू और उग्र स्वभाव का था, लेकिन 'ब्लैक हॉक' नामक युद्ध के समय उसने अपनी इस प्रवृत्ति पर काबू पा लिया। वह प्रायः कहा करता था कि "आत्मसंयम का गुण इतना प्रभावशाली होता है कि उसके सम्मुख अन्य सब गुण फीके पड़ जाते हैं।"

आपके मन की अस्थिरता आपकी दुर्बलता का प्रबल संकेत है। यह एक ऐसी बुराई है, जिससे किसी को कभी लाभ नहीं हो सकता। सभ्यता की पहली विशेषता है

आत्मसंयमी होना। जो व्यक्ति आत्मसंयमी नहीं हैं, हमें तो उसके सभ्य होने में भी सन्देह है। पूर्ण आत्मसंयम का अर्थ ही यह है कि व्यक्ति का अपने ऊपर इतना नियन्त्रण हो जितना एनावर्थ रॉबर्ट को था। उनकी पत्नी बड़े ही क्रोधी स्वभाव की थी, परन्तु रॉबर्ट को अपने ऊपर बड़ा अधिकार था। एक बार उसकी पत्नी ने उसकी किसी पुस्तक की पाण्डुलिपि को आग में झोंक दिया, पर रॉबर्ट ने उस पर कोई क्रोध नहीं किया और चुपचाप, दोबारा नए सिरे से पाण्डुलिपि तैयार करनी आरम्भ कर दी।

सिकन्दर का उदाहरण भी हमारे सामने है। उसे अपने ऊपर प्रबल संयम था, तभी तो उसने इतने विशाल साम्राज्य पर अधिकार कर लिया, लेकिन ज्यों ही उसका आत्मसंयम टूटा, वह विलास-लीलाओं और मदिरापान में डूब गया और उसका विनाश हो गया। यदि विलास-लीलाओं और मदिरापान के लिए उसने 'नहीं' शब्द का प्रयोग किया होता तो क्या उसकी ऐसी दुर्दशा होती?

नेपोलियन ने भी अनेक भयंकर संग्राम लड़े और जीते, परन्तु वह भी मदिरापान और अन्य सामान्य स्तर की बातों में फंसकर अपने जीवन को नष्ट कर बैठा। शेक्सपियर ने अपनी रचनाओं में भावावेश के कारण विनष्ट जीवन के बड़े ही सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। राजा जॉन शक्ति के मद में चूर होकर तथा मानवता को भूलकर क्रूरता के जाल में फंस जाता है। मैकबेथ और उसकी पत्नी मिथ्याभिलाषाओं के कारण अपने कर्तव्य और सम्मान को भूल जाते हैं और भयंकर नृशंसता जैसी क्रियाएं कर बैठते हैं। ऑथेलो स्वयं ही ईर्ष्या की आग में जलने लगता है। इसी प्रकार शेक्सपियर के अनेक पात्र, बड़े ही प्रभावशाली ढंग से शक्ति का प्रदर्शन करते हैं।

इंग्लैंड की मरसी नदी में एक ऐसे युवक की लाश मिली, जिसने नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली थी। उसकी जेब में एक कागज का टुकड़ा पाया गया, जिस पर लिखा था, "मेरा जीवन नष्ट हो चुका है और इसका कारण है अत्यधिक मदिरापान।" इस घटना के प्रकाशित होते ही एक सप्ताह के भीतर जांच अधिकारियों के पास उस युवक का हुलिया जानने के लिए लगभग दो सौ से अधिक पत्र इंग्लैंड के कोने-कोने से पहुंचे। उस एक व्यक्ति की आत्महत्या के कारण दो सौ से अधिक परिवारों में कोहराम मच गया था। बाद में पता चला कि उन सभी परिवारों के नौनिहाल आवारा और शराबी थे तथा उनका कोई पता नहीं था, वे सभी काफी समय से गुम थे। इसीलिए कहा है कि शराब की बोतल में प्रेत का निवास होता है, जिसकी भयानक छाया न जाने कितने परिवारों को तबाह कर डालती है।

'ना' एक छोटा-सा शब्द है, जिसे बच्चे भी बड़ी सरलता से सीख लेते हैं, पर हम युवक और प्रौढ़ इसके प्रयोग से कतराते हैं। इस एक शब्द में समस्त मानव-जीवन का उद्देश्य छिपा पड़ा है। सम्पूर्ण जीवन का दर्शन इस एक शब्द में भरा है, पर आवश्यकता है उस शक्ति की, जिसकी सहायता से आप इसका प्रयोग कर सकते हैं। वह शक्ति केवल अभ्यास से ही प्राप्त हो सकती है और अभ्यास कुछ नहीं, केवल आपका आत्मसंयम है।
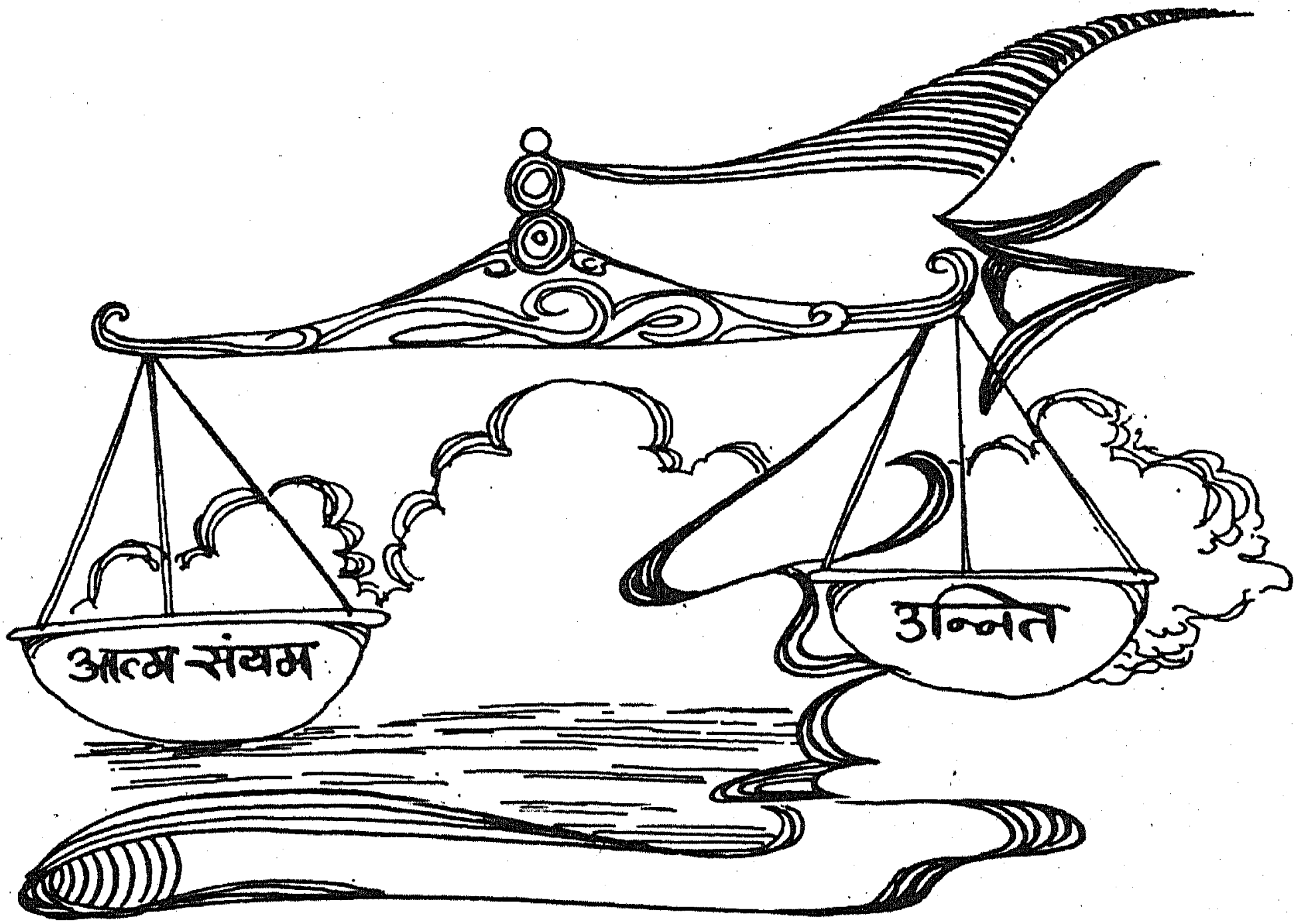
उन्नति के लिए आत्मसंयम की आवश्यकता है।
बिना आत्मसंयम के कोई भी मनुष्य न तो सफल
हो सकता है, न उन्नति ही कर सकता है।

बिना आत्मसंयम के कोई भी व्यक्ति न सफल हो सकता है और न उन्नति ही कर सकता है। किसी भी सफल व्यक्ति से पूछकर देखिए, उसकी सफलता का रहस्य होगा आत्मसंयम। कैसी भी कठिनाइयां आएं, कितने भी प्रतिकूल अवसर हों, मार्ग कितना ही कांटों से भरा हो, आत्मसंयम के सहारे ही आगे बढ़ा जा सकता है। आत्मसंयम ही एक मात्र ऐसा गुण है जिसके आगे सभी को झुकना पड़ता है। जिस व्यक्ति में आत्मसंयम होता है, उस पर अन्य व्यक्ति भी विश्वास कर सकते हैं, उसकी साख दिनोंदिन बढ़ती ही जाती है, क्योंकि जो अपने पर भरोसा कर सकते हैं उन्हीं पर दूसरे भी भरोसा करते हैं। यह बात तो आप भली-भांति जानते होंगे कि जों अपने आप पर काबू नहीं रख सकता, वह दूसरों पर क्या काबू रखेगा।

स्वस्थ और शिक्षित व्यक्ति भले ही अपने जीवन में असफल हो जाए, परन्तु आत्मसंयमी व्यक्ति कभी भी असफल नहीं हो सकता। आत्मसंयमी व्यक्ति तो किसी भी प्रकार की कठिनाइयों पर हंसते-हंसते विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसे ही व्यक्ति समाज में, देश में तथा संसार में सम्मान प्राप्त कर सकते हैं, जो औरों को उपदेश देने से पहले स्वयं उन पर अमल करते हों।

***